"सहरिया जनजाति के विभिन्न शैक्षिक स्तरों के प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक - आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का कम उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

से

"शिक्षा शास्त्र" में विद्या वारिधि उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशक :
डॉ० आर०पी० पाण्डेय
रीडर, शिक्षा विभाग (से०नि०)
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी
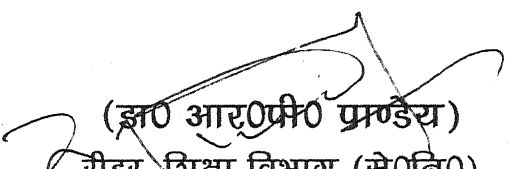
शोधकर्ता :
राजेश कंचन
एम०एस०सी०, एम०एड०
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री राजेश कंचन ने "सहारिया जनजाति के विभिन्न शैक्षिक स्तरों के प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक - आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का कम उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन" विषय पर शोध कार्य निर्धारित अवधि में मेरे निर्देशन में पूर्ण किया ।

मैं इस शोध प्रबन्ध के परीक्षण की संस्तुति करता हूँ।

(डा0 आर0पी0 पाण्डेय)
रीडर, शिक्षा विभाग (से0नि0)
बुन्देलखण्डे महाविद्यालय, झाँसी ।

आमुख

प्रतिभाशाली बच्चे प्रत्येक राष्ट्र की धरोहर होते हैं । इनकी देखभाल करना प्रत्येक सरकार का कर्तव्य होता है । राष्ट्रीय शिक्षा योजना (1986) और शिक्षा में एक्शन प्लान (1992) में प्रतिभाशाली बच्चों की ख़ोज, देखभाल तथा उनके लिये पर्याप्त संसाधन जुटाने की संस्तुति की गयी है । लोक तंत्र में सरकार तथा समाज की माँग - समानता, स्वतंत्रता के आधार पर प्रत्येक नागरिक का विकास करना है ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमताओं तथा योग्यताओं का विकास स्वाभाविक रूप से कर सके । यह कार्य प्रारम्भिक शिक्षा स्तर से प्रारम्भ करना चाहिये जिससे प्रतिभाशाली की सही पहचान हो सके और उनके विकास के लिए संसाधनों को जुटाया जा सके । भारत देश में शिक्षा तथा सामाजिक स्तर के आधार पर विभिन्नतायें देखने को मिलती हैं । इनमें जनजातीय समूह अपनी विशिष्टताओं के लिए प्रसिद्व हैं । इनके बच्चे बुद्वि में, शारीरिक शकित में तथा तार्किकता में प्रखर होते हैं (शाही-1992) फिर भी कक्षा स्तर पर वे अपनी शैक्षिक उपलब्धि में सामान्य से पीछे रह जाते हैं ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संयुकत राष्ट्रसंघ की अवधारणा मानव समानता, सहकारिता और विश्व बन्धुत्व आदि का सफल प्रयोग तभी सम्भव हो सकेगा जब सबको आत्मनिर्भरता प्राप्त होगी । इस लक्ष्य हेतु व्यवसायोन्मुख शिक्षा की दिशा में प्रयास जारी हैं । परिणामस्वरूप शिक्षण संस्थाओं में प्रतिभा ख़ोज, प्रतिभा सम्वर्धन तथा प्रतिभा विकास के प्रत्यय को जन-साधारण में फैलाया जाये । इस प्रकार से भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति, मूल्य और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर पायेगा ।

प्राचीन समय में बौद्विक श्रेष्ठता को जाति और धर्म के आधार पर जाना जाता था लेकिन आज़ भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने वंशानुक्रम तथा पर्यावरण को बौद्विक प्रतिभा विकास का सहायक माना है । गाल्टन

(1925), टरमन तथा ओडन (1947) अन्य शिक्षा शास्त्रियों ने इसके साथ ही साथ सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा समायोजन के प्रभाव को भी आवश्यक माना है । अनास्ट्रेसी (1958) तथा हालिंगबर्थ (1942) सामान्य रूप से यह देखा जाता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर अपना सार्थक प्रभाव बच्चों के विकास पर डालते हैं और वे आसानी से स्वयं का समायोजन प्रत्येक परिस्थिति में करने में समर्थ होते हैं, जबकि कमज़ोर सामाजिक -आर्थिक स्तर वाले बच्चों का विकास धीमा तथा निराशाओं से भरा होता है, (भागिया- 1967 तथा श्रीवास्तव -1978) । आज़ भारत में प्रतिभाशाली जनजाति (सहारिया) बच्चों पर कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है । अतः शोधकर्ता ने सहारिया बच्चों (प्रतिभाशाली) के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा समायोजन का अध्ययन कक्षा में कम उपलब्धि के रूप में किया है । परिणामस्वरूप सरकार तथा शिक्षा प्रशासक इस जनजाति की प्रतिभाओं का पता लगाकर उनके विकास के लिये योजनायें बनायें ।

सर्वप्रथम मैं डा0 आर0पी0 पाण्डेय का कृतज्ञ हूँ, जिनके सही तथा कुशल मार्गदर्शन में शोध कार्य पूरा किया । साथ ही माननीय कुलपति डा0 रमेश चन्द्रा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी का हृदय से आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन से मेरी क्रियाशीलता बनी रही तथा सम्पूर्ण पुस्तकालय विभाग का सहयोग मिला ।

मैं आभारी हूँ विकासखण्ड, भाण्डेर, सेवड़ा तथा दतिया के सभी माध यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो का, जिन्होंने तथ्य संकलन तथा परीक्षणों के प्रशासन में समय-समय पर मुझे सहयोग दिया । उनके सहयोग तथा उत्साह ने मेरी क्रियाशीलता तथा लगन को अधिक बढ़ा दिया ।

मैं आभारी हूँ ट्राइबल रिसर्च एण्ड डेवलवमेंट इन्स्टीट्यूट, भोपाल के डायरेक्टर तथा सभी सहकर्मियों का, जिनके सहयोग से मुझे सम्बन्धित साहित्य

के अध्याय को लिखने में सहायता मिली ।

शोध क्षेत्र में विद्वान वर्ग का मैं सदैव आभारी रहूँगा । जिन्होंने समय-समय पर मेरी समस्याओं का समाधान किया और मुझे सही निर्देशन देकर लाभान्वित किया । इन विद्वानों में डा0 रामशकल पाण्डेय, डा0 अहलूवालिया, डा0 शर्मा, डा0 चौबे, डा0 एस0 कुशाद आदि प्रमुख हैं ।

अपने प्राचार्य श्री सी0एम0 उपाध्याय का भी मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने थोड़ा सा भी निष्क्रिय देखकर शोधकार्य में समय-समय पर सक्रिय रहने हेतु मुझे प्रेरित एवं बाध्य किया ।

अपने परिवार के समस्त सदस्यों विशेषतः अपनी पत्नी श्रीमती सुनीता कंचन का भी मैं अंतःमन की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ जिसकी सतत् प्रेरणा एवं सहयोग से मैं इस शोधकार्य को परिणाम तक लाकर प्रस्तुत कर सका ।

राजेश कंचन

शब्द – संक्षेप

1–	सा0छा0छा0	सामान्य छात्र-छात्रा
2–	सहा0जन0	सहारिया जनजाति
3–	बौ0 प्रति0	बौद्विक – प्रतिभा
4–	सामा0 आर्थि0	सामाजिक-आर्थिक स्तर
5–	वि0 समायो0	विद्यालय समायोजन
6–	मध्य0	मध्यमान
7–	प्रमा0वि0	प्रमाणिक विचलन
8–	वि0गु0	विचलन गुणांक
9–	ए0	शैक्षिक समायोजन
10–	एस0	साथी समायोजन
11–	जी0	सामान्य समायोजन
12–	टी0	शिक्षक समायोजन
13–	पी0	आत्मसंतोष समायोजन

शोध में प्रयुक्त तालिकायें

तालिका सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
5.13	प्रति0 सा0 छात्र-छात्रा समूह तथा स0 छात्र - छात्रा समूहों का टी0 अनुपात	125
5.14	प्रति0 सामान्य छात्र-छात्रा तथा सहा0 छात्र - छात्रा के वि0 समा0 स्तर का टी0 अनुपात	128
5.15	प्रति0 सा0 छात्र-छात्रा तथा सहा0 छात्र-छात्रा के वि0समा0 स्तर का टी0 अनुपात	130
5.16	विभिन्न परिवर्ती प्रकट करती सह-सम्बन्ध तालिका	133
5.17	समा0 उप विभाग सह-सम्बन्ध तालिका	139
5.18	वि0 समायोजन प्रतिशत प्रकट तालिका	141

शोध कार्य में प्रयुक्त रेखाचित्र

विषय-सूची

अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

(1) समस्या का आभास

(2) प्रतिभाशाली प्रत्यय

(3) बुद्धि परीक्षण इतिहास

(4) शाब्दिक भिन्नता

(5) अध्ययन आवश्यकता

(6) समस्या के उद्देश्य एवं परिकल्पना

(7) समस्या का स्पष्टीकरण

(8) अध्ययन की परिसीमायें

(9) अध्ययन की योजना एवं संगठन

प्रस्तावना

"आज शिक्षा की नवीन धाराओं से हमारी शिक्षा का ध्येय और अधिक परिवर्तनशील एवं क्रांतिकारी हो रहा है । इसमें संस्थागत मूल्य और प्रत्यावर्तित मूल्यों का समागम किया गया है जो भारतीय नागरिकों को संतुलित, समायोजित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में सहायक होता है " { गुप्ता, एच0जी0, 1968, पृष्ठ-(86)} अतः स्पष्ट होता है कि राष्ट्र में समग्र परिवर्तन शिक्षा प्रसार द्वारा ही हो सकता है, न कि किसी कानून या हथियारों से । इसी मान्यता को ध्यान में रखकर 1986, 1988, तथा 1992 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में "उपचारात्मक तथा विशिष्ट" शिक्षा का प्रारम्भ किया गया, ताकि कमज़ोर वर्ग के बच्चे उच्च शिक्षा और नौकरी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकें ।

26 जनवरी 1950 को हमारे देश का संविधान लागू हुआ । इसमें समाज के कमज़ोर वर्ग (आर्थिक तथा शैक्षिक) अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के उत्थान का संकल्प है । इसकी धारा-46 में स्पष्ट निर्देश है कि राज्य समाज के कमज़ोर वर्गो विशेषकर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों की रक्षा के लिए विशेष ध्यान देगा तथा सामाजिक अन्याय एवं आर्थिक शोषण से उनकी रक्षा करेगा । संविधान की धारा-340 में राष्ट्रपति को यह अधिकार भी दिया गया है कि वह संविधान लागू होने के एक वर्ष के अंदर एक ऐसे आयोग का गठन करेगा जो समाज के कमज़ोर वर्गो के उत्थान और उनको दिये जाने वाले अनुदानों के विषय में सुझाव दे ।

यू0एन0 ढेवर कमीशन (1961), कोठारी आयोग (1966), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1979), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), राममूर्ति समीक्षा समिति (1990), जर्नादन रेड्डी समिति (1992) आदि के द्वारा सम्पूर्ण देश में प्लान ऑफ एक्शन को लागू कर दिया गया । फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षारत जनजातियों के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के विकास को अनदेखा किया जा रहा है ।

प्रत्येक राष्ट्र अपनी साक्षरता और सामाजिक मान्यताओं से पहचाना जाता है । राष्ट्र की सुदृढ़ता नागरिकों की साक्षरता और सरकार की जागरूकता पर निर्भर रहती है । प्रत्येक नागरिक इसी जागरूकता से स्वयं के, समाज के, और राष्ट्र के विकास में सहयोग देता है । अतः आज भारत देश को राष्ट्र की सभी प्रतिभाओं में नवीन स्फूर्ति, नवीन सोच और राष्ट्र के प्रति सकारात्मक सोच को विकसित करने की आवश्यकता है; ताकि सहारिया जनजाति के बच्चे भी राष्ट्र के विकास में तन-मन और धन से सहयोग कर सकें । परिणाम स्वरूप हमें जनजातियों के सामाजिक पर्यावरण में परिवर्तन लाना होगा । ''रॉस'' (1937, पृष्ठ-52) ने लिखा है कि ''जिस सामाजिक पर्यावरण में मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, उससे पृथक रहने पर उसकी वैयक्तिकता का कोई मूल्य नही रह जाता है और उसका अस्तित्व निरर्थक हो जाता है'' । अतः जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों के विकास के द्वारा भारतीय वैयक्तिता का पिछड़ापन दूर किया जा सकता है, जिस हेतु शिक्षा को एक सशक्त माध्यम बनाना होगा ।

आज़ विश्व भर में जनतंत्र की भावना पुष्पित तथा पल्लवित हो रही है । इसके पीछे शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है । शिक्षित वर्ग ही समाज को चेतनता तथा जागरूकता प्रदान करता है ताकि उसके सभी नागरिक मिलकर कर्तव्यनिष्ठ सरकार का गठन कर सकें । इसप्रकार से शिक्षा की सम्पन्नता से जन-साधारण अपनी सूझबूझ, बुद्धि, विवेक तथा कर्तव्य भावना को जनहित में लगायेगा । शिक्षा आयोग (1964-65) में लिखा है कि '' कोई भी राष्ट्र केवल पुलिस, सेना पर ही अपनी सुरक्षा का भार नहीं सौंप सकता है, बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा बड़ी सीमा तक इसकी जनता की शिक्षा, गतिविधियों के बारे में उसकी जानकारी, चरित्र और उसके अनुशासन की भावना तथा सुरक्षात्मक उपायों में प्रभावकारी रूप से भाग लेने की उसकी योग्यता पर निर्भर करती है ।''

प्रसिद्ध इतिहासकार ''हायनवी'' ने लिखा है ''एक सभ्यता तभी तक जीवित रहती है, जब तक वह अपने सामने आई हुई समस्त चुनौतियों का उत्तर

देने में समर्थ होती है । अतः भारत देश को अपना विकास समग्र के रूप में करना है । यह समग्र प्रांतवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, वर्गवाद और जनजातिवाद के द्वारा विघटित हो रहा है । आज़ समस्त विश्व 21वीं सदी में प्रवेश करके मंगल ग्रह पर बसने की कोशिश कर रहा है और हम अपनी जनजाति में शिक्षा को सार्वभौम नहीं बना पा रहे हैं । यह कहना कठिन है कि यह दुष्प्रभाव समाज की अलगाववादी नीति के कारण है या सरकार की नीति के कारण । इसमें शोधकर्ता को जनजातियों के प्रतिभाशाली बच्चों का आंकलन और सही दिशा का अभाव ही प्रतीत हो रहा है, जिससे वे समाज के साथ अपना समायोजन नवीन परिवर्तन के साथ ठीक से नही कर पा रहे हैं ।

किसी भी राष्ट्र के प्रजातांत्रिक मूल्यों, आदर्शों और नैतिकता का विकास इसके प्रतिभा सम्पन्न कुछ विशिष्ट विशेषज्ञों की सोच, व्यवहार प्रणाली तथा नये व पुराने ख्यालों के बीच समायोजन से होता है । ये लोग अपनी अन्तर्दृष्टि से नागरिकों की भावी चाहत तथा राष्ट्र की मांग का आंकलन पहले ही कर लेते हैं ताकि उनको पूरा करके जन-कल्याण किया जा सके । अतः जनतंत्र के विकास तथा उन्नयन के लिए उच्च स्तर के नेतृत्व की विशेष आवश्यकता रहती है, जिसका प्रादुर्भाव राष्ट्र के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के विकास के द्वारा ही सम्भव हो सकता है । आज़ प्रत्येक देश जनतंत्रीय राष्ट्र की सरकार के सपने देख रहा है और संसार के अधिकांश राष्ट्र जनतंत्रीय शासन प्रणाली को अपना रहे हैं । इस प्रणाली में सभी प्रतिभाशाली नागरिकों को विकास के समुचित और स्वतंत्र अवसर मिलते हैं । संविधान तथा सरकार का यह दायित्व हो जाता है कि प्रत्येक नागरिक को विकास तथा उन्नयन के समान अवसर दे; फिर वे अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके राष्ट्र को सुसम्पन्न बनायें । इसके बाबजूद उनको विभिन्न क्षेत्रों में रचनात्मक बच्चों की प्रतिभा, प्रतिभाशाली बच्चों का शिक्षा क्षेत्र से चयन करना, प्रतिभाओं की समस्याओं का निदान करना आदि रूप से क्रियाशील रहना चाहिए, ताकि राष्ट्र की प्रतिभाओं का अधिक से अधिक विकास किया जा सके ।

इसप्रकार से स्पष्ट होता है कि संविधान को लागू हुए 54 वर्ष हो चुके हैं और समाजवादी जनतंत्र की सरकारों ने जनजाति समूहों की प्रतिभाओं के विकास के लिए व्यावहारिक सोच में आवश्यक परिवर्तन नही किये हैं । परिणाम स्वरूप उनके समूह की प्रतिभाओं का विकास समाज विरोधी कार्यो की ओर मुड़ जाता है या फिर उनका ह्रास हो जाता है जिसे ''कुन्द'' शब्द के रूप में कहा जा सकता है । दतिया प्रक्षेत्र पुराने बुन्देलखण्ड का सशक्त क्षेत्र रहा है जिसमें निवास करने वाली सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों का चयन हो, उनकी विशेष शिक्षा हो ; ताकि वे अपनी प्रतिभा का समुचित विकास कर सकें ।

प्रतिभाशाली शब्द का अभिप्राय

प्रतिभाशाली बच्चों पर कोई भी शोध कार्य उस समय तक पूरा नहीं माना जा सकता है जब तक इस शब्द का अभिप्राय स्पष्ट न हो जाये । मानव विकास के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति अपनी बौद्गिक क्षमताओं तथा योग्यताओं के कारण एक दूसरे से भिन्नता स्थापित करता रहा है । इस हेतु मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि वितरण की उच्च सीमा तथा निम्न सीमा को निश्चित किया है । बुद्धि की उच्च सीमा को मानसिक मेधा या प्रतिभाशाली माना गया है । प्रतिभाशाली व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि 140 से ऊपर की मानी गयी है (शर्मा 1968)। मनो वैज्ञानिकों ने विशिष्ट मेधावी व्यक्तियों का अध्ययन तीन प्रकार से किया है :-

(1) प्रतिभाशाली व्यक्तियों की बुद्धि के प्राक्कलन द्वारा जो वर्षो पहले हुए थे,

(2) बचपन से लेकर प्रौढ़ावस्था तक के मेधावी बच्चों के कार्यो के मूल्यांकन द्वारा,

(3) विद्यालय में पढ़ने वाले अति उत्कृष्ट बच्चों की समस्याओं के अध्ययन द्वारा (मार्गन - 1966)

प्रतिभाशाली नेता तथा लेखक–

संसार में प्रसिद्धि पा चुके व्यक्तियों के कार्यो का मूल्यांकन आज़ हम स्टेनफोर्ड–बिने परीक्षण के द्वारा कर सकते हैं । हमें "पढ़ने की आयु", "बोलना कब सीखा", "गणितीय समस्यायें कितनी आयु से हल करने लगा", तथा "अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को कब सीखने लगा था" ज्ञात हो तो हम इनके कार्यो की तुलना स्टेनफोर्ड–बिने परीक्षण के मानकों से कर सकते हैं । ऐसा अध्ययन 1926 में कैथरायन कॉक्स ने प्रसिद्ध व्यक्तियों (1450–1850) का किया था । आपने उनके विषय में इतिहास विधि से जानकर सूचनायें एकत्रित की थीं । फिर इन सूचनाओं के आधार पर बुद्धि लब्धियों को ज्ञात किया जो 100 से 200 के परिसर में रहीं और उनका औसत लगभग 160 था । इसी तरह से जानस्टुअर्ट मिल, गोटे, मैकाले, पारस्कल, लाइबनीज तथा ग्रोरियस को 180 से अधिक बुद्धि लब्धियाँ प्रदान की गयी थीं ।

"टरमन" (1921) महोदय ने प्रतिभाशाली बच्चों का एक अध्ययन किया । आपने तथा आपके सहयोगियों ने ऐसे 1500 प्रतिभाशाली बच्चों का पता चलाया जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से 200 तक थी । इसके पश्चात उन्होंने उनसे यह जानकारी प्राप्त की कि उनमें से कितने बच्चे उतने ही प्रतिभा सम्पन्न हैं, जितने बचपन में थे । आपने सभी सूचनायें एकत्रित करके अपनी रिपोर्ट 1947 तथा 1959 में प्रकाशित की ।

रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश बच्चे आशा के अनुरूप ही निकले । इन प्रतिभाशाली बच्चों में 1/3 बच्चे व्यावसायिक लोगों के थे, 1/2 उच्चतर व्यापारी वर्ग के और 7 प्रतिशत बच्चे मजदूर वर्ग से थे । अतः स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली बच्चे सापेक्षतः उच्चतर सामाजिक–आर्थिक वर्ग से आते हैं । इनके विकास पर वंशानुक्रम तथा पर्यावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है ।

"टरमन" के प्रतिभाशाली बच्चों का प्रौढ़ावस्था में मूल्यांकन किया गया । 700 बच्चों में से 125 प्रौढ़ बच्चे अपने जीवन में उच्च स्तर पर पहुँचे

तथा उनके नाम "हू इज हू" में भी प्रकाशित हुए थे । इसप्रकार से निष्कर्षात्मक तौर पर कहा जा सकता है कि प्रतिभाशाली बच्चों ने सामाजिक तथा बौद्धिक कार्यो में अपना नाम प्रसिद्ध कर लिया था ।

"टरमन" तथा ओडेन (1959) ने बताया है कि प्रतिभाशाली बच्चे ऊँचाई, वज़न, तथा आकार में सामान्य स्तर से अधिक होते हैं वे समाजप्रिय, समायोजित तथा नेतृत्व-क्षमता में कुशल होते हैं । यदि प्रतिभाशाली बच्चे किसी प्रकार से अपराधी बन जाते हैं तो भी वे अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण विशिष्ट दर्ज़ा हासिल कर लेते हैं ।

"वेवस्टर" (1962) ने प्रतिभाशाली व्यक्त्वि को स्वाभाविक योग्यता या अभिरूचि माना है । "गैलाधर" (1975), "न्यूलैण्ड" (1976) ने प्रतिभा को आत्मसात गुण न मानकर समाज तथा संस्कृति पर छाप छोड़ने वाली योग्यता माना है ।

"रैना तथा गुलाटी" (1988) ने ल्यूसिटों के आधार पर प्रतिभाशाली योग्यता को पाँच भागों में विस्तार से प्रस्तुत किया है । एक प्रकार के प्रतिभाशाली वे व्यक्ति होते हैं जो किसी एक व्यवस्था में विशिष्ट दर्ज़ा प्राप्त कर लेते हैं । द्वितीय प्रकार में बुद्धि लब्धि के आधार पर प्रतिभा का वर्णन किया गया है । टरमन (1925) ने 140 बुद्धि लब्धि से ऊपर के बच्चों को प्रतिभाशाली माना है; जबकि नोटिस 1940 ने 110 बुद्धि लब्धि से ऊपर माना है । इसीप्रकार से "डेनिलसन" (1940) ने 125 बुद्धि लब्धि से ऊपर, बैकर (1944) ने 130 बुद्धि लब्धि से ऊपर के बच्चों को प्रतिभाशाली माना है । इसीप्रकार से भारतीय विद्वानों "भट्ट" (1966), "देव" (1969), "खान" (1967), भटनागर (1972), जोशी (1974), सिंह (1978), पाण्डा (1981), चौधरी (1983) आदि ने प्रतिभाशाली व्यक्ति का आधार "बुद्धि लब्धि" को ही माना है । प्रतिभाशाली शब्द के तृतीय प्रकार में हम सामाजिक अर्थ को लेते हैं जिसमें संगीत और कला के क्षेत्र को लिया जा सकता है । कला तथा संगीत योग्यता के लिये बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग वैज्ञानिक प्रतीत नहीं होता है । इस क्षेत्र के अंतर्गत "कटसि और

मोस्ले'' (1957), देहान एवं हैविंग हर्स्ट (1962) तथा ''विटी'' (1958) आदि की व्यापकता को ही प्रतिभाशाली कहा जा सकता है । परमेश (1972), चौधरी (1984), रामचन्दन (1984), तथा देशमुख (1984) आदि भारतीय विद्वानों ने प्रतिभाशाली उसे माना है जो संगीत, कला, चित्रकला और मशीनी योग्यता आदि में उच्च स्तरीय योग्यता तथा क्षमता रखता है ।

प्रतिभाशाली की चतुर्थ व्याख्या के अंतर्गत प्रतिशत को प्रमुखता दी गयी है । सांख्यिकी में सामान्य वितरण के आधार पर 68 प्रतिशत सामान्य 16 प्रतिशत निम्न स्तर तथा उच्च स्तर 16 प्रतिशत को उच्च बुद्धि लब्धि का माना जाता है । इसी आधार पर 3-5प्रतिशत मारलैड (1972), 85प्रतिशत से ऊपर देव (1969), भटनागर (1972) ने 75 प्रतिशत से ऊपर के बच्चों को प्रतिभाशाली माना है ।

सृजनशीलता के रूप में प्रतिभाशाली की पाँचवीं व्याख्या की गयी है । ''गिल्फर्ड तथा सहयोगी'' (1959-1960) में फैक्टर-एनालैसिस के आधार पर बौद्धिक योग्यताओं का बुद्धि परीक्षणों के द्वारा मापन किया था । आपने सृजनशीलता को प्रतिभा सम्पन्नता का प्रमुख आयाम माना है । ''गेटजल'' (1959), ''सिम्पसन'' (1960), ने भी सृजनशीलता को प्रमुखता दी है । भारतीय विद्वानों में रैना ''(1968, 1980), मिश्रा (1972), परमेश (1972), शर्मा (1972), रावत (1977), सिंह (1977), पाठक (1977) आदि ने उच्च स्तरीय सृजन शक्ति को ही प्रतिभाशाली की श्रेणी में माना है ।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने अध्ययन के आधार पर प्रतिभाशाली शब्द या प्रत्यय को अपने मानकों के आधार पर परिभाषित किया है । शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में प्रतिभाशाली बच्चों का चयन+1 प्रमाण विचलन को मध्यमान से ऊपर माना है । इस प्रकार से प्रतिभाशाली बच्चों तथा सामान्य बच्चों के बीच अंतर भी स्पष्ट होता है और किसी भी प्रकार का अवर्गीकरण भी नहीं होता है ।

बुद्धि परीक्षणों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

बुद्धि परीक्षणों के ऐतिहासिक विकास पर दृष्टि डालें तो मानक तथा वैज्ञानिक परीक्षणों का विकास सम्भवतः प्रयोगशालाओं में किये गये अन्वेषणों तथा अवलोकनों के आधार पर हुआ है । उनसे पता चला कि व्यक्तियों में पारस्परिक अंतर होता है । जर्मनी के अंदर वैज्ञानिकों ने व्यक्तियों की योग्यताओं तथा कार्यो की भिन्नता की ओर अध्ययन किया । इसप्रकार से 1879 में प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना "वुण्ट" महोदय ने "लिपजिंग" में की ।

लगभग इसी समय इंग्लैंड में वैयक्तिक भेदों के सम्बन्ध में अनुसंधान चल रहे थे । अतः "फ्रासिंस गाल्टन" (1822-1911) ने इस दिशा में कार्य किया । इस प्रकार से परीक्षण का इतिहास " गाल्टन " महोदय से जुड़ गया । आपने प्रयोगों हेतु एक प्रयोगशाला बनाई और परीक्षण सम्पन्न करने संबंधी सुझाव दिये । आपने सुझाव दिया कि यदि ऐसा परीक्षण किया जाये तो उससे यह साबित होगा कि व्यक्ति सांख्यिकीय पैटर्न अथवा वक्र के अनुसार अपना विभाजन करते हैं । कुछ व्यक्तियों में असाधारण प्रतिभा दिखाई देगी और कुछ में बहुत कम बुद्धि । फिर भी बहुत कुछ संख्या औसत बुद्धि के ईर्द-गिर्द होगी । इसी समय अमेरिका में जेम्स मैकीन कैटिल (1860-1944) सबसे बड़े मनोवैज्ञानिक माने जाते थे । वे भी वैयक्तिक भेद के मनोविज्ञान में रूचि रखते थे । इस सम्बन्ध में इनकी भी बहुत बड़ी देन है । आपने 1890 में "मेंटल टेस्ट्स एण्ड मेज़रमेंट" नामक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें "संवेदना प्रतिक्रिया काल गति" का वेग आदि पृथक-पृथक योग्यताओं के लिये एक ही परीक्षण दिये थे । इस कार्य का बहुत सा अंश इस विश्वास पर आधारित था कि बौद्धिक व्यवहार ऐसी पृथक-पृथक एकांश की सम्बद्ध क्रिया का जोड़ होता है, जिनका अलग-अलग अध्ययन करना तथा सही मापन करना लाभकारी है, 1880 में "कैटेल" महोदय "वुण्ट" की प्रयोगशाला में अध्ययन करने स्वयं जर्मनी गये थे ।

"एल्फ्रेड बिने" (1857-1977) को आधुनिक समय का बौद्धिक परीक्षण

का निर्माता माना जाता है। आपने स्मृति, ध्यान, अभ्यनुकूलन के अनेक अध्ययन किये और उनको ज्ञात हुआ कि ये अविच्छेद संचयों में कार्य करते हैं । वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि प्रत्येक घटक खण्ड को अलग-अलग मापने का प्रयत्न किया जाये तो सम्पूर्ण पैटर्न की एकता एवं स्वरूप नष्ट हो जाता है । उन्होंने कहा कि जिन क्रियाओं में विभिन्न कारकों की सम्मिलित क्रिया की आवश्यकता होती है उनमें बुद्धि को सर्वाधिक विश्वसनीय रूप से देखा जा सकता है । अतः बुद्धि का मापन उच्च स्तर शक्तियों के परीक्षणों द्वारा ही किया जा सकता है "स्किनर" (1964) । इसप्रकार से आपने उच्चतर शक्तियों में तर्क बोध, निर्णय, अभ्यनुकूलन, आग्रह तथा स्वालोचन आदि को माना था। इसप्रकार से आपने बुद्धि मापने के प्रयास 1904, 1905, 1908, और 1911 में विभिन्न संशोधनों के द्वारा किये । उनके इन प्रयासों से मानसिक आयु का प्रत्यय मनोवैज्ञानिकों को मिला ।

"बिने" महोदय के परीक्षणों का काफी प्रचार हुआ। 1911 में एच0एच0 गोडार्ड महोदय इन परीक्षणों को अमेरिका लाये । आपने 1908 की मापनी को 1911 में संशोधित कर प्रकाशित किया । इनके प्रयास से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा में मानसिक परीक्षण का कितना महत्व है । वर्ष 1916 में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर "लेविस एस0 टर्मन" महोदय ने " बिने-साइमन" परीक्षणों का संशोधन प्रकाशित किया । इसका नाम आपने "स्टेनफोर्ड बिने" मापनी माना । वर्ष 1937 में "टरमन" महोदय ने "मोड ए0 मैरिल" के सहयोग से एक और संशोधन प्रकाशित किया । इसी का पुनः संशोधन 1960 में हुआ ।

जर्मनी के "स्टर्न" मनोवैज्ञानिक ने 1912 में "सापेक्ष दीप्ति तथा हीनता" मानसिक आयु को कालिक आयु से भाग देकर निकाला । इसको "टर्मन" महोदय ने मान लिया और इसप्रकार से बुद्धि लब्धि का सूत्र निकाला । अतः यह स्पष्ट है कि मानसिक आयु या बुद्धि लब्धि का महत्व निरपेक्ष न होकर सापेक्ष होता है । वह मानसिक समूह तथा परीक्षण के समय उस समूह की विविध दशाओं के साथ सापेक्ष होता है "मन" (1956) ।

उपर्युक्त वर्णन से शोधकर्ता ने बुद्धि परीक्षणों की शिक्षा के क्षेत्र में

उपयोगिता को स्पष्ट किया है । इनके प्रयोग द्वारा मंद तथा उत्कृष्ट बच्चों का पता आसानी से चलाया जा सकता है । बुद्धि परीक्षण के द्वारा ज्ञात हुआ कि उच्च बुद्धि, मंद बुद्धि बच्चे की अपेक्षा अधिक स्वस्थ तथा शारीरिक शक्ति में श्रेष्ठ होते हैं ।

बुद्धि मापने के लिए व्यक्तिगत परीक्षण अधिक खर्चीले एवं श्रम साध्य साबित हुए । इनके प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षण तथा अधिक समय की भी आवश्यकता होती है । फलतः सामूहिक परीक्षणों का विकास 1916 के पश्चात प्रारम्भ हुआ । ''मेल विश्वविद्यालय'' के ''राबर्ट एम0 यकर्स'' को फ़ौज़ में सिपाहियों की बौद्धिक क्षमता मापने वाली समिति का अध्यक्ष बनाया । आपने एक मौखिक तथा एक अमौखिक दो परीक्षणों की रचना की । इन परीक्षणों के द्वारा काफी बड़े समूहों की परीक्षा एक साथ शीघ्रता से ली जा सकती थी और बड़ी आसानी से मूल्यांकन किया जा सकता था । इन परीक्षणों को क्रमशः ''आर्मी अल्फा'' तथा ''आर्मी बीटा'' परीक्षणों के नाम से जाना जाता है । आर्मी अल्फा का प्रयोग अंग्रेजी जानने वाले लोगों के लिए था और आर्मी बीटा परीक्षण अनपढ़ तथा अंग्रेजी न जानने वालों के लिए था ।

आज़ सामूहिक परीक्षणों का विकास प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के लिए हो चुका है । भारत देश में प्रत्येक राज्य की भाषाओं में भी विभिन्न परीक्षण विकसित किये गये हैं जिनका प्रयोग जिला मनोविज्ञान केन्द्रों के द्वारा बच्चों को व्यावसायिक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन में किया जाता है । आये दिन कक्षा की समस्याओं तथा शैक्षिक निष्पादन को जानने के लिए सामूहिक परीक्षणों का प्रयोग किया जा रहा है । बच्चों के प्रवेश में, विभिन्न विषयों के चयन में, बच्चों की कक्षोन्नति में तथा विद्यालय समायोजन आदि क्षेत्रों में सामूहिक परीक्षणों के द्वारा मानकों का निर्धारण करके विद्यालय तथा शिक्षा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं का समाधान करते हैं । इसी तरह से धीमी गति का अधिगम, पिछड़ापन, असामान्य बालक, समस्यात्मक बालक आदि का सामूहिक परीक्षण करके निदानात्मक उपायों को लागू करते हैं ताकि बच्चों का सामान्य विकास हो सके ।

अभिरूचि परीक्षण -

बच्चों के परीक्षणों में पाया जाता है कि कुछ बच्चे एकप्रकार की क्षमता में अच्छे होते हैं और कुछ अन्य क्षमताओं में । अतः बच्चों में वैयक्तिक भिन्नतायें होती हैं । शिक्षा के क्षेत्र में इसप्रकार के परीक्षणों का विकास बुद्धि परीक्षणों के साथ-साथ होना प्रारम्भ हो गया था । अतः इनके उपयोग के आधार पर इनको शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण कहा जाने लगा । अभिरूचि एक विशेष प्रकार के निष्पादन के लिए प्राकृतिक अथवा जन्मजात क्षमता की द्योतक है । लेकिन हम उसमें किसी कार्य निष्पादन का ही मूल्यांकन कर पाते हैं । यह निष्पादन व्यक्ति के अनुभव पर निर्भर रहता है। अभिरूचि मापन के द्वारा व्यक्ति की आगामी संभाव्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है । आगामी संभाव्यताओं की जानकारी लेकर विशेष प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति को सही तथा उपयुक्त शैक्षिक निष्पादन हेतु तैयार किया जाता है । इन अभिरूचि परीक्षणों के द्वारा व्यक्ति की जन्मजात क्षमताओं का उपयोग संगीत, यांत्रिकी और चित्रकला आदि में विशेष प्रशिक्षण के द्वारा सामान्य से उच्च स्तर का बनाया जाता है । आज इन अभिरूचि परीक्षणों का प्रयोग व्यावसायिक निर्देशन में विशेष रूप से किया जा रहा है ।

निष्पादन परीक्षण -

वस्तुतः सभी बुद्धि परीक्षण निष्पादन की माप करते हैं । फिर भी निष्पादन शब्द का प्रयोग उन्हीं परीक्षणों के लिए किया जाता है जिसमें समझदारी और भाषा की कम से कम आवश्यकता होती है । ये परीक्षण आधारभूत मनो वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की माप करते हैं । इनके अंतर्गत तर्क शक्ति, सम्बन्ध स्थापित करना आदि को महत्व दिया जाता है । ये किसी विशेष प्रकार की सांस्कृतिक अथवा शैक्षिक सुविधाओं पर निर्भर नहीं रहते हैं । ये ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि मापन करने में समर्थ होते हैं जो इतने छोटे छोटे हैं कि भाषा सीखने में असमर्थ होते हैं या शैक्षिक सुविधा के अभाव में अथवा दुर्बल मनस्कृता के कारण निरक्षर हैं तथा जो केवल विदेशी भाषा जानते हैं "मन" (1956) । अतः शोधकर्ता का निष्कर्ष है

कि निष्पादन परीक्षणों का विकास "स्टेनफोर्ड-बिने" की असफलता के परिणाम स्वरूप हुआ । उस समय निष्पादन परीक्षणों का प्रयोग आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के आदिवासियों की बुद्धि की तुलना करने के लिए किया गया "पोरटीज" (1937)। इसके साथ ही कुछ निष्पादनों का प्रयोग यूरोपीय समुदाओं की तुलना करने के लिए भी किया गया "क्लाइनवर्ग" (1935) । कुछ ऐसे भी हैं जिनका उपयोग समाज से अलग रहने वाले पहाड़ी तथा सामान्य सुविधाओं में प्राप्त बच्चों की बुद्धि की तुलना करने के लिए किया गया है "शेरमन" (1932) । इसप्रकार से सरलतम निष्पादन परीक्षण वे माने जाते हैं जिनको शिशुओं की बुद्धि का मापन करने के लिये काम में लाया जाता है ।

" गिफ्टेड टेलेण्टेड और जीनियस " : शाब्दिक भिन्नता

शोधकर्ता ने बौद्धिक क्षमता के अध्ययन के दौरान यह पाया कि प्रतिभाशाली शब्द को अंग्रेजी भाषा में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षा शास्त्रियों ने "गिफ्टेड, टेलेण्टेड तथा जीनियस" आदि समानार्थी शब्दों में प्रयोग किया है । अतः शोधकार्य को अति स्पष्ट तथा सकारात्मक बनाने के लिए इन समानार्थी शब्दों के प्रयोग तथा इनके कार्य क्षेत्रों का वर्णन करना उपयुक्त प्रतीत होता है ।

कुछ शोधकर्ताओं ने इन शब्दों का प्रयोग समान अर्थो में तथा कुछ ने भिन्न अर्थों में प्रयोग किया है । "न्यूलैण्ड (1915)" ने "गिफ्टेड" शब्द का प्रयोग 51 से अधिक विभिन्न विशेषताओं के लिए प्रयोग किया है । यह निष्कर्ष आपने 126 शोध रिपोर्ट के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया । "पासो" (1955) ने टेलेण्ट की व्याख्या करते हुए माना है कि वह व्यक्ति के द्वारा किसी महत्वपूर्ण उपलब्धता का द्योतक होता है, लेकिन उसके क्षेत्र सीमित होते हैं, जैसे - शैक्षिक क्षेत्र, भाषा क्षेत्र, सामाजिक विज्ञान क्षेत्र, गणितीय क्षेत्र, संगीत कला क्षेत्र आदि । "टरमन" (1925) महोदय ने गिफटेड शब्द का प्रयोग जीनियस के रूप में किया है । इस प्रयोग की विभिन्न विद्वानों द्वारा आलोचना की गयी क्योंकि जिनकी बुद्धिलब्धि 180 तथा ऊपर होती है वे ही व्यक्ति जीनियस की श्रेणी में माने जाते हैं ।

फ़ैडरिक'' (1948) ने गिफ्टेड, टेलेण्टेड तथा जीनियस को योग्यता प्रकृति के रूप में परिभाषित किया है । ये लोग बिना अतिरिक्त प्रयास के उच्च स्तरीय उपलब्धि को प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं । इस योग्यता प्रवृत्ति का विकास संस्कृति से न होकर जन्मजात होता है । ''जीनियस'' व्यक्तित्व के द्वारा इसप्रकार के खोज़ कार्य सम्पन्न होते हैं जो सम्पूर्ण संसार को प्रभावित करते हैं अर्थात लाभदायक होते हैं । ''टैलैण्ट'' व्यक्तित्व इनकी अपेक्षा कम गुणात्मक कार्यो को निष्पादित करते हैं, जिनका प्रभाव समाज तथा विश्व पर कम झलकता है । ''गिफ्टेड'' व्यक्तित्व को बौद्धिक क्षमता के एक गुण के रूप में माना जा सकता है, लेकिन इसको श्रेष्ठता, उत्तमता का दर्ज़ा नही दिया जा सकता है ।

''जीनियस'' का प्रयोग एक विशेष प्रकार के अपूर्व मानसिक तथा विशिष्ट प्रकृति के व्यक्तित्व के लिए किया जा सकता है जो पूर्व के कार्यो का अनुकरण न करके नवीनता की खोज करता है एक अन्य मत के आधार पर कहा जा सकता है कि ''जीनियस'' का जन्म सामाजिक शक्तियों के द्वारा होता है । सामाजिक परिस्थितियाँ व्यक्ति को संघर्ष की शक्ति प्रदान करती हैं और वह एक नवीन व्यक्तित्व का प्रणेता बन जाता है (लैंगे-इचवोम-1932)।

''प्रतिभाशाली बच्चे'' नामक पुस्तक में ''फ्रीहिल'' महोदय ने ''गिफ्टेड'' को अमूर्त, सामान्यीकरण, प्रदर्शन तथा रिप्रेजेन्ट आदि के द्वारा प्रतीकों में रत माना है । ''जीनियस'' का कार्य क्षेत्र विस्तृत, मौलिक तथा समयबद्धता से बाहर का होता है जो सम्पूर्ण मानवता का हित करता है । ''टैलेण्ट'' व्यक्तित्व का कार्य क्षेत्र, सीमित तथा विशिष्ट उपयोगिता वाला होता है । जिसका प्रयोग किसी क्षेत्र विशेष की समस्या का समाधान करने से होता है । अतः कहा जा सकता है कि ''गिफ्टेड'' बौद्धिक उच्चता के लिए जाने जाते हैं और ''जीनियस'' विशिष्ट तथा मौलिक उपलब्धि के लिए जाने जाते हैं, जिसका उपभोग सम्पूर्ण मानवता के लिए होता है ।

''सैमुअल लेकाक'' (1957) ने ''गिफटेड'' तथा ''टेलेण्टेड'' शब्दों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि ''गिफ्टेड'' में उच्च सामान्य बौद्धिक क्षमता पाई

जाती है । जबकि "टैलेण्ट" में क्षेत्र विशेष में प्रशिक्षण के पश्चात विशेष उपलब्धि प्राप्त होती है ।

"रेमण्ड" महोदय ने "गिफ्टेड" तथा "टैलेण्टेड" की व्याख्या में लिखा है कि बच्चे अपने विद्यालय स्तर पर सम्पन्न होने वाले क्रियात्मक तथा बौद्धिक निष्पादनों में सृजनात्मकता, बौद्धिकता, विशिष्ट शैक्षिक स्तर, नेतृत्व, विशिष्ट कलायें तथा स्वाभाविकता आदि विशिष्टताओं को प्रदर्शित करते हैं, तथा अन्य बच्चों से अधिक उत्तरदायित्वों को पूरा करते हैं ।

अमेरिका के शिक्षा कमिश्नर ने "गिफ्टेड" तथा "टैलेण्टेड" की विशिष्ट रूप से व्याख्या करते हुए लिखा है कि ये दोनों व्यक्तित्व समानार्थी होते हैं जो भाग्यवश विशिष्ट योग्यताओं और क्षमताओं के कारण उच्च निष्पादनों में सफल होते हैं । ये लोग सामान्य शिक्षा तथा प्रशिक्षण के मिलने के बाबजूद भी अन्य बच्चों के निष्पादन से उच्चतम की भिन्नता स्थापित करते हैं । इसके साथ ही ये लोग स्वयं के प्रति तथा समाज के प्रति किये गये स्वयं के कार्यो के लिए उत्साहित प्रतीत नहीं होते हैं । इसी तरह से शिक्षा के शब्दकोष में "टैलेण्ट्स" को एक विशेष क्षेत्र में निष्पादित योग्यता या क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है जिसका प्रदर्शन किसी कला या कलाओं के रूप में होता है ।

"एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका" ने "टैलेण्टेड" तथा "जीनियस" को गुणात्मक तथा मात्रात्मक रूप से भिन्न माना है । "टैलेण्टेड" किसी विशेष कार्य या कौशल को अतिशीघ्र तथा सरल तरीके से आत्मसात कर लेता है जबकि "जीनियस" स्वाभाविक तथा सृजनात्मक रूप से किसी कार्य या कौशल को जन्म देता है, जिससे सम्पूर्ण मानव जाति लाभान्वित होती है ।

"पार्थसारथी" महोदय ने अपने शोध कार्य में "टैलेण्टेड" व्यक्ति उसको माना है जो अतिरिक्त रूचि प्रदर्शित करता है, अधिक आत्मसात करता है और अधिक सुख प्राप्त करता है, जैसाकि अन्य नहीं कर पाते हैं । व्यक्ति का यह अतिरिक्त उत्साह या रूचि ही इसके टैलेण्ट का द्योतक होता है । "हिल्ड्रैथ" (1966)

का विचार है कि जो व्यक्ति शैक्षणेत्तर क्रियाओं, खेलकूद, नाटक, नाच-गाने, संगीत और क्राफ्ट आदि विधाओं में विशिष्ट निष्पादन करता है, "टैलेण्टेड" होता है । अतः निष्कर्षात्मक रूप से कहा जा सकता है कि "टैलेण्टेड" बच्चा वह कहलाता है जो कुछ विशेष क्रियाओं में अपने साथियों की अपेक्षा उच्च स्तर का सम्पादन करता है ।

"बर्ट" (1962) ने बुद्धि लब्धि के आधार पर प्रतिभाशाली बच्चों को परिभाषित किया है । आपने बुद्धिलब्धि के आधार पर 125 प्रतिभाशाली बच्चों का चयन किया और पाया कि "टैलेण्टेड" बच्चों में शैक्षिक योग्यता, प्रत्यक्षात्मक क्षमता, सामाजिक सहयोग आदि में उच्च सृजनशीलता पायी जाती है । "गोयन" (1979) ने वर्णन किया है कि "गिफ्टेड" मौखिक सृजनशील होते हैं, जबकि "टैलेण्टेड" मौखिक सृजनशील नही होते हैं । अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "गिफ्टेड" बच्चे ही "टैलेण्टेड" और "जीनियस" होते हैं । अंतर दोनों में डिग्री का होता है । "टैलेण्टेड" व्यक्ति जिस क्षेत्र में कदम रखता है उसी क्षेत्र में उच्चतम स्तर की सृजनशीलता प्रगट कर देता है ।

प्रतिभाशाली बच्चों के अध्ययन की आवश्यकता

भारतीय मनीषियों, विदेशी दार्शनिकों तथा वर्तमान के विद्वानों द्वारा माना गया है कि राष्ट्र की समृद्धि तथा विकास उच्च प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा होता है । राष्ट्र के द्वारा इनकी प्रतिभा का विकास विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है ताकि आने वाली पीढ़ी के लोग इनसे प्रेरणा ले सकें और स्वयं को विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ बनाकर राष्ट्र तथा मानवता की सेवा कर सकें । यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है जब इनको प्रतिभा विकास के सही अवसर प्रदान किये जायें । प्रत्येक राष्ट्र की महानता प्रतिभाओं के विकास तथा विभिन्न क्षेत्रों में उनका सदुपयोग होने से मानी जाती है । ये लोग विभिन्न क्षेत्रों में अपनी बौद्धिक क्षमता, योजनाबद्ध क्रियाशीलता तथा रचनात्मकता के द्वारा राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान करते हैं । परिणाम स्वरूप मानव समाज का यह कर्तव्य होता है कि वह इनको उच्च सुविधायें और समृद्ध पर्यावरण दे ताकि इनकी क्षमता का पूर्ण

विकास हो सके ।

शिक्षा आयोग (1964-66) ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि हमारे राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र में उपयुक्त और कुशल व्यक्तियों की कमी होती जा रही है । इसका प्रभाव सम्पूर्ण देश की उन्नति पर पड़ रहा है । इस संदर्भ में "व्हाइट हैड" महोदय ने एक चेतावनी दी थी, "वर्तमान संसार में शासन निरंकुश होता जा रहा है । प्रत्येक जाति, जो प्रशिक्षित या कुशल प्रतिभा सम्पन्न को प्रमुखता नहीं देती है, नष्ट हो जाती है" इसप्रकार से शिक्षा आयोग ने भारत सरकार को देश की समृद्धि लाने के लिए प्रखर, बुद्धिमान, तथा प्रतिभाशाली लोगों के विकास के लिए चेताया है । इस प्रकार से सरकार सांस्कृतिक अवरोधों को समाप्त करके भारतीय संस्कृति का विकास एक सूत्र में करेगी । अतः यह आवश्यक होता है कि सरकार अपने संसाधनों के प्रति जागरूक रहे ताकि प्रत्येक व्यक्ति की योग्यताओं का विकास उनके अनुरूप हो सके । इतिहास इस आशय का गवाह है कि जो देश अपनी प्रखरता तथा प्रतिभा को विकसित करके सही रास्ते पर लगा देते हैं, उन देशों में आर्थिक अभाव कभी नहीं रहता है । "रैना" तथा गुलाटी"(1988) ने अपने शोधकार्य में वर्णन किया है कि "क्लावडी फ्यूज" का मत है कि रूस के व्यक्तियों ने थोड़े समय में और कुछ शोध कार्यो की सम्पन्नता द्वारा अपने देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया था । वहाँ की सरकार ने प्रतिभा सम्पन्न लोगों को उत्साहित किया और उन्होंने अपनी योग्यता से राष्ट्रीय कार्यक्रमों को उच्च स्तरीय बनाया ।" प्रतिभाशाली बच्चों के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "हेरॉल्ड लाइन" (1976) का मत था कि किसी भी राष्ट्र की उच्च आकांक्षायें उस राष्ट्र के प्रतिभाशाली बच्चों की देखभाल, उत्साह तथा उनकी तैयारी के पर्यावरण पर निर्भर करती है । ये लोग ही संसार को नेतृत्व प्रदान करते हैं और संसार को सुन्दरता या कुरूपता प्रदान करने का कार्य भी यही लोग करते हैं 'रैना" एवं "गुलाटी" (1988) ।

प्रत्येक संस्कृति रचनात्मक रूप से सुन्दरता बिखेरती है । राष्ट्र की रचनात्मकता का विकास तभी सम्भव होता है जब उसके नेतृत्व करने वाले

प्रतिभाशाली लोग उच्च आकांक्षा तथा नीति निर्माता हों । इसप्रकार से प्रखरता के द्वारा निर्णय लिये जाते हैं जो राष्ट्र की जनता को नियंत्रित तथा विकसित करते हैं । राष्ट्र की गरिमा में गिरावट तब आती है जब उसके प्रतिभा सम्पन्न लोग कम हो जाते हैं और नीति निर्धारण एक छोटे समूह के हित के लिये होता है न कि सम्पूर्ण राष्ट्र के । "लर्नर" (1962) महोदय का विचार है कि राष्ट्र की संस्कृति तभी उच्च शिखर पर स्थापित होती है जब उसके प्रतिभा सम्पन्न विशेषज्ञ एक दूसरे से सहयोग बनायें और अपनी कार्य क्षमता तथा कार्य कुशलता का राष्ट्र की समृद्धि में उपयोग करें ।

प्रतिभा सम्पन्न लोग प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं और इनके प्रकार भी बहुत पाये जाते हैं । भारत देश एक विकासशील देश है । इसको प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता है जो राष्ट्रीय आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं को पूरा कर सकें । यदि राष्ट्र को स्वतंत्र और समृद्धशाली बनाना है तो पृथ्वी, आकाश और समुद्री संसाधनों का दोहन करना, राष्ट्र के लिये उनकी उपादेयता स्थापित करना तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं का सम्मान, हित स्थापित करना आवश्यक है । यह कार्य राष्ट्र के प्रतिभा सम्पन्न नागरिकों के विकास तथा देखभाल के द्वारा ही सम्भव बनाया जा सकता है । अतः हम कह सकते हैं कि प्रतिभाशाली और बुद्धिमान लोग राष्ट्र के उर्वरक, विचार श्रृंखला निर्माता, और समय का मूल्यांकन करके कार्य करने वाले होते हैं । इसलिए सरकार को जनतंत्र के विकास के लिए प्रतिभाओं की योग्यता को विकसित करना आवश्यक होता है ।

"वोल्फ" (1954) ने लिखा है कि प्रत्येक राष्ट्र के प्रतिभा सम्पन्न नागरिक उसकी पूँजी होते हैं । यही प्रतिभा सम्पन्न मस्तिष्क भविष्य में वैज्ञानिक खोज़ करते हैं, भविष्य की कला एवं संस्कृति का विकास करते हैं, भविष्य की राजनीति को निश्चित करते हैं तथा तकनीकी और सामाजिक संगठनों का विकास करके राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करते हैं । अतः व्यवहारिक समस्या तब उत्पन्न होती है जब इनकी क्षमताओं और योग्यताओं के विकास के लिए उचित पर्यावरण तथा संसाधन राष्ट्र के द्वारा प्रदान नहीं किये जाते हैं । आज विकसित देशों ने अपने

देश की प्रतिभा का सदुपयोग साक्षरता प्रसार, रोज़गार परक शिक्षा, सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति, तथा वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में किया है । अतः निष्कर्षात्मक रूप से कहा जा सकता है कि प्रतिभाओं का विकास करना, राष्ट्र का सबसे अहं उत्तरदायित्व होता है ।

आज सम्पूर्ण संसार के समक्ष विकासशील राष्ट्र भारत ऊँचा सिर उठाकर तभी खड़ा हो सकता है जब वह अपने प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की परवरिश उत्तम तथा विशेष सुविधाओं के साथ करे । इसप्रकार से आत्मविश्वास भारत की आवश्यकता बन जायेगा, ताकि वह अन्य राष्ट्रों के समक्ष अपने प्रभाव तथा दबाव को स्थापित करेगा । आत्मविश्वास का विकास हमें प्रत्येक क्षेत्र में मान्यता तथा स्वतंत्रता स्थापित करने में सहायता देता है । इसप्रकार से कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, तकनीकी क्षेत्र, दूरसंचार क्षेत्र, परिवहन क्षेत्र तथा सुरक्षा क्षेत्र आदि में हमारा संतुलित विकास होगा, जो राष्ट्र की गरिमा को अन्य राष्ट्रों के समक्ष स्थापित करेगा । इन सब क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धियाँ लाने के लिए हमें अपने प्रतिभावान नागरिकों को विशिष्ट भूमिकाओं में विकसित करना होगा, ताकि ये लोग अपने उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली तथा पूर्ण क्षमता के साथ पूरा कर सकें । इसप्रकार से यह राष्ट्र की जिम्मेदारी बन जाती है कि वह अपने प्रतिभाशाली नागरिकों की प्रतिभा का प्रयोग केवल राष्ट्रहित में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव हितों के लिए करे । इसके साथ ही साथ राष्ट्र को एक क्रमबद्ध योजना अपनी प्रतिभाओं के विकास के लिए तैयार करना चाहिए, जिससे राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित बना रहे । अतः जैसे भी सम्भव हो राष्ट्र को अपनी प्रतिभाओं के विकास के लिए प्रारम्भिक अवस्था से सुविधाओं का प्रयोग योजना और समृद्ध पर्यावरण का विकास करना ही चाहिए ।

आज भारत राष्ट्र की सरकार ''संविद सरकार'' के द्वारा प्रशासन कर रही है, जिसमें कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, वाणिज्य वर्ग, कृषि वर्ग, तकनीकी एवं औद्योगिकी तथा व्यापार, शिक्षा आदि का विकास एवं प्रसार किया जा रहा है, जिसके लिये प्रतिभा सम्पन्न नागरिकों की आवश्यकता है । इस हेतु सरकार द्वारा विभिन्न

योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है । प्रथमतः सरकार प्रतिभाओं का चयन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं द्वारा करती है । फिर उनको विभिन्न विषय विशेषज्ञों के द्वारा परीक्षा करके विशिष्ट शिक्षा दी जाती है, ताकि उनका विकास राष्ट्र की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जा सके ।

अध्ययन की उपयोगिता –

वर्तमान मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि संसार में शक्ति के स्रोत कम हैं, लेकिन मानव मस्तिष्क की शक्ति असीमित है । आज यह ज्वलंत प्रश्न है कि हम अपने प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की बौद्धिक क्षमता का प्रयोग किस प्रकार से करें, ताकि वे मानव समाज की सेवा करते हुए स्वयं का सही विकास कर सकें । यदि इनको शिक्षा के द्वारा संतुष्ट न रखा गया तो इनका विकास सामान्य स्तर तथा सामान्य से कम स्तर तक ही हो पाता है ।

आज विदेशों में कार्यरत भारतीय प्रतिभाशाली अपना ही नहीं, अपने राष्ट्र का नाम प्रसिद्ध कर रहे हैं । इसका मुख्य कारण भारतीय प्रतिभा नये-नये चैलेंज स्वीकार करके उनका समाधान ही नहीं करती बल्कि उनमें नवीनता, वैज्ञानिकता तथा मानवीयता लाती है, जो सार्वभौम हितों की कसौटी होती है । "टॉरेंस" (1969) का मत है कि 12-14 वर्ष आयु के प्रतिभा सम्पन्न बच्चे काल्पनिक, कलात्मक, संगीत और मशीनी आदि क्षेत्रों में उच्चतम क्रियाशीलता दिखलाते हैं । ये लोग स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहते हैं, लेकिन उनके पास अपनी समस्यायें रहती हैं । वे अपनी निर्णय क्षमता से लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं, लेकिन उनको घर और विद्यालय किसी में भी प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है । अतः उनमें निराशा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं और धीरे धीरे आत्मविश्वास की कमी भी होने लगती है । "देशमुख" (1984) का मत है कि प्रतिभाशाली बच्चों में विशेष सूक्ष्म शक्ति तथा विशिष्ट बहुमुखी स्वाभाविक सृजन शक्ति होती है जो उन्हें बिना थकाये लगातार कार्य करने की प्रेरणा देती है ।

प्रतिभाशाली बच्चों में विशेष मानसिक क्षमता होती है जो उनकी उत्सुकता

को आसानी से संतुष्ट नहीं होने देती है । परिणामस्वरूप वे नये से नये चैलेंज को स्वीकारते हैं । प्रस्तुत चैलेंज ही नये कार्यो को जन्म देते हैं जिन्हें शोध आविष्कार आदि रूपों में माना जाता है । अतः इनकी प्रतिभा का बहिष्कार न करके हमें स्वीकार करना चाहिए । ये लोग "काम्पलैक्स एसोसियेटिव मैथड" तथा "स्वविकसित विधि" के द्वारा निरपेक्ष सामान्यीकरण नियम और स्वतंत्र अध्ययन को पसंद करते हैं । सामान्य तौर पर निगमन तथा आगमन विधि का प्रयोग न तो शिक्षक ही करता है और न सामान्य छात्र-छात्रा ही, लेकिन ये लोग खोज़ प्रवृत्ति के कारण अपने अध्ययन का आधार सारांश दृष्टि (सिनोप्टिक विजन) को बनाते हैं । जब इनके शिक्षक कक्षा में बिना नवीनता प्रकट किये प्रतिदिन के सामान्य शिक्षण का प्रयोग करते हैं तो ये लोग चिड़चिड़ाहट प्रकट करते हैं और स्वयं को थका-थका सा महसूस करते हैं । अतः ये लोग जानबूझकर धीमी गति से सीखने के लिए बाध्य हो जाते हैं और सामान्य बच्चों के साथ ही चलना प्रारम्भ कर देते हैं । अतः इनके मस्तिष्क की क्रिया "हैमेस्फिरिक" का प्रशिक्षण धीमा होकर इनके उपयुक्त विकास पर प्रभाव डालता है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली इनके प्रतिभाशाली मस्तिष्क की आवश्यकता की पूर्ति करने में सफल नहीं हो पा रही है । इसप्रकार का शैक्षिक पर्यावरण इनके ज्ञानात्मक तथा अभिप्रेरणात्मक विकास में बाधा बनता है । ये लोग न तो अपने परिवार से सहयोग प्राप्त करते हैं, और न विद्यालय से प्रेरणा । अतः प्रतिभा सम्पन्न बच्चे अपनी मानसिक भूख को शांत किये बिना इन हानिकारक व्यवस्थाओं से छुटकारा पाना चाहते हैं (रथ,1975)।

प्रतिभाशाली बच्चे बौद्धिक चुनौतियों का सामना करना चाहते हैं ताकि वे स्वयं की योग्यता का सदुपयोग कर सकें तथा यथार्थता से परिचय प्राप्त कर सकें, लेकिन उनको अपनी बौद्धिक क्षमता के प्रयोग अथवा रचनात्मक कार्य करने के अवसर ही प्राप्त नहीं होते हैं । कभी-कभी ये लोग अपनी क्षमताओं पर अविश्वास कर बैठते हैं और अस्थिरता, चिन्ता तथा निम्नता के भाव में घिर कर प्रतिभाशाली बाल अपराधी तक बन जाते हैं । इनको सामाजिक बहिष्कार का भी सामना करना पड़ता है । इनको सामाजिक मान्यताओं में बँधकर रहना होता है

तथा ये स्वयं को अकेला महसूस करते हैं क्योंकि इनकी भावना को कोई समझ नहीं पाता है । एक विशिष्ट बालक अपने माता-पिता तथा साथियों से सहयोग चाहता है, ज्ञानात्मक सृजनशक्ति हेतु सामाजिक स्वीकृति के रूप में पुनर्बलन चाहता है, और उत्साहवर्द्धन चाहता है ताकि वह अपनी क्षमता का राष्ट्र के विकास में रचनात्मक प्रयोग कर सके (देशमुख 1984) । जब वे इस महत्वाकांक्षा को प्राप्त नहीं कर पाते हैं और अपने अग्रजों तथा साथियों से अस्वीकृति पाते हैं, वे स्वयं को सामाजिक रूप से असफल पाते हैं । अतः उनमें सामाजिक तथा संवेगात्मक कुसमायोजन के लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं ।

प्रत्येक राष्ट्र की धरोहर तथा उत्तरदायित्व प्रतिभा सम्पन्न बच्चे होते हैं । माता-पिता, विद्यालय तथा शिक्षकों का यह सामाजिक तथा कानूनी कर्तव्य होता है कि वे जनता में से ऐसे प्रतिभा सम्पन्न बच्चों का चयन करें, उनकी विशेषताओं को पहचानें और उनके विकास के लिए समृद्ध वातावरण बनायें ताकि वे अपनी मानसिक भूख का राष्ट्रहित में प्रयोग करें और सामाजिक विषमताओं से बच सकें । यदि हम ऐसा कदम उठा सकते हैं तो हम अपनी प्रतिभा को पोषित तथा विकसित करने में सफल होगें ।

आज सम्पूर्ण संसार जिस मंच पर खड़ा है वह विशेषज्ञों के विकास से जाना जाता है । विशेषज्ञ ही दुनियाँ के लिए विकास के नये से नये आयामों को खोज़ रहे हैं । अतः इनका विकास करना, पोषित करना और इनकी बौद्धिक भूख को शांत करने के लिए संसाधन जुटाना प्रत्येक मानव समाज का कर्तव्य होता है ताकि ये लोग अपनी योग्यता से वर्तमान चुनौतियों और आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें । अतः प्रत्येक मानव समाज को इनके लिए उच्च स्तर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए ।

अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य बनाये –

(1) प्रतिभाशाली सहारिया जनजाति के कक्षा-8 से कक्षा-10 तक बच्चों को ज्ञात करना ।

(2) प्रतिभाशाली सहारिया बच्चों का सम्बन्ध विद्यालय समायोजन के साथ ज्ञात करना ।

(3) प्रतिभाशाली सहारिया बच्चों का सम्बन्ध सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ ज्ञात करना ।

(4) कम उपलब्धि के अन्य कारणों को ज्ञात करना ।

अध्ययन की परिकल्पनायें

(1) सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं में यौन के आधार पर कोई अंतर नहीं होता है ।

(2) सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्रों में कोई अंतर नहीं होता है

(3) सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं में कोई अन्तर नहीं होता है ।

(4) सहारिया जनजातीय प्रतिभाशाली छात्रों तथा छात्राओं की बुद्धि और विद्यालय समायोजन में सार्थक सम्बन्ध होता है ।

(5) सहारिया जनजातीय छात्रों तथा छात्राओं की बुद्धि में सामाजिक- आर्थिक स्तर पर कोई अंतर नहीं होता है ।

(6) सहारिया जनजातीय छात्रों तथा छात्राओं के समायोजन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं होता है ।

(7) प्रतिभाशाली सहारिया जनजाति के छात्र - छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं होता है ।

समस्या का स्पष्टीकरण

शोधकर्ता जनजाति (सहारिया) के शैक्षिक स्तरों की गिरावट को देखकर भावनामय हो गया और उसने अपने शोध के विषय क्षेत्र के रूप में दतिया जिले का वह क्षेत्र चुना, जहाँ पर सहारिया जनजाति अधिक मात्रा में निवास करती है। इनके बच्चों की प्रतिभा को सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा समायोजन के रूप में अध्ययन करना आवश्यक माना । अतः शोध विषय "सहारिया जनजाति के विभिन्न शैक्षिक स्तरों के प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का कम उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन" का चुनाव किया ।

अतः शोध के अध्ययन विषय में आये तकनीकी शब्दों की व्याख्या तथा स्पष्टीकरण प्रस्तुत है -

1. सामाजिक-आर्थिक स्तर – शिक्षा के शब्द कोष में सामाजिक- आर्थिक स्तर का अभिप्राय निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है । सामाजिक-आर्थिक स्तर एक व्यक्ति या समूह की वह स्थिति होती है जिसके द्वारा उनकी सामाजिक तथा आर्थिक उपलब्धि का पता चलता है ।

शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय शब्दकोष ने भी सामाजिक-आर्थिक स्तर का अर्थ इसी भाव में लिया है । किसी व्यक्ति की उसके समूह समाज या संस्कृति में स्थिति का निश्चयीकरण, उसके संसाधन, धन, व्यवसाय, शिक्षा और सामाजिक वर्ग आदि के आधार पर होता है ।

2. समायोजन- शिक्षा के शब्दकोष ने समायोजन को निम्न अर्थो में परिभाषित किया है

(i) पर्यावरण या नई परिस्थिति के साथ व्यक्ति के व्यवहार या स्वीकारोक्ति की इच्छा ही समायोजन होती है ।

(ii) जीव के बाह्य या आंतरिक उद्दीपन की वह दशा जो उसके लिए सहायक या विरोधी या सामान्य होती है, समायोजन कहलाती है ।

(iii) जीव की परिवर्तित या ग्राह्य विशेषतायें जो उसके पर्यावरण की आवश्यकताओं को पूरा करती है, समायोजन कहलाती हैं ।

(iv) समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीवन, व्यक्ति या समूह अपनी सामाजिक शक्तियों के साथ समझौता करता है ।

(v) समायोजन व्यक्ति की वह विशेषता है जिसके द्वारा वह अपनी परिस्थिति के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है ।

(vi) जब कोई जीवन अपने मैकेनिज़्म में व्यवहार सुधार के लिए कोई परिवर्तन करता है तो उसे समायोजन कहते हैं ।

व्यावहारिक विज्ञान के शब्दकोष ने समायोजन का अर्थ निम्न शब्दों में व्यक्त किया है -

(i) समायोजन पर्यावरण के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है जिससे व्यक्ति स्वयं की आवश्यकता पूर्ति तथा सामाजिक और भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति स्वयोग्यता से कर सके ।

(ii) समायोजन के द्वारा पर्यावरण के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं ताकि व्यक्ति स्वयं में उन विचलनों तथा परिवर्तनों को विकसित कर सके जो वर्तमान आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में सहायक होते हैं ।

एनसाइक्लोपीडिया मनोविज्ञान में समायोजन का अर्थ निम्न रूप में परिभाषित किया गया है -

(i) समायोजन व्यक्ति के व्यवहार की एक दशा या स्थिति है जो एक तरफ जीव की आवश्यकता को प्रकट करती है और दूसरी तरफ पर्यावरण की मांग को । अतः इसे व्यक्ति और उसके उद्देश्यों या सामाजिक पर्यावरण के बीच स्थापित मधुर सम्बन्ध मान सकते हैं ।

(ii) समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मधुर सम्बन्धों को ग्रहण किया जा सकता है । सैद्वांतिक रूप से व्यक्ति के द्वारा प्रकट किया गया वह व्यवहार होता है जो पर्यावरण के साथ संतोषपूर्ण सम्बन्ध बनाता है और असंतोष को दूर करके अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करता है । इस प्रकार से समायोजन विशिष्ट परिस्थिति के साथ व्यक्ति की उपयुक्त प्रतिक्रिया होती है जिसका आधार जैवीय आंतरिक तथा बाह्य परिवर्तन हो सकते हैं ।

3. बुद्धि- शिक्षा शब्दकोष- के आधार पर ''बुद्धि'' (i) एक योग्यता है जिसका प्रयोग नवीन परिस्थिति और अनुभवों से सीखने में सफलता, शीघ्रता और ग्राह्यता के रूप में होता है । (ii) अनुभवों को एकत्रित एवं संगठित करने की क्षमता है । (iii) सामान्य तौर पर इसका प्रयोग एक समूह की निष्पादन क्षमता के मापन तथा परीक्षण में होता है ताकि वह शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में अपनी उपयोगिता को प्रकट कर सके ।

वैश्लर (1943) ने लिखा है, '' बुद्धि व्यक्ति की उस कुल क्षमता या सम्पूर्ण क्षमता को कहते हैं जिससे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, तर्कयुक्त चिंतन करता है तथा अपने वातावरण के साथ प्रभावयुक्त समायोजन करता है । ''इसी तरह से ''स्टोडार्ड (1943) के अनुसार बुद्धि उन कार्यो के करने की योग्यता है जिसमें कठिनाई, जटिलता, अमूर्तता, लक्ष्य प्राप्ति में अनुकूलन, सामाजिक मूल्य, मितव्ययता, तथा मौलिकता का उद्गम होता है और विशिष्ट परिस्थितियों में ऐसे कार्यो को बनाये रखने की योग्यता होती है जिनमें शक्ति को एकाग्र करने एवं संवेगात्मक बलों पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता होती है ।''

मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत व्यापक परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि बुद्धि समायोजन या अनुकूलता स्थापित करने की योग्यताय सीखने की योग्यता तथा अमूर्त चिंतन की योग्यता है । इस तरह से स्पष्ट होता है कि बुद्धि के लिए महत्वपूर्ण अंग मस्तिष्क है और विशेषकर उसका भी वह अंश जिसको कार्टेक्स कहा जाता है । मानव की बुद्धि के लिए मस्तिष्क का विकास इतना महत्वपूर्ण है कि

उसको भाग्य विधाता कहा गया है । इसके द्वारा जो बुद्धि सम्भव होती है वह मनुष्य को भाग्य का निर्माता बना देती है ।

मानवीय बुद्धि के निर्धारण में तीन बातों को महत्व दिया गया है-(i) व्यक्ति किस प्रकार का मस्तिष्क लेकर पैदा हुआ है । (ii) बचपन और किशोरावस्था में मस्तिष्क की वृद्धि / जन्म के समय से प्रौढ़ व्यक्ति का मस्तिष्क चार गुना बड़ा होता है और जटिल भी / बुद्धि का विकास मस्तिष्क की रचना की वृद्धि पर निर्भर रहता है । (iii) तीसरी महत्वपूर्ण बात है व्यक्ति को अवलोकन करने, सीखने और कार्य करने का कितना अवसर मिला है (मन, 1946) ।

"थार्नडायक (1927) ने बुद्धि को तीन भागों में व्यक्त किया है - सामाजिक बुद्धि जो व्यक्तियों को समझने में और व्यवहार करने में काम करती है मूर्त बुद्धि जो वस्तुओं को जानने और उनका उपयोग करने में सहायता करती है तथा अमूर्त बुद्धि जो शाब्दिक तथा गणितीय प्रतीकों को समझाने तथा उनका उपयोग करने का काम करती है । इस विचार के आधार पर बुद्धि (सामाजिक) समाज के साथ अनुकूलन स्थापित करने की योग्यता है, परिणाम स्वरूप व्यक्ति प्रभावशाली व्यवहार करता है, अच्छा व्यवहार करता है, मिलकर कार्य करता है और नैतिक कार्यो में हाथ बँटाता है । मूर्त बुद्धि के द्वारा व्यक्ति का व्यापारी बनना तथा मशीनों के साथ अनुकूलन स्थापित करना माना गया है । ऐसी बुद्धि का मालिक व्यक्ति कुशल कारीगर तथा इंजीनियरिंग क्षेत्र में प्रभाव स्थापित करता है । अमूर्त बुद्धि के द्वारा व्यक्ति अपने को प्रतीकात्मक चिंतन के साथ अनुकूलन करता है । जो बच्चा स्कूल में पढ़ने-लिखने में रूचि तथा प्रतीकों के रूप में आने वाली समस्याओं को हल करने की क्षमता रखता है,अमूर्त बुद्धि में सक्षम होता है ।

बुद्धि के संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों के उपर्युक्त विचारों से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि बुद्धि एक प्रकार का निष्पादन है जैसे- सीखने की, अमूर्त चिंतन की, नवीन परिस्थितियों में अपने ज्ञान को उपयोग में लाने की, तथा समस्याओं को हल करने की योग्यता है ।

अध्ययन की परिसीमायें

प्रस्तुत अध्ययन को शोधकर्ता ने न्यादर्श, क्षेत्र तथा विश्लेषण के आधार पर निम्न प्रकार से परिसीमित किया है -

1- न्यादर्श -

(अ) अध्ययन के लिये दतिया जिले के विद्यालयों में शिक्षारत कक्षा-8 9 एवं 10 के बच्चों को लिया गया है ।

(ब) शोध कार्य सहारिया जाति के 300 बच्चों पर किया गया ।

(स) न्यादर्श कक्षा- 8, 9 तथा 10 तक के वर्ष 2000 से 2004 तक शिक्षारत बच्चों पर किया गया ।

(द) न्यादर्श में बालक तथा बालिकाओं को लिया गया ।

2- अध्ययन क्षेत्र -

शोधकार्य में बुद्धि, समायोजन तथा सामाजिक - आर्थिक स्तर के अध्ययन को सम्पन्न किया गया ।

(अ) **बुद्धि-** सहारिया जनजाति के बच्चों की बुद्धि का मापन सामूहिक शाब्दिक परीक्षण द्वारा किया गया । इस परीक्षण का विकास डा0 शाही ने किया है । इसमें शब्द ज्ञान, आंकिक, तार्किक क्षमता, वर्गीकरण, समतुल्य सम्बन्ध, शाब्दिक तर्क क्षमता, सर्वोत्तम उत्तर तथा मिलान आदि आठ आयामों के द्वारा बुद्धि का ऑकलन किया गया ।

(ब) **समायोजन-** समायोजन का मापन डा0 भागिया द्वारा विकसित विद्यालय अभियोजन अनुसूची के द्वारा किया गया । इसके द्वारा बच्चों के शैक्षिक स्तर, सामान्य व्यवहार, विद्यालय पर्यावरण, शिक्षक भूमिका, तथा व्यक्तित्व विकास आयामों में समायोजन का ऑकलन किया गया ।

(स) **सामाजिक-आर्थिक स्तर-** सहारिया जनजाति के बच्चों के रहन-सहन के स्तर का अध्ययन करने के लिए डा0 श्रीवास्तव द्वारा विकसित सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया । इसके द्वारा बच्चों के शैक्षिक व्यावसायिक आमदनी, सांस्कृतिक स्तर तथा सामाजिक भागीदारी आदि आयामों का अध्ययन किया गया ।

3- **विश्लेषण प्रविधियाँ-**

(अ) केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें

(ब) मानक विचलन

(स) टी. परीक्षण

(द) मानक त्रुटि

(य) सह-सम्बन्ध

अध्ययन योजना एवं संगठन

प्रस्तुत अध्ययन को शोधकर्ता ने छः भागों में विभक्त करके वैज्ञानिकता के स्वरूप को स्पष्ट किया है । प्रथम अध्याय में प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों का स्वरूप तथा सहारिया जनजाति के बच्चों के समायोजन, सामाजिक - आर्थिक स्तर को ध्यान में रखकर शोध की उपादेयता को सिद्ध किया है । इसके पश्चात अध्ययन के उद्देश्य तथा परिकल्पनाओं को स्थापित किया है । इस प्रकार से सहारिया जनजाति के बच्चों की बौद्धिक प्रतिभा के अध्ययन की सार्थकता स्पष्ट होती है ।

अध्ययन के द्वितीय अध्याय में जनजाति की उत्पत्ति तथा प्रकार बतलाये गये हैं ताकि मध्य प्रदेश की अध्ययन प्रयुक्त सहारिया जनजाति को प्रकृति, स्वरूप, व्यवहार से अन्य जनजातियों से अलग स्थापित किया जा सके । बुद्धि जन्मजात होती है वह वंश से प्राप्त होती है । अतः बौद्धिक क्षमता तथा बौद्धिक कुशलता इनके बच्चों को वंश से कैसे मिली और वे उसका सदुपयोग किस रूप में कर रहे हैं आदि की सही व्याख्या हो सके ।

(स) **सामाजिक-आर्थिक स्तर**- सहारिया जनजाति के बच्चों के रहन-सहन के स्तर का अध्ययन करने के लिए डा0 श्रीवास्तव द्वारा विकसित सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया । इसके द्वारा बच्चों के शैक्षिक व्यावसायिक आमदनी, सांस्कृतिक स्तर तथा सामाजिक भागीदारी आदि आयामों का अध्ययन किया गया ।

3- विश्लेषण प्रविधियाँ-

(अ) केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें

(ब) मानक विचलन

(स) टी. परीक्षण

(द) मानक त्रुटि

(य) सह-सम्बन्ध

अध्ययन योजना एवं संगठन

प्रस्तुत अध्ययन को शोधकर्ता ने छः भागों में विभक्त करके वैज्ञानिकता के स्वरूप को स्पष्ट किया है । प्रथम अध्याय में प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों का स्वरूप तथा सहारिया जनजाति के बच्चों के समायोजन, सामाजिक - आर्थिक स्तर को ध्यान में रखकर शोध की उपादेयता को सिद्ध किया है । इसके पश्चात अध्ययन के उद्देश्य तथा परिकल्पनाओं को स्थापित किया है । इस प्रकार से सहारिया जनजाति के बच्चों की बौद्धिक प्रतिभा के अध्ययन की सार्थकता स्पष्ट होती है ।

अध्ययन के द्वितीय अध्याय में जनजाति की उत्पत्ति तथा प्रकार बतलाये गये हैं ताकि मध्य प्रदेश की अध्ययन प्रयुक्त सहारिया जनजाति को प्रकृति, स्वरूप, व्यवहार से अन्य जनजातियों से अलग स्थापित किया जा सके । बुद्धि जन्मजात होती है वह वंश से प्राप्त होती है । अतः बौद्धिक क्षमता तथा बौद्धिक कुशलता इनके बच्चों को वंश से कैसे मिली और वे उसका सदुपयोग किस रूप में कर रहे हैं आदि की सही व्याख्या हो सके ।

अध्ययन के प्रत्यय की मौलिकता को स्पष्ट करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन आवश्यक माना गया है । अतः शोधकर्ता ने तृतीय अध्याय को रूप में जनजाति साहित्य के पुनरावलोकन के रूप में प्रस्तुत किया है । प्रथमतः जनजाति से सम्बन्धित अध्ययन फिर बुद्धि से सम्बन्धित तथा समायोजन और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तियों से सम्बन्धित अध्ययनों को प्रस्तुत किया गया है । इसमें भारत में किये गये अध्ययन तथा विदेशों में किये गये अध्ययनों को ध्यान में रखकर अध्याय को पूरा किया गया है । इसप्रकार से शोधकर्ता ने अपने शोध की उपादेयता को भी स्पष्ट रूप प्रदान कर दिया है ।

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के चतुर्थ अध्याय में शोध प्रविधि को स्पष्ट किया है । प्रविधि किसी भी कार्य की तकनीकी और क्रियात्मकता की प्रक्रिया होती है जो शोध कार्य के सम्पूर्ण रूप की वैज्ञानिकता को प्रगट करती है । इसके अंतर्गत सर्वेक्षण क्षेत्र, न्यादर्श, तथ्य संकलन हेतु उपयुक्त उपकरणों का चुनाव आदि का वर्णन किया जाता है । बुद्धि मापन हेतु डा0 शाही द्वारा विकसित सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण, सामाजिक-आर्थिक स्तर हेतु डा0 श्रीवास्तव का परीक्षण तथा समायोजन हेतु डा0 भागिया के परीक्षण का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन का पंचम अध्याय विश्लेषण व्याख्या एवं विवेचन का है । बौद्रिक क्षमता का, सामाजिक - आर्थिक स्तर का तथा समायोजन आदि परिवर्तियों के तथ्य विश्लेषण शतांशमान, मध्यमान, मानक विचलन तथा करटोसिस आदि के द्वारा सम्पन्न किया गया ।

शोध के छठवें अध्याय में निष्कर्षो का वर्णन किया गया है । इनमें प्रमुख निष्कर्ष, शोधार्थियों हेतु तथा सामान्य आदि में विभक्त करके शोध की मौलिकता सिद्व की गयी है । फिर शोध के सुझाव तथा नवीन शोध के क्षेत्रों को प्रदर्शित किया गया है ताकि अध्ययन को अधिक व्यापक बनाया जा सके ।

सबसे अंत में परिशिष्ट का वर्णन है, जिसमें सभी उपकरणों की अनुसूची, उत्तर पत्रक, मैनुअल आदि सम्मिलित हैं । इसके साथ ही शोध सहायक ग्रंथ, शोध कार्य, शोध पत्र-पत्रिकायें आदि की सूची भी सम्मिलित है ।

अध्याय - द्वितीय

जनजातीय समूह " सहारिया " एवं शिक्षा

(1) जनजातीय समूहों की उत्पत्ति एवं प्रकार

(2) मध्य प्रदेश में जनजातियों की स्थिति

(3) सहारिया जनजाति की उत्पत्ति, व्यवहार प्रणाली तथा शिक्षा प्रसार

" जन-जातियाँ "

सामाजिक समूहों का इनकी विशिष्टताओं के आधार पर कबीला, जाति, वर्ग, जनजाति तथा प्रजाति आदि कुछ श्रेणियों में अध्ययन किया जाता है । सभी देशों में सभी प्रकार के सामाजिक समूह नहीं पाये जाते हैं । इसके विपरीत भारत में सामाजिक गतिशीलता हजारों वर्षो से बहुत कम देखने में आई है । अतः सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था मुख्य रूप से जाति तथा वर्ग पर निर्भर करती है । जनजाति, जाति व्यवस्था की ही एक श्रेणी है जिसे जाति को समझने या जाति के स्वरूप को स्पष्ट करने पर ही समझ सकेगें ।

शाब्दिक रूप से "जाति" शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द "कास्ट्स" से मानी जाती है । इसका हिन्दी भाषा में अर्थ "विशुद्वता" से अथवा "आनुवांशिकता" से लगाया जाता है, लेकिन "जाति" इन दोनों ही शब्दों के क्षेत्र से भिन्न है । जाति का कार्य सिर्फ सामाजिक विभाजन की नीति को ही स्पष्ट करना होता है । इसलिये "जाति" शब्द की उत्पत्ति " जात् " शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ "जन्म" माना जाता है । जाति एक बिल्कुल भिन्न सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें कुछ नियंत्रणों के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है । इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों को एक दूसरे से पृथक करने के लिए विवाह, खान-पान, धार्मिक अनुष्ठान और सम्पर्क आदि के विषय में कुछ नियंत्रण होते हैं , जिससे विभिन्न जातियाँ एक दूसरे के प्रति कुछ सामाजिक दूरी अनुभव करती हैं ।

"जन्म और सामाजिक दूरी" दो आधारों के साथ यदि हम भौगोलिक दूरी को भी जोड़ दें, तो हमें जनजाति के उद्गम का स्त्रोत प्राप्त हो जाता है । एक सीमित क्षेत्र में विशेष प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियों में काफी लम्बे समय से रहते चले आने के कारण तथा बाह्य सम्पर्को की न्यूनता अथवा अभाव में इन जनसमूहों के जीवनयापन के विधानों तथा इनकी संस्कृतियों में भी विशेषता आ जाती है । इसीलिये जनजातियों की अपनी विशेषतायें और अपूर्वतायें होती हैं ।

जनजातीय समूह -

"नाडेल" (1953) का मत है कि जनजाति समूह की परिभाषा करते समय हमें दो प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए । प्रथम- प्रत्येक समूह का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही होता है । इसलिये यदि आवश्यक हो तो किसी भी समूह की परिभाषा करते समय उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में कुछ कहा जाये । द्वितीय - प्रत्येक समूह का एक क्रियाशील पक्ष होता है और उस समूह की समस्त कानूनी, राजनैतिक तथा आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्र अपनी क्रियाशील सीमाओं के अंतर्गत ही हुआ करता है । इसी को आधार मानकर जनजातीय समूह की व्याख्या भी की जा सकती है, क्योंकि जाति, वर्ग तथा जनजातियाँ आदि सभी सामूहिकता के ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं । जनजातीय समूह एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन के स्वरूप हैं । इस प्रकार से जनजाति के क्रियाशील क्षेत्रों के अंतर्गत भौगोलिक, भाषागत, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आधार आते हैं । "क्रुक" (1975), "मजूमदार (1965), "रसल" व "हीरालाल"(1916), "सिन्हा" (1968) प्रभृति विद्वानों ने जनजातीय समूह की विशेषताओं में एक सामान्य क्षेत्र, सामान्य राजनैतिक प्रशासन तथा विशिष्ट संस्कृति आदि को माना है ।

आज के मानव वैज्ञानिकों ने इनमें से सांस्कृतिक आधार पर भेद स्थापित करने के सिद्धाँत को अधिक महत्व दिया है, लेकिन इस आधार पर जनजाति को परिभाषित करने में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं । भारत देश में ये कठिनाइयाँ और अधिक बढ़ जाती हैं । इसके अतिरिक्तकहीं कहीं पर एक ही विस्तृत सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक आदिम जातियाँ पायी जाती हैं और उनमें आपस में सांस्कृतिक भिन्नताओं के स्थान पर समानतायें ही अधिक पाई जाती है । अतः इन समाजों की क्रियाशीलता के क्षेत्रों को भौगोलिक, भाषा तथा राजनैतिक सीमाओं के आधार पर ही अधिक सुविधापूर्वक निश्चित किया जा सकता है ।

" इम्पीरियल गजेटियर " (1931) ने जनजाति की परिभाषा के अंतर्गत लिखा है " जनजाति परिवारों का वह समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा एक सामान्य क्षेत्र में या तो वास्तव में रहते हैं या अपने को उसी क्षेत्र से सम्बन्धित मानते हैं तथा ये समूह अंतर्विवाही ही होते हैं।" इस परिभाषा के अंतर्गत जनजाति सदस्यों के लिए प्रथम- सामान्य नाम, द्वितीय- एक भाषा या उपभाषा का बोलना, तृतीय- एक सामान्य क्षेत्र में निवास करना अथवा उस क्षेत्र से अपने को सम्बन्धित मानना तथा चतुर्थ- वैवाहिक सम्बन्धों का समूह के अंदर ही सीमित रखना आदि को जनजाति की विशेषतायें माना गया है ।

"डा0 रिवर्स" (1932) ने जनजाति समूह को एक निम्न स्तरीय सामाजिक समूह के रूप से माना है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं, उसकी एक शासन प्रणाली होती है तथा सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एवं युद्ध इत्यादि की स्थिति में एकता का प्रदर्शन करते हैं ।

"इम्पीरियल गजेटियर" ने जनजाति के सामान्य क्षेत्र पर जोर दिया। "पैरी और रिवर्स" ने जनजाति संगठन को महत्व दिया, "रेड क्लिफ ब्रॉउन" ने जनजाति युद्ध पर जोर दिया, और क्रोवर" महोदय ने संस्कृति को महत्व दिया है ।अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि जनजाति शब्द की परिभाषा किसी एक विशेष संदर्भ में तो की जा सकती है, लेकिन सभी विशेषताओं को अंतर्निहित करके नहीं की जा सकती है ।

शोधकर्ता के विचार से प्राकृतिक परिसीमाओं के बीच बसे हुए स्त्री-पुरूषों का वह समुदाय, जो सभ्य मानव समुदाय से अलग मान्यताओं पर जीवित रहता है, जनजातीय समूह कहलाता है ।सामाजिक गतिशीलता के कारण उत्पन्न हुए परिवर्तन के कारण कुछ लोग अपना अभियोजन, परिस्थितिवश समाज की गतिशीलता के साथ न कर सके , और उनका विकास अवरूद्ध होता चला गया । इस प्रकार से वे एक नाम , एक भाषा , एक क्षेत्र और एक प्रकार की मान्यता या

रीति रिवाजों को मानने वाले हो गये। जिसने अन्य मानव समूहों से विलगता स्थापित करा दी । इन्हीं विशेषताओं को धारण करने वाले मानव समूह को ''जनजाति'' के नाम से पुकारा जाता है ।

जनजाति समूह की उत्पत्ति-

मानव वैज्ञानिकों ने जनजातियों की उत्पत्ति के संदर्भ में विभिन्न मत स्थापित किये हैं । इसका मुख्य कारण है कि प्रत्येक मानव वैज्ञानिक ने किसी एक ही जनजाति का अध्ययन किया और उसी को आधार मानकर उसने उत्पत्ति का वर्णन किया है । अतः सभी विद्वानों के मतों के अध्ययन के पश्चात ''डी0एन0 मजूमदार'' (1965, पृष्ठ-374) ने जनजातियों की उत्पत्ति के निम्न आधार प्रस्तुत किये हैं-

प्रथम विचारधारा के अनुसार जनजातीय समूह भारतीय मूलवासियों के वंशज हैं। इनमें आज भी इनकी मूल विशेषतायें पायी जाती हैं ।

द्वितीय विचारधारा के अनुसार जनजाति समूह भारतीय खानाबदोस जातियों के वंशज हैं । ये जातियाँ किन्हीं कारणों से सम्पूर्ण देश में घूमती रहती थीं, और जीवनयापन के विभिन्न साधन जुटाती थीं ।

तृतीय विचारधारा के अनुसार ये मुगलकालीन युग के राजपूतों के वंशज हैं, जो ''क्षत्रिय आन'' को जीवित रखने के लिए जंगलों और पहाड़ी स्थानों को भाग गये थे । ये लोग स्वयं को चित्तौड़ के राजा ''राणा प्रताप'' के वंशज बताते हैं । इनका कथन है कि 1308 ए0डी0 में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से ग्रस्त होकर, इस्लाम धर्म को स्वीकार न करने के कारण और स्वयं को हिन्दू कहलाते रहने के लिए जंगल और पहाड़ों को अपना निवास स्थल बनाया था ।''भार्गव'' (1949) के विचार से यह विचारधारा ही उत्तम है क्योंकि आज भी ऐसी जनजातियाँ हैं जो स्वयं को हिन्दुओं से मुसलमान परिवर्तित मानते हैं ।

चतुर्थ विचारधारा के अनुसार ये प्राकृतिक परिसीमाओं के बीच बसे हुए

लोगों के वंशज हैं, जिनके सम्बन्ध अन्य मानव समुदायों से विलग हो गये हैं। अतः इनको आज जनजाति के रूप में माना जाता है ।

पंचम विचारधारा के अनुसार कुछ लोग अपना अभियोजन, परिस्थितिवश समाज की गतिशीलता के साथ न कर सके और विकास में पिछड़ते चले गये । अतः धीरे-धीरे ये लोग जनजाति समूह में परिवर्तित होते गये ।

जनजाति समूह लगभग दस या बारह परिवारों के समूह में रहते हैं और कार्य करते हैं । इस समूह को "गैंग" का नाम दिया जाता है । इस गैंग का एक नेता होता है । इस नेता का चुनाव चालाकी में तेज़ या योग्यता में सबसे अधिक आदि विशेषताओं के आधार पर होता है या फिर वंशानुक्रम से चली आ रही नेतृत्व परिपाटी के द्वारा कभी-कभी विभिन्न प्रकार के "गैंग्स" मिलकर एक ही नेता के नीचे जीवनयापन भी करते हैं और कार्य भी करते हैं । कुछ "गैंग्स" का जन्म या पहचान उनके प्रभावशाली नेता के नाम से ही प्रसिद्ध होता है । "मजूमदार' (1965, पृष्ठ-363) ने जनजाति समूह के नेता के कर्तव्यों को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है -

1- जनजाति का नेता अपने समूह में से अपनी सहायता के लिए और जनजाति की रक्षा के लिए कुछ सदस्यों का चुनाव करता है ।

2- वह इन सदस्यों और उनके परिवारों के सदस्यों का भरणपोषण अपने खर्चे पर करता है ।

3- नेता स्थानीय पुलिस का मुखबिर होता है, इससे वह अपनी जनजाति की सुरक्षा करता है ।

4- वह ऐसे व्यक्तियों को खोज़ता है जिनके माध्यम से चोरी की वस्तुओं का विक्रय होता रहे ।

5- वह स्थान, योजना, समय और तरीकों का चुनाव करता है ताकि धन को कमा सके ।

6- कभी-कभी वह अपने सदस्यों को पुलिस से बचाने के लिए निरपराध व्यक्तियों को फँसा देता है ।

7- यह लोग धनवान व्यक्तियों को अपने चंगुल में फँसाने के लिए सुन्दर युवतियों का प्रयोग भी करते हैं ।

8- यह स्त्रियों को जासूसी के रूप में भी प्रयोग करते हैं । जासूस स्त्रियाँ इनको धनवान व्यक्तियों के बारे में पूर्ण सूचना देती हैं ।

9- ये लोग ऐसे स्थानों की व्यवस्था भी करते हैं जहाँ पर चोरी करके या उठाईगीरी करके इनके सदस्य छिप सकते हैं ।

10- इनमें शादी सम्बन्ध, अपराध, चोरी, चालाकी पूर्ण कार्य के आधार पर निश्चित होते हैं ।

11- यदि इनके "गैंग्स" में फूट पड़ जाती है तो यह लोग पंचायत के द्वारा इसका निपटारा भी कर लेते हैं ।

12- इनमें एक प्रथा भी है कि यदि पुलिस के समक्ष किसी को जेल में बंद होना होता है तो उसका भी चुनाव किया जाता है । उनका "भगत" आता है और अनाज के कुछ दाने लेकर नाम उच्चारित करता है और जो संदिग्ध है, वही पुलिस में बंद हो जाता है ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक जनजाति में "गैंग्स" होते हैं जो सम्पूर्ण जनजाति पर शासन करते हैं । इनका मुख्य कार्य असामाजिक तरीकों द्वारा विकसित सामाजिक व्यवस्था से धन को हस्तगत करना होता है । अतः इनके प्रकारों का अवलोकन करना अनिवार्य हो जाता है ।

जनजाति समूह के प्रकार- "डा0 ललित प्रसाद विद्यार्थी" (1975, पृष्ठ-4) ने अपनी पुस्तक "भारतीय आदिवासी" में जनजातियों को निवास के आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया है -

प्रथम श्रेणी में वे जनजातियाँ आती है जो अभी भी आदिम अर्थ-व्यवस्था बनाये हुए हैं । ये लोग घने जंगलों और पहाड़ों में घूमते फिरते रहते हैं । इनका निवास स्थान बदलता रहता है । इनमें उत्तर प्रदेश के नट, कबूतरे, राजी बिहार प्रदेश के खड़िया, बिहोर और पहाड़िया, आसाम के कुकी, मध्य प्रदेश के पहाड़ी व माड़िया, आंध्र प्रदेश के कायो, कोटा रेडी, पालियन, कादर, और उड़ीसा के जुआंग आदि उल्लेखनीय हैं । ये जातियाँ अपने ग्रामीण पड़ोसियों के सम्पर्क में आने से पूर्व जंगलों और पहाड़ों पर रहती थीं और शिकार तथा जंगलों से अपनी आवश्यकता की वस्तुऐं जुटाती थीं । इनमें से बहुत से लोग मिट्टी के बर्तन बनाना भी नहीं जानते थे और बाँस के नल से तथा पत्तों के दोनों से अपना काम चलाते थे । शिकार तथा कंदमूल फल जमा करने के लिए भी ये आदिम उपकरणों का ही प्रयोग करते थे । ये लोग या तो वस्त्र नहीं पहनते थे या फिर घास फूस को कमर के ईर्द-गिर्द बाँध लेते थे । इनके पालतू पशुओं में कुत्ता मुख्य था । घोड़े तथा ढोर को पालतू बनाने की महत्ता इनको विदित न थी । इनकी झोपड़ियाँ भी बहुत आदिम ढ़ंग की होती थीं । बाँस और घास-फूस से छोटी सी झोपड़ी का निर्माण कर लेते थे, जिसे छोड़कर स्थानांतरित होने में इन्हें किसी प्रकार का लोभ अथवा क्षोभ नहीं होता था । अतः इस श्रेणी की जनजातियों को घुमक्कड़ (नोमेडिक) जनजाति के नाम से जाना जाता है ।

द्वितीय श्रेणी में वे जनजातियाँ आती हैं जो कृषि कार्य और जंगली वस्तुओं के विनियम के द्वारा जीवनयापन करती हैं । ये लोग पहाड़ों की ढालों और पठारों पर रहते हैं । इनके यहाँ पर खेती करने को "झूम" कहते है । इनमें कोरबा, असुर, माल, पहाड़िया, नागा, लखेडगारो, बैंगा, मुड़िया, दण्डामी और भड़िया, कंध आदि जनजातियाँ आती हैं । कुछ समय पूर्व तक यह आदिम रूप से खेती किया करते थे । इस प्रकार की खेती में पहाड़ों की ढालों पर वनस्पति को जलाकर राख बिखेर दी जाती हैं । लकड़ी के एक नुकीले डण्डे से, जिसमें कभी – कभी पत्थर या लोहे का छोटा फल लगा होता है, धरती खुरच कर उस पर बीज बिखेर दिये जाते हैं । वे इस डण्डे को "हो" कहते है और इस प्रकार की खेती को "हो कृषि" कहते

है । इनको किसी भी प्रकार की खाद या सिंचाई का ज्ञान नहीं था । साथ ही बीज उगने की प्रक्रिया का भी ज्ञान नहीं था । ये लोग प्रत्येक वर्ष कृषि हेतु नया भूखण्ड खोज़ा करते और पुरानी भूमि को परती छोड़ देते थे । इस प्रकार की खेती को वे "झूम", "बेवार", "पोंटू" आदि नामों से पुकारते हैं । कृषि के अतिरिक्त ये लोग जंगलों से आँवला, बेर, खैर की छाल, महुआ, तेंदू, पलाश के फूल, लाख आदि एकत्रित करके ठेकेदारों के हाथ बेचने का धंधा करते हैं । ये लोग पशु पालते हैं और उनके दूध से घी आदि बनाना जानते हैं । इनके शिकार के "हरबे" और अन्य उपकरण भी काफी सुधरे हुए होते हैं । पहली श्रेणी की जनजातियों की भाँति ही ये लोग अस्थाई झोपड़ियाँ बनाकर रहते हैं ।

तृतीय श्रेणी में वे जनजातियाँ आती हैं जिनके विषय में यह कहा जाता है कि वे स्थायी रूप से भूखण्ड पर बस चुकी हैं । इन्होंने भौतिक वातावरण से भरपूर लाभ उठाया है । उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार की तराई के निवासी सहारिया, थारू और भोक्ता, जौनसार, बाबर के खस, मिर्ज़ापुर के माँझी और खरबार, छोटा नागपुर के मुण्डा, हो, उराँव, बंगाल के पालिया और संथाल, असम के खासी और मनीपुरी, मध्य प्रदेश के परजाव , सहारिया , भटरा और राजगौड़, उड़ीसा के गड़ावा, मद्रास के कोटा, बड़गा और इरूला तथा पश्चिम भारत के भील आदि इस श्रेणी की प्रमुख जनजातियाँ है । ये लोग अपने ग्रामीण पड़ोसियों की तरह से खेती करते हैं, पशु पालते हैं, मुर्गी, बतख और सुअरों को पालकर ये लोग माँसाहारी व्यवसाय भी अपनाते हैं । ये स्थायी रूप से घर और गाँव बसाकर रहते हैं । मिट्टी से बर्तन बनाना, लकड़ी से सामान बनाना, धातुओं के औजार बनाना, सूती व ऊनी कपड़ा बुनना आदि धंधों का खूब प्रयोग करते हैं । ये लोग अपने सामान को घूम-घूमकर भी बेचते हैं और हाट में भी ले जाते हैं । इनके परिवारों में भौतिक विकास के सभी साधन प्रायः देखने को मिलते हैं ।

उपर्युक्त जनजातियों के श्रेणी विभाजन से स्पष्ट होता है कि ये लोग भी सभ्य मानव जीवन व्यतीत करना चाहते हैं । अतः शोधकर्ता ने अपने शोध विषय हेतु

सहारिया जनजाति को चुना, जिसका विस्तृत वर्णन निम्नप्रकार से है –

मध्य प्रदेश में जनजातियाँ

मध्य प्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है । यह 18^0 से 26^0, 30' उत्तर तथा 74^0 से 84^0, 30' पूर्व के मध्य स्थित है । भारत देश के उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, झारखण्ड और बिहार आदि राज्यों से इसकी सीमायें मिली हुई हैं । फलतः इन सभी राज्यों की सीमावर्ती जनजाति का प्रभाव तथा विकास मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में भी है । वर्तमान मध्य प्रदेश वर्ष 1956 के राज्य पुनर्गठन के पश्चात बना है । सीमा परिवर्तन के पश्चात वर्तमान मध्य प्रदेश का क्षेत्रफल 4,42,841 वर्ग कि0मी0 है (1981 जनगणना) । इसके आधे हिस्से में लगभग जनजातियाँ प्राप्त होती हैं । सम्पूर्ण मध्य प्रदेश दक्कन के पठार का एक भाग है । पूर्व में छोटा नागपुर का पठार है । जहाँ से अधिकांश कोल जातियाँ मध्य प्रदेश में प्रवेश कर गयी हैं । दक्षिण के ताप्ती नदी के पार करने पर प्रायद्वीपीय पठार प्रारम्भ हो जाता है जहाँ से गोंड जाति ने मध्य प्रदेश में प्रवेश किया था । पश्चिम की ओर चम्बल नदी पार करते है और अरावली पर्वत की श्रेणियाँ मिलती है जो सदियों से भीलों की कर्मस्थली रही हैं ।

मध्य प्रदेश की जलवायु मानसूनी है । अधिकतम वर्षा पूर्वी भागों में 160 से.मी. से अधिक किन्तु उत्तरी भाग में 60 से.मी. से भी कम वर्षा होती है । मध्य प्रदेश का 33% क्षेत्र वनों से आच्छादित है, 9.3% भूमि चारागाहों के अंतर्गत है, 41.8% खेती योग्य क्षेत्र है तथा 2.7% पुरानी पड़ती तथा 1.7% चालू पड़ती भूमि है । स्वाभाविक तौर पर कहा जा सकता है कि मध्य प्रदेश में वनों का महत्व अर्थ व्यवस्था सबल बनाने के लिये महत्वपूर्ण साधन है ।

आदिवासी जनसंख्या- वर्तमान में मध्य प्रदेश में लगभग एक करोड़ आदिवासी निवास करते हैं । वर्ष 1981 की जनगणना के आधार पर राज्य की कुल जनसंख्या की 25.5% आबादी आदिवासियों की है । मध्य प्रदेश भारत का आबादी तथा क्षेत्र दोनों में ही सबसे बड़ा प्रदेश है । इसका प्रमुख कारण वन सम्पदा का

होना माना जाता है । यहाँ के आदिवासी लगभग 58 छोटे छोटे समूहों में पाये जाते हैं । इनमें बड़ी आबादी तथा थोड़ी आबादी वाले आदिवासी समूह रहते हैं । कुल जनसंख्या में आदिवासी आबादी के प्रतिशत की दृष्टि से झाबुआ बस्तर, मण्डला, धार और सरगुजा विशेष महत्व के हैं । इसके साथ ही सागर, दमोह, ग्वालियर सम्भागों में भी आदिवासी निवास करते हैं । वर्ष 1981 जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश में 98,14,606 आदिवासी निवास करते हैं ।

उपलब्ध साहित्य – मध्य प्रदेश की जनजातियों पर जो भी लिखित कार्य सम्पादित हुआ उसे हम पाँच वर्गो में बाँट सकते हैं :-

प्रथम वर्ग में वह साहित्य आता है जो अंग्रेजी शासनकाल में मूल रूप से सरकारी रूप से लिखा या लिखवाया गया ।

द्वितीय वर्ग में वह साहित्य आता है जिसका लेखन कार्य मिशनरीज़ या पादरियों द्वारा किया गया ।

तृतीय वर्ग में वैचारिक और संस्थाओं द्वारा सम्पन्न कराये गये शोध निबंध आते है ।

चतुर्थ वर्ग में शासन द्वारा सर्वेक्षण द्वारा लिये गये तथ्यों पर रिपोर्ट्स बनाये और सरकारी गज़ट में छापे ।

पंचम वर्ग में आदिवासी जीवन से सम्बन्धित क्षेत्रीय साहित्यक रचनाऐं आती हैं जिनका विकास कुछ प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा किया गया ।

दतिया जिले में सहारिया जनजाति – मध्य प्रदेश की स्थापना वर्ष 1956 से ही स्वतंत्र भारत का दतिया , जिले के रूप में रहा है । स्वतंत्रता से पहले यह राजा की राजधानी रहा है । यह जिला, कमिश्नरी- ग्वालियर के 07 जिलों में एक प्रमुख जिला है । इसकी जनसंख्या 6,27,818 है जिले का क्षेत्रफल 2698 वर्ग कि.मी. है । इसमें सहारिया जनजाति तथा अन्य जातियों का प्रतिशत 22.7 है । लेकिन सबसे अधिक ग्रामों में सहारिया जनजाति ही निवास करती है । इनके ग्रामों को तथा

निवास स्थानों को विकासखण्डों के आधार पर निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है -

तालिका क्र0 - 2.1

सहारिया जनजाति के निवास ग्रामों की विकासखण्ड वार सूची

विकासखण्ड भाण्डेर	विकासखण्ड सेंवढ़ा	विकासखण्ड दतिया
1. केवलारी	1. लांच	1. बसई
2. सरसई	2. डॉंगडिरौली	2. बरधुआ
3. हंसापुर	3. इंदरगढ़	3. बड़ौनी
4. सलेतरा	4. उचाड़	4. उनाव
5. टौरी	5. अटरा	5. दतिया
6. भाण्डेर	6. डिरौलीपार	6. दतिया बटालियन
7. भलका	7. उचाइ	7. बिड़निया
8. गोंदन	8. इंदरगढ़-II	8. सलैया पमार
		9. सांकुली
		10. उरदना
		11. रामसागर
		12. खिरिया खोदस
		13. बीकर

" सहारिया "

शोधकर्ता ने "सहारिया" जनजाति को परिवर्तनशील (ट्रॉंजीशनल) जनजाति के रूप में अध्ययन हेतु लिया है । ये लोग व्यवसाय के बारे में निश्चित नीति या क्रिया को नहीं अपनाते हैं, बल्कि बदलते रहते हैं । अतः इनको व्यावसायिक

रूप से परिवर्तनशील जनजाति माना जाता है । इस जनजाति के अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में फैले हुए परिवारों में जाकर साक्षात्कार किया, ग्रंथों का अवलोकन किया ओर सरकारी दस्तावेज़ों का निरीक्षण किया ताकि इनकी वर्तमान और आदिकालीन स्थिति का सही ज्ञान प्राप्त हो सके।

उत्पत्ति- सहारिया जनजाति की उत्पत्ति के बारे में "कुक" (1975, पृष्ठ- 252) महोदय ने श्री एच0सी0 फैरार्ड, सी0एस0 के नोट को आधार माना है । यह जनजाति सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में फैली हुई है । वर्तमान समय में इसका फैलाव जिला झाँसी, ललितपुर में सबसे अधिक पाया जाता है । इनके बारे में वर्ष 1891 की जनगणना में कोई लिखित ब्योरा प्राप्त नहीं होता है । फिर भी सुपरिनटेन्डेंट गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस, कोलकाता द्वारा प्रकाशित "हिन्दी फिंगर प्रिंट मैन्यूअल" (1916) में मध्य भारत में मोगिये, बाबरी, बदक, बागरी, बैरागी, कंजर, बंजारे, बेड़िये, सुनोरिये, चन्द्रवेदिये, सांसी, नट, मुल्तानी, मेवाती, नायक, खंगार, तथा सहारिये विमुक्त जनजातियों का वर्णन मिलता है । वर्ष 1891 की जनगणना में "सोइरी" जनजाति का वर्णन है । जिसके समान इनकी विशेषतायें देखने को मिलती हैं ।

प्रस्तुत जनजाति "सहारिया" की उत्पत्ति अरेबियन शब्द "साहरा" से हुई है । "साहरा" शब्द का अर्थ होता है "जंगलीपन" यानी जंगलों में रहने वाली उत्तरी अफ़्रीकन जनजाति । लेकिन "सहारिया" नाम "सबेराज" से बना है जिसकी उत्पत्ति संस्कृत लेखों में प्राप्त होती है । इनको "कोलेरियन" या द्राविड़ियन" जनजाति का वंशज माना गया है । ये जातियाँ मध्य भारत में पायी जाती हैं । अतः सहारिया जनजाति की समानता "कोल्स, मुण्डाज, करकस, भील्स, भुइया, आदि जातियों के साथ की जाती है। कुछ विशेषताऐं इन लोगों ने "सोइरी" जनजाति से प्राप्त की हैं । बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में इनको "रावत" नाम से भी पुकारा जाता है । "रावत" शब्द का उद्गम संस्कृत भाषा के शब्द "राजदूत" से हुआ है । "राजदूत" शब्द का अर्थ होता है - " राजा का संदेश वाहक " या " राजा का दूत" ।

अतः सहारिया जनजाति की उत्पत्ति के संदर्भ में यह स्पष्ट हो जाता है कि

ये जाति जनजाति है जिसमें विमुक्त जनजाति की सभी विशेषताऐं पाई जाती हैं । वर्तमान समय में इनमें अच्छे नागरिक बनने की क्षमता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है ।

जनजातीय संगठन – सहारिया जनजाति विभिन्न प्रकार की उप जातियों (गोत्रों) में विभाजित है । इनमें सिराउसीया, कोडोरिया, येगोदिया, सनोलिया, रजोरिया, जचोरिया, कुसमोरबा, सरोसावा, चकरदिया, चिरौंचा, करवारिया, बैगौलिया, सनोरिया आदि प्रसिद्ध गोत्र पाये जाते हैं । इन गोत्रों की उत्पत्ति "कैसे हुई " इसका जनजाति के पास कोई लेखा-जोखा उपलब्ध नहीं है । शायद इनकी उत्पत्ति पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर हुई होगी । इन उप विभागों को जाति बिरादरी से बाहर शादी सम्बन्धों को स्थापित करने हेतु ही "एक्सोगेमस" कहा गया है । वर्तमान समय में विवाह आदि सम्बन्धों में एक्जागामी सिर्फ प्रथम या द्वितीय चचेरे-बहिन या भाई के साथ ही लागू मानी जाती है । ललितपुर जिले को ये लोग अपनी पैतृक जन्मभूमि मानते हैं । अन्यत्र से आकर बसना स्वीकार नहीं करते हैं ।

शादी एवं विवाह नियम – "सहारिया" जनजाति में विवाह के नियम और रीति-रिवाज़ अपने तरीके के हैं । जब कोई नई नवेली दुल्हन अपने पति के घर में आती है, तो उसे एक रिवाज का पालन करना पड़ता है, जिसे ये लोग "दूध भाती" के नाम से पुकारते हैं । इसमें दुल्हन को दूध और चावल की दावत देनी होती है जिसको सभी लोग बड़े प्यार और उत्साह के साथ खाते हैं। एक व्यक्ति बहुत सी स्त्रियों के साथ शादी कर सकता है, लेकिन घर में एक बीबी के जीवित रहते हुए वह दूसरी बीबी को नहीं रख सकता । यदि उसकी पहली पत्नी किसी जटिल बीमारी से पीड़ित हो या उसके संतान न होती हो तो वह समाज की आज्ञा लेकर शादी कर सकता है, फिर भी प्रथम पत्नी की सेवा भी करनी होगी । अविवाहित नवयुवतियाँ अपनी जाति के अलावा किसी अन्य के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं, साथ ही उनके परिवारीयजनों को यदि कोई आपत्ति नहीं होती है, तो वह अपनी जाति वालों को दावत देकर उस व्यक्ति के साथ शादी कर सकती हैं । अविवाहित

लड़कियों की पवित्रता पर विशेष ध्यान रखा जाता है । दस वर्ष की आयु तक प्रत्येक लड़की की शादी कर दी जाती है । इनमें दुल्हन का विवाह करने के लिए कोई निश्चित दहेज या मूल्य का प्रचलन नहीं पाया जाता है, फिर भी रिवाज के अनुसार वर का पिता 8 रूपये इस लिये देता है ताकि विवाह का खर्च सम्पन्न हो सके । यदि कोई विवाहित स्त्री किसी अन्य व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्धों में लिप्त पायी जाती है तो उसे जाति से पूर्ण निष्कासित कर दिया जाता है । यह निर्णय जनजाति की पंचायत के द्वारा किया जाता है । वह स्त्री फिर अपना विवाह नहीं कर सकती और न बिना विवाह के वह रखैल के रूप में रह सकती है । यदि उसका पति उसे दुबारा पत्नी बनाने को तैयार हो जाता है तो यह मामला पंचायत में जाता है और पंचायत उसको दण्ड स्वरूप जनजाति को दावत दिलवाकर फिर से विवाह की सहमति दे देती है । जो संतान विजातीय व्यक्ति से पैदा हुई होती है उसे न तो जाति के अधिकार ही मिलते हैं और न जाति का सम्मान ही । साथ ही उसको हेय दृष्टि से देखा जाता है ।

विधवा विवाह की परिपाटी इनमें पायी जाती है । यदि बीमारी से किसी की मृत्यु हो जाती है और उसका अविवाहित कोई छोटा भाई है तो उसके साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है । सामान्य रूप से छोटा भाई, बड़े भाई की पत्नी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है, लेकिन बड़ा भाई, छोटे भाई की पत्नी को स्वीकार नहीं कर सकता । फिर भी यदि अत्यन्त आवश्यक होता है तो यह कार्य भी कर लिया जाता है । यदि कोई विधवा अपनी जनजाति से बाहर विवाह करती है तो उसका बच्चों पर, धन पर किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं रह जाता है ।

जन्म रिवाज़ – सहारिया जनजाति की कोई स्त्री जब गर्भधारण कर लेती है, तो किसी भी प्रकार के आयोजन या खुशी के कार्यक्रम का वर्णन प्राप्त नहीं होता है और न आज है भी । उस समय "बसोर" जनजाति की नर्स या दाई उस गर्भवती की देखभाल करती है । बच्चे के जन्म लेने के दसवें दिन माँ को " दसवाँ" अधिकार के तहत शुद्ध करवा दिया जाता है । इसके साथ ही परिवारीय या गोत्र के लोगों

को भोजन भी दिया जाता है । यदि परिवार बहुत ही गरीब है तो कुछ – कुछ उबले चने (घुघरी) परिवारीय सदस्यों के बीच बाँट दिये जाते हैं । इसप्रकार से जन्मोत्सव से सम्बन्धित प्रथा जनजाति में देखने को मिलती है, लेकिन गोद लेने के नियम स्पष्ट नहीं हैं ।

विवाहोत्सव– जब माता-पिता या परिवारीय सदस्य या मित्र लड़के या लड़की के मैच को तलाश कर लेते हैं, तो लड़के का पिता अपने कुछ परिवारीय जनों या रिश्तेदारों के साथ लड़की वालों के घर जाता है । वहाँ पर वह लड़की के पहने हुए कपड़े के पल्लू को चूमकर उसके हाथ पर कुछ रूपये या मिष्ठान रखकर शादी के सगुन को पूरा करता है । फिर वे लोग भोजन करते हैं और दूसरे दिन जब लड़के वाले जाने लगते हैं तो लड़की का पिता उनको भेंट स्वरूप कुछ रूपये देकर विदा करता है । यह कार्यक्रम रिश्ता पक्का होना या सगाई कहलाता है । शादी वाले दिन लड़का और बाराती, लड़की के घर जाते हैं और लड़के के मस्तक पर तिलक लगाते हैं । दूसरे दिन मण्डप में लड़का और लड़की अपने परिवारों के समक्ष पॉच चक्कर लगाते हैं और इस प्रकार से शादी की रस्म पूरी की जाती है । इनके विवाह में किसी भी ब्राहमण या पंडित को नहीं बुलाया जाता है । इस जनजाति का बुजुर्ग या लड़की का भाई ही सभी विवाह की रीतियों, रस्मों - रिवाजों को पूरा करवा देता है ।

मृत्यु संस्कार– सहारिया जनजाति में मृत्योपरांत के संस्कार भी स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं । इनके यहाँ पर मुर्दे को जलाया जाता है । कुछ संदर्भों में मुर्दे को गाड़ने की प्रथा भी होती है । नाबालिग, अविवाहित या जहरीली बीमारी वाले मुर्दे को ये लोग जलाने के स्थान पर जमीन में गाड़ते हैं । मुर्दे को जलाने के बाद उसकी राख को किसी बहती हुई नदी में फेक देते हैं । उस व्यक्ति की मृत्यु के लिए दुःख प्रकट करने हेतु ये लोग अपने अपने सिर के बाल मुँड़वा लेते हैं । इनके यहाँ मृत्योपरांत भोज (श्राद्व) करने का कोई संस्कार स्पष्ट नहीं है । साथ ही साथ मृत्यु संस्कार के लिए पंडित या कोई अन्य व्यक्ति नियुक्त होता है । जो व्यक्ति मुर्दे को आग देता है, वह तीन दिन तक अपवित्र माना जाता है । इसी तरह से एक स्त्री को

भी मासिक धर्म के समय तीन दिन तक अपवित्र मानते हैं और बालक जनन के पश्चात दस दिन तक । इसके पश्चात स्नान कर लेने मात्र से ही स्त्री और माँ दोनों की अपवित्रता समाप्त हो जाती है ।

धार्मिकता- मुख्य तौर पर सहारिया जनजाति "भवानी माँ" को पूजते हैं । इसके साथ ही उनमें "राम" और "कृष्ण" के प्रति भी अपार श्रद्वा पाई जाती है । उनका अपना जातीय या वंशानुक्रमीय कोई देवता या पुजारी नहीं होता है । ये लोग किसी भी ब्राह्मण को अपनी जाति के धार्मिक कार्यक्रमों के लिये न बुलाते हैं और न नियुक्ति ही करते हैं । यदि परिवार में कोई धार्मिक संस्कार होना होता है तो ये अपनी बहिन के पुत्र या बुजुर्ग को इस कार्य के लिए बुलाते हैं । इस जनजाति में प्रेतों या बुरी आत्माओं को भगाने के लिए या उनसे बचने के लिए बलि की प्रथा प्रचलित है । बलि के तौर पर बकरा प्रयोग में लाया जाता है । कुछ संस्कारों में बलि के तौर पर उसके सिर्फ कान को ही काटकर चढ़ाया जाता है ।

बलि के रूप में जब बकरा काटा जाता है तो परिवार के सभी लोग उसके माँस को प्यार के साथ खाया करते हैं । ये लोग कुछ देवी देवताओं में भी विश्वास करते हैं जिनको "गोनर", नरसिंहा, गौरया, काटिया, थोलिया, सोमिया, और अहेयपाल" आदि नामों से पुकारा जाता है । इनमें से अधिकांश को जनजातीय लोग देवता के समान पूजते हैं । इन देवताओं की प्रार्थना करते समय ये लोग या तो पानी में खड़े होते हैं या सीधे हाथ की हथेली में गरम लोहे का टुकड़ा रखते हैं । सामान्य तौर पर ये लोग रोगों को पिशाचग्रस्त मानते हैं । रोगी का उपचार दवाओं से कम, बल्कि पिशाच मुक्ति, इन्द्रजाल से मुक्ति और बुरी दृष्टि से मुक्ति आदि उपायों से जनजातीय ओझा के द्वारा करवाया करते हैं ।

व्यवसाय- उत्तर प्रदेश सरकार (आर्डिनेंस नं0 18,1987) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के सुधार हेतु सुविधाओं में इनके व्यवसाय को स्पष्ट किया है । सहारिया जनजाति अत्याधिक गरीबी में जीवन जी रही है वे माँसाहारी और शाकाहारी दोनों ही हैं । माँस के रूप में मुर्गा, बकरा, गाय, सुअर आदि का सेवन करते हैं और साथ में स्प्रिट को शराब के स्थान पर पीते हैं । वे आपस में "राम -

राम'', सीताराम'', ''राधाकृष्ण'' आदि शब्दों का उच्चारण करके एक दूसरे को सम्मान देते हैं । ये जंगल में पैदा होने वाली वस्तुओं को एकत्रित करके बेचते हैं । जंगल की लकड़ी काटते हैं । जंगल की ऊँची जमीन पर कुछ सहारिया खेती भी करते हैं । इनको अपराधी जनजातियों में भी माना जाता है ।

इस जनजाति का प्रमुख व्यवसाय जंगलों से लकड़ी काटना, कंदमूल, शहद, मोम, गोंद, जड़ी बूटियाँ, पशुओं के सींग, घास, तेंदू पत्ता आदि एकत्रित करना है । ये लोग जड़ी बूटी से दवा बनाने का कार्य करते हैं । इसके अलावा ये लोग रस्सी, टोकरी, झाड़ू आदि बनाकर अपना पेट पालते हैं । इसके साथ ही आज ये लोग कृषि कार्य ''मजदूर'' के रूप में करते हैं तथा मकान बनाने में, पशु पालन में और शिकार करने में भी अन्य लोगों की मदद करते हैं और बदले में पेट पालने के लिए सामान पाते हैं ।

सहारिया जनजाति की प्रमुख समस्याओं में आर्थिक स्थिरता की समस्या प्रमुख है । जिसमें वनों एवं भूमि से सम्बन्धित समस्या, ऋणग्रस्तता, साहूकारों एवं महाजनों द्वारा शोषण की समस्या भी मुख्य है । इसके अलावा पारिवारिक समस्या, बाल विवाह, अशिक्षा, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें आदि सामाजिक समस्याओं के रूप में दिखाई देती हैं ।

वर्तमान स्थिति– शोधकर्ता ने अपने शोध तथ्यों के संकलन में पाया है कि ये लोग दतिया जिले में स्थाई रूप से निवास करते हैं । मध्य प्रदेश सरकार ने इनको अनुसूचित जनजाति में माना है । ये दैनिक व्यवहार में अक्खड़, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर दिखाई देते हैं । ये ईमानदारी से अपने कार्य को करते हैं । इनके चेहरों से गरीबी, शोषण आदि की चिंता स्पष्ट दिखाई देती है । अतः शिक्षा की ओर इनका ध्यान कम ही जाता है । मध्य प्रदेश शासन ने आदिवासियों की सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक उत्थान हेतु 13 कल्याणकारी योजनायें घोषित की हैं । सरकार का यह संकल्प रहा है कि जातियाँ किसी की मोहताज़ या किसी पर निर्भर न रहें, बल्कि अपने पैरों पर खड़ी होकर सम्मान के साथ जीवन जियें । इस प्रकार से ये लोग राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनकर अपने बच्चों को योग्य नागरिक बना

सकेंगे । इसके साथ ही हमें भारतीय समाज के दृष्टिकोंण को भी बदलना होगा ताकि वे स्वयं में इनको सम्मानीय स्थान दे सकें ।

निष्कर्ष

सहारिया जनजाति का विस्तृत विवरण देखने से स्पष्ट होता है कि इस समूह में गरीबी, निवास और व्यवसाय की अस्थिरता, सामाजिक रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, अपराधी स्वभाव तथा आधुनिक समाज से दूरी रखने आदि की विशेषताऐं पाई जाती हैं । परिणामस्वरूप इनका विकास विकसित समाज के समान नहीं हो पाया है । इसके अलावा ये लोग रोजी-रोटी की समस्या में इतने उलझे रहते हैं कि बच्चों के शैक्षिक विकास पर ध्यान नहीं देते हैं । इनके बच्चे शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ्य, तेज़, चालाक होते हैं फिर भी शिक्षा में पिछड़े रहते हैं । अतः शोधकर्ता ने इस जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का शिक्षा उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया है ताकि इनके बच्चे अपनी मानसिक क्षमता का सही प्रयोग करके शिक्षित बन सकें और आधुनिक जीवन का आनन्द उठाकर राष्ट्र एवं भारतीय विकसित समाज को सहयोग कर सकें ।

अध्याय - तृतीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

(1) जनजातीय साहित्य का पुनरावलोकन

(2) आदिवासी जीवन का अध्ययन

(3) भारत में हुए अध्ययन

(4) विदेश में हुए अध्ययन

(5) निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

ज्ञान का विकास शोध कार्यो के द्वारा होता है । प्रायः यह देखा गया है कि ज्ञान का पुनरोत्पादन विगत शोधों तथा खोज़ों के संचयन के अध्ययन के आधार पर होता है । अतः इन तथ्यों का अध्ययन करना, आलोचनात्मक परीक्षण करना, वर्गीकरण करना तथा इनको विवेकपूर्ण ढ़ंग से समाविष्ट करना उपयोगी है; जिससे विषय की सामान्य प्रवृत्तियाँ तथा मौलिक सम्प्रत्यय सुस्पष्ट हो सकें । साथ ही शोध समस्या से सम्बन्धित अनावश्यक कार्यो के प्रभाव से बचा जा सके । इस प्रकार से साहित्य का अवलोकन नई समस्या के संदर्भ में तीव्र प्रगति को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करता है । अतः शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य की अनिवार्यता को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य में इसका एक अध्याय के रूप में प्रयोग किया है । शोधकर्ता की शोध समस्या के अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का विवरण प्रस्तुत है ।

सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता -

भारत राष्ट्र ने विदेशी आक्रांताओं तथा उपनिवेशवादी ब्रिटिश शासकों के कारण राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से स्वयं को आज विकासशील देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर लिया है । आज हम सार्वभौम, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिकगणराज्य को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प ले रहे हैं । अतः भारत सरकार देश की आम जनता के लिए सही ढ़ंग से कार्य करने तथा नीति निर्धारण के लिए स्वतंत्र है । अब भूतकाल की विसंगतियों को भूलकर, भारत को सबसे बड़े लोकतंत्र राष्ट्र के रूप में स्वयं को स्थापित करना है । यह आकांक्षा शिक्षा के प्रसार के द्वारा ही सम्भव हो सकती है क्योंकि शिक्षा का अभाव ही भारतीयों की अज्ञानता रही, और इस पिछड़ेपन को दूर करने के लिए शिक्षा ही एकमात्र सार्थक हथियार हो सकती है । शिक्षा का आशय मात्र तथ्यों के ज्ञान का संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि इससे प्रत्येक नागरिक का शरीर, मस्तिष्क और आत्मा प्रकाशमान होती है । इस तरह से वे एक योग्य नागरिक तथा संतुलित मनुष्य बनकर अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग रहकर उचित ढंग से लाभ उठा

सकते हैं और अपने संतुलित व्यक्तित्व का विकास कर सकतेहैं । "अल्तेकर" (1951, पृष्ठ-3) ने लिखा है, "व्यापक अर्थ में शिक्षा एक स्व-संस्कृति और स्व-विकास है और यह प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन पर्यन्त तक चलती है ।"

एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है । लोकतंत्र का आधार प्रौढ़ नागरिक होते हैं, जिनके "मताधिकार के अधिकार" से प्रत्येक व्यक्ति (पुरूष - महिला) लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति सजग और सक्रिय भागीदारी स्थापित करता है । इस भागीदारी में प्रतिभा सम्पन्न तथा सामान्य बुद्धि नागरिक दोनों, शिक्षा प्रसार के द्वारा राष्ट्र को समृद्धशाली बनाते हैं ।

"बेस्ट" (1977, पृष्ठ- 36-37) महोदय का कथन है "किसी समस्या के क्षेत्र की जानकारी से शोधकर्ता को यह मालूम करने में सहायता मिलती है कि इस क्षेत्र में "अब तक क्या ज्ञात है" "कितने प्रयास हुए हैं" और "क्या प्रयास होने की सम्भावना है" या "निराशा ही हाथ लगेगी" तथा "कौन - कौन सी समस्यायें अभी तक हल करनी शेष हैं" सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से तात्पर्य है - किसी व्यक्ति के नियोजित शोध कार्य से सम्बन्धित शोध प्रतिवेदनों को मालूम करना, उनका अध्ययन करना तथा मूल्याँकन करना । अतः सम्बन्धित साहित्य से स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान कार्य की उपादेयता कितनी है । साथ ही साथ यह समस्या के निर्धारण में विचार, सिद्धाँत आदि स्पष्टीकरण की आपूर्ति करता है तथा शोध हेतु तकनीक, तरीके, सामग्री, व्यवस्था आदि करने में भी सहायक होता है । अंत में यह अध्ययन के सही निष्कर्षो को प्राप्त करने में सहायक होता है, ताकि प्रस्तुत अध्ययन की मौलिकता और वैज्ञानिकता स्थिर हो सके ।

जनजातीय साहित्य का पुनरावलोकन

भारतीय समाज की मूल धारा में जनजातियों का स्थान सदैव ही सीमांत में रहा है । सामान्य व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों में आदिवासियों के जीवन को नज़दीक से समझने का अपेक्षित उत्साह शायद ही कभी रहा हो आदिवासी क्षेत्र दुर्गम है और यह दुर्गमता हमारे बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता के लिए एक बहाना

रही है । हम इस मानसिकता का अंदाज़ केवल इस तथ्य से लगा सकते हैं कि तमाम शासकीय सुविधाओं के बावजूद 1969 से 1973 के बीच की अवधि में जनजातियों पर भारत की प्रमुख शोध पत्रिकाओं में केवल 24 शोध निबंध प्रकाशित हुए ।

हमारी इस मानसिकता का लाभ उठाया है विदेशियों ने । भारत के आदिवासी जगत पर विदेशी पादरियों ने काफी लिखा है, इन पादरी समाजशास्त्रियों को इस बात को विश्लेषित करने में अधिक रूचि रही है कि जनजातियों की संस्कृति, अर्थ व्यवस्था और मानसिकता भारत की मूलधारा से कैसे अलग है । अंग्रेजों के समय से आज तक विदेशी विशेषज्ञ या तो भारत के सीमा प्रदेशों के एक एक कबीले पर मोटी पुस्तकें लिखते रहे अथवा मध्य प्रदेश के कबीलों को "अधिक सभ्य" बनाने में सक्रिय रहे । खासियत यह है कि निहित उद्देश्यों को लेकर लिखी गयी ये पुस्तकें परवर्ती लेखकों के लिए बाइबिल बन गई । इस सबके बावजूद हमें विदेशियों में निहित निष्ठा की प्रशंसा करनी ही होगी वरना अंडमान द्वीपों के परित्यक्त आदिवासियों पर 1832 में पोर्टमैन ,1863 में फ्रेडरिक माउंट 1883 में रेड क्लिफ ब्राउन और 1921 में ई0एच0 मैन ने इन क्षेत्रों का अध्ययन न किया होता । यदि शीतला प्रसाद सिंह (1971-72) का शोध "औंधीज ऑफ दि लिटिल अण्डमान जो आज भी अप्रकाशित ही है तो उसका एक कारण यह भी है कि हमें अपने लोगों पर दूसरों के द्वारा लिखी गयी बात कहीं अधिक विश्वसनीय लगती है । इसका एक रोचक उदाहरण कुक्स का यह कथन है "असम्भव नहीं है कि जादू-टोने का प्रचलन हिन्दुओं की निचली जातियों से आदिवासियों में हुआ हो " (कुक्स 1973, पृष्ठ-69)।

मध्य प्रदेश की जनजातियों पर उपलब्ध साहित्य को हम पांच वर्गो में बॉट सकते हैं -

1- **पहिले वर्ग** में वह साहित्य आता है जो अंग्रेजों के काल में मूल रूप से प्रशासकों द्वारा लिखा या लिखवाया गया था ।

2- **दूसरे वर्ग** में मूल रूप से ईसाई मिशनों या पादरियों द्वारा लिखा गया साहित्य है ।

3- तीसरे वर्ग में आदिवासियों के विभिन्न पक्षों पर किए गये शोध प्रबन्ध तथा शोध निबंध हैं ।

4- चौथे वर्ग में शासकीय रिपोर्ट्स को शामिल किया जा सकता है ।

5- पाँचवें वर्ग में आदिवासी जीवन से सम्बन्धित साहित्यिक रचनायें शामिल की जा सकती हैं ।

उपर्युक्त में से प्रथम वर्ग के साहित्य का शुभारम्भ 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से प्रारम्भ होता है । सर विलियम जोन्स द्वारा "एशियाटिक क्षेत्र" के आदिवासी जीवन के अध्ययन का प्रारम्भ हुआ । इसका उद्देश्य भारत में "मनुष्य और प्रकृति" के सम्बन्धों की विवेचना करना था । प्रारम्भिक अध्ययन "रिजले" (1821 तथा 1851), "डाल्टन" (1872) तथा "बैनब्रीज" (1907) के हैं । किन्तु 1916 में प्रकाशित "रसल और हीरालाल" द्वारा लिखित "ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ सेंट्रल प्राविन्सेज ऑफ इंडिया" सम्भवतः मध्य प्रदेश की सभी जातियों और जनजातियों पर लिखा गया सर्वप्रथम मानक ग्रंथ है । इस ग्रंथ में पुराने मध्य प्रदेश और बरार के क्षेत्र के आदिवासियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । मालवा क्षेत्र का भी अध्ययन इसी सदी के प्रारम्भ से ही हो चला था । "शोर्ले"(1890) की "भील्स ऑफ सेंट्रल इंडिया" तथा "लुआर्ड" (1901-02) की "जंगल ट्राइब्स ऑफ इंडिया" ऐसी ही पुस्तकें हैं । यद्यपि पादरियों ने आदिवासियों पर लगभग दो सौ वर्ष पहले से ही लिखना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु उन ग्रंथों में सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन "बेरियर एल्विन" (1943 से 1952) एवं "ग्रिफिक्स" (1946) के हैं । इन दोनों धर्म प्रचारकों ने आदिवासी जीवन को जिस बारीकी से देखा वह प्रशंसनीय है । "केरियर एल्बिन" ने सभी जनजातियों पर तथा एक एक जनजाति पर पुस्तकें लिखीं, इनमें से बैगा, साबरा और गौड़ प्रमुख हैं ।

दूसरे वर्ग के अध्ययनों में "एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया" के नागपुर केन्द्र का नाम उल्लेखनीय है । वर्ष 1957 में सागर विश्वविद्यालय में "नृ- शास्त्र" का अलग विभाग ही खोल दिया गया, जिसके तत्वावधान में कुछ शोध पत्र

प्रकाशित हुए । वर्ष 1951 में श्री दुबे ने चमार जाति पर शोध प्रस्तुत किया । इस वर्ग के अध्ययनों में काफी विविधता है । आदिवासी जीवन के अनेक पहलुओं पर सरकार और मजूमदार ने महत्वपूर्ण विवरण प्रस्तुत किये । वर्ष 1960 में स्टीवबेन कुक्स की "दि गोड एण्ड ज्भूमियाज ऑफ मण्डला" महत्वपूर्ण कृति प्रकाशित हुई । इस वर्ग में समाज शास्त्र, मानव शास्त्र और भूगोल विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की कृतियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं । किन्तु यहाँ भूगोल विषय की ही कुछ कृतियों का उल्लेख किया जा रहा है ।

भूगोल वेत्ताओं द्वारा विगत वर्षों में आदिवासी जीवन का अध्ययन-

जनजातियों का अध्ययन भूगोल विज्ञान की "मानव भूगोल" एवं "प्रादेशिक भूगोल" की शाखाओं के अंतर्गत इस सदी के प्रारम्भ से ही होता आ रहा है । भारतीय और विदेशी भूगोल वेत्ताओं ने आदिवासियों के जीवन वृत्त पर पर्याप्त प्रकाश डाला है । यहाँ हम केवल उन कुछ गिने चुने भौगोलिक अध्ययनों के नाम दे रहे हैं जो सीधे रूप से मध्य प्रदेश की जनजातियों से जुड़े हैं । पहिले वर्ग के अंतर्गत उन सभी अध्ययनों को लिया जा सकता है । जिनमें वितरण सम्बन्धी समस्याओं को प्रमुखता दी गयी है । मुनीस रज़ा अहमद जैन और चौहान (1977) ने भारत की जनजातियों की पारिस्थितिकी एवं क्षेत्रीय वितरण की समस्या का सांख्यकीय विश्लेषण " दि ट्राइबल पापुलेशन ऑफ इंडिया " में किया । इस अध्ययन में लेखकों ने राज्य, जिले, तहसील और ब्लॉक स्तर तक के वितरण प्रारूपों का अध्ययन तो किया ही है , साथ ही विभिन्न जनजातियों के "मूल स्थान" खोज़ने का भी प्रयास किया है । आदिवासी आबादी के केन्द्रीकरण की गुत्थी को विद्वान लेखकों ने सुलझाने का प्रयास किया है । इसी गुत्थी को कुछ अलग ढंग से बी0सी0 शर्मा (1976-77) ने "ट्राइबल हेक्सॉगन" में सुलझाया है।

क्षेत्रीय वितरण के बाद भूगोल वेत्ताओं ने आदिवासी कृषि को महत्व दिया है । शर्मा (1971) ने मध्य प्रदेश के आदिवासियों की कृषि पर "पैटर्न ऑफ एग्रीकल्चर अमंग दि ट्राइबल्स ऑफ एम0पी0" अपना शोधनिबंध लिखा । शर्मा ने अपने इस विस्तृत शोध निबंध में आदिवासियों के कृषि की क्षेत्रीय विशेषताओं

के वर्णन के अंतर्गत स्थानांतरी कृषि, उपज एवं कृषि औजारों के महत्व को प्रतिपादित किया । उन्होंने भूमि क्षय, जीवन की खरीद फरोख्त एवं साहूकारी प्रथा के आदिवासी कृषि पर प्रभावों की भी विवेचना की है । ''सेवती मिश्र'' (1977) ने भी इन्हीं समस्याओं पर ''डेवलपमेंट प्रॉब्लम्स ऑफ ट्राइबल एग्रीकल्चर इन इंडिया'' शीर्षक से एक शोध पत्र लिखा ।

दूसरे वर्ग के अध्ययनों के अंतर्गत विशिष्ट जनजातियों की जीवन प्रणालियों को लिया जा सकता है । सिंह (1972) ने ''भील्स ऑफ मालवा रीजन'' में मालवा के भीलों पर इति वृत्तात्मक विवरण प्रस्तुत किया है । पिछले 10 वर्षों में इस वर्ग के अनेकों अध्ययन प्रस्तुत किए गये हैं । कुछ शोध निबन्धों के रूप में तो कुछ शोध प्रबन्धों के रूप में कुछ ऐसे निबन्ध हैं जिनमें मध्य प्रदेश के सीमावर्ती प्रदेशों की जनजातियों का वर्णन है किन्तु जिनमें मध्य प्रदेश के लिए भी सामग्री प्राप्त होती है जैसे – ''आजाद''(1977) ने संथालों, उरावों, मुण्डा, भूमिजी इत्यादि जनजातियों का वर्णन ''व्हेयर डू अवर ट्राइब्लस लिव'' में किया है । जाहिर है कि ये जनजातियाँ पूर्वी मध्य प्रदेश के जिलों में भी पाई जाती हैं । अतः ''अजद'' का यह निबंध ,जो मूल रूप से उड़ीसा की पृष्ठ भूमि में लिखा गया है , मध्य प्रदेश में असंगत नहीं हो पाता । कुछ इसी प्रकार के निबन्ध सिंह और सिंह (1976) ने ''संथाल -ए सोशियो इकॉनामिक स्टडी ''तथा सिन्हा (1976) ने उड़ीसा के आदिवासियों पर ''ट्राइबल्स ऑफ उड़ीसा'' लिखे । भीलों पर किए गए ये महत्वपूर्ण अध्ययन गुजरात और राजस्थान से हैं । ये अध्ययन समाज शास्त्रियों और मानव विज्ञानियों द्वारा किए गए हैं । मध्य प्रदेश के भीलों को समझने के लिए चाहे 1860 में सिमकॉक्स की लिखी हुई ''दि हिस्ट्री ऑफ खानदेशी भील कोर'' हो या ''टी0वी0 नायक'' (1956) की ''द भील -अ स्टडी'' दोनों ही महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं । आदिवासियोंके प्रादेशिक वितरण पर भौगोलिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया पी0सी0 अग्रवाल (1968) का '' ह्यूमन ज्याग्रफी ऑफ बस्तर डिस्ट्रिक्ट '' महत्वपूर्ण अध्ययन है चौथे वर्ग– के अंतर्गत केन्द्र और मध्य प्रदेश शासन के विभिन्न संस्थानों की रिपोर्ट हैं । एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली ने ''सोशियो इकानॉमिक कण्डीशन ऑफ प्रिमिटिव ट्राइब इन मध्य प्रदेश'' शीर्षक से मध्य प्रदेश के आदिवासियों का

सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया । डी0ए0 नाग ने बैगा एवं आर0 एस0 सक्सेना ने विन्ध्यांचल से सतपुड़ा पहाड़ों तक विस्तृत मध्य प्रदेश की पश्चिमी पहाड़ियों की जनजातीय अर्थ व्यवस्था का अध्ययन किया । धुंए के दो अध्ययन "दि महादेव कोलीज" (1957) तथा "शैड्युल्ड ट्राइब्ज" (1959) मूल रूप में सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण हैं ।

शासकीय प्रयासों के फलस्वरूप अनेक प्रकार के प्रकाशन तथा सर्वेक्षण कार्य होते रहते हैं । वर्ष 1955 में भारत सरकार के सूचना-प्रसारण मंत्रालय ने "आदिवासीज" नामक एक पुस्तक प्रकाशित कराई । यही पुस्तक "दि ट्राइबल पीपुल ऑफ इंडिया" नाम से पुनः प्रकाशित हुई । मध्य प्रदेश शासन ने भी अनेक सामयिक पुस्तिकायें निकाली हैं । मध्य प्रदेश शासन भोपाल के "ट्राइबल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट इन्स्टीट्यूट" द्वारा एक अर्द्ध बार्षिक बुलेटिन निकाली जाती है । इसमें स्तरीय रचनायें रहती हैं । कुछ रचनायें कालांतर में पुस्तकाकार प्रकाशित भी हो चुकी हैं । जैसे -1972 वॉल्यूम-10 में प्रकाशित "इन्टीग्रेटेड एरिया डेवलपमेंट विद स्पेशल रिफरेंस टू मण्डला" विस्तार के साथ एग्रोइकोनो सर्वे ऑफ मंडला के नाम से दिल्ली के डी0के0 पब्लिशर्स ने प्रकाशित की है । इसके लेखक हैं एम0एल0 पटेल । श्री पटेल ने आदिवासियों पर बहुत से स्फुट निबन्ध लिखे हैं। मध्य प्रदेश शासन ने छिंदवाड़ा में जनजातियों के अध्ययन के लिए एक रिसर्च संस्थान भी खोल रखा है । संस्थान द्वारा अनेक रिसर्च कार्य सम्पन्न किये गये हैं । संस्थान द्वारा सम्पन्न कराई गयी शोधों में से स्थानाभाव के कारण उन सबका संक्षिप्त परिचय भी दे पाना सम्भव नहीं है । अतः यहां कुछ के नाम ही दे दिये जा रहे हैं। "पाताल कोट" का आर्थिक जीवन, भारिया जाति का सामाजिक संगठन बैगा शिशुओं का जीवन , तामिया विकासखण्ड का सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण, बस्तर में धुरवा प्रजाति, बडवानी विकासखण्ड का सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण, तामिया खण्ड में जल प्रदाय सर्वेक्षण, मध्य प्रदेश के आदिवासी, आदिम जातियों की बोलियों में वार्तालाप निर्देशिका और शब्द कोष, आदिवासी क्षेत्रों की जड़ी बूटियाँ, मध्य प्रदेश के आदिवासियों के रोग दोष का मानचित्र समाज कल्याण की संस्थाओं की दिग्दर्शिका, मध्य प्रदेश के आदिवासियों की संक्षिप्त सांख्यकी , आदिवासी क्षेत्र

में काम करने वाली सहकारी समितियों का प्रगति मूलक विवरण, अबूझमाड़ का सर्वेक्षण । उपर्युक्त सर्वेक्षणों में मध्य प्रदेश के चुने हुए विशेषज्ञों एवं प्रशासकों का योगदान रहा है, जैसे – अबूझमाड़ का सर्वेक्षण'' टी0बी0 नायक ने सम्पादित किया था और लेखक थे बी0के0 दुबे, आर0सी0वी0 नरोन्हा और एस0बी0 पवार ।

पाँचवे वर्ग– के अंतर्गत साहित्यिक रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है । ये रचनायें ललित निबन्धों, कहानियों या उपन्यासों के रूप में जब तब प्रमुख पत्रिकाओं और पुस्तकाकारों में प्रकाशित हुई हैं । इन बहुत सी रचनाओं की शैली और विषयवस्तु का बोध ''कादम्बनी'' के यशस्वी सम्पादक राजेन्द्र अवस्थी की ''शहर से दूर'' कृति से हो सकता है । मध्य प्रदेश के आदिवासी जीवन की विसंगतियों का श्रेष्ठ चित्रण '' शानी की कहानियों में भी हुआ है ।

आदिवासियों के सम्बन्ध में हम सन्दर्भ ग्रंथों से कितनी भी जानकारी प्राप्त क्यों न कर लें वह सब रहेगी अधूरी ही । आज की स्थितियों में आवश्यकता है अबूझमाड़, बैगाचक या पातालकोट में जाकर आदिवासियों को नज़दीक से देखने की । हमें अपनी मानसिकता भी बदलनी है । आदिवासी जादू-टोने और शराब पीकर नाच में मस्त रहने वाले लोग नहीं हैं, वे हमारे समाज के सबसे भूखे और नंगे लोग है । जून 1962 '' शैड्यूल ट्राइब्स एण्ड शैड्यूल्ड कान्फ्रेंस, नई दिल्ली'' के उद्घाटन भाषण में बोलते हुए भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि यह सही है कि ''भारत की सामान्य जनता में जनजातियों के प्रति उदासीनता का भाव रहा है किन्तु इसके साथ एक और भी बड़ा कारण है,वह यहकि ब्रिटिश सरकार ने सभी तरह से भारत के सामान्य नागरिकों को आदिवासी क्षेत्रों में जाने से निरूत्साहित किया इसके पीछे उनका उद्देश्य था किस्वतंत्रता संग्राम की ज्योति यहाँ तक न पहुँचे । इस उद्देश्य में वे सफल भी हुये । असम, क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम प्रभावी नहीं रहा । वहाँ मध्य क्षेत्र में आधी सदी से चल रही लड़ाई का जनजातियों पर मामूली सा प्रभाव पड़ा । इस आधी सदी में ईसाई मिशनरियों को आदिवासी क्षेत्र में काम करने की पूरी छूट मिली । मिशनरियों ने जो अच्छे कार्य किये, मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ किन्तु विनम्रता से यह भी कहना

चाहूँगा कि उन्हें भारत में राजनैतिक परिवर्तन रास नहीं आया ।"

पं0 जवाहर लाल नेहरू जी का यह कहना पूर्णतः सही है कि वे (आदिवासी) "हमारे अपने लोग हैं । हमारा अपना काम अस्पतालों और स्कूलों के खोलने से पूरा नहीं हो जाता। यद्यपि अस्पताल, स्कूल और पक्के मार्ग हमें बनाना है किन्तु इसके बाद हमें रूक नहीं जाना है । हमें जो करना चाहिए वह यह है कि हम इन व्यक्तियों के साथ एकता का भाव जमायें और आपसी समझ का विकास करें, किन्तु यह सब मनोवैज्ञानिक रास्ते को अपनाने से ही सम्भव है "।

प्रतिभाशाली बच्चों पर हुए अध्ययन

भारतीय शोधकर्ताओं ने भारत में तथा विदेशों में हुए प्रतिभाशाली बच्चों के अध्ययन को देश के विकास के लिये आवश्यक माना है । अतः उन अध्ययनों में से उपयुक्त शोध निष्कर्षो को शोधकर्ता यहाँ प्रस्तुत करता है -

भारत में हुए शोध कार्य-

"भट्ट" (1973) ने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को जानने के लिए एक अध्ययन किया । आपने अपने निष्कर्षों में पाया कि प्रतिभाशाली बौद्धिक क्रियाशीलता, अध्ययनशीलता, नेतृत्व गुण, स्वाभाविकता, समझ, आत्म विश्वास, विनम्रता और मित्रों के चयन में सामान्य लोगों से अधिक उच्च कुशलत रखते हैं । इसके साथ ही कुछ गुण दोनों समूहों में समानता लिए हुए भी मिले फिर भी प्रतिभाशाली लोग सामान्य लोगों से व्यक्तित्व गुणों की प्रखरता तथा गहराई में भिन्नता स्थापित करते हैं ।

"देव" (1969) ने प्रतिभाशाली और सामान्य बच्चों के दो समूहों का तुलनात्मक अध्ययन मौखिक और क्रियात्मक बुद्धि परीक्षणों के द्वारा किया । प्रत्येक समूह में समान छात्र तथा छात्रायें रखी गयीं । मौखिक परीक्षण में 85 परसेंटाइल तथा क्रियात्मक परीक्षण में 95 परसेंटाइल के आधार पर प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का चयन किया गया । सामान्य समूह को 40-60 परसेंटाइल पर रखा गया ।

निष्कर्ष में पाया गया कि प्रतिभाशाली बच्चों में आत्म प्रत्यय और आत्म ग्राह्यता सामान्य समूह से अधिक पायी गयी । व्यक्तित्व गुण मुक्तहस्त, प्रमुख, आत्म सम्मान और सामाजिकता उच्च स्तर की पायी गयी , जबकि सामान्य समूह में इन गुणों का विकास कम रहा । प्रतिभाशाली छात्रायें और सामान्य छात्रायें न्यूराटिक टेन्डेंसी में समान स्तर पर रहीं । समायोजन स्थापना में भी प्रतिभाशाली छात्र, सामान्य छात्रों की तुलना में उच्च रहे, जबकि छात्राओं के दोनों समूहों में समायोजन स्थापना में समानता देखने को मिली ।

"लाल"(1968) ने मानसिक उच्चता के बच्चों पर संवेगात्मक स्थिरता के जानने का कार्य किया । आपने उच्च बुद्धि और सामान्य बुद्धि के बच्चों के दो समूह बनाये और पाया कि उच्च मानसिक क्षमता वाले समूह में समायोजन की क्षमता सामान्य समूह की अपेक्षा अधिक तीव्र है । आयु 14 एवं 15 के उच्च बुद्धि वाले बच्चों में अच्छा समायोजन पाया गया । इस प्रकार से उच्च बुद्धि के बच्चों में जीवन तथा नैतिकता के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति देखने को मिली ।

"पाटिल" (1966) ने बुद्धि लब्धि 120 से ऊपर के बच्चों को प्रतिभाशाली समूह में लिया और पाया कि ये लोग अधिक क्रियाशील, अधिक मौलिकता और अधिक अभिरूचि समस्याओं (बौद्धिक) के समाधान में औसत समूह से अधिक रखते हैं । प्रतिभा सम्पन्न बच्चे सामान्य तथा नीति विषयक व्यवहार औसत समूह की अपेक्षा अधिक प्रकट करते हैं और कभी भी संवेगात्मक अस्थिरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं । प्रतिभाशाली बच्चों में अधिक सतर्कता तीव्रता और अवधान का विस्तार अधिक होता है । वे समय - समय पर अपने कार्यों का मूल्यांकन स्व-आलोचना और तर्क के आधार पर भी करते हैं ।

"बागची" (1974) ने प्रतिभाशाली लड़कियों पर अध्ययन किया । आपने बुद्धि लब्धि 125 से ऊपर की लड़कियों में पाया कि वे अच्छा समायोजन, प्रसन्न भाव, निर्देश पालन, तर्कयुक्त व्यवहार, विनम्र स्वभाव और समपर्ण स्वभाव आदि विशेषताओं से परिपूर्ण हैं । वे सामान्य रूप से प्रसिद्ध, सहयोगी तथा नेतृत्व

क्षमता से पूर्ण विकसित थीं । इसी प्रकार का शोध निष्कर्ष "कोहली" (1965) ने 165 प्रतिभाशाली लड़कियों का अध्ययन करके ज्ञात किया । वे कभी संवेगात्मक असंतुलन प्रगट नहीं करती थीं, जबकि उस समूह की कुछ लड़कियों में शर्मीलापन और दब्बूपन था, लेकिन अन्य में सामाजिकता की भावना तथा सीमा से बाहर कार्य करने की क्षमता देखने को मिली ।

पंडित (1973) ने प्रतिभाशाली और सामान्य बच्चों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन निराशाओं के संदर्भ में किया और पाया कि प्रतिभाशाली बच्चों के सामने समायोजन स्थापना की कम समस्या आई , जबकि सामान्य के समक्ष बहुत आई । इसके साथ ही उन्होंने पाया कि प्रतिभा सम्पन्न छात्र अधिक समस्यात्मक रहे अपेक्षाकृत प्रतिभाशाली छात्राओं के और यह भी पाया गया कि प्रतिभाशाली तथा सामान्य दोनों ही समूह निराशा के भाव के प्रकटीकरण में भिन्नता रखते हैं । प्रतिभाशाली, समायोजन की समस्या को अधिक सकारात्मक तथा विचारात्मक तरीके से ग्रहण करते हैं, अपेक्षाकृत सामान्य बच्चों के ।

"सूरी" (1973) ने बौद्विक रूप से अति श्रेष्ठ बच्चों के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन किया । आपने अपने निष्कर्षों में पाया कि अति श्रेष्ठ बच्चे संवेगात्मक स्थापित्व में, बौद्विकता में, निश्चय में, साहस में, दृढ़ता में, शांत चित्त, नियंत्रित व असामान्य होते हैं, जबकि सामान्य एवं सामान्य से भिन्न स्तर के बच्चों में कम बौद्विक क्षमता, भावनात्मकता, आज्ञाकारी, दब्बू, समझौतावादी, अनुशासनहीन, स्वचिन्तित आदि विशेषतायें पाई गयीं । अति श्रेष्ठ बालक-बालिकाओं की अपेक्षा अधिक लचीले पाये गये ।

"वालिया" (1973) ने प्रतिभाशाली बच्चों का चयन मौखिक तथा क्रियात्मक बुद्वि परीक्षणों के द्वारा किया । शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली किशोरों के "आत्म प्रत्यय" का अध्ययन किया और पाया कि बौद्विक क्षमता का सम्बन्ध आत्म प्रत्यय के साथ अर्थपूर्ण होता है । इसके साथ ही यौन भिन्नता का प्रभाव सैल्फकेटिंग में प्रतिभाशाली तथा सामान्य किशोरों तथा किशोरियों में भी पाया गया है । प्रतिभाशाली किशोरियों में आदर्श प्रत्यय अपेक्षाकृत प्रतिभाशाली किशोरों

और सामान्य किशोरियों से अधिक पाया, लेकिन आकांक्षा स्तर का विकास अस्वाभाविक रहा, जो समायोजन को प्रभावित करता है ।

"जोशी" (1974) ने बुद्धि लब्धि के आधार पर प्रतिभाशाली बच्चों का चयन किया । आपने निष्कर्षों में पाया -

1- सृजन कार्यों में प्रतिभाशाली बच्चों का अधिक योग रहता है ।

2- 15 वर्ष के बच्चे अधिक सृजनशील पाये गये ।

3- अंग्रेजी विषय को छोड़कर अन्य विषयों में प्रतिभाशाली बच्चों का उपलब्धि के प्राप्तांक के साथ निम्न सकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया।

4- "व्यक्तित्व के शील गुण" उच्च उपलब्धि क्षमता बनाम निम्न उपलब्धि क्षमता में सृजनशीलता तथा व्यक्तित्व शील गुण के बीच अर्थपूर्ण सह-सम्बन्ध नहीं पाया गया ।

"एन0सी0ई0आर0टी0 (1974) ने शैक्षिक उपलब्धि में श्रेष्ठ बच्चों का अध्ययन 16 कार्य मूल्यों के संदर्भ में किया । आपने पाया कि उपलब्धि श्रेष्ठ तथा सामान्य बच्चे सामाजिक सेवा, योग्यता तथा सम्मान में 16 कार्य मूल्यों में सबसे अधिक पाये गये , आरामतलबी तथा आर्थिक प्राप्ति में सबसे कम पाये गये । श्रेष्ठ बच्चों तथा सामान्य बच्चों के बीच अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्वतंत्र विचार धारा तथा साहसी कार्यों में ही पाये गये ।

"शाह" (1960) ने प्रतिभाशाली बच्चों के अभिरूचि तरीकों का मापन किया । श्रेष्ठ बच्चे अपनी अभिरूचियों का व्यापक रूप से नाटकों में, अध्ययन में, वाद - विवाद में, खेलकूद में और यात्राओं आदि में प्रदर्शन करते हैं । इसी प्रकार से "वर्मा" (1964) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बच्चे औसत बच्चों की अपेक्षा भौतिक विज्ञानों, सामाजिक सेवा, पुस्तकालय प्रयोग आदि में अभिरूचि रखते हैं ।

एन0सी0ई0आर0टी0 के शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षा के आधार विभाग द्वारा "शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ बच्चों की अभिरूचियों का अध्ययन किया गया। बौद्धिक क्षमता में श्रेष्ठ बच्चों ने साक्षरता, वैज्ञानिकता, चिकित्सा एवं तकनीकी क्षेत्रों में अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्रदर्शित की , जबकि कम उपलब्धि बच्चों की अधिक अभिरूचि फाइन कल्म, कृषि, भ्रमण, गृह कार्य तथा खेलकूद आदि में पायी गयी।

"एन0सी0ई0आर0टी0" द्वारा प्रतिभाशाली बच्चों को जानने के लिए विभिन्न प्रकार के अध्ययन सम्पन्न करवाये गये। इस आधार पर उन्होंने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज़ कार्यक्रम प्रारम्भ किया ताकि प्रतिभा सम्पन्न बच्चों को आवश्यक सुविधायें देकर उनमें उत्साहवृद्धि की जाये। इसी प्रकार से 1975 में प्रतिभा सम्पन्न 273 बच्चों का चयन किया गया और पाया गया कि अधिकांश प्रतिभाशाली बच्चे शहरी क्षेत्रों से, पब्लिक विद्यालयों से शिक्षित थे, जिनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की थी और उच्च शिक्षित तथा उच्च आर्थिक स्थिति के परिवारों से सम्बन्ध रखते थे।

"रैना" (1983) ने "राष्ट्रीय प्रतिभा खोज" 1977 के बैच का सृजनशीलता के संदर्भ में अध्ययन किया। आपने अभिप्रेरणा सृजन अनुसूची तथा आन्तरिक अनुभव मापनी का प्रयोग करके कक्षा-10 के 412 छात्रों का अध्ययन किया। इनमें से 68 छात्रों का चयन हुआ और 344 को छात्रवृत्ति हेतु नकार दिया गया। इसी प्रकार से 1978 बैच में 172 छात्र कक्षा-11 तथा कक्षा-12 को साक्षात्कार हेतु बुलाया गया। इनमें से सिर्फ 39 छात्रों का चयन छात्रवृत्ति हेतु हुआ और 133 को नकार दिया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्न रहे -

1- वर्ष 1977 के बैच के चयनित और निष्कासित बच्चों की मौखिक सृजनशील क्रियाओं में कोई भी सार्थक सम्बन्ध नहीं था। वर्ष 1978 के बैच में चयनित छात्रों और निष्कासित छात्रों के बीच स्वाभाविक क्षेत्रों में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

2- वर्ष 1977 और 1978 बैच के चयनित बच्चों तथा निष्कासित बच्चों के

मौखिक सृजनशीलता परीक्षण में कोई भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

3- वर्ष 1977 के बैच के छात्रों में चयनित समूह और निष्कासित समूह की "अभिप्रेरणा सृजनता मापनी " में सार्थक अंतर पाया गया ।

4- वर्ष 1978 के बैच के चयनित तथा निष्कासित बच्चों के सृजनशीलता प्रत्यय के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

"कुमार" (1984) ने "स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स परीक्षण के आधार पर बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली कॉलेज छात्रों का चयन किया । आपने 600 कॉलेज छात्रों में से 2 एस0डी0 मध्यमान से ऊपर के आधार पर 50 प्रतिभाशाली छात्रों का चयन किया । आपने इन प्रतिभाशाली छात्रों की तुलना 'रैना - कुमार आदत अध्ययन" अनुसूची के द्वारा किया तथा पाया कि -

(1) बौद्धिक प्रतिभाशाली छात्र पाठ्यक्रमीय क्रियाओं में सामान्य की अपेक्षा अधिक सम्बन्धित रहते हैं ।

(2) प्रतिभाशाली बच्चों के व्यक्तित्व में सृजनात्मता कम पायी गयी अपेक्षाकृत सामान्य बच्चों के ।

(3) प्रतिभाशाली सम्पन्न बच्चे, सामान्य बच्चों की तुलना में न तो अधिक बहिर्मुखी और न ही उन्मादी पाये गये ।

(4) लेकिन प्रतिभासम्पन्न छात्र, सामान्य की अपेक्षा शैक्षिक प्राप्तियों (ज्ञान) में अधिक अच्छे पाये गये ।

"कुमार" (1984) द्वारा एक रूचिमय अध्ययन प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की सृजनशीलता और बौद्धिक क्षमता के सम्बन्ध को जानने के लिए किया गया । दारेन्स परीक्षण (मौखिक तथा क्रियात्मक) के द्वारा तथा स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रेसिस के द्वारा बच्चों की सृजन शक्ति का मापन चार समूहों (HC- HI, HC-LI, LC-HI एवं LC-LI) में किया गया । इसके अंतर्गत 105 उच्च सृजनशीलता वालों को उच्च

प्रतिभा सम्पन्न श्रेणी में रखा गया जो सृजन शक्ति में प्रतिभाशाली बने । इसी समूह की फिर से अन्य समूह के छात्रों के साथ तुलना की गयी जो सृजन शक्ति तथा बुद्धि में औसत स्तर के थे । इनकी तुलना में अंतर्मुखी - बर्हिमुखी उन्मादी, साहसी , क्षेत्र निर्भरता तथा स्वतंत्रता आदि विशेषताओं को आधार बनाया । आपने अपने निष्कर्षों में पाया -

1- सृजनशील प्रतिभाशाली छात्रों ने सृजनशीलता और बुद्धि परिवर्तियों के बीच उच्च सार्थकता प्राप्त की ।

2- दोनों ही समूह अंतःपरावर्तन तथा बर्हिमुखी में समानता स्थापित कर रहे थे । जबकि उन्मादी व्यवहार में सार्थक भिन्नता दिखला रहे थे । इसके बाबजूद मध्यमान (दोनों समूह का)औसत छात्रों को अधिक उन्मादी प्रगट कर रहा था, अपेक्षाकृत सृजनशील प्रतिभाशाली छात्रों के ।

3- सृजनशील प्रतिभाशाली छात्र च्वाइस डायलम्भ प्रश्नावली में सार्थक उच्चता प्रगट करते हैं और साहसिक परिस्थितियों में अधिक झुकाव प्रदर्शित करते हैं ।

4- सृजनशील प्रतिभाशाली छात्र अधिक स्वतंत्र होते हैं तथा स्वाभाविकता चिन्तन तथा प्रत्यक्षीकरण में प्रगट करते हैं ।

"गनानाम्बल" (1982) ने प्रतिभाशाली बच्चों पर अध्ययन किया । इनके अध्ययन के उद्देश्य थे - (1) बच्चों की प्रतिभा सम्पन्नता के तत्वों का पता लगाना । (2) प्रतिभाशाली बच्चों के प्रति अध्यापकों की राय का पता लगाना तथा मानकीकृत परीक्षण तैयार करना । (3) यौन भिन्नता के प्रभाव को प्रतिभा से भिन्नता स्थापित करना । (4) प्रतिभा से सामाजिक गुणों के सम्बन्ध का अध्ययन करना । (5) सामाजिक-आर्थिक स्तर का सम्बन्ध प्रतिभा के साथ कैसे है जानना । इस संदर्भ में शोधकर्ता ने बुद्धि, सृजनशीलता, शैक्षिक उपलब्धि, चिन्ता, सामाजिक गुण, यौन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि परिवर्तियों को अध्ययन हेतु चुना । आपने न्यादर्श हेतु 1555 छात्रों (920 छात्रा और 635 छात्र) को

लिया । इस न्यादर्श का चयन रेण्डम विधि से किया गया । तथ्य विश्लेषण के पश्चात विस्तृत निष्कर्ष निम्नप्रकार के रहे -

(1) विशेषताओं के विश्लेषण में प्रथम दो विशेषताऐं 61-62% तक बढ़ी हुई मिलीं । (2) बुद्धि, सृजनात्मकता, उपलब्धि तथा चिन्ता आदि चार परिवर्तियों के विश्लेषण में धनात्मक सह-सम्बन्ध सृजनशीलता के साथ पाया गया और ऋणात्मक सह-सम्बन्ध अन्य विशेषताओं के साथ पाया गया । (3) न्यादर्श के 10% भाग के प्रतिभाशाली बच्चों ने औसत स्तर रखा । (4) प्रतिभा सम्पन्नता का सम्बन्ध छात्र - छात्राओं में भिन्नता स्थापित करने में सफल नहीं रहा । फिर भी यौन भिन्नता सामाजिक अवसरों के तत्वों से प्रभावित पायी गयी । प्रतिभाशाली बच्चे सामाजिक गुणों में सामान्य बच्चों से अधिक श्रेष्ठ पाये गये । सामाजिक, आर्थिक मापनी के स्तर-1 और 2 में प्रतिभाशाली बच्चों का प्रतिशत अधिक रहा , जबकि सामाजिक-आर्थिक मापनी के स्तर-4 और 5 में सामान्य बच्चों का प्रतिशत अधिक रहा ।

"द लिमा" (1979) ने प्रतिभाशाली बच्चों पर अपना शोध कार्य किया। अपने अध्ययन में मुख्य उद्देश्य माने (1) आपने सृजनशील, प्रतिभाशाली और बौद्धिक प्रतिभाशाली बच्चों की उपलब्धियों में तुलना की । (2) उस परिवर्ती का पता लगाया जो विभिन्न अध्ययन समूहों के बीच मनो-सामाजिक तत्वों में अंतर स्थापित करता हो । आपने अपने न्यादर्श हेतु मुम्बई के अंग्रेजी माध्यम के 25 विद्यालयों के कक्षा-9 के छात्रों को लिया । सृजनात्मकता के तथ्य संकलन के लिए "पासी" द्वारा विकसित परीक्षण का तथा मनो-सामाजिक परिवर्ती हेतु अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण तथा अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का शोधकर्ता ने प्रयोग किया । प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष प्रस्तुत हैं -

(1) दोहरे प्रतिभाशाली समूह का उच्च प्रतिशत उपलब्धि में रहा और इकहरे प्रतिभाशाली समूह का कम प्रतिशत उपलब्धि में रहा ।

(2) प्रतिभाशाली बच्चों के बीच परिवर्तियों के अनुसार सार्थक भिन्नता स्थापित

हुई । ये समूह बुद्रि तथा सृजनात्मकता में समान उपलब्धि,सामाजिक पारस्परिकता, आत्म - प्रत्यय, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा स्वतंत्रता स्थापित रखते हैं ।

(3) प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के विभिन्न समूहों का गठन बुद्रि, सृजन शब्द आदि के आधार पर हुआ है, जो सामान्य बुद्रि, सामान्य सृजनशीलों तथा आत्म सम्मान प्रत्यय तथा प्रभुत्व भाव से भिन्नता रखते हैं ।

(4) प्रतिभाशाली व्यक्तियों के विभिन्न प्रकारों में उच्च तथा कम उपलब्धि में भी सार्थक अंतर रहा है ।

"सम्पत" (1984) ने बौद्रिक प्रतिभाशाली बच्चों की विशेषताओं तथा समस्याओं का अध्ययन किया । उन्होंने अपने शोध कार्यो के निम्न उद्देश्य बनाये। (1) बौद्रिक रूप से प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की विशेषताओं का अध्ययन करना । (2) इन्हीं प्रतिभाशाली बच्चों की समस्याओं का अध्ययन करना । (3) प्रतिभाशाली बच्चों की अवकाश के समय की क्रियाओं का अध्ययन करना । (4) इनकी शैक्षिक तथा व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन करना । (5) समाज के प्रचलित धार्मिक विश्वासों में इनकी भूमिका का अध्ययन करना । (6) इनकी यौन और शादी सम्बन्ध की राय को जानना । (7) इनके व्यक्तित्व के शील गुणों का पता लगाना । इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था । प्रस्तुत शोध के मुख्य निष्कर्ष रहे -

(1) बौद्रिक प्रतिभा सम्पन्न बच्चों में स्वास्थ्य की कोई समस्या नहीं पायी गयी । (2) इन बच्चों के परिवार के कुछ ही सदस्य शिक्षित थे । प्रतिभाशाली समूह में बच्चों की शारीरिक बनावट तथा अभिवृद्रि में सामान्य बालकों से कोई भिन्नता नहीं प्राप्त हुई । (3) बौद्रिक रूप से प्रतिभाशाली बच्चों की प्रतिभा को समाज की सदस्यता, धर्म और भाषा आदि प्रभावित नहीं कर पाते । (4) परिवार का पर्यावरण तथा शिक्षा के सकारात्मक साधन आदि भी प्रतिभाशाली बच्चों के विकास कार्य में प्रभाव नहीं डाल पाते । (5) परिवार के सामाजिक आर्थिक

झगड़े, और पड़ोसी अवरोधों का प्रतिभा विकास पर कोई प्रभाव नहीं होता । (6) बड़े परिवार जहाँ पर सदस्य संख्या अधिक होती है, प्रतिभाशाली बच्चों के विकास में बाधक होते हैं । (7) प्रतिभाशाली बच्चे विभिन्न विषयों में स्वाध्यायरत रहते हैं और विस्तार से तथा समझ के साथ अध्ययन करते हैं । (8) अधिकांश प्रतिभाशाली बच्चे अपनी शैक्षिक उपलब्धि में उच्च निष्पादन करते हैं । (9) प्रतिभाशाली बच्चे ईश्वर और धार्मिक शास्त्रों के अस्तित्व को स्वीकारते हैं तथा दान में विश्वास करते हैं । (10) प्रतिभाशाली बच्चे आत्म निर्भर बनने के पश्चात ही शादी करते हैं ताकि वे साधन सम्पन्न बन सकें । (11) वे समाज द्वारा निश्चित विवाह पद्धति में विश्वास करते हैं लेकिन जीवन साथी का चुनाव स्वयं ही करते हैं । (12) प्रतिभाशाली बच्चे बड़े ही संतुलित , सामाजिक ,सही समायोजित तथा व्यवहार कुशल होते हैं ।

"सिंह" (1983) ने मानसिक रूप से उच्च बच्चों का अध्ययन आवश्यकता प्रकार, उपलब्धि तथा समायोजन को जानने के लिए किया । आपने अपने शोध कार्य के उद्देश्यों को माना कि - (1) प्रतिभाशाली बच्चों के आवश्यकता प्रकार की तुलना, सामान्य स्तर के बच्चों के साथ अध्ययन करना । (2) प्रतिभाशाली बच्चों की बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध जानना । (3) प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक, स्वास्थ्य परिवार संवेगात्मक तथा यौन आदि क्षेत्रों में आवश्यकता प्रकार तथा समायोजन का अध्ययन करना । प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्षों में पाया गया कि -

1- आवश्यकतम प्रकारों, उपलब्धि तथा समायोजन (सामाजिक, संवेगात्मक, स्वास्थ्य, परिवार एवं शिक्षा) के बीच निम्न धनात्मक सह-सम्बन्ध रहा ।

2- उच्च प्रतिभा सम्पन्न छात्राओं का सामाजिक तथा यौन व्यवहार में अच्छा समायोजन प्राप्त हुआ ।

3- उच्च श्रेणी के विषय उच्च तथा मध्य सामाजिक, आर्थिक स्तर से सम्बन्धित पाये गये ।

4- उच्च प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की बुद्धि तथा उपलब्धि के बीच धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया , जबकि ऋणात्मक सह-सम्बन्ध, सामान्य समूह के बीच पाया गया ।

5- प्रतिभाशाली तथा सामान्य समूहों के बच्चों में स्वास्थ्य, परिवार सामाजिक तथा संवेगात्मक आदि क्षेत्रों में समायोजन की सार्थकता पायी गयी ।

"अग्रवाल" (1985) ने बौद्धिक विभिन्नता तथा भावात्मक पृथक्करण पर अध्ययन किया ओर निष्कर्षो में पाया कि प्रतिभाशाली बच्चों का समायोजन अच्छा होता है बजाय सामान्य बच्चों के समायोजन के ।

"श्रीमती बलवंत शाही" (1992) ने प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा समायोजन का अध्ययन किया । आपने गोरखपुर शहर के कक्षा-8 से कक्षा-10 तक के बच्चों को तथ्य संकलन हेतु लिया तथा निम्न उद्देश्य बनाये -

1- मौखिक तथा क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण का विकास करना ।

2- कक्षा-8 से कक्षा-10 तक के प्रतिभाशाली बच्चों को छाँटना ।

3- प्रतिभाशाली बच्चों की प्रतिभा तथा समायोजन में सम्बन्ध ज्ञात करना ।

4- प्रतिभाशाली बच्चों की प्रतिभा तथा आर्थिक-सामाजिक स्तर के बीच सह-सम्बन्ध स्थापित करना ।

5- प्रतिभाशाली बच्चों की बुद्धि परीक्षण मौखिक तथा क्रियात्मक के बीच सह-सम्बन्ध देखना ।

शोध कार्य के प्रमुख निष्कर्ष निम्नानुसार रहे -

1- बुद्धि का क्रियात्मक परीक्षण सामाजिक-आर्थिक स्तर पर पूर्णरूप से स्वतंत्र तत्व के रूप में प्रगट हुआ है ।

2- प्रतिभा सम्पन्न बच्चे सार्थक रूप से समायोजन के साथ सम्बन्धित पाये गये ।

3- मौखिक बुद्धि परीक्षणों में पाये गये छात्र अधिक समायोजित पाये गये, अपेक्षाकृत क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण छात्रों के ।

4- प्रतिभा सम्पन्नता को मापने में मौखिक तथा क्रियात्मक बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग करके ही प्रतिभाशाली बच्चों का चयन करना विश्वसनीय होता है ।

विदेशों में हुए अध्ययन

''ग्रोसवर्ग'' (1986) ने प्रतिभाशाली बच्चों की बुद्धि लब्धि और संवेगात्मक समायोजन के सम्बन्ध का अध्ययन किया । आपने अपने शोध का मुख्य उद्देश्य प्रतिभाशाली बच्चों में उच्च बुद्धिलब्धि और निम्न बुद्धिलब्धि को बीच संवेगात्मक समायोजन की तीव्रता का अध्ययन करना माना । इसके साथ ही बुद्धिलब्धि की एक सीमा को निश्चित करना ताकि कुसमायोजन का पता लग सके । आपने अनेक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग तथ्य विश्लेषण हेतु किया । ''टी'' परीक्षण का प्रयोग प्रतिभाशाली समूह तथा अधिक प्रतिभाशाली समूहों के बीच अंतर स्थापित करने के लिए किया । इसके साथ ही आपने सह-सम्बन्ध सांख्यिकी का प्रयोग बुद्धि का अन्य परिवर्तियों के साथ सार्थक सम्बन्ध जानने के लिए किया ।

आपने इस शोध के निष्कर्षो में पाया कि छात्रों के संवेगात्मक समायोजन और विषयों की बुद्धि लब्धि में सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है । जिन बच्चों की उच्च बुद्धि लब्धि थी, उनकी बुद्धि और चिन्ता परिवर्तियों के बीच ऋणात्मक सह-सम्बन्ध होते हुए भी समायोजन अच्छा रहा । जब उच्च, सामान्य और निम्न स्तर के बुद्धिलब्धि समूहों की तुलना की तो पाया कि कुछ परिवर्तियों के बीच सार्थक भिन्नता थी । अतः प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष विरोधात्मकता प्रदर्शित करते हैं, प्रतिभाशाली बच्चों के संवेगात्मक समायोजन के संदर्भ में ।

"पार्क" (1982) ने प्रतिभाशाली बच्चों के पर्यावरणीय तत्वों का अध्ययन किया । आपने पब्लिक स्कूल छात्रों (प्रतिभाशाली) कक्षा-6 के बच्चों की तुलना समान यौन, कक्षा तथा स्कूल आदि के आधार पर की, लेकिन समानता नहीं पायी। आपने पाया कि पर्यावरणीय तत्वों के सामूहिक प्रभाव प्रतिभाशाली तथा सामान्य बच्चों के साथ सार्थकता नहीं रखते थे । इस निष्कर्ष से प्रतिभाशाली बच्चो के विकास में पर्यावरण का महत्व स्पष्ट होता है तथा इसका परिवार और विद्यालय में प्रयोग करना चाहिए ।

"मैथ्यू-मार्गन" (1984) ने विद्यालय समायोजन के संदर्भ में स्वभाव तथा बुद्धिलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया । इस अध्ययन का उद्देश्य था 85 बच्चों की संज्ञानात्मक योग्यता समायोजन और स्वभाव के बीच सम्बन्धों को जानना । आपने विद्यालय समायोजन का मापन ब्रिस्टिल सोशल एडजस्टमेंट माइट्स के द्वारा किया । आपने अपने न्यादर्श को प्रतिभाशाली बच्चों के समूह को 2 एस0डी0, मध्यमान से ऊपर आधार पर चुना और सामान्य समूह का चुनाव 2 एस0डी0 मध्यमान से नीचे के आधार पर चुना । आपने पाया कि माता के स्वभाव का प्रभाव उन बच्चों पर पड़ा जो उनके साथ लगातार रहते हैं और जो अध्यापकों के साथ रहते हैं वे सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक समायोजित हैं । इसके साथ ही कोई भी सार्थक निष्कर्ष बुद्धि विकास के बारे में नहीं आया जो समायोजन स्थापना के बारे में भविष्यवाणी कर सके ।

"बर्क" (1980) ने प्रतिभाशाली बच्चों के स्वभाव की विशेषताओं का अध्ययन उपलब्धि तथा समायोजन के सन्दर्भ में किया । आपने प्रतिभाशाली बच्चों की स्वभावगत विशेषताओं का पता लगाया और उनका सम्बन्ध बुद्धि उपलब्धि तथा समायोजन के साथ स्थापित किया । आपने स्वभावगत विशेषताओं में सतर्कता स्तर, पहुँच-वापसी, स्थायीकरण, तीव्रता, क्षणिक स्वभाव, निरंतरता और विघ्नकारक आदि तत्वों का अध्ययन में समावेश किया ।

आपने न्यूयार्क शहर के नर्सरी विद्यालय के प्रतिभाशाली 125 बच्चों का चुनाव अपने न्यादर्श हेतु किया । इन बच्चों की स्वभावगत विशेषताओं का

अध्ययन व तुलना सामान्य बच्चों के समूह की स्वभावगत विशेषताओं के साथ किया गया । दोनों ही समूहों में स्वभाव की पाँच विशेषताओं में सार्थक अंतर आया और दो में नहीं । प्रतिभाशाली समूह ने निरंतरता, कम विघ्न , अधिक पहल, अधिक अच्छा स्वभाव आदि में उच्च स्तर प्रदर्शित किया । इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली बच्चे व्यक्तित्व और स्वभावगत विशेषताओं में सामान्य से भिन्नता रखते हैं । अतः प्रतिभाशाली बच्चों के शिक्षा नियोजन में और शैक्षिक कार्यक्रम के निर्धारण में इस भिन्नता को आधार बनाया जा सकता है ।

"सेविकी" (1980) ने प्रतिभाशाली बच्चों का अध्ययन आत्म प्रत्यय और उपलब्धि ,कक्षोन्नति, अनुपस्थिति, यौन , सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा जन्म क्रम आदि के बीच सम्बन्ध जानने के लिए किया । सामाजिक - आर्थिक स्तर का प्रभाव आत्म प्रत्यय के विकास पर सकारात्मक रहा । प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक - आर्थिक स्तर का सार्थक सम्बन्ध नहीं रहा चाहे वे छात्र सकारात्मक तथा नकारात्मक आत्म प्रत्यय रखते हों ।

विद्यालय परिवर्ती के रूप में छात्र-उपलब्धि तथा विद्यालय से अनुपस्थित रहने की प्रवृत्ति को माना गया । इसके साथ ही विद्यालय के बाहर के परिवर्तियों में सामाजिक-आर्थिक स्तर, जन्म क्रम और बुद्धि थे । निष्कर्षों में पाया गया कि छात्र समूह पर विद्यालय परिवर्तियों में आत्म प्रत्यय का प्रभाव अधिक पड़ा । इसके साथ ही उपलब्धि तथा कक्षोन्नति परिवर्ती ने छात्राओं के आत्म प्रत्यय को अधिक प्रभावित किया, अपेक्षाकृत सामाजिक-आर्थिक स्तर, जन्म क्रम और बुद्धि परिवर्तियों के ।

"कीटन" (1985) ने ग्रेड प्रथम के बच्चों के सामाजिक - आर्थिक स्तर और बुद्धि के संदर्भ में सीरियल रिकाल प्रक्रिया का अध्ययन किया ।

"जेन्सन" (1968) का मत है कि शहरी और कस्बे की रिकाल प्रक्रिया बौद्धिक क्षमता के कारण भिन्न रूप से स्थापित होती है । न्यादर्श के 50 बच्चे जो कस्बे से सम्बन्धित थे, वे आर्थिक रूप से पिछड़े हुए थे । साथ ही 50 बच्चे उच्च

सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे । प्रमापीकृत बुद्धि मूल्यांकन में 5 अंकों का प्रत्याहान सुनने और देखने में उपयुक्त रहे । अतः निष्कर्षात्मक रूप से प्रत्याहान का स्पान 4-9 अंकों तक प्राप्त हो जाता है ।

"मेयर" (1975) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर के संदर्भ में तरल बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया । प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य तरल बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्ब्रन्ध जानना था । निष्कर्ष में पाया गया कि तरल बुद्धि और सोशियोमेट्रिक स्तर में सार्थक सम्बन्ध आया ।

"डच" (1976) ने सामाजिक - आर्थिक स्तर प्रतिक्रिया की सफलता प्रतिक्रिया की असफलता तथा बुद्धि के बीच सह-सम्बन्ध का अध्ययन किया । इस अध्ययन का मुख्य उददेश्य था बुद्धि की उच्चता वाले बच्चों के बीच गति और शुद्धता प्रतिचार में, सामाजिक - आर्थिक स्तर में सह-सम्बन्ध को ज्ञात करना तथा विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि सामाजिक - आर्थिक स्तर, बुद्धि के साथ सार्थक सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाया ।

"नोवक" (1976) ने मौखिक तथा क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण का सामाजिक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन किया । इस अध्ययन में सामाजिक समायोजन का तीन स्तरों पर प्रयोग कर बच्चों की बुद्धिलब्धि के साथ भिन्नता जानने की कोशिश की गयी । शोधकर्ता ने कक्षा-9 से कक्षा-12 तक के 379 छात्रों का न्यादर्श लिया । इसके निष्कर्षों में पाया गया कि सामाजिक समायोजन में मौखिक बुद्धिलब्धि वाले बच्चे अपने विद्यालयी विषयों में उच्च रहे, अपेक्षाकृत क्रियात्मक बुद्धि बच्चों के । अतः मौखिक बुद्धि परीक्षण तथा क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण बच्चों के बीच उनके विषयों के साथ सामाजिक समायोजन की सार्थक भिन्नता प्राप्त नहीं हुई । इस तरह से अध्ययन के सार्थक निष्कर्ष "परिवार समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन तथा संवेगात्मक समायोजन आदि में पाये गये ।

"ट्रेसी" (1987) ने विश्वविद्यालय प्रतिभाशाली छात्रों तथा सामान्य छात्रों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन उनके माता-पिता की आकांक्षाओं के प्रत्यक्षीकरण के रूप में किया । आपने अपने न्यादर्श के लिए 66 छात्रों को लिया।

इनमें से 28 छात्र प्रतिभाशाली थे और 38 छात्र सामान्य थे । आपके अध्ययन के उददेश्य थे- 1- प्रतिभाशाली तथा सामान्य बच्चों के प्रति उनके माता-पिता की आकांक्षा का स्तर बुद्धि, शिक्षा, खेल, सामाजिक क्रिया में और भविष्य लक्ष्य के प्रति क्या है। (2) प्रतिभाशाली तथा सामान्य के बीच अंतर स्थापित करना । यदि दोनों ही समूहों में अंतर है तो प्रतिभाशाली तथा सामान्य बच्चों का शैक्षिक, आत्म प्रत्यय और सामाजिक समायोजन के संदर्भ में छात्र तथा छात्रा में क्या भिन्नता है । (3) इन समूहों के माता-पिता के आकांक्षा के स्तर को निश्चित करना ताकि शैक्षिक, आत्म प्रत्यय और सामाजिक समायोजन परिवर्तियों का अध्ययन हो सके । आपने निष्कर्षो में पाया कि प्रतिभाशाली छात्र, प्रतिभाशाली छात्राओं की अपेक्षा अपने माता-पिता की आकांक्षाओं का कम ध्यान रखते हैं ।

प्रतिभाशाली छात्र शैक्षिक, आत्म प्रत्यय तथा सामाजिक समायोजन में अधिक दृढ़ पाये गये अपेक्षाकृत प्रतिभाशाली छात्राओं के ।इसके साथ ही प्रतिभाशाली बच्चों के बीच बहुत कम भिन्नता उनके शैक्षिक ,आत्म प्रत्यय तथा सामाजिक समायोजन के बीच देखने को मिली ।

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने भारत तथा विदेशों में सम्पन्न किये गये प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह अनुभव किया कि भारत तथा विदेशों के प्रतिभाशाली बच्चों के अध्ययनों में विरोधाभास अधिक है, जबकि समानता कम । कुछ शोध निष्कर्षो में प्रतिभाशाली बच्चों और समायोजन में सार्थक सम्बन्ध आया है, जबकि कुछ शोध निष्कर्षो में सार्थक सम्बन्ध नहीं आया है । इसी तरह से सामाजिक -आर्थिक स्तर का प्रतिभा के साथ सम्बन्ध भारत तथा विदेशी अध्ययन में भी विरोध प्रकट करता है । कुछ अध्ययन सामाजिक- आर्थिक स्तर और प्रतिभा के बीच सार्थक सम्बन्ध प्रकट करते हैं और कुछ सार्थक सम्बन्ध प्रायः प्रकट नहीं करते हैं । इसके साथ ही प्रतिभाशाली बच्चों में उच्च आत्म प्रत्यय तथा आत्म विश्वास समान रूप से पाया गया है ।

अध्याय - चतुर्थ

शोध प्रविधि

(1) अध्ययन की रूपरेखा

(2) शोध न्यादर्श

(3) शोध उपकरण

(4) प्रदत्त संकलन विधियाँ

(5) प्रदत्त विश्लेषण विधियाँ

अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तुत शोध कार्य दतिया जिले (मध्य प्रदेश) के अंतर्गत पढ़ने वाले उन छात्र-छात्राओं पर सम्पन्न किया गया है जो कक्षा-8, 9 तथा कक्षा-10 के हैं । ये लोग सहारिया जनजाति के परिवारों से सम्बन्ध रखते हैं । इनकी प्रतिभा का आकलन बुद्धि परीक्षण के द्वारा तथा समायोजन का आकलन समायोजन परीक्षण द्वारा तथा सामाजिक - आर्थिक स्तर का मापन, सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी के द्वारा किया गया है । प्रतिभा को मापने के लिए बुद्धि परीक्षिका (सामूहिक) पूर्ण रूप से विश्वसनीय है और इसका प्रयोग वर्तमान परिस्थितियों में सफल व सही सिद्ध हो चुका है (शाही 1992, तथा पाण्डेय-1993) । आज़ के किशोर तथा किशोरियों में मानसिक सोच अभिरूचि, क्रियाशीलता, नैतिकता तथा आत्म निर्भरता आदि क्षेत्रों में प्रयोजन परक परिवर्तन आ चुका है । परिणामस्वरूप आज की पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच सांस्कृतिक लैग को समाप्त करने के लिए सभी बच्चों की प्रतिभाओं का विकास करना आवश्यक है । प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता अपने अध्ययन के प्रशासनिक आयामों का वर्णन प्रस्तुत करता है ।

शोध न्यादर्श (सेम्पल)

व्यावहारिक रूप में जब अनुसंधानकर्ता को कुछ समस्याओं का समाधान करना होता है तो उसके सामने यह प्रश्न उठता है कि वह किस जनसंख्या का प्रयोग करे । जनसंख्या के निर्धारित हो जाने पर शोधकर्ता सभी सदस्यों पर अपने अभिकरणों का प्रयोग नहीं कर पाता है क्योंकि समय, धन और शक्ति का अभाव रहता है । अतः शोधकर्ता एक निश्चित न्यादर्श का चुनाव करता है । न्यादर्श एक समिष्ट का वह अंग होता है जिसमें अपनी पापुलेशन की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है । न्यादर्श के चयन के लिए शोधकर्ता ने निम्न बातों पर ध्यान रखा - (1) सम्भाव्यता के नियमों का पालन (2) समिष्ट का प्रतिनिधित्व (3) सामान्यीकरण (4) अभिनति विहीनता और (5) विश्वसनीयता

सामाजिक या व्यवहार सम्बन्धी विज्ञानों में जिन समिष्टिओं का

अध्ययन किया जाता है वे प्रायः अपरिमित होती हैं । वे संभागी और एक सूत्र में बँधी न होकर बहुलांगी तथा कई उप समूहों में बँटी होती हैं । उप समूह आयु, लिंग, जाति, अर्थ, धर्म आदि आधारों पर बँटे होते हैं । इन्हीं आधारों को उपसमूहों का गुण, धर्म भी माना जाता है । जब समिष्ट का स्वरूप सजातीय होता है, तब न्यादर्श चयन में कोई कठिनाई नहीं आती, परन्तु जब समिष्ट का स्वरूप विषम होता है तो न्यादर्श की इकाईयों के चयन के लिए सैम्पलिंग प्रक्रिया का प्रयोग करना पड़ता है । शोधकर्ता को सैम्पलिंग करते समय निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिए - (1) प्रत्येक इकाई का प्रतिनिधित्व होना चाहिये (2) मूल जनसंख्या के सभी गुण होने चाहिए (3) न्यादर्श की इकाईयों की जनसंख्या उपयुक्त होना चाहिए (4) अभिनति से मुक्त होना चाहिए (मखीजा, 1986) । जब शोधकर्ता इन बातों पर ध्यान देकर अपने प्रतिचयन का चुनाव करता है तो समय, धन और शक्ति की बचत होती है, अध्ययन में गहनता आती है, प्रशासन में सुविधा होती है, विश्वसनीयता, अध्ययन में उपयुक्तता एवं बोधगम्यता आदि लाभ प्राप्त होते हैं ।

प्रतिचयन के चुनाव में समिष्ट के स्वरूप को ध्यान में रखा जाता है और उसी के अनुरूप विधि का प्रयोग किया जाता है । "सिंह" (1988, पृष्ठ-225) ने न्यादर्श चयन के लिए दो विधियों की मान्यता दी है :-

(क) सम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि (प्रोबेबिलिटी सैम्पलिंग)

(ख)असम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि (नॉन प्रोबेबिलिटी सैम्पलिंग)

(क) **सम्भाव्यता प्रतिदर्श** वह प्रतिदर्श योजना है जिसमें शोधकर्ता यह सम्भावना करता है कि चुने हुए प्रतिदर्श में कुल जनसंख्या की सभी विशेषतायें विद्यमान हैं । इसमें जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के चुने जाने की समान सम्भावना अथवा कोई न कोई सम्भावना अवश्य होती है । इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनने हेतु तीन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है -

(1) सरल अनियत प्रतिदर्श (सिम्पल रेन्डम सैम्पलिंग)

(2) वर्गवद्व अनियत प्रतिदर्श (स्ट्रैटीफाइड रेन्डम सैम्पलिंग)

(3) समूह प्रतिदर्श (क्लस्टर सैम्पलिंग)

सरल अनियत प्रतिदर्श में इस बात की संकल्पना होती है कि प्रत्येक इकाई में सम्पूर्ण वर्ग की सभी विशेषताएं तथा गुण होते हैं तथा प्रतिचयन में प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिदर्श में चुने जाने की सम्भावना समान होती है । इसमें चुनाव के लिए लाटरी विधि, टिपिट अंक विधि , निश्चित क्रम विधि तथा ग्रिड विधि का प्रयोग किया जाता है । प्रायः इस विधि द्वारा चयन किये गये प्रतिदर्श को प्रतिनिधित्वकारी मान लिया जाता है परन्तु ऐसी भी सम्भावना हो सकती है कि चुने हुए प्रतिदर्श में भिन्न-भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में एवं मूल जनसंख्या के भिन्न-भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में अंतर हो ।

अतः इस अंतर को समाप्त करने के लिए वर्गबद्व अनियत प्रतिदर्श (स्ट्रेटीफायड सैम्पलिंग) का प्रयोग किया जाता है । इसका अर्थ होता है ''समिष्ट के सभी सदस्यों में से किसी भी सदस्य को लिये जाने की प्राथमिकता का समान होना '' अर्थात समिष्ट से किसी दूसरे प्रतिदर्श के लिये जाने की प्राथमिकता वही है जो प्राथमिकता पहले प्रतिदर्श के लिए जाने की थी ।

समूह प्रतिदर्श जब कभी जनसंख्या अत्यधिक विस्तृत और व्यापक होती है एवं दूर - दूर तक फैली हुई होती है, तब सुविधापूर्वक अध्ययन के लिए जनसंख्या को समूह प्रतिदर्श विधि से क्षेत्रीय इकाईयों में विभाजित करके जनसंख्या में विद्यमान विशेषकों के अनुसार बड़े-बड़े समूह बना लेते हैं । ऐसाकरने से अध्ययन में समय व धन की भी बचत होती है । ये बड़े समूह या गुच्छे साधारण अनियत विधि या वर्गबद्व अनियत विधि द्वारा बनाये जाते हैं । इसके बाद बड़े समूहों में से छोटे प्रतिदर्श का चयन किया जाता है ।

(ख) असम्भाव्यता प्रतिदर्श के लिए कहा गया है कि समिष्ट के किसी या प्रत्येक तत्व के प्रतिचयन में सम्मिलित होने की कोई निश्चितता नहीं होती है ।

इसका प्रयोग तीन रूपों में किया जाता है –

1- आकस्मिक न्यादर्शन (एक्सीडेंटल सैम्पिलिंग)

2- अंश न्यादर्शन (कोटा सैम्पिलिंग)

3- उद्देशीय न्यादर्शन (परपजिव सैम्पिलिंग)

समय एवं धन की कमी के कारण प्रस्तुत शोध कार्य में सम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता । अतः असम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि का प्रयोग शोध कार्य की उपादेयता को सामने रखते हुए किया गया जो वर्तमान कार्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है । अतः शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु न्यादर्श के चुनाव हेतु परपजिव सैम्पलिंग का प्रयोग किया ।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों का आकलन सामाजिक – आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन को ध्यान में रखकर किया है ताकि उनके विकास की सम्भावना व्यक्त की जा सके । इस हेतु उद्देशीय न्यादर्श (परपजिव सैम्पलिंग) को उपयक्त तथा संतोषजनक माना गया है । इसी आधार पर शोधकर्ता ने आवश्यकतानुसार विशिष्ट तथ्यों का चयन समिष्ट में किया है । इस प्रकार से प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं को उद्देशानुसार न्यादर्श हेतु चयन किया है ।

भारत देश की शासन प्रणाली जनतंत्रात्मक है । हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि आदिवासी तथा जनजातियों के हितों की रक्षा करना प्रशासन का प्रमुख कर्तव्य है । इसके साथ ही संविधान के अनुच्छेद-29 तथा 30 में शैक्षिक आरक्षणों की विशेष व्यवस्था की गयी है । संविधान के अनुच्छेद-(30) में जनजातियों को अपने धर्म और भाषा के आधार पर सामाजिक सांस्कृतिक व शैक्षिक विकास के लिए इच्छानुसार शैक्षिक संस्थान स्थापित करने का अधिकार प्राप्त है । इस आधार को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने दतिया जिले का भ्रमण किया और उसके अंतर्गत सहारिया जनजाति के क्षेत्रों को चुना ताकि उनके बच्चों

को न्यादर्श हेतु चुना जा सके । अतः कक्षा-8, 9 एवं 10 में अध्ययनरत वर्ष-2000, 2001, 2002, 2003 और 2004 के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श हेतु चुना, जिसकी तालिका प्रस्तुत है -

न्यादर्श तालिका (4.1)

शोध क्षेत्र के विभिन्न विकासखण्डों से चयनित छात्र संख्या तालिका

विकासखण्ड	विद्यालय संख्या	छात्र संख्या	छात्रा संख्या	योग
1- भाण्डेर	11	70	30	100
2- सेंवढ़ा	08	30	20	50
3- दतिया	19	100	50	150

इस प्रकार से दतिया प्रक्षेत्र से विभिन्न विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले सहारिया जनजाति के बच्चों का शोध कार्य हेतु चयन किया गया है क्यों कि शोधकर्ता इसी क्षेत्र में नौकरी करता है । फिर एक वर्ष में पर्याप्त संख्या न मिलने के कारण 5 वर्षो की संख्या को न्यादर्श हेतु लिया गया है । अतः कुल 300 किशोर - किशोरियों पर यह शोध कार्य किया गया है ।

शोध उपकरण

(1) प्रतिभाशाली बच्चों का आंकलन करने के लिए शोधकर्ता ने डा0 शाही (1992) द्वारा विकसित शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया ।

(2) सामाजिक - आर्थिक स्तर तथा प्रतिभा के बीच सम्बन्ध जानने के लिए शोधकर्ता ने डा0 ज्ञानेन्द्र पी0 श्रीवास्तव (1991) द्वारा विकसित परीक्षण का प्रयोग किया ।

(3) प्रतिभाशाली बच्चों के समायोजन को जानने के लिये शोधकर्ता ने डा0 भागिया द्वारा विकसित परीक्षण का प्रयोग किया ।

उपकरण चयन की आवश्यकता-

सामान्य रूप से उपकरण वही सही एवं उपयुक्त होता है जो वर्तमान की आवश्यकता को पूरा करता हो, लेकिन उसमें वैज्ञानिकता होनी चाहिए । "पाउल" (1960) ने लिखा है "शोध कार्य हेतु उपकरण का चुनाव विभिन्न बातों पर निर्भर करता है जैसे - अध्ययन के उद्देश्य, समय, उपयुक्त परीक्षण की उपलब्धता, शोधकर्ता की चतुरता, तथा शोध के निष्कर्षों की व्याख्या करना आदि ।"

अतः प्रत्येक परीक्षण का प्रस्तुत शोध कार्य के लिए कितना महत्व है, स्पष्ट करना शोधकर्ता के लिये आवश्यक हो जाता है । इसके अंतर्गत शोधकर्ता प्रत्येक परीक्षण की उपादेयता, उपयुक्तता, विश्वसनीयता तथा वैधता का निम्न प्रकार से वर्णन करता है -

(1) सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी-

व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से सामाजिक - आर्थिक स्तर को मापने वाली विभिन्न प्रकार की मापनियाँ आज शिक्षा शास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने बनाई हैं । लेकिन प्रस्तुत शोधकार्य सहारिया जनजाति के किशोर तथा किशोरियों पर किया जा रहा है । अतः शोधकर्ता ने डा0 श्रीवास्तव द्वारा विकसित परीक्षण का प्रयोग करना उचित समझा । इस परीक्षण में शिक्षा, व्यवसाय, आय, रहन-सहन स्तर तथा सामाजिक सहभागिता आदि पांच सामाजिक-आर्थिक स्तरों को लिया गया है , जिससे शोधकर्ता का उददेश्य पूरा हो जाता है । फिर भी इसकी विशेषतायें प्रस्तुत हैं -

(1) सभी परिवर्तियों से सम्बन्धित कथन सरल, सीधे तथा स्तरीय हैं ।

(2) जनजाति के बच्चे विभिन्न कथनों को आसानी से समझते हैं और आसानी से उनके उत्तर निश्चित करते हैं ।

(3) वे अपने रहन-सहन में होने वाले परिवर्तन से परिचित हैं तथा सुख का अनुभव करते हैं ।

(4) शिक्षा की उपादेयता को अनुभव करते हैं और अपनी उत्सुकता प्रगट करते हैं ।

(5) प्रस्तुत परीक्षण की अंक गणना तथा प्रशासन सरल है, शोधकर्ता को आसानी प्रदान करता है ।

विश्वसनीयता तथा वैधता- डा0 श्रीवास्तव ने अपने सामाजिक आर्थिक मापनी की विश्वसनीयता तथा वैधता को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है ।

तालिका (4.2)

सामाजिक - आर्थिक मापनी की विश्वसनीयता स्तर तालिका

संख्या = 100

	ए	बी	सी	डी	ई	एफ
ए- शिक्षा	-	.79	.72	.66	.60	.70
बी-व्यव0-	-	-	.82	.77	.56	.91
सी-आय	-	-	-	.77	.60	.94
डी- रहन-सहन	-	-	-	-	.63	.92
ई- सामाजिक सह0	-	-	-	-	-	.71
एफ-कुल अंक	-	-	-	-	-	-

सह-सम्बन्ध गुणक स्थिरता .94

तालिका 4.3

सामाजिक-आर्थिक मापनी की बैधता स्तर तालिका (कोकरेण्ट वैधता दो समूहों की)

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी	पी
सामान्य वर्ग	100	20.1	9.35	4.98	.001
विशिष्ट वर्ग	100	26.2	7.90	-	-

(2) विद्यालय समायोजन अनुसूची-

मानवीय व्यवहार का अध्ययन मनोविज्ञान विषय के द्वारा किया जाता है और व्यवहार का मूल्यांकन व्यक्ति के द्वारा उचित समायोजन के स्थापन से होता है । इसीलिए "टेलेण्ट" (1978) ने समायोजन को जीवन की निरंतर प्रक्रिया माना है । "गुडस्टीन तथा लेनयान" (1975) तथा "सिंह" (1986) आदि ने माना है कि व्यक्ति विभिन्न प्रकार से भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करता है, ताकि वह अपने जीवन को सरस बना सके । प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता ने सहारिया जनजाति के बच्चों के विद्यालय समायोजन हेतु शैक्षिक उपलब्धि , छात्र व्यवहार, विद्यालय वातावरण , शिक्षक पसंद तथा व्यक्तित्व विकास आदि पाँच प्रकारों का आकलन किया है । डा0 भागिया की समायोजन अनुसूची इन पाँचों आयामों का सही प्रकार से आकलन करने में सक्षम है । ये आयाम (तत्व) निम्न प्रकार से प्रस्तुत हैं -

1- " ए " तत्व का अर्थ होता है कि छात्र - छात्रायें अपने विद्यालय के अध्ययन, विषयों तथा कक्षा कार्य से कितने संतुष्ट है । वे शैक्षिक विकास से संतुष्ट, प्रसन्न और सफल हैं तथा स्वयं को परीक्षा के भय से मुक्त रखते हैं ।

2- " एस " तत्व के द्वारा छात्र - छात्रायें अपने साथियों के व्यवहार को कैसा महसूस करते हैं । वे स्वयं को प्रसन्न या सुखी मानते हैं तथा उनके साथ सम्बन्धों का उपयोग करते हैं । इस प्रकार से वे स्वयं को साथियों के बीच उपयोगी मानते हैंताकि मित्रता और सहकारी भाव के द्वारा सामाजिक अंतःक्रिया होती रहे ।

3- तत्व "जी" का तात्पर्य विद्यालय के सामान्य पर्यावरण से होता है । इसके अन्तर्गत विद्यालय प्रशासन द्वारा प्रदत्त सुविधायें पर्याप्त हैं तो छात्र वर्ग संतुष्ट रहता है । परिणामस्वरूप वह पाठ्य सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेता है और अपने व्यक्तित्व का विकास सम्पन्न विद्यालय पर्यावरण में करता है ।

4- तत्व "टी" के द्वारा छात्र - छात्राओं की राय उनके शिक्षकों के प्रति जानी जाती है । वे उनके शिक्षण, व्यवहार, व्यक्तित्व तथा अनुभवों के प्रति कितने आकर्षित होते हैं । इस प्रकार से वे अपने शिक्षकों का कितना सम्मान करते हैं और शिक्षक बच्चों को कितना स्वीकार करते हैं अथवा अपनत्व देते हैं ।

5- तत्व "पी" के द्वारा छात्र - छात्राओं के व्यक्तित्व विकास का मापन किया जाता है । वे "स्वयं का विकास" से कितने संतुष्ट होते हैं तथा स्वयं चिंता, तनाव, कष्ट, असफलता तथा आक्रोश आदि से बचाकर संतुलित विकास करते हैं । इस प्रकार से वे अपने व्यवहार में नियमितता, समय की पाबंदी, साधन सम्पन्नता तथा उत्तरदायित्व आदि भावों का विकास करते हैं ।

विश्वसनीयता एवं वैधता- प्रस्तुत समायोजन परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध विच्छेद तथा परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गयी । प्रथमबार में विश्वसनीयता .83 रहीतथा पुनः प्रशासन पर विश्वसनीयता .96 रही । अतः परीक्षण की विश्वसनीयता सही है ।

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता .70-.90 तक प्राप्त हुई है । अतः स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत परीक्षण अपने उददेश्य को पूरा करने में सफल रहा है ।

(3)बुद्धि परीक्षण-

शोधकर्ता को सर्वप्रथम यह निर्णय करना होता है कि बुद्धि परीक्षिका शाब्दिक होगी या अशाब्दिक । "एनास्टासी" (1982) का मत है कि जो लोग पढ़े लिखे हैं । उनके लिये शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग उचित रहता है । प्रस्तुत शोध कार्य में कक्षा-8, 9, 10 आदि के छात्र - छात्राओं की बुद्धि का आकलन किया जायेगा य अतः शाब्दिक बुद्धि परीक्षण को उचित माना है ।

समूह बुद्धि परीक्षण- बुद्धि मापन के लिये द्वितीय आवश्यकता बुद्धि परीक्षण का व्यक्तिगत या सामूहिक होना होता है । पढ़े - लिखे तथा शैशवावस्था से ऊपर के लोगों के लिए विद्वानों ने सामूहिक बुद्धि परीक्षण को निम्न कारणों से उपयुक्त माना है -

1- व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण समय अधिक लेता है क्योंकि इसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग से समय देना होता है ।

2- व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों में परीक्षण की अवस्थाओं का प्रमाणीकरण करना सम्भव नहीं हो पाता है । अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य हेतु समूह परीक्षण करने का निश्चय किया ।

परीक्षिका के आयाम – शोधकर्ता ने वर्तमान में उपलब्ध उन सभी बुद्धि परीक्षिकाओं का सर्वेक्षण किया, जिनके द्वारा सामूहिक रूप से बुद्धि का मापन सम्पन्न हो सकता है । इस सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण में अपने देश में प्रायः निम्नलिखित योग्यताओं का मापन किया जाता है :-

1- शब्द ज्ञान 2- आंकिक तार्किक क्षमता 3- वर्गीकरण 4- समतुल्यता
5- सम्बन्ध 6- शाब्दिक तर्क क्षमता 7- सर्वोत्तम उत्तर 8- मिलान

विद्वानों ने बुद्धि परीक्षिका में शब्द ज्ञान तथा शाब्दिक तर्क क्षमता पर विशेष बल दिया है । प्रस्तुत परीक्षिका में शब्द ज्ञान को शाब्दिक तर्क क्षमता तथा वर्गीकरण आदि के लिए 35, 30, 30 पदों को सम्मिलित किया गया है । इसका मुख्य कारण है कि विभिन्न शोधों ने प्रमाणीकरण के लिए शाब्दिक तथा आंकिक क्षमता को ही प्रमुखता दी है । अतः कुल पद 151 में से इनको मापने के लिए 95 पद हैं ।

पद प्रकार- बुद्धि परीक्षिकाओं में वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का प्रयोग होता है । इन वस्तुनिष्ट परीक्षाओं में बहुविकल्पीय पद वाली परीक्षायें सबसे अधिक उपयोगी एवं लोकप्रिय होती हैं । विद्वानों का मत है कि बहुविकल्पीय परीक्षायें प्रभावी, विभेदवादी, सही निष्कर्ष ,विचारों का आधारभूत बोध और उत्तर देने में प्रभावी होती हैं । शोधों में यह पाया गया है कि सभी महत्वपूर्ण उद्‌देश्यों ,जिनका मापन परम्परागत खुले-बंद प्रकार के प्रश्नों द्वारा किया जाता है, को निश्चित समय सीमा और अच्छे ढ़ंग से बहु-विकल्पीय प्रकार के प्रश्नों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।

बहु-विकल्पीय प्रश्नों में विकल्पों की संख्या कुछ भी हो सकती है । अतः जब एक प्रश्न के लिये कई एक अर्थो वाले उत्तरों को दिया जाता है, लेकिन सही अर्थ एक ही होता है, तो उसे बहुविकल्प कहते हैं । व्यावहारिक रूप से एक प्रश्न के तीन या पाँच की संख्या में सम्भावित उत्तर दिये जाते हैं , जिनमें एक ही उत्तर सर्वोत्तम होता है । अधिक विकल्प देने से उत्तरदाता की अनुमान प्रवृत्ति को रोकना होता है ।

विकल्पों के संदर्भ में परीक्षिका पर प्रभाव पड़ता है । इस संदर्भ में निम्न तथ्यों की ओर ध्यान देना आवश्यक है । "लार्ड" ने अपने शोध से यह सिद्ध किया है कि किसी भी परीक्षिका की विश्वसनीयता उसके परीक्षिका पदों पर आधारित होती है । इसका अर्थ यह हुआ कि 50 पदों वाली परीक्षिका 40 पदों वाली से अधिक विश्वसनीय होती है । पदों की संख्या तब घट जाती हे जबकि विकल्पों की संख्या में वृद्धि कर देते हैं । अतः परीक्षिका की विश्वसनीयता की सम्भावना में कमी स्वतः ही आ जाती है । "इवेल" महोदय का मत है कि सामान्य तौर पर बहुविकल्पीय परीक्षिकाओं में तीन-चार विकल्पों का प्रयोग किया जाता है । हमारे देश में सभी परीक्षणों में चार विकल्पों का प्रयोग हो रहा है ।

पाश्चात्य देशों में भी यह सिद्ध हो चुका है कि परीक्षार्थी अनुमान से प्रेरित उत्तर नहीं देते हैं । फिर भी अनुमान का प्रयोग अनैतिक कार्य नहीं है । अंदाज़ की प्रवृत्ति का विकास करना भी योग्यता का विकास करना ही होता है । फिर भी उच्च अध्ययन या प्रतिभा सम्पन्न लोग ही अनुमान के द्वारा सही विकल्प का चुनाव कर पाते है सामान्य परीक्षार्थी नहीं । अतः प्रस्तुत परीक्षिका के लिए चार विकल्पों को रखा गया ।

पद निर्माण– उपर्युक्त आठ आयामों पर पद निर्माण किया गया । इनके निर्माण में शोधकर्ता ने उन सभी सावधानियों को ध्यान में रखा, जो एक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के लिए आवश्यक होते हैं।

पद सम्पादन– पद निर्माण के पश्चात अपने पर्यवेक्षक आचार्य विद्यासागर

मिश्र, डा0 पाण्डेय, डा0 शर्मा तथा डा0 सिंह आदि विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षा शास्त्रियों से परामर्श लेकर पदों का सम्पादन किया । इसके पश्चात पद पुनरीक्षण किया गया, ताकि किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि न रहे । विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने स्टैम, विकल्पों में फल का अभाव, विकल्प की उपयुक्तता, सम्भावित पद कठिनाई स्तर आदि बिन्दुओं पर सुझाव दिये । इसके आधार पर पदों को परीक्षण के रूप में व्यवस्थित किया गया । व्यवस्थित करने पर यह ध्यान रखा गया कि कोई भी पद किसी पृष्ठ पर अधूरा न रहे । यथा सम्भव शुरू के पद सरल हों ताकि परीक्षार्थी निराश न हों ।

उत्तर प्रपत्र का निर्माण- वर्तमान के शोध से यह पता चलता है कि कक्षा-8 से ऊपर के विद्यार्थी उत्तर प्रपत्र का प्रयोग बिना किसी कठिनाई से कर लेते हैं । उत्तर प्रपत्र जल्दी अंकन में सहायक होता है । इसके कारण मूल परीक्षिका पुस्तिका गंदी नहीं होती और यदि आवश्यकता हो तो उक्त परीक्षिका पुस्तिका का पुनः प्रयोग किया जा सकता है । इसी कारण अधिकांश परीक्षण संस्थायें उत्तर प्रपत्र का प्रयोग करतीं हैं । वर्तमान परीक्षण के लिए शोधकर्ता ने उत्तर प्रपत्र का निर्माण किया । विद्यार्थियों को उत्तर प्रपत्र पर उत्तर किस प्रकार दर्शाना है , इसके सम्बन्ध में निर्देश उत्तर प्रपत्र पर ही दिये गये थे । वर्तमान परीक्षिका के लिए शोधकर्ता ने एक उत्तर प्रपत्र का निर्माण किया ।

सही उत्तर का निर्धारण- परीक्षिका में जिन आठ कारकों पर आधारित पदों का निर्माण किया गया था । उनमें कुछ कारकों के अंतर्गत आने वाले पदों के सही उत्तर के निर्धारण के लिए सर्वप्रथम विशेषज्ञों से राय माँगी गयी । उनके मत को गोपनीय रखा गया । तदुपरांत 50 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर परीक्षिका का प्रशासन किया गया । आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत इन दोनों वर्गो के पदों के उत्तर में विशेषज्ञों तथा विद्यार्थियों में एकरूपता पायी गयी । अतः इन उत्तरों को इन वर्गो के पदों के लिए सही उत्तर निर्धारित किया गया ।

शेष कारकों के वर्गो के अंतर्गत आने वाले पदों के उत्तर स्वतः स्पष्ट थे । अतः इनके लिए ऐसा करना आवश्यक नहीं समझा गया ।

अंकन कुंजी का निर्माण–उत्तर प्रपत्र के मूल्यांकन के लिए एक अंकन कुंजी का निर्माण किया गया था ।

अंकन के विषय में कतिपय निर्णय– प्रस्तुत परीक्षिका में निश्चित किया गया कि ऋणात्मक अंकन नहीं होगा । प्रत्येक सही उत्तर के लिए एक अंक दिया जायेगा । ऋणात्मक अंकन न करने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :–

1- ऋणात्मक अंकन विद्यार्थियों की जानकारी का माप दण्ड नहीं है बल्कि वह गलत उत्तर के लिए दण्ड देता है । यह आवश्यक नहीं है कि सभी गलत उत्तर केवल अनुमान के परिणाम हों । गलत उत्तर साधारण गणितीय गलती के कारण हो सकते हैं या कक्षा में दी गयी गलत जानकारी के कारण भी हो सकते हैं ।

2- ऐसे परीक्षण में जिसमें सभी विद्यार्थी प्रश्नों को करते हैं । ऋणात्मक अंकन से भी वही वरिष्ठता सूची बनेगी , जोकि बिना ऋणात्मक के बनेगी ।

कुछ विद्वानों का मत है कि ऋणात्मक अंकन से परीक्षण की विश्वसनीयता पर कुप्रभाव पड़ता है । क्योंकि यह एक और त्रुटि को परीक्षण में सन्निहित करता है ।

परीक्षिका के लिए निर्देश–परीक्षिका बनाने के बाद परीक्षण के लिए निर्देश बनाये गये । इन निर्देशों को भी अपने निर्देशक एवं विशेषज्ञों को दिखाया गया और उनके सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन किया गया । परीक्षिका के प्रथम पृष्ठ पर परीक्षिका के परीक्षण के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये थे । परीक्षिका हल करने के पूर्व विद्यार्थियों को इन निर्देशों को समझ लेना अनिवार्य था ।

परीक्षार्थियों के लिये मार्गदर्शिका का निर्माण–परीक्षार्थियों के लिए मार्गदर्शिका के निर्माण की आवश्यकता अब सभी विद्वान मानते हैं । अतएव एक मार्गदर्शिका का निर्माण किया गया ।

पूर्व-पूर्व-परीक्षण के लिए विद्यालय का चयन–प्रारम्भिक जांच के लिए

परीक्षिका को प्रशासन के लिए शासकीय हाईस्कूल , सिविल लाईन , दतिया के कक्षा-10 के 50 विद्यार्थियों को चुना गया ।

पूर्व-पूर्व परीक्षण के लिए विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना- किसी परीक्षण के अंक तभी विश्वसनीय नहीं होते जब छात्र पूरे मनोयोग से और बिना किसी का सहारा लिए परीक्षा में बैठे । यदि विद्यार्थी असावधानीपूर्वक परीक्षा में बैठे, तो उनके उत्तर एवं उनकी योग्यता का सही मापन नहीं हो पायेगा । विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए शासकीय हाईस्कूल, सिविल लाइन, दतिया में शोधकर्ता गया तथा छात्रों को सम्बोधित किया और उनको बताया कि बुद्धि परीक्षिका से यह लाभ होगा कि वे जान सकेंगे कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि उनकी क्षमता के अनुरूप है या नहीं । उन्हें यह भी पता लगेगा कि किन व्यवसायों में उनकी प्रगति की अधिक सम्भावनायें हैं ।

मार्ग दर्शिका का वितरण-छात्रों को अभिप्रेरित करने के बाद मार्ग दर्शिका वितरण छात्रों में किया गया । उन्हें बताया गया कि उन्हें इस मार्ग दर्शिका को ध्यानपूर्वक पढ़ना है जो बातें समझ में न आवें , उन्हें अपने गुरूजनों से, या शोधकर्ता से मिलकर पूछ लें । मार्ग दर्शिका वे सम्भालकर रखें जिससे उन्हें अपने प्राप्तांकों से निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलेगी ।

पूर्व परीक्षण प्रशासन -

सर्वप्रथम शासकीय हाईस्कूल, सिविल लाइन, दतिया के प्राचार्य की सहमति प्राप्त कर परीक्षिका प्रशासन हेतु कक्षा-10 के विद्यार्थियों के दो वर्गों को एक बड़े कक्ष में बैठाया गया तथा उन्हें मौखिक निर्देश दिया गया कि इस परीक्षा के लिए कोई समय बन्धन नहीं है । आप इस परीक्षण के लिए जितना समय चाहें, लगा सकते हैं । परन्तु बहुत समय लगाने से अधिक अंक प्राप्त नहीं होंगे । इसलिए आपके हित में है कि समय नष्ट न करें और यथासम्भव शीघ्र परीक्षण समाप्त कर लें । परीक्षण के लिए निर्देश , जो परीक्षण पुस्तिका में लिखे गये थे उन्हें पढ़ा गया । निर्देश पढ़ने के बाद छात्रों से पूछा गया कि उन्हें कोई भ्रम तो नहीं या कोई

प्रश्न पूछना है तो अभी पूछ लें । जब छात्रों ने सारी शंकाओं का समाधान कर लिया उसके बाद उन्हें उत्तर प्रपत्र बाँटे गए । उत्तर प्रपत्रों के निर्देशों को पढ़ा गया । छात्रों से पूछा गया कि उन्हें निर्देश समझ में आया कि नहीं । " कैसे उत्तर देना है" उन्हें उत्तर प्रपत्र पर समझाया गया । जब परीक्षण पुस्तिका और उत्तर प्रपत्र के निर्देशों को पढ़ लिया तब उन्हें परीक्षण प्रारम्भ करने के लिए कहा गया । इस समय को नोट कर लिया गया और जब 90% लोगों ने कॉपियाँ जमा कर दीं तो समय नोट कर लिया गया । शोधकर्ता तब तक हॉल में था, जब तक कि सभी छात्रों ने कॉपियां जमा नहीं कर दीं ।

छात्रों द्वारा भरे गये उत्तर प्रपत्रों का अंकन-

1- जिन पदों के एक से अधिक उत्तर दिये गये, उत्तर प्रपत्र में उस पद के सभी उत्तरों को लाल पेंसिल से काट दिया गया । जिससे यदि उन्होंने सही उत्तर पर निशान लगाया है तो उन्हें अंक न मिलें ।

2- जिन उत्तरों को विद्यार्थियों ने छोड़ दिया था उनको काली पेंसिल से काट दिया गया । जिससे पता लग सके कि विद्यार्थी ने किन प्रश्नों को छोड़ दिया है ।

3- फिर सही उत्तरों की स्टेंसिल बनायी गयी और उनमें उत्तर प्रपत्र पर रखकर सही उत्तरों को गिन लिया गया और उनको एक अलग काग़ज़ पर लिख लिया गया ।

4- सही उत्तरों की एक और स्टेंसिल काटी गयी और दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्तरों को अंकित करने को उत्तर प्रपत्र दिये गये ।

5- दोनों बाद के अंकों का मिलान किया गया और यदि कोई त्रुटि पायी गयी तो उसे ठीक किया गया ।

सांख्यिकीय विश्लेषण-

छात्रों के उत्तरों को पद विश्लेषण के फार्म में अंकित किया गया। प्रत्येक विकल्प को कितने लड़कों ने चुना है, इसको ज्ञात किया गया। जहाँ गलत विकल्प को अधिकांश लड़कों ने चुना था उस विकल्प को शुद्ध किया गया। जिन प्रश्नों को प्रायः सभी छात्रों ने छोड़ दिया था, उनमें सुधार किया गया। इस प्रकार प्रश्नों के रूप में सुधार करके इन प्रश्नों को पूर्व परीक्षण (ट्राइ आउट) के लिए तैयार किया गया।

पूर्व परीक्षण के लिए प्रतिदर्श का चुनाव-

पूर्व परीक्षण के लिए 370 छात्रों का चुनाव शासकीय विद्यालयों से करने का निश्चय किया गया। इसके लिए दो विद्यालयों के छात्रों से सम्पर्क करने के लिए प्रधानाचार्य से अनुमति माँगी गयी। अनुमति प्राप्त होने पर शोधकर्ता ने छात्रों को सूचित किया कि किन तिथियों में शोधकर्ता उनसे सम्पर्क करेगा।

छात्रों को अभिप्रेरणा-

किसी परीक्षण के अंक तभी विश्वसनीय नहीं होते जब छात्र पूरे मनोयोग से और बिना किसी का सहारा लिए परीक्षण में बैठें। यदि विद्यार्थी असावधानीपूर्वक परीक्षण में बैठेंगे तो उनके उत्तर उनकी योग्यता का सही मापन नहीं कर पायेगें। विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए शासकीय विद्यालयों में शोधकर्ता गया तथा छात्रों को सम्बोधित किया और उनको बताया कि बुद्धि परीक्षिका से यह लाभ होगा कि वे जान सकेगें कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि उनकी क्षमता के अनुरूप है या नहीं। उन्हें यह भी पता लगेगा कि किन व्यवसायों में उनकी प्रगति की अधिक सम्भावनाऐं हैं।

मार्ग दर्शिका का वितरण-

छात्रों को अभिप्रेरित करने के बाद मार्ग दर्शिका का वितरण छात्रों में किया गया। साथ ही बताया गया कि उन्हें मार्ग दर्शिका को ध्यानपूर्वक पढ़ना है

जो बातें समझ में न आवें उन्हें अपने गुरूजनों से या शोधकर्ता से पूछ लें । मार्ग दर्शिका वे सम्भालकर रखें, जिससे उन्हें अपने प्राप्तांकों से निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलेगी ।

परीक्षा का प्रशासन-

सर्वप्रथम शोध में प्रयुक्त विद्यालयों के प्रधानाचार्यो से सम्पर्क स्थापित कर कक्षा-8, 9, व 10 के विद्यार्थियों पर परीक्षिका का प्रशासन करने की सहमति प्राप्त कर सम्बन्धित विद्यालय में दो दिवसों में परीक्षा ली गयी । इसके लिए विद्यालय में एक बड़े हॉल को देखा गया जहां शांत वातावरण हो, उक्त हॉल का चयन कर विद्यार्थियों को हॉल में बैठाया गया तथा परीक्षिका से सम्बन्धित समस्त निर्देशों को देने के उपरांत सभी सामग्रियों का वितरण विद्यार्थियों को किया गया एवं परीक्षा प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की गयी ।

समय के संदर्भ में परीक्षिका की लम्बाई-

प्रारम्भिक परीक्षा का समय परीक्षिका के लिए सामान्य रूप से 2 घण्टे 15 मिनट का निर्धारण किया गया था, जिसमें लगभग 95% छात्र 2 घण्टे में परीक्षिका के अन्तिम पद को हल कर चुके थे ।

परीक्षिका के अन्तिम रूप के लिए, प्रारम्भिक प्रारूप के अनुमान के आधार पर समय का निर्धारण 1 घण्टा 30 मिनट निर्धारित किया गया था ।

अंकन कुंजी-

उत्तर प्रपत्र के मूल्यांकन के लिए एक अंकन कुंजी का निर्माण किया गया था । इसी पूर्व निर्धारित अंकन कुंजी के आधार पर विद्यार्थियों के उत्तरों का अंकन किया गया । इसके लिए एक स्टेंसिल का प्रयोग किया गया । जिसमें सही उत्तर वाले पदों के विकल्प के स्थान पर एक छेद बना हुआ था । सही उत्तर के लिए एक अंक और गलत उत्तर के लिए शून्य अंक निर्धारित किया गया ।

पद विश्लेषण-

पद विश्लेषण को परीक्षिका निर्माण, पद रचना एवं शिक्षण को विकसित करने के लिए एक उपयोगी प्रक्रिया माना जाता है । यदि कोई प्रश्न (पद) अच्छे और कमजोर छात्रों के बीच अंतर नहीं उत्पन्न करता है तो उसे अच्छा प्रश्न (पद) नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह परीक्षिका (टेस्ट) को इस योग्य नहीं बनने देता है कि उसके द्वारा छात्रों का वरीयताक्रम निर्धारित किया जा सके । ऐसे प्रश्नों (पदों)को परीक्षिका से बाहर कर दिया जाता है (मिश्र,1970)।

सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षिका की उपयोगिता से स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत शोध हेतु ये परीक्षिका सर्वोत्तम है । अतः शोधकर्ता ने सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षिका के द्वारा कक्षा-8, 9, 10 के छात्र-छात्राओं की मानसिक योग्यता का आकलन किया । इस हेतु यह परीक्षण सभी प्रकार से उपयुक्त प्रतीत होता है । क्योंकि आज प्रसारण के विभिन्न साधनों ने सम्पूर्ण संसार के ज्ञान को जन - जन तक पहुँचाया है । इससे बच्चों की मानसिक परिपक्वता में वृद्धि हुई है । इस परिवर्तन को ध्यान में रखकर प्रस्तुत परीक्षण का प्रयोग किया गया है । परीक्षण का प्रयोग शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से किया है -

परीक्षण का प्रशासन शांत वातावरण में कक्षा के अंदर सही रूप से छात्र-छात्राओं को बिठाकर किया गया । परीक्षण प्रारम्भ करने से पहले शोधकर्ता ने विषय की उपयोगिता, उददेश्य आदि पर पूर्ण प्रकाश डाला । तत्पश्चात उनको बताया कि प्रस्तुत कार्य शिक्षा के क्षेत्र में शोध हेतु किया जा रहा है । अतः आप लोग निःसंकोच होकर कार्य करें । आपके निष्कर्षों को गुप्त रखा जायेगा । इसके पश्चात परीक्षण पुस्तिका और उत्तर पत्र बांट दिये जाते थे । उनसे यह भी कहा जाता था कि प्रश्नों के उत्तर, उत्तर प्रपत्र पर ही दें, परीक्षण पत्रिका पर नहीं । जब सभी छात्र-छात्रायें निर्देशों को समझ लेते थे तो शोधकर्ता उन्हें निम्न आदेश देता था-

"प्रथम पृष्ठ को पलटिये । अपने उत्तर पत्र को परीक्षण पत्रिका के साथ

रखिये । प्रत्येक प्रश्न को ध्यान से पढिये और दिये गये विकल्पों में से किसी एक पर गुणित (x) का चिन्ह लगाइये । परीक्षण का समय 1 घण्टा 30 मिनट निश्चित है । फिर भी तेज़ी से कार्य करने को कहा गया । छात्रों एवं छात्राओं में क्रियाशीलता सम्बन्धी भिन्नता होती है । अतः कार्य करने की गति तीव्र व धीमी होती है । शोधकर्ता कक्षा में निरंतर धूमता रहा तथा "अच्छा कार्य चल रहा है" कहकर छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्द्धन करता रहा । जब छात्र-छात्रायें कार्य कर चुके और समय भी पूरा समाप्त हो गया तो परीक्षा पत्रिका तथा उत्तर प्रपत्र एकत्रित कर लिये गये । उत्तर पुस्तिकायें एकत्रित करते समय परीक्षार्थी का नाम तथा एक ही विकल्प पर (x) का चिन्ह लगाया गया है, अच्छी तरह से जाँच लिया गया । इस प्रकार से शोधकर्ता ने सभी छात्र-छात्राओं की मानसिक योग्यता का "आकलन" सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण" के द्वारा किया ।

प्रदत्त संकलन की विधियाँ

शोधकर्ता का प्रमुख कार्य किसी परीक्षण का प्रयोग करके प्रदत्त संकलन करना होता है । इसके लिए उसे प्रदत्त संकलन की विभिन्न विधियों में से किसी एक को आधार बनाना होता है । प्रयोगकर्ता जब किसी विधि का चुनाव करता है तो प्रमापीकृत एवं कम से कम त्रुटि वाली विधि का चुनाव करता है । अतः प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्ता ने मानक सर्वेक्षण विधि को प्रदत्त संकलन हेतु चुना ।

मानक सर्वेक्षण विधि-

प्राकृतिक परिवर्तन मानव व्यवहार एवं क्रियाओं में परिवर्तन लाते हैं । मानव संस्कृति परिवर्तन की आधारशिला होती है , जिसके द्वारा किसी अपूर्व उददेश्य को पूरा किया माना जाता है । जब मनुष्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यवहार के तरीकों में परिवर्तन लाता है तो वह वर्तमान के साथ सुख प्राप्त करता है । इससे भूतकाल का मूल्यांकन एवं भविष्य के बारे में व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है । अतः भविष्य का अनुमान और वर्तमान की क्रियायें मानव प्रगति का आधार बनती हैं, जिससे आने वाली पीढ़ी के स्तर में उन्नति होती रहती

है । लेकिन नवीन योजना या कार्यक्रम ग्रहण करने से पहले "समूह सामाजिक संस्थाओं" के वर्तमान स्तर के प्रति विश्लेषण, व्याख्या, और निष्कर्ष के रूप में संगठित और सुनियोजित प्रयास होना चाहिए (एफ0 विटनी, 1956, पृष्ठ-167) । समस्या के समाधान में "प्रथम पद या क्रिया के रूप में सुनियोजित विश्लेषण होना चाहिए ताकि वर्तमान दशा या अवस्था स्पष्ट हो जाये (बेस्ट-1963, पृष्ठ-105) । इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षा शास्त्रियों, समाज शास्त्रियों और अन्य विज्ञान वेत्ताओं ने "नारमेटिव सर्वे मेथड" का विकास किया । इसका उद्देश्य वर्तमान स्थिति के आधार पर समूहों का वर्गीकरण करना, सामान्यीकरण करना और सामयिक तथा भविष्य की उपयोगिता को ध्यान में रखकर प्रदत्तों की व्याख्या करना होता है (एफ0 विटनी, 1956, पृष्ठ-161)।" नारमेटिव " शब्द का अर्थ सामान्य या विशिष्ट परिस्थिति से लगाया जाता है, और "सर्वे" का अर्थ - वस्तु के प्रति "वर्तमान राय" या "मत" को एकत्रित करने से माना जाता है ।

मानक सर्वेक्षण विधि का, प्रयोग आज सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न अध्ययनों में किया जा रहा है । "शिक्षा शास्त्र" के क्षेत्र में "वर्णनात्मक शोध" का महत्व इसी प्रविधि के विकास ने प्रायः समाप्त सा कर दिया है । जब हम वृहद् समूह (पापुलेशन) का अध्ययन करना चाहते हैं तो इसी प्रविधि का सहारा लेते है।

यह विधि किसी भी निदर्शन पर उपयुक्त रहती है । इसके द्वारा एकत्रित प्रदत्तों पर किसी भी प्रकार का अविश्वास नहीं होता है । इसकी विश्वसनीयता एवं वैधता पर किसी ने भी शंका नहीं की है । इसमें प्रयुक्त तकनीक प्रश्न पूछने, प्रश्नावली तैयार करने, साक्षात्कार करने, विषय सूची विश्लेषण और प्रदत्त प्रसार आदि के बारे में उपयुक्त एवं सही राय प्रस्तुत करती है । इससे क्षेत्र विशेष में किये गये तथ्य संकलन के द्वारा विस्तृत और सही ज्ञान प्राप्त होता है (एफ0 विटनी, 1960, पृष्ट-145) । इस प्रविधि को प्रयोग करते समय निम्न पदों पर क्रमानुसार चलना होता है :-

(i) प्रथमतः शोधकर्ता अपनी समस्या को प्रस्तुत करता है । उसके उददेश्यों एवं लक्ष्यों को निर्धारित करता है ओर अपने शोध कार्य की उपयुक्त योजना तैयार

करता है । इस योजना से वर्तमान समय की आवश्यकता का गत्यात्मक पक्ष स्पष्ट होता है । "मानवीय अभिरूचियों के संदर्भ में, शोधकर्ता उददेश्य और मूल्यों को निश्चित करता है, ताकि शोध तथ्य उभरकर सामने आयें और समस्या के संदर्भ में मानसिक दशा, चिंतन आदि को व्यवहारिक रूप प्रदान करें (गुड एवं स्कैट्स, 1954, पृष्ठ-551) ।

(ii) शोधकर्ता वर्तमान समय की स्थिति के आधार पर प्रदत्त संकलन करता है । जबसे "समग्र के एक हिस्से को "निदर्शन" मानकर समस्या का अध्ययन किया जाने लगा है, मानक सर्वेक्षण का महत्व बढ़ गया है (गुड एवं स्कैट्स,1954, पृष्ठ-598)/ सामान्य तौर पर निदर्शन का चुनाव काल्पनिक आधार पर किया जाता है । इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को "समग्र" के आधार पर निदर्शन में आने का समान और पर्याप्त अवसर मिलता है (गुड एवं स्कैट्स,1954, पृष्ठ-501) ।

(iii) व्यक्तिगत विशेषताओं पर यह विधि कोई निष्कर्ष नहीं निकालती है । इसके द्वारा निदर्शन के माध्यम से सम्पूर्ण समूह का अध्ययन करके "समग्र" के बारे में सांख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं। आज सांख्यिकीय निष्कर्ष ही वैध और विश्वसनीय माने जाते हैं । इस प्रविधि का प्रयोग किसी वैज्ञानिक नियम या सिद्धाँत के प्रयोग हेतु नहीं किया जाता है बल्कि "सर्वेक्षण" विधि के द्वारा उपयोगी एवं लाभकारी सूचनायें एकत्रित करके स्थानीय समस्याओं का हल खोज़ा जाता है (ट्रेवर्स, 1964, पृष्ठ-284) । प्रदत्त संकलन में विस्तार वस्तुनिष्ठता का वर्तमान में स्थित स्थायी सम्बन्धों और व्यवहार को स्पष्टता प्रदान करने के लिए किया जाता है । इसमें समूह की मनोवृत्तियों, अभिरूचियों और कार्य करने के तरीके आदि का विकास भी निहित रहता है । "सर्वेक्षण के द्वारा किये गये अध्ययनों का सम्बन्ध " क्या उपलब्ध है " से होता है न कि उसके " अन्य रूपों से" (ट्रेवर्स 1964, पृष्ठ 273)।

(iv) हम शोध की उप कल्पनाओं को परीक्षित करने के लिए विभिन्न उपकरणों एवं यंत्रों के द्वारा प्रदत्त संकलन करते हैं । इनमें सूची, प्रश्नावली , मत या राय

निरीक्षण, चैक लिस्ट, क्रम निर्धारण मापनी, स्कोर बोर्ड, हस्त पाण्डुलिपियाँ , साक्षात्कार , मनोवैज्ञानिक परीक्षण और रिक्त स्थान पूर्ति आदि उपकरण विशेष रूप से प्रयोग में लाये जाते हैं (बेस्ट, 1963, पृष्ठ-184) । " उपकरण के विभिन्न स्रोतों में से शोधकर्ता समस्या की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रदत्त संकलन के लिए किसी एक का चुनाव करता है । यही उपकरण समस्या का समाधान उपयुक्त एवं प्रभावशाली सूचनाओं को एकत्र करके करता है (वेस्ट -1963, पृष्ठ-184) । शोधकर्ता अपने प्रदत्तों का संकलन - वर्गीकरण , तुलना , मूल्यांकन, व्याख्या और सामान्यीकरण, स्वनिरीक्षित व्यवहार एवं क्रियाओं के आधार पर करते हैं । " शोध प्रक्रिया का प्रभाव क्या है " के वर्णन करने या व्याख्या करने से नहीं होता है (वेस्ट-1963, पृष्ठ-103) जबकि शोध प्रक्रिया शोधकर्ता को निर्देशित करती है कि वह अपनी उपकल्पनाओं के प्रति सचेत रहकर निश्चित उददेश्य की प्राप्ति के लिए क्रियाशील रहे ।

(v) सर्वेक्षण विधि के द्वारा हम समस्या का समाधान करने वाले निश्चित निष्कर्षो पर पहुँचते हैं और भविष्य की योजनाओं को क्रियान्वित करने और सुधार लाने के लिए निष्कर्ष प्राप्त करते हैं।

प्रदत्त संकलन की प्रविधि

प्रत्येक वैज्ञानिक अध्ययन के लिए तथ्य संकलन की आवश्यकता होती है । इसके ऊपर ही सांख्यिकीय कार्य एवं उपलब्धियाँ निर्भर होती हैं । इसके बिना सम्पूर्ण कार्य कल्पनात्मक और किसी भी उददेश्य के पूर्ण न करने वाला होगा । अतः तथ्य सत्य और पर्याप्त हों ताकि सही निष्कर्ष निकल सकें । प्रस्तुत शोध समस्या हेतु प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता ने दो प्रकार से कार्य किया है :-

1- दतिया जिले के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की बुद्धि योग्यता को मापन करने के लिए डा. शाही (1992) द्वारा विकसित व निर्मित शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया । इसमें 90 समस्यायें है । जिनका समय 1 घण्टा 20 मिनट रखा गया है तथा शब्द ज्ञान, आंकिक तर्क क्षमता, वर्गीकरण, समतुल्य सम्बन्ध, शाब्दिक

तर्क क्षमता, सर्वोत्तम उत्तर और मिलान आदि आठ आयामों को जानने की कोशिश की गयी है ।

2- उपर्युक्त तरह से ही शोधकर्ता ने सामाजिक - आर्थिक मापनी, तथा समायोजन अनुसूची प्रयोग द्वारा जनजाति के बच्चों का तथ्य संकलन किया । इस प्रकार से शोधकर्ता ने दतिया प्रक्षेत्र के शिक्षारत विद्यालयों में कक्षा-8, 9, 10 के सहारिया छात्र-छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर, बौद्धिक क्षमता तथा समायोजन आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । इस प्रकार से व्यावसायिक निष्ठा और आत्म निर्भरता का विकास हमारे सहारिया नवयुवकों में आसानी से हो सकता है ।

प्रदत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ

शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने में सांख्यिकी विधियों का सबसे अधिक हाथ है । अतः शोधकर्ता के लिये सांख्यिकी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है । इसी ज्ञान के फलस्वरूप वह अपने तथ्यों को तथा निष्कर्षों को प्रमाणीकृत बनाता है । आज के वैज्ञानिक युग में बिना सांख्यिकी ज्ञान या प्रयोग के कोई भी शोधकर्ता विश्वसनीय निष्कर्षों पर नहीं पहुँच पाता है । सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से शोध कार्य में वस्तुनिष्ठता, तत्परता, वृहद्ता और स्पष्टता आदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है । इन प्रविधियों के प्रयोग से समस्या के लिए एकत्रित तथ्य संकलनों के विश्लेषणों और निष्कर्षों में सरलता प्राप्त होती है । इन सांख्यिकी विधियों का प्रयोग एक सामान्य शोधकर्ता भी सरलता तथा आसानी से कर सकता है ।

परीक्षण की सहायता से संकलित किये गये प्रदत्तों से प्राप्त सूचनायें, जटिल, असम्बद्ध तथा बिखरी होती हैं । इन सूचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययनकरने से पहले इन आँकड़ों को निश्चित रूप प्रदान करना होता है। अतएव सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग शोधकर्ता द्वारा किया जाता है । सांख्यिकी, वैज्ञानिक विधि की वह शाखा है जो प्रदत्तों का विश्लेषण करती है । ये प्रदत्त

गणना एवं मापन से प्राप्त किये जाते हैं । प्रस्तुत शोध में प्रसारित परीक्षणों के सभी प्राप्तांकों को सर्वप्रथम व्यवस्थित किया गया । साथ ही उनको सूक्ष्म रूप में परिवर्तित किया गया, जिससे प्रस्तुत तथ्यों का सरलता से सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रयोग किया जा सके ।

इस प्रकार से शोध कार्य में विभिन्न प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग होता है । इस शोध कार्य में मध्यमान, प्रमाप विचलन, प्रतिशतांक, सह-सम्बन्ध, विषमता सूचकांक, वक्रता, "टी" परीक्षण आदि सांख्यिकी का प्रयोग शोधकर्ता ने एकत्रित प्रदत्तों की आवश्यकता पर किया । इस आधार पर शोधकर्ता ने प्रदत्त विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी मापकों का प्रयोग किया -

1- सर्वप्रथम मध्यमान ज्ञात किया गया ताकि प्रदत्तों की केन्द्रीय मनोवृत्ति का सही आंकलन हो सके ।

2- फिर, प्रमाप विचलन ज्ञात किया ताकि सही विचलनों का ज्ञान हो सके और प्रामाणिक त्रुटि तथा क्रान्तिक अनुपात के द्वारा सार्थकता स्पष्ट की जा सके ।

3- फिर विषमता सूचकांक ज्ञात किया गया ताकि यह स्पष्ट हो कि अंक वितरण सामान्य सम्भाव्यता वक्र से कितना भिन्न है ।

4- फिर, क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया ताकि यह स्पष्ट हो सके कि छात्र और छात्राओं के अंक वितरण में सार्थक अंतर नहीं है और जो अंतर दिखलाई दे रहा है वह संयोग के कारण है ।

5- फिर सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया ताकि सामाजिक - आर्थिक स्तर के प्राप्तांक, बुद्धि परीक्षण प्राप्तांक तथा समायोजन प्राप्तांकों (छात्र-छात्रा) आदि में सम्बन्ध ज्ञात हो ।

6- अंत में "टी" परीक्षण का प्रयोग किया गया ताकि सामान्य व्यक्ति के निष्पादन को संदर्भ मानकर यह पता लगाया जा सके कि किसी व्यक्ति

का निष्पादन सामान्य व्यक्ति से कितना अच्छा या कितना खराब है ।

जब किन्हीं दो समूहों के मध्यमानों के बीच अंतर या सम्बन्ध को मापा जाता है, तो शोधकर्ता "टी" परीक्षण का प्रयोग करता है । इसके द्वारा शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि यदि दो मध्यमानों के बीच वास्तविक अंतर है तो इसे क्रिटिकल रेशियो से अधिक होना चाहिए, तभी शोधकर्ता के द्वारा चयनित न्यादर्श वास्तविक मध्यमान अंतर का प्रतिनिधि होता है । अतः सांख्यिकी वेत्ताओं ने प्रस्तुत समस्या का निष्कर्ष दो मध्यमानों के अंतर को मापकर निश्चित किया है, ताकि मध्यमान अंतर वास्तविक है, न कि न्यादर्श त्रुटि के कारण है ।

अध्याय - पंचम

तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या

(अ) तथ्य का संकलन एवं वर्गीकरण

(ब) तथ्यों का विश्लेषण

1- प्रतिभाशाली विश्लेषण

2- सामाजिक - आर्थिक विश्लेषण

3- विद्यालय समायोजन विश्लेषण

4- सम्बन्धों का विश्लेषण

(स) तथ्यों की व्याख्या

1- प्रतिभाशाली बच्चों की

2- सामाजिक - आर्थिक स्तर की

3- विद्यालय समायोजन की

4- सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोज़न के प्रभाव की व्याख्या प्रतिभाशाली बच्चों पर

(अ) प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र का दतिया जिला है । इसके अन्तर्गत सहारिया जनजाति लगभग 50 ग्रामों तथा कस्बों में निवास करती है । इस क्षेत्र को शिक्षित करने हेतु लगभग 45 विद्यालय शासकीय हैं और लगभग 20 विद्यालय प्राइवेट तौर पर कार्य कर रहे हैं । शोधकर्ता ने इनमें शिक्षारत कक्षा-8, 9 एवं 10 के विद्यार्थियों (छात्र/छात्रा) को अध्ययन हेतु चुना है । शिक्षा प्राप्त करना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है । वह किसी भाषा, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, प्रांत, शहर, ग्रामीण ऊँच-नीच आदि संकुचित विचारों से ऊपर होती है । शिक्षित, प्रबुद्व नागरिक ही राष्ट्र का गौरव बढ़ाते हैं और अपने व्यक्तित्व को सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता प्रदान करते हैं ।

प्रस्तुत शोधकार्य का प्रदत्त संकलन सरकारी और गैर-सरकारी तथा निजी विद्यालयों में जाकर सामूहिक रूप से किया गया । चूँकि शोधकर्ता दतिया क्षेत्र में नौकरी करता है । अतः पूरे क्षेत्र तथा विद्यालयों से परिचित है । सर्वप्रथम प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य/प्रधानाचार्य से जाकर मिला और अपनी समस्या से अवगत कराया । सभी ने सहयोग देने की स्वीकृति दी । इसके पश्चात -एक-एक विद्यालय में जाकर कक्षा-8, 9 एवं 10 में पढ़ने वाले सहारिया जनजाति के लड़कों तथा लड़कियों को एकत्रित करवाकर एक कमरे में आराम से बिठाया, फिर उनको बुद्वि परीक्षण के विषय में बताया तथा सामान्य निर्देश दिये । इसके पश्चात कुछ उदाहरण दिये । इसके पश्चात परीक्षण प्रपत्र बॉट दिये गये और उनको प्रारम्भ करने के लिए कहा गया । मैनुअल के आधार पर बुद्वि परीक्षण पत्रिकाओं को भरवाया गया । निश्चित समय पश्चात एकत्रित कर लिया गया । इसके पश्चात बच्चों को नाश्ता वितरित किया गया । जब सभी बच्चे फ्रेश हो गये तो उन्हीं पर सामाजिक - आर्थिक मापनी द्वारा तथ्य संकलन किया गया । इसके पश्चात विद्यालय समायोजन अनुसूची द्वारा तथ्य संकलन किया गया । इसप्रकार से तीनों ही परीक्षणों के द्वारा सहारिया जनजाति के बच्चों के बुद्वि स्तर, विद्यालय समायोजन स्तर तथा सामाजिक - आर्थिक स्तर आदि का तथ्य

संकलन एक विद्यालय से किया गया ।

उपर्युक्त तरीके के अनुसार ही शोधकर्ता ने विकासखण्ड, भाण्डेर, सेंवढ़ा तथा दतिया आदि के विभिन्न विद्यालयों में जाकर तथ्यों का संकलन बौद्धिक स्तर जानने के लिए, विद्यालय समायोजन जानने के लिए तथा सामाजिक – आर्थिक स्तर जानने के लिए किया । छात्र-छात्राओं की संख्या कम होने के कारण प्रत्येक विद्यालय में जाकर तथ्यों का संकलन करना पड़ा ।

तदुपरांत शोधकर्ता ने घर जाकर सही और स्पष्ट भरे गये प्रपत्रों को परीक्षण के आधार पर छॉट लिया और अधूरों को नष्ट कर दिया । इसके पश्चात बुद्धि परीक्षण का फलांकन मैनुअल के आधार पर किया । इसके पश्चात सामाजिक – आर्थिक स्तर पर फलांकन तथा विद्यालय समायोजन का फलांकन मैनुअल के आधार पर सम्पन्न किया ।

तथ्यों का वर्गीकरण-

जब शोधकर्ता तथ्यों का संकलन और फलांकन कर लेता है तो अगला कदम तथ्यों का वर्गीकरण करना होता है । शोधकार्य में अंकों का प्रारम्भिक रूप उनको एकत्रित तथा संग्रहीत करने पर समाप्त हो जाता है । कच्चे प्राप्तांक इतने अधिक होते हैं कि उनको समझना, प्रयोग में लाना एवं उनसे कोई निष्कर्ष निकालना बहुत ही जटिल व असम्भव होता है । इस एकत्रित हुए विशाल समूह या तथ्य समूह को ऐसे तरीके से छॉटा जाता है या रूप या वर्गो में रखा जाता है कि उनका स्पष्ट आशय या भाव प्रकट हो जाये । अतः शोध करने वाले एकत्रित तथ्यों को अधिक सरल एवं बोधगम्य बनाने के लिए "सांख्यिकीय वर्गीकरण" का प्रयोग करते हैं ।

सांख्यिकी वेत्ताओं ने वर्गीकरण को वस्तुओं को उनकी सहायताओं और सम्बन्धों के अनुसार समूहों और वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया के रूप में माना है । ये इकाईयों की भिन्नता के बीच पाई जाने वाली एकता को प्रकट करता है ।

इसप्रकार से यह स्पष्ट होता है कि तथ्य वर्गीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अव्यवस्थित सामग्री को उद्देश्यानुसार व्यवस्थित किया जाता है । इस व्यवस्था के आधार पर सम्पूर्ण सामग्री को कुछ विशेष वर्गों में विभाजित कर लिया जाता है । इसमें प्रत्येक वर्ग का विस्तार समान होता है । अतः समान वर्ग विस्तार के आधार पर विस्तृत सामग्री को संक्षिप्त रूप दे देना ही वर्गीकरण होता है । इसके द्वारा दो उद्दीपकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन को सरल बनाया जा सकता है । शोधकर्ता इसका प्रयोग सांख्यिकीय विवेचन को सुव्यवस्थित, सरल, तथा निश्चित रूप से स्पष्ट करने के लिए करते हैं । इस तरह से तथ्यों का सही एवं उपयुक्त प्रयोग उद्देश्य पूर्ति हेतु किया जाता है ।

प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र दतिया जिले को रखा गया है । इसमें कार्यरत शासकीय विद्यालय, अशासकीय विद्यालय तथा निजी विद्यालयों में शिक्षारत सहारिया जनजाति के कक्षा-8, 9, एवं 10 के बच्चों को अध्ययन हेतु चुना गया है । इसमें चयनित बच्चों के बुद्धि मापन, सामाजिक - आर्थिक स्तर मापन, तथा समायोजन मापन आदि परिवर्तियों को मापने व मूल्यांकित करने की इस शोध कार्य में कोशिश की गयी है । अब शोधकर्ता, प्रदत्त संकलन तथा वर्गीकरण के पश्चात उसका सांख्यिकी विश्लेषण प्रस्तुत करता है ।

(ब) तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या

एक शोधार्थी की सफलता उसके द्वारा सोचे गये तर्क एवं रूचि द्वारा किये गये सर्वेक्षण पर निर्भर करती है । इसके लिए सांख्यिकीय ज्ञान और इसका शिक्षा में प्रयोग जानना अति आवश्यक माना गया है । आज के वैज्ञानिक युग में कोई भी शोधकार्य सांख्यिकीय ज्ञान के बिना सम्भव नहीं हो पाता है । क्योंकि इन विधियों के द्वारा कार्य में शुद्धता, निरपेक्षता और सत्यता को आसानी से लाया जा सकता है । "बोल्फ" महोदय के विचार में "प्राकृतिक घटनाओं में उसकी जटिलता तथा उपरी स्पष्टता के बाबजूद किसी नियम की खोज , विवेचना तथा समन्वय के द्वारा ही सम्भव है ।

अतः सांख्यिकीय विधियाँ व्याख्या करने में और सरलता से निष्कर्ष निकालने में सहायता प्रदान करती हैं । शोधकर्ता को यह स्पष्ट करने में कोई शंका प्रतीत नहीं होती कि सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किए बिना कोई भी प्रयोग कार्य एवं शोध कार्य नितांत असम्भव होता है और यदि सम्भव भी हुआ तो उसमें वैज्ञानिक विशेषताओं का पूर्णतः अभाव रहेगा ।

सामान्यतः शोधकर्ता प्रस्तुत अध्याय को चार उप विभागों में बाँट कर अध्ययन करते हैं । प्रथम उप विभाग के अंतर्गत तथ्यों का संकलन तथा स्कोरिंग परीक्षणों द्वारा किया जाता हैं ,का वर्णन करते हैं । द्वितीय उप विभाग के अंतर्गत वर्णनात्मक सांख्यिकी के प्रयोग द्वारा तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या करते हैं । तृतीय उप विभाग के अंतर्गत शोध में प्रयुक्त परिवर्तियों के बीच विभिन्नता को जानने के लिए युनिबैरिएट एनालेसिस ऑफ बैरियन्स का प्रयोग करके परिवर्तियों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है । चतुर्थ उप विभाग के अंतर्गत शोध में प्रस्तुत परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध जानने के लिए स्त्री-पुरूष विशेषताओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है ।

मध्यमान – शोधकर्ता द्वारा तथ्यों का संग्रह करके, उनका समान वर्गो में वर्गीकरण करके तथा सांख्यिकी में प्रस्तुत करके तथ्यों को सरल बना लिया जाता है । इसके पश्चात इन अंकों के आधार पर एक ऐसा अंक ज्ञात कर लिया जाता है जो समस्त अंकमाला का प्रतिनिधि अंक कहलाता है । यह अंकमाला के बीच में स्थित होता है और इस अंक के आस पास ही माला के अधिक अंक रहते है । यह अंक समस्त पदों का सार होता है और इसीलिये इसे माला का प्रतिनिधि माना जाता है । इसी को मध्यमान कहा जाता है।

प्रामाणिक विचलन – वर्णनात्मक सांख्यिकीय की एक माप प्रामाणिक विचलन भी है । इसको प्रायः प्रमाप बिचलन, मानक बिचलन, प्रमाणिक बिचलन और एस0डी0 आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है । विद्वान लोग सर्वश्रेष्ठ विचलन माप मानकर इसका प्रयोग करते है । सांख्यिकी गणनाओं में इसका

प्रयोग वर्ग की सजातीयता और विजातीयता को जानने के लिए किया जाता है । शोध कार्यो में और अन्य उच्च गणनाओं में इसका प्रयोग किया जाता हैं। इसीलिए शोधकर्ता मध्यमान की गणना करके माला के केन्द्रीय अंक का पता लगाता है और फिर वह प्रामाणिक विचलन ज्ञात करके मध्यमान से माला के अंकों या तथ्यों के विखराब या विस्तार अथवा फैलाव का पता लगाता है । इस प्रकार से प्रामाणिक बिचलन किसी श्रेणी में विभिन्न पदों के समानांतर मध्यमान से विचलन के वर्गो के योग का वर्गमूल होता है । इसका प्रतीकात्मक स्वरूप ( ) सिगमा भी प्रयोग में लाया जाता है ।

मानक त्रुटि – सांख्यिकी प्रविधियों की मापों में कुछ न कुछ त्रुटि अवश्य पाई जाती है । इस त्रुटि का आधार प्रतिचयन का आकार होता है । प्रतिचयन का आकार यह निश्चित करता है कि त्रुटि कम होगी या अधिक । यदि प्रतिचयन का आकार छोटा होगा तो त्रुटि अधिक होगी और प्रतिचयन का आकार बड़ा होगा तो त्रुटि कम होगी । इस प्रकार त्रुटि से हमारा तात्पर्य यह है कि माप उस मूल्य से कुछ भिन्न होती है जो हम प्रतिचयन, समग्र की यथार्थ माप से प्राप्त करते हैं । ''प्रत्येक प्रतिचयन का गठन एक समान पापुलेशन से किया गया होता है । अतः हम आशा करते हैं कि समस्त मध्यमान एक समान होंगे । मापों में त्रुटि का कुछ अंश सदैव प्रवेश कर जाता है जिसके कारण क्रमिक प्रतिचयनों के मध्यमान एक समान नहीं होते हैं । प्रतिचयन वितरण में इस प्रकार की त्रुटि को ''सैम्पलिंग त्रुटि'' कहा जाता है । सांख्यिकी विद्वानों ने निर्देशन त्रुटि को ज्ञात करने के लिए कुछ सूत्रों का निर्माण किया है । इनमें से एक सूत्र मानक त्रुटि का है । यह एक ऐसा प्रतिदर्शक है जो न्यादर्श से प्राप्त मध्यमान की विश्वसनीयता का प्राक्कलन करता है । इससे यह ज्ञात होता है कि सम्भाव्यता कितनी मात्रा में न्यादर्श समग्र के मध्यमान की प्रतिनिधिक है अर्थात यदि हम न्यादर्श के मध्यमान को समग्र के मध्यमान के समान मानें तो त्रुटि की कहाँ तक सम्भावना रहती है ।

सह-सम्बन्ध – शोधकर्ता दो परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध जानने के लिए सह-सम्बध गुणांक का प्रयोग करता है । विद्वानों ने इसके लिए अनेक सूत्रों व

विधियों का प्रयोग करना बतलाया है, लेकिन प्रस्तुत कार्य में शोधकर्ता ने "प्रोडक्ट मोमेन्ट" सह-सम्बन्ध विधि का प्रयोग किया है । परिवर्तियों के स्वरूप एवं विस्तार के आधार पर सह-सम्बन्ध विधि का प्रयोग किया जाता है । परिवर्ती का स्वरूप सांख्यिकीविद् सामान्य वक्र के आधार पर निश्चित करते हैं। सह-सम्बन्ध गुणांक- "-1.00 से + 1.00 तक हो सकता है ।

बौद्रिक प्रतिभा का विश्लेषण – शोधकर्ता ने डा0 शाही द्वारा विकसित सामूहिक बुद्रि प्रतिभा परीक्षण का प्रयोग करके तथ्यों का संकलन किया । इसके पश्चात उनका विश्लेषण मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा बिचलन गुणांक आदि के आधार पर किया ताकि सामान्य वर्ग के तथा सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र-छात्राओं की बौद्रिक प्रतिभा का सही आंकलन हो जाये । यह निम्न तालिकाओं से स्पष्ट होता है –

तालिका संख्या-5.1

सामान्य छात्र-छात्रा समूह के बौद्रिक प्रतिभा के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका –

समूह	सामान्य छात्र=75, सामान्य छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	62.6	5.9	0.69	9.4
छात्रा	58.02	7.4	0.86	12.8

तालिका संख्या 5.1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग का छात्र समूह बौद्रिक प्रतिभा में प्रभावशाली रहा है, अपेक्षाकृत छात्रा समूह के । छात्र समूह का मध्यमान 62.6 रहा है जब कि छात्रा समूह का मध्यमान 58.02 रहा है इसी तरह से बौद्रिक प्रतिभा का विचलन गुणांक 9.4 छात्र वर्ग का रहा है, जबकि छात्रा वर्ग का विचलन गुणांक 12.8 रहा है ।

सामान्य वर्ग के बौद्रिक प्रतिभा के विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि

छात्र समूह की बुद्धि अधिक तीव्र या प्रखर होती है, अपेक्षाकृत छात्रा वर्ग के । "मन" 1956 का विचार है कि बौद्धिक प्रतिभा मस्तिष्क की बनावट, मस्तिष्क की वृद्धि तथा सीखने के अवसरों आदि पर निर्भर करती है । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग के छात्र तथा छात्रा समूहों को मस्तिष्क की वनावट वंश से मिली है, लेकिन मस्तिष्क की वृद्धि और सीखने के अवसर परिवार के पर्यावरण से । भारतीय परिवेश का प्रभाव बालक तथा बालिका पर अलग-अलग पड़ता है । बालकों को माता-पिता परिवार के बाहर सर्वागींण विकास हेतु भेजना पसंद करते हैं जबकि बालिकाओं से निश्चित क्षेत्र में निश्चित कार्य तथा व्यवहार करवाना पसन्द किया जाता है । इस प्रकार से बालकों की बौद्धिकता का विकास खुले तथा विभिन्न अनुभवों द्वारा होता है जबकि बालिका वर्ग की बौद्धिकता का विकास संकुचित पर्यावरण और परिवार की देखरेख में होता है । अतः दोनों की बौद्धिक प्रतिभा विकास में विचलन होना स्वाभाविक है ।

तालिका सं0 5.2

सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा समूह के बौद्धिक प्रतिभा के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका-

समूह	जनजाति छात्र=75, जनजाति छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	47.05	9.30	1.07	19.7
छात्रा	43.68	12.0	1.38	27.4

तालिका संख्या 5.2 में सहारिया जनजाति के छात्र तथा छात्रा समूह की बौद्धिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इससे स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्र समूह बौद्धिक प्रतिभा में अधिक सम्पन्न पाये गये अपेक्षाकृत छात्रा वर्ग के । इनके विचलन गुणांक छात्र वर्ग 19.7 तथा छात्रा वर्ग 27.4 रहे हैं । इससे भी स्पष्ट होता है कि छात्रा वर्ग का विचलन अधिक रहा है ।

सहारिया जनजाति के बालक तथा बालिकाओं की बौद्विक प्रतिभा के विश्लेषण को देखने से स्पष्ट होता है कि बालिका वर्ग की प्रतिभा सम्पन्नता में विचलन अधिक है, अपेक्षाकृत बालक वर्ग के । इसका कारण इस जनजाति की सामाजिक बनावट तथा प्रथाओं आदि का प्रभाव है । ये लोग वास्तविकता में विश्वास करते हैं तथा अपनी सामाजिकता की भावना को बनाये रखते हैं । इस समूह की स्त्रियाँ वास्तविक मान्यताओं तथा वर्तमान की आवश्यकता पूर्ति पर विश्वास करती हैं ताकि वे अपने परिवार का पालन पोषण न्यून साधनों में भी कर सकें । इसके साथ ही वे अपने समाज को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ,उसकी अपूर्वता को बनाये रखने के लिए और साधन सम्पन्न बनाने के लिये क्रियाशील रहती हैं । सहारिया जनजाति में परिवार की मालकिन तथा सर्वेसर्वा स्त्रियाँ ही होती हैं (संतोष 1988)। परिणामस्वरूप प्रारम्भ से ही ये लोग अपनी लड़कियों का विकास निश्चित दायरे में ही करते हैं । स्त्री वर्ग परिवार को चलाने के लिए तथा मान सम्मान बनाये रखने के लिए अथक परिश्रम करता है, जबकि पुरूष वर्ग स्वयं के सुख के लिए डूबा रहता है । पारिवारिक कार्यो में बच्चों का विकास तथा निर्माण आदि का कार्य स्त्री द्वारा ही होता है । अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इनके बच्चों की बौद्विक प्रतिभा का विकास अलग मान्यताओं और प्रथाओं के आधार पर होता है ताकि वे अपने अपने क्षेत्र में सफल हो सकें , जबकि वंश का प्रभाव समान है ।

तालिका संख्या 5.3

सामान्य छात्र-छात्रा समूह के सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामान्य छात्र=75, सामान्य छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	31.20	4.5	.51	14.2
छात्रा	29.8	4.8	.55	15.9

तालिका संख्या 5.3 में सामान्य छात्र छात्रा समूहों के सामाजिक -आर्थिक स्तर का तथ्य विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें सामान्य छात्रों के समूह का सामाजिक -आर्थिक स्तर का मध्यमान 31.20 रहा है और विचलन गुणांक 14.2 रहा है । जबकि छात्रा समूह का मध्यमान 29.8 रहा है तथा विचलन गुणांक 15.9 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों की सामाजिक – आर्थिक स्तर की सोच तथा मान्यताऐं विचलन रखती हैं ।सामान्य छात्र तथा छात्रा वर्ग के सामाजिक – आर्थिक स्तर का विश्लेषण देखने से स्पष्ट होता है कि भारतीय जनमानस में बालक वर्ग को अधिक महत्व दिया जाता है और बालिका वर्ग को कम । यह सोच दोनों की प्रतिभा विकास को प्रभावित करती है । बौद्धिक प्रतिभा विकास पर समृद्ध पर्यावरण का प्रभाव और माता-पिता की सोच का प्रभाव भी बच्चों पर पड़ता है । बालक समूह बाह्य पर्यावरण का दैनिक जीवन में समुचित उपभोग करके सीखने के तमाम अवसरों को प्राप्त करता है , जबकि बालिका समूह को संकुचित पर्यावरण में ही रहकर निश्चित मान-मर्यादा तथा कार्यों एवं आदतों को ही विकसित करना होता है परिणामस्वरूप दोनों की बौद्धिक प्रतिभा की प्रखरता में विचलन होना स्वाभाविक हो जाता है । समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि भारतीय परिवारों की यह सोच स्त्री वर्ग के प्रति असुरक्षा के भाव को स्पष्ट करती है । "वुडबर्थ" (1952) ने अपने निष्कर्षों में पाया कि बौद्धिक प्रतिभा विकास पर लक्ष्य प्राप्ति की भावना सबसे अधिक प्रभाव डालती है । जब व्यक्ति लक्ष्य निर्धारित कर लेता है तो उसमें अवलोकन करना, समझना, चिंतन करना तथा स्मरण करना आदि बौद्धिक विकास की क्रियायें क्रियाशील हो जाती है और वह अपनी बौद्धिकता का विकास करता है । ये सब समृद्ध वातावरण तथा सामाजिक सोच के द्वारा ही बच्चों को दी जा सकती हैं । अतः माता-पिता, बालक-बालिका में अंतर स्थापित करके सामाजिक मान्यताओं और पोषण समृद्धता में अंतर करके दोनों की बौद्धिकता विकास को प्रभावित करते हैं ।

तालिका संख्या 5.4

सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा समूह के सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	जनजाति छात्र=75, जनजाति छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणित विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	19.7	3.26	.37	16.4
छात्रा	22.8	4.25	.49	18.6

तालिका संख्या 5.4 में सहारिया जनजाति के बालक तथा बालिका समूह के बौद्दिक प्रखरता से सम्बन्धित सामाजिक - आर्थिक स्तर के मध्यमान प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक के तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें सहारिया छात्रों का मध्यमान 19.7 रहा है , जबकि छात्रा समूह का मध्यमान 22.8 रहा है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रा वर्ग सामाजिक - आर्थिक स्तर के समूह से अधिक प्रभावित नहीं होता है अर्थात स्त्री वर्ग मेहनतकश तथा परिश्रम में विश्वास करके अपनी मर्यादा का पालन समुचित रूप से करता है और पुरूष वर्ग कृषि से सम्बन्धित कार्य तथा अपराध करके सामाजिक प्रतिष्ठा को स्थापित करता है परिणामस्वरूप इनका विचलन गुणांक 18.6 (छात्रा वर्ग)तथा 16.4 (छात्र वर्ग) रहा है । दोनों ही वर्गों में सामाजिक - आर्थिक स्तर की असमानता प्रतीत होती है । यह विचलन परिस्थिति तथा व्यावसायिक न होकर मानसिक सोच का होता है । छात्र वर्ग अपने उत्तरदायित्वों को परिवार के प्रति कम मात्रा में महसूस करता है , जबकि छात्रा वर्ग अधिक मात्रा में महसूस करता है ।

तालिका संख्या 5.5

सामान्य छात्र छात्रा समूह के समायोजन स्तर के मध्यमान,प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि एवं विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामान्य छात्र=75, सामान्य छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	112.8	13.1	1.5	11.5
छात्रा	111.8	14.1	1.6	12.5

तालिका संख्या 5.5 में सामान्य छात्र-छात्रा समूह के समायोजन स्तर का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक सांख्यिकी के प्रयोग द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया गया है । सामान्य छात्र वर्ग का मध्यमान 112.8 समायोजन परिवर्ती का जबकि छात्रा वर्ग का मध्यमान 111.8 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों के समायोजन स्तर में समानता अधिक है । मध्यमान के अंतर से स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो पर यौन भिन्नता का प्रभाव झलक रहा है । भारतीय परिवेश में छात्रों का पालन - पोषण छात्राओं के पालन पोषण से भिन्न होता है । साथ ही परिवार के मुखिया के रूप में बालक वर्ग का विकास किया जाता है , जबकि बालिकाओं का विकास तथा पालन पोषण सिर्फ परिवार सम्भालना और सबसे अच्छी मां तथा पत्नी बनने तक ही सीमित है । पुरूष वर्ग बाह्य परिस्थितियों तथा समस्याओं से जूझता है । अतः उसे परिस्थिति के साथ सकारात्मक सोच का विकास करना होता है । जबकि स्त्री को सिर्फ परिवार के अंतः वातावरण से सम्बन्ध बनाना होता है जिससे उसका समायोजन स्वतः ही अच्छा बन जाता है । इसके साथ ही छात्र वर्ग का विचलन गुणांक 11.5 रहा है, जबकि छात्रा वर्ग का विचलन गुणांक 12.5 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि समायोजन स्थापना में विचलन की मात्रा, छात्रा वर्ग में अधिक पाई जाती है । छात्रा वर्ग एकदम से किसी के प्रति परिस्थिति या समस्या के प्रतिमान स्थापित करता है । फिर वह अपनी सकारात्मक या नकारात्मक सोच स्थापित करता है ।

इससे उसे समायोजन स्थापित करने में समय लगता है लेकिन, इससे परिस्थिति मूल्यांकन छात्र वर्ग की अपेक्षा अधिक अच्छा और सफल होता है ।

तालिका 5.6

सहारिया जाति छात्र-छात्रा समूह समायोजन स्तर के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका -

समूह	सहारिया छात्र=75, सहारिया छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणित बिचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
छात्र	87.02	10.75	1.24	12.25
छात्रा	82.92	13.07	1.50	15.65

तालिका संख्या 5.6 में सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के समायोजन परिवर्ती के तथ्यों के विश्लेषण का वर्णन किया गया है । इसमें छात्र वर्ग का मध्यमान 87.2 रहा है , जबकि छात्रा वर्ग का मध्यमान 82.92 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि सहारिया जनजाति के बच्चों (बालक-बालिकाओं) के समायोजन के मामले में छात्र वर्ग अधिक प्रभावशाली रहा है । इसके साथ ही छात्र वर्ग का विचलन गुणांक 12.25 रहा है और छात्रा वर्ग का विचलन गुणांक 15.65 रहा है । इनसे दोनों वर्गो के समायोजन स्तर के विचलन का पता चलता है । समायोजन स्थापना में सहारिया जनजाति के बच्चों का समाज के अन्य बच्चों से एकरस न होना प्रतीत होता है । ये लोग स्वंय को अकेला , उपेक्षित, निराश और पिछड़ा मानते हैं । इस सोच के रहते कोई भी व्यक्ति सामान्य लोगों के बीच समायोजन स्थापित करने में कठिनाई महसूस करता है । विद्यालय के छात्रों में ए0एस0जी0टी0पी0 आदि क्षेत्रों में समायोजन का आंकलन किया गया है । प्रायः यह देखा गया है कि छात्र वर्ग साहसी, जागरूक तथा उन्नतिशील होता है वहीं पर छात्रा वर्ग शर्मीला , असाहसी तथा जो है उसी में गुजारा करने की भावना से ओत प्रोत रहता है । परिणामस्वरूप विद्यालय में ये लोग अपने संकोची स्वभाव के कारण स्वयं लिप्त और अकेले दिखलाई देते हैं । किसी भी

समस्या का मुकाबला स्वयं न करके जैसा हो रहा है, " ठीक ही है " में विश्वास करते हैं ।

तालिका संख्या 5.7

सामान्य छात्र तथा सहारिया छात्र समूह की बौद्धिक प्रतिभा के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	जनजाति छात्र=75, सामान्य छात्र=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सामान्य छात्र	62.6	5.9	0.69	9.40
सहारिया छात्र	47.05	9.3	1.07	19.7

तालिका संख्या 5.7 में सामान्य प्रतिभाशाली तथा सहारिया प्रतिभाशाली छात्रों के तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें सामान्य प्रतिभाशाली छात्र उच्च स्तर पर रहे हैं । इनका मध्यमान 62.6 रहा है , जबकि सहारिया छात्रों का 47.05 रहा है । इससे शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सामान्य समूह के छात्रों का व्यक्तित्व विकास अधिक सुसंगठित, समृद्ध और सर्वागींण होता है । इस समूह के छात्रों को समृद्ध पर्यावरण तथा सुलभ, पर्याप्त साधन स्वयं के विकास के लिए मिल जाते हैं । इनका सोच सकारात्मक और रचनात्मक होता है तथा विश्वास के साथ वे लोग "स्व" का विकास करते हैं जो जीवन के विकास को ऊर्जा देकर विशिष्ट कार्यो को सम्पादित करता है । सहारिया छात्रों का विचलन गुणांक 19.7 रहा है, जबकि सामान्य का 9.4 । इससे स्पष्ट होता है कि प्रतिभा सम्पन्न सहारिया छात्र स्वयं का विकास करने में सक्षम नहीं हैं । वे आज भी स्वयं की पहचान नहीं बना पा रहे हैं । स्वयं में आत्म विश्वास का पूर्ण भाव नहीं है । उनकी निर्भरता समाज के ऊपर स्थिर है । वे सामाजिक परिवर्तन के प्रति जागरूक नहीं हैं । शायद इसके पीछे उनके समाज का पोषण, चिंतन तथा मानसिकता हो । आज जीवन को चलाने के लिए समय की पहचान, धन का

उत्पादन तथा नैतिकता की आवश्यकता होती है । इसके प्रति ये लोग गम्भीर प्रतीत नहीं होते हैं । परिणामस्वरूप वे बौद्धिक रूप से सम्पन्न होकर भी वर्तमान विकास में पीछे हैं, सोच में पीछे हैं तथा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सामान्य छात्रों से भी पीछे हैं ।

"हिलगार्ड" (1962) का मानना है कि व्यक्तित्व विकास व्यक्ति के शील गुणों की अभिव्यक्ति पर निर्भर करता है । ये अभिव्यक्ति वातावरण तथा परिस्थिति भिन्नता पर निर्भर करती है जैसे - " शर्मीलापन " वंशानुक्रमीय नहीं होता है बल्कि सामाजिक तथा सांस्कृतिक होता है । अतः निष्कर्षात्मक तौर पर कहा जा सकता है कि सहारिया प्रतिभाशाली छात्रों के व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया शैशवकाल से चलती है और व्यक्तित्व निर्माण की यही प्रक्रिया भविष्य में व्यक्तित्व संरचना में परिणित हो जाती है । अतः शोधकर्ता यह समझता है कि सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र समूह के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिक परिवेश, साधन, शिक्षा तथा व्यवसाय की स्थिति का परिणाम होता है ।

तालिका संख्या 5.8

सामान्य छात्रा तथा सहारिया छात्रा समूहों की बौद्धिक प्रतिभा के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका -

समूह	सामा0 छात्रा=75, जनजाति छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सा0छात्रा	58.02	7.4	0.86	12.8
सहा0छात्र	43.68	12.00	1.38	27.4

तालिका संख्या 5.8 में सामान्य प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग और सहारिया प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग के तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत है । दोनों के व्यक्तित्व विकास का सर्वांगीण विकास के संदर्भ में आंकलन है । सामान्य छात्रा मध्यमान 58.02 रहा है जबकि सहारिया छात्रा मध्यमान 43.68 रहा है । इनका विचलन गुणांक 12.8 सामान्य छात्रा तथा 27.4 सहारिया छात्रा वर्ग का रहा है । इससे

स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सामान्य छात्रा वर्ग प्रभावशाली रहा है । व्यक्तित्व विकास की संरचना एक प्रक्रिया के तहत होती है फिर इसी की परिणिति सर्वांगीण विकास के रूप में हो जाती है । "मन" 1956 का विचार है कि व्यक्तित्व निर्धारण व्यक्ति की जैविक सम्भाव्यताओं, विकास के अवसर तथा सीखने की परिस्थितियों पर निर्भर करता है । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य प्रतिभा सम्पन्न छात्रा तथा सहारिया जनजाति की प्रतिभा सम्पन्न छात्राओं में एक ही प्रकार के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, भिन्न वातावरणों और जैविक सम्भावनाओं से हुआ है । परिणाम स्वरूप उनका सामाजिक विकास अपने सामाजिक अंतःक्रिया का परिणाम मात्र ही है ।

इन दोनों के विचलनों को देखने से भी स्पष्ट होता है कि दोनों का व्यक्तित्व विकास असमान परिस्थितियों में होता है । जिसका प्रभाव सामान्य तौर पर आत्म विश्वास का अभाव, परिश्रमशीलता तथा 'रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास न होना' आदि से परिलक्षित होता है । शोधकर्ता ने जब तथ्य संकलन किया तो सहारिया छात्राओं से बात की जिसमें शर्मीलापन, निष्क्रियता, आत्म विश्वास में कमी, आश्रिता, व्यावहारिक न होना, रचनात्मकता का अभाव, तनाव पूर्ण होना तथा स्वतंत्र महसूस न होना (16ए0एफ0 ,कपूर) आदि व्यक्तित्व की नकारात्मक विशेषताओं को देखा , जबकि सामान्य छात्रायें सकारात्मक अभिरूचि प्रदर्शित कर रही थीं । इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में सर्वांगीण विकास के लिए वंशानुक्रमीय योग्यताओं की इतनी आवश्यकता नहीं है, जिनती सीखने की प्रक्रिया तथा विकास के अवसरों की होती है ।

तालिका संख्या- 5.9

सामान्य तथा सहारिया, छात्र समूह के सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामान्य छात्र=75, सहारिया छात्र=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सामान्य	31.20	4.5	0.51	14.2
सहा0	19.7	3.26	0.37	16.4

तालिका संख्या 5.9 में शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली सामान्य छात्र समूह के सामाजिक-आर्थिक स्तर का तथा सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र समूह का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक, सांख्यिकी के द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया है । इसमें प्रतिभाशाली सामान्य छात्र समूह का मध्यमान 31.20 रहा है , जबकि सहारिया प्रतिभाशाली छात्र समूह का मध्यमान 19.7 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि बौद्रिक प्रतिभा दोनों में है लेकिन इनके क्षेत्र विस्तार और सीखने की प्रखरता में अंतर हो सकता है । निदर्शन क्षेत्र का निरीक्षण करने से शोधकर्ता को स्पष्ट हुआ कि ग्रामों तथा कस्बों में सामान्य जातियों का सामाजिक आर्थिक स्तर, उच्च तथा सामान्य पाया गया जबकि सहारिया जनजाति की सामाजिक तथा आर्थिक स्तर कुछ को छोड़कर निम्न स्तर का पाया गया ।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि बौद्रिक प्रखरता में तीव्रता लाने के लिये तथा अधिगम के क्षेत्र विस्तार के लिए सामाजिक-आर्थिक स्तर की सम्पन्नता का प्रभाव पड़ता है । इनके विचलन गुणांक देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों में विचलन भिन्नता कम है । सामान्य छात्र वर्ग का विचलन गुणांक 14.2 रहा है, जबकि सहारिया जनजाति के छात्र वर्ग का विचलन गुणांक 16.4 रहा है । इससे शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि दोनों समूहों के बच्चे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रयोग करके जीवन को अच्छा बनाना चाहते हैं । लेकिन जनजाति बच्चों को साधनों का अभाव होता है ।

तालिका संख्या 5.10

प्रतिभाशाली सामान्य छात्रा समूह तथा सहारिया प्रतिभाशाली छात्रा समूह के सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामान्य छात्रा=75, सहारिया छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणाक
सामा0	29.8	4.8	0.55	15.9
सहा0	22.8	4.5	0.49	18.6

तालिका संख्या 5.10 में प्रतिभाशाली सामान्य छात्रा वर्ग तथा सहारिया जनजाति छात्रा वर्ग के सामाजिक - आर्थिक स्तर के तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें सामान्य छात्रा वर्ग का मध्यमान 29.8 तथा सहारिया छात्रा वर्ग का मध्यमान 22.8 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य छात्रा वर्ग अपने सामाजिक - आर्थिक स्तर के कारण बौद्दिक तीव्रता का विस्तार अधिक प्रभावशाली ढ़ंग से कर लेता है और विकास के विभिन्न अवसर प्राप्त करता है ,जबकि सहारिया छात्रा समूह के पास संसाधन कम हैं और वे उनका उपयोग भी कम कर पाते हैं । इन दोनों वर्गो का विचलन गुणांक सामान्य छात्राओं का 15.9 तथा सहारिया छात्रा वर्ग का 18.6 रहा है । इसमें सामाजिक - आर्थिक स्तर पर सहारिया छात्रा वर्ग में विचलन अधिक रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें उपयुक्त संसाधन के अभाव में अपनी बौद्दिक प्रखरता का पूरा प्रयोग तथा उपभोग नहीं कर पातीं हैं और अन्य से पिछड़ जातीं हैं । विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अधिगम के अवसर संसाधनों से मिलते हैं ।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बच्चों के समृद्व पर्यावरण पर बल दिया जाता है, क्योंकि उनकी सीखने की क्षमता तथा प्रखरता उतनी ही पैनी या तीव्र बनती है जितना समृद्व और व्यावहारिक पर्यावरण बच्चों को मिलता है (मार्गेन 1956)

तालिका संख्या 5.11

सामान्य छात्र वर्ग तथा सहारिया छात्र वर्ग के विद्यालय समायोजन तथ्यों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामान्य छात्र=75, सहारिया छात्र=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सामा0	112.8	13.1	1.5	11.5
सहा0	87.2	10.75	1.24	12.25

तालिका संख्या 5.11 में प्रतिभाशाली सामान्य छात्र वर्ग का समायोजन तथा सहारिया छात्र वर्ग के समायोजन तथ्यों के सांख्यिकीय विश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है । इसमें सामान्य वर्ग का मध्यमान 112.8 रहा है , जबकि सहारिया वर्ग का मध्यमान 87.2 रहा है । सामान्य छात्रों का समायोजन विद्यालय के पांच तत्व ए0एस0जी0टी0 तथा पी0 आदि सभी में सहारिया छात्रों के समायोजन से श्रेष्ठ रहा है । यहाँ यह कहना आवश्यक हो जाता है कि माता -पिता का व्यवहार बच्चों के व्यवहार तथा व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है । अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक माता-पिता बच्चों के लिए शिक्षक की भूमिका अदा करते हैं । अतः जैसी पारिवारिक शिक्षा (संस्कारों) में उनको ढाला जाता है वैसी ही वे व्यक्तित्व विशेषताओं को धारण करते है । इसी प्रकार से बच्चों को, माता-पिता की अभिवृत्तियाँ, रूचियाँ, समायोजन आदि भी प्रभावित करते हैं, जिससे उनमें जीवन के प्रति लगाव तथा आत्म विश्वास विकसित होता है (मार्गन 1956) । इसका सकारात्मक प्रभाव सामान्य वर्ग के बच्चों पर पड़ता है और नकारात्मक प्रभाव सहारिया छात्र वर्ग पर । तथ्य संकलन के समय शोधकर्ता ने सहारिया परिवारों को पास से जाकर देखा तो पाया कि बच्चों के माता-पिता अशिक्षित तथा आधुनिक संस्कारविहीन हैं । वे अपने बच्चों को आक्रामकता, क्रोध, नियमों का उल्लंघन और आपराधिक पृष्ठभूमि ही दे सकते हैं । अतः सहारिया बच्चे समायोजन में अच्छे सिद्व नहीं हो पाते हैं ।

सामान्य छात्रों का विचलन गुणांक 11.5 रहा , जबकि सहारिया का 12. 25 रहा है । इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो में विचलन है । सहारिया वर्ग में अधिक है तथा सामान्य वर्ग में कम । इसका मुख्य कारण दोनों वर्गो की सामाजिक - आर्थिक विषमता हो सकती है । दोनों ही वर्ग के बच्चे अपने माता-पिता को प्रतिमान मानकर अनुकरण करते हैं । प्रायः बच्चे अपने माता-पिता के व्यक्तित्व के अनेकों लक्षणों को आत्मसात करते हैं । वे सांस्कृतिक, नैतिक या भौतिक कैसे भी हो सकते हैं । लेकिन जब उनको अपने माता-पिता में अच्छे प्रतिमान मिलते ही नहीं तो उनका दैनिक समायोजन बिगड़ जाता है । जिसका

प्रभाव सहारिया बच्चों के विद्यालय समायोजन में देखने को मिलता है । परिणामस्वरूप सहारिया बच्चों के विद्यालय समायोजन में विचलन सामान्य बच्चों से अधिक रहा है ।

तालिका संख्या - 5.12

सामान्य छात्राओं तथा सहारिया छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक हेतु तालिका

समूह	सामा0 छात्रा=75, सहा0जाति छात्रा=75			
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सामा0	111.8	14.1	1.6	12.5
सहारिया	82.92	13.07	1.50	15.65

तालिका संख्या 5.12 में सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं तथा सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं के विद्यालय समायोजन के तथ्यों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मानक त्रुटि तथा विचलन गुणांक का वर्णन किया गया है । इसमें सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं का मध्यमान 111.8 रहा है । जबकि सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं का मध्यमान 82.92 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो में सामान्य वर्ग का विद्यालय समायोजन अच्छा रहा है । विद्यालय समायोजन पर बच्चों के विकास का, अधिगम का तथा उनको प्राप्त संस्कारों का महत्व माना जाता है । बच्चे जिस समाज में रहते हैं उसमें लोगों के साथ अन्योन्य क्रिया होती है, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है । समाज स्वयं को जीवित रखने के लिए कुछ कार्य, नियम, प्रथायें, परम्पराऐं तथा रीतियाँ बनाता है और बच्चों को अनुकरण कराता है ताकि वे समाज की विशिष्टता को जीवित रख सकें । इसी प्रभाव के वशीभूत होकर सहारिया जनजाति की छात्राओं का विद्यालय समायोजन प्रभावित रहा है और सामान्य छात्राओं की अपेक्षा कम पाया गया है ।

दोनों समूहों के विचलन गुणांक के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्राओं के समायोजन में विचलन अधिक रहा है । सहारिया छात्राओं का विचलन 15.65 है , जबकि सामान्य छात्राओं का विचलन 12.5 है । इसका मुख्य कारण यौन भिन्नता तथा सामाजिक परिवेश में विकास के अपर्याप्त साधन हो सकते हैं । समाजशास्त्रियों का विचार है कि सामाजिक परिवेश का प्रभाव बच्चों के विकास तथा अधिगम पर सीधा पड़ता है । सहारिया समाज साधनों में उतना समृद्ध नहीं है जितना सामान्य छात्रा समूह । परिणामस्वरूप सहारिया छात्राएं अपने समायोजन में स्तरीय प्रदर्शन की स्थापना नहीं कर सकीं ।

शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह तथ्यों के विश्लेषण की व्याख्या परिवर्ती विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत करे । शोधकार्य में सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं तथा सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को अध्ययन हेतु चुना गया है । इनकी बौद्धिक प्रखरता का विश्लेषण तालिका संख्या 5.1, 5.2, में किया गया है । इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की बौद्धिक प्रखरता में समानता नहीं होती है। ऐसा भी पाया गया है कि जिनकी बुद्धि लब्धि एक समान है, वे विभिन्न कार्यों में निष्पादन अंतर प्रकट करते हैं । इसके अलावा विचलन की मात्रा छात्रा वर्ग में अधिक देखने को मिलती है । इसका मुख्य कारण भारतीय समाज छात्रा वर्ग को नियंत्रित स्वतंत्रता देता है जो उनके अधिगम के विस्तार को कम करती है। सीखने के अधिक अवसर बौद्धिक प्रखरता में वृद्धि करते हैं । इसी के समान सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा वर्ग में भी निष्कर्ष निकलता है । इसके अंदर का कारण सहारिया जनजाति की मनोदशा छात्रों के लिए अलग तथा छात्राओं के लिए अलग का होना भी है । ये लोग छात्र वर्ग को स्वावलम्बी बनाने की पूरी छूट देते हैं लेकिन छात्रा वर्ग को परिवार चलाने और परिवार के कार्यों को करने में लगा देते हैं । परिवार में इन स्त्रियों का ही आदेश चलता है । वे परिवार की देखभाल ही नहीं करती हैं, बल्कि आर्थिक स्थिति को अच्छा बनाने में भी सहयोग करती हैं । ये लोग इतनी चतुरता से कार्य करती हैं कि पुरूष वर्ग

परिवार से निश्चिंत रहकर अपने व्यवसाय, नौकरी तथा भ्रमण करता रहता है । इस प्रकार से प्रतिभा सम्पन्नता में सामान्य छात्र-छात्रायें , सहारिया जनजाति की छात्र -छात्राओं से विचलन में कम होती हैं ।

शोधकर्ता ने तालिका संख्या 5.3 तथा 5.4 में सामान्य तथा जनजाति वर्ग के सामाजिक - आर्थिक स्तर के तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इसमें सामान्य वर्ग ने विकास के अधिक से अधिक साधनों का प्रयोग करके अपने व्यक्तित्व का विकास किया है, जबकि सहारिया वर्ग ने साधनों का अल्प उपयोग किया है । वे आधुनिकता की दौड़ से दूर रहते हुए संतोष धारण करके उपलब्ध साधनों से ही जीवन यापन करके अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं । अतः सहारिया समूह के बच्चों का विकास सीमित संसाधनों के आधार पर तथा सामाजिक मनोवृत्ति के द्वारा ही सम्पन्न होता है । वे अतिरिक्त साधनों को जुटाने का प्रयत्न नहीं करते हैं । इसके विपरीत सामान्य समूह के अंदर बच्चों के विकास के लिए अदम्य उत्साह तथा साधनों को एकत्रित करने की लालसा होती है । अतः दोनों ही वर्गों के प्रतिभा विकास पर सामाजिक - आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है ।

शोध कार्य का एक परिवर्ती विद्यालय समायोजन भी है । इसमें शोधकर्ता ने समायोजन के पांच तत्वों ए0एस0जी0टी0पी0 का सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं तथा सहारिया जनजाति के छात्र-छात्राओं पर अध्ययन किया । इसके विश्लेषण में पाया गया कि सामान्य छात्र-छात्रा वर्ग में यौन भिन्नता का कोई भी प्रभाव देखने में नहीं आया है । इसका मुख्य कारण दोनों समूहों की वर्ग स्थिति में समानता, योग्यता स्तर ,विकास की समानता, तथा अधिगम के अनुभवों के स्तरों में समानता का होना है । विद्यालय समायोजन के पांचों तत्वों में दोनों वर्ग (छात्र-छात्रा) समान स्तर पर रहे हैं । इसी प्रकार से सहारिया जनजाति के विद्यालय समायोजन में छात्र तथा छात्रा वर्ग में विचलन स्पष्ट रूप से रहा है । इसका कारण बच्चों का आधुनिक परिवेश में पालन पोषण का अभाव, सामाजिक स्वतंत्रता का अभाव तथा साधनों का अभाव माना जा सकता है ।

दोनों ही वर्गों सहारिया तथा सामान्य छात्र-छात्राओं में समान समायोजन की स्थापना स्पष्ट होती है । सामान्य वर्ग के छात्रा समूह के समायोजन में थोड़ा सा विचलन है । वही झलक सहारिया में मिलती है लेकिन सामान्य तथा सहारिया छात्र समूहों में अच्छा एवं प्रभावशाली विद्यालय समायोजन, सामान्य समूह का ही रहा है ।

शोधकर्ता ने सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं तथा सहारिया प्रतिभाशाली छात्र - छात्राओं में अधिक विचलन सहारिया छात्राओं/छात्रों में पाया है । इसका कारण वंशानुक्रमीय तथा पर्यावरणीय दोनों ही हो सकते हैं । वंशानुक्रमीय नियम के अंतर्गत विकासवाद पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है जब तक उसके पर्यावरण में परिवर्तन अच्छी तरह से न किया जाये । पर्यावरणीय विशेषता को वंशक्रम में लाने में कई पीढ़ी व्यतीत होती हैं , तब कहीं स्थायी परिवर्तन होता है । इसी प्रकार से "परिवार में मस्तिष्क का विकास कैसे किया गया है" तथा "अधिगम के अनुभवों के अवसर कितने मिले हैं," पर प्रतिभा शालीनता निर्भर करती है । अतः निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सहारिया बच्चे सामान्य बच्चों की अपेक्षा कम प्रतिभा सम्पन्न पाये गये ।

इसी प्रकार से शोधकार्य की विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए शोधकर्ता ने सामान्य छात्र तथा सहारिया छात्र और सामान्य छात्राओं तथा सहारिया छात्राओं के विद्यालय का समायोजन के प्रभाव का आंकलन किया । इसमें तालिका सं0 5.11 तथा तालिका सं. 5.12 से स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्र तथा छात्रा वर्ग में सामान्य वर्ग के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन स्तर ये विचलन अधिक रहा है । इस विचलन का कारण सहारिया समाज में आत्म विश्वास का अभाव, स्वतंत्रता का अभाव, तथा "आधुनिक परिवेश के आत्मसात करने के भाव" का अभाव मात्र माना जा सकता है । इस समाज के लिए बच्चों को शिक्षित करना एक अनोखा कार्य है । सरकारी प्रयत्नों से इनको एक स्थान पर बसाया गया है । इनको रोज़गार परक बनाया गया है तथा समाज में समान स्तर दिया गया है, लेकिन इनके मानसिक सोच से निम्नता का भाव अभी तक नहीं गया है।

अतः इनके बच्चों में विद्यालय के प्रति आत्म विश्वास पूर्ण रूप से जागृत नहीं हो पाया है । अतः ये लोग विद्यालय समायोजन में अधिक विचलन रखते हैं ।

इसी के साथ शोधकर्ता ने सामान्य वर्ग के सामाजिक - आर्थिक स्तर का भी आंकलन किया है । इस विश्लेषण की तालिका संख्या 5.9 तथा 5.10 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक - आर्थिक स्तर का प्रभाव इनके छात्र - छात्रा व्यवहार तथा व्यक्तित्व विकास पर अधिक परिलक्षित होता है । बौद्विक रूप से इनका कोई भी स्तर क्यों न हो, सामाजिक पर्यावरण तथा संसाधन सभी लोगों को प्रभावित करते हैं । अतः इनके इस स्तर का अवलोकन शोधकर्ता के लिए विषय की तथा परिवर्ती की आवश्यकता होती है ।

"कुक" (1975) ने सहारिया जनजाति को परिवर्तनशील (ट्रांजीशनल) जनजाति के रूप में माना है । ये लोग आज भी व्यवसाय या नीति के बारे में एक निश्चत क्रिया या विचार नहीं रखते हैं बल्कि बदलते रहते हैं। यानि इनका व्यावसायिक रूझान परिवर्तनशील होता है । इनका जीवन आज भी गरीबी में बीतता है तथा कमजोर वर्ग के रूप में गिना जाता है । ये माँसाहारी तथा शाकाहारी दोनों ही होते हैं । ये लोग अनैतिक कार्यो को भी कभी कभी अपनाते हैं ताकि समाज में सम्पन्नता ला सकें । आपस में मिलने पर ये लोग "राम राम", सीताराम, राधे कृष्ण आदि आदरणीय शब्दों का प्रयोग करते हैं । ये जंगली वस्तुओं जैसे - औषधि, लकड़ी आदि एकत्रित करके जीवन यापन भी करते हैं । आज सरकार ने इनको विशेष सुविधा देकर स्थायी रूप से बसाया है ताकि स्थायी रूप से कोई निश्चित व्यवसाय करके अपना जीवन यापन कर सकें । ये लोग मजदूरी, चौकीदारी, खेती आदि के कार्यो को करके अपना पेट पालते हैं । इसके साथ ही ये लोग अपराध करना भी अपना गौरव समझते हैं । इसमें चोरी करना, शराब पीना, बनाना तथा बेचना, राहगीरी करना, मुख्य अपराध सम्मिलित होते हैं।

यह अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति हमेशा जागरूक बने रहते हैं । जनजातियों में सहारिया जनजाति में विवाह के नियम ओर रीति रिवाज़ अपने

तरीके के हैं । जब कोई नई-नवेली दुल्हन अपने पति के घर में आती है, तो उसे एक रिवाज़ का पालन करना पड़ता है, जिसे ये लोग "दूध भाती" के नाम से पुकारते हैं । इसमें दुल्हन को दूध और चावल की दावत देनी होती है जिसको सभी लोग बड़े प्यार से और उत्साह के साथ खाते हैं । एक व्यक्ति बहुत सी स्त्रियों के साथ शादी कर सकता है, लेकिन घर में एक बीबी के जीवित रहते हुए वह दूसरी बीबी को नहीं रख सकता है । यदि उसकी पहली पत्नी किसी जटिल बीमारी से पीड़ित हो या उसके संतान न होती हो तो वह समाज की आज्ञा लेकर शादी कर सकता है, फिर भी प्रथम पत्नी की सेवा भी करनी होगी । अविवाहित नवयुवतियाँ अपनी जाति के अलावा किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं, साथ ही उनके परिवारीय जनों को यदि कोई आपत्ति नहीं होती है, तो वह अपनी जाति वालों को दावत देकर उस व्यक्ति के साथ शादी कर सकती हैं। अविवाहित लड़कियों की पवित्रता पर विशेष ध्यान रखा जाता है । दस वर्ष की आयु तक प्रत्येक लड़की की शादी कर दी जाती है । इनमें दुल्हन का विवाह करने के लिए कोई निश्चित दहेज या मूल्य का प्रचलन नहीं पाया जाता है , फिर भी रिवाज़ के अनुसार वर का पिता आठ रूपये इसलिए देता है ताकि विवाह का खर्चा सम्पन्न हो सके । यदि कोई शादीशुदा स्त्री किसी अन्य व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्धों में लिप्त पाई जाती है तो उसे जाति से पूर्णरूप से निष्कासित कर दिया जाता है । यह निर्णय जनजाति की पंचायत के द्वारा किया जाता है । वह स्त्री फिर अपना विवाह नहीं कर सकती है और न बिना विवाह के वह रखैल के रूप में रह सकती है । यदि उसका पति उसे दुबारा पत्नी बनाने को तैयार हो जाता है तो यह मामला पंचायत में जाता है, और पंचायत उसको दण्ड स्वरूप जनजाति को दावत दिलवाकर फिर से विवाह की सहमति दे देती है । जो संतान विजातीय व्यक्ति से पैदा होती है उसे न तो जाति के अधिकार ही मिलते हैं और न जाति का सम्मान ही । साथ ही इनको हेय दृष्टि से देखा जाता है ।

विधवा विवाह की परिपाटी इनमें पायी जाती है । यदि बीमारी से किसी की मृत्यु हो जाती है और उसका अविवाहित कोई छोटा भाई है तो उसके साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है । सामान्य रूप से छोटा भाई, बड़े भाई की पत्नी को

अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है लेकिन बड़ा भाई, छोटे भाई की पत्नी को स्वीकार नहीं कर सकता है । फिर भी यदि अत्यन्त आवश्यक होता है तो वह भी कार्य कर लिया जाता है । यदि कोई विधवा अपनी जनजाति से बाहर विवाह करती है तो उसका बच्चों पर, धन पर किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं रह जाता है ।

सहारिया जनजाति की कोई स्त्री जब गर्भधारण कर लेती है तो किसी भी प्रकार के आयोजन या खुशी के कार्यक्रम का वर्णन प्राप्त नहीं होता है और न आज़ है भी । उस समय "बसोर" जनजाति की नर्स या दाई उस गर्भवती की देखभाल करती है । बच्चे के जन्म लेने के दसवें दिन मां को "दसवाँ" अधिकार के तहत शुद्ध करवा दिया जाता है । इसके साथ ही परिवारीय या गोत्र के लोगों को भोजन भी दिया जाता है । यदि परिवार बहुत ही गरीब है तो कुछ कुछ उबले चने (घुघुरी) परिवारीय सदस्यों के बीच बाँट दिये जाते हैं । इस प्रकार से जन्मोत्सव से सम्बन्धित प्रथा तो जनजाति में देखने को मिलती है, लेकिन गोद लेने का नियम स्पष्ट नहीं है ।

जब माता-पिता या परिवारीय सदस्य या मित्र लड़का और लड़की के मैच को तलाश कर लेते हैं तो लड़के का पिता अपने कुछ परिवारीयजनों या रिश्तेदारों के साथ लड़की वालों के घर जाता है । वहां पर वह लड़की के पहने हुए कपड़े के पल्लू को चूमकर उसके हाथ पर कुछ रूपये या मिष्ठान रखकर शादी के सगुन को पूरा करता है । फिर वे लोग भोजन करते हैं और दूसरे दिन जब लड़के वाले जाने लगते हैं तो लड़की का पिता उनको भेंट स्वरूप कुछ रूपये देकर विदा करता है । यह कार्यक्रम रिश्ता पक्का होना या सगाई कहलाती है । शादी वाले दिन लड़का और बाराती, लड़की के घर जाते हैं और लड़के के मस्तक पर तिलक लगाते हैं । दूसरे दिन मण्डप में लड़का और लड़की अपने परिवारों के समक्ष पाँच चक्कर लगाते हैं और इस प्रकार से शादी की रस्म पूरी की जाती है । इनके विवाह में किसी भी ब्राह्मण या पंडित को नहीं बुलाया जाता है । इस जनजाति का बुजुर्ग या लड़की का भाई ही विवाह की सभी रीतियों, रस्मों-रिवाज़ों को पूरा करवा

देता है ।

सहारिया जनजाति में मृत्योपरांत के संस्कार भी स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं । इनके यहाँ पर मुर्दे को जलाया जाता है । कुछ संदर्भो में मुर्दे को गाढ़ने की प्रथा भी होती है । नाबालिग, अविवाहित या जहरीली बीमारी वाले मुर्दे को ये लोग जलाने के स्थान पर जमीन में गाढ़ते हैं । मुर्दे को जलाने के बाद उसकी राख को किसी बहती हुई नदी में फेंक देते हैं । उस व्यक्ति की मृत्यु के लिए दुःख प्रगट करने हेतु ये लोग अपने अपने सिर के बाल मुँड़वा लेते हैं । इनके यहाँ मृत्योपरांत भोज (श्राद्ध) करने का कोई संस्कार स्पष्ट नहीं है । साथ ही साथ मृत्यु संस्कार के लिए पंडित या अन्य व्यक्ति नियुक्त होता है । जो व्यक्ति मुर्दे को आग देता है, वह तीन दिन तक अपवित्र माना जाता है । इसी तरह से एक स्त्री को भी मासिक धर्म के समय तीन दिन तक अपवित्र मानते हैं और बालक जनने के पश्चात दस दिन तक । इसके पश्चात स्नान कर लेने मात्र से ही स्त्री और माँ दोनों की अपवित्रता समाप्त हो जाती है ।

मुख्य तौर पर सहारिया जनजाति "भवानी माँ" को पूजती है । इसके साथ ही उनमें "राम" और "कृष्ण" के प्रति भी अपार श्रद्धा पाई जाती है । उनका अपना जातीय या वंशानुक्रमीय कोई देवता या पुजारी नहीं होता है ये लोग किसी भी ब्राह्मण को अपनी जाति के धार्मिक कार्यक्रमों के लिये न बुलाते हैं और न नियुक्त ही करते हैं । यदि परिवार में कोई धार्मिक संस्कार होना होता है तो यह अपनी बहिन के पुत्र या बुजुर्ग व्यक्ति को इस कार्य के लिए बुलाते हैं। इस जनजाति में प्रेतों या बुरी आत्माओं को भगाने के लिए या उनसे बचने के लिए बलि की प्रथा प्रचलित है । बलि के तौर पर बकरा प्रयोग में लाया जाता है । कुछ संस्कारों में बलि के तौर पर उसके सिर्फ कान को ही काटकर चढ़ाया जाता है । बलि के रूप में जब बकरा काटा जाता है तो परिवार के सभी लोग उसके माँस को प्यार के साथ खाया करते हैं । ये लोग कुछ देवी-देवताओं में भी विश्वास करते हैं । जिनको "गोनर", नरसिंहा, गौरया, काटिया, थोलिया, सोमिया और अहेयपाल" आदि नामों से पुकारा जाता है । इनमें से अधिकांश को जनजातीय

लोग देवता के समान पूजते हैं । इन देवताओं की प्रार्थना करते समय ये लोग या तो पानी में खड़े होते हैं या सीधे हाथ की हथेली में गरम लोहे का टुकड़ा रखते हैं । सामान्यतौर पर ये लोग रोगों को पिशाच ग्रस्त मानते हैं । रोगी का उपचार दवाओं से कम, बल्कि पिशाच मुक्ति, इन्द्रजाल से मुक्ति और बुरी दृष्टि से मुक्ति आदि उपायों द्वारा जनजातीय ओझा के द्वारा करवाया करते हैं ।

इस प्रकार से सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों के सामाजिक - आर्थिक स्तर का विशद वर्णन करने तथा तथ्यों की व्याख्या से स्पष्ट होता है कि ये लोग सरकार की तरफ से दलित तथा अनुसूचित जनजाति में रखे गये हैं । यह स्वभाव से अकखड़, निर्भीक तथा उद्दण्ड स्वभाव के होते हैं । ये लोग स्वाभिमानी तथा आत्म संतोषी बनकर आत्म निर्भरता पर जोर देते हैं । ये लोग जो भी करते हैं, ईमानदारी की झलक उसमें होती है । फिर भी आज़ इनके चेहरों पर गरीबी, कमजोरी तथा निराशा के भाव चेहरे से चिंता की रेखायें स्पष्ट करती हैं । इनमें आज व्यवसाय की अस्थिरता के कारण व्यावसायिक परिपक्वता नहीं आ पायी है । अंधविश्वास, रूढ़िग्रस्तता और अपने समाज के विकास तथा उन्नति की भावना प्रगट होती है । परिणामस्वरूप इनमें शिक्षा प्राप्ति के प्रति लगन तथा विश्वास पैदा हो चुका है, जिससे उनके बच्चे भी सामान्य लोगों की तरह से खुशहाल जीवन जी सकें । इसीलिए इनके बच्चे निःशुल्क शिक्षा तथा छात्रवृत्ति प्राप्त कर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं । फिर भी वे निश्चित तथा इतने विश्वासी नहीं हैं कि स्वयं को सामान्य बच्चों के समक्ष खड़ा कर सकें । जबकि प्रतिभा में वे समकक्ष होते हैं । अतः शोधकर्ता कह सकता है कि यदि इन बच्चों के मन से सामाजिक-आर्थिक स्तर के भय तथा अनिश्चितता को निकाल दिया जाय तो ये सामान्य की भाँति विकास तथा समायोजन स्थापित कर सकते हैं ।

शोधकार्य पांचाल (1989) में ये भी पाया गया कि ये लोग वास्तविकता में विश्वास रखकर वर्तमान में जीकर अपनी सामाजिक विशेषता को बनाये रखने की कोशिश करते हैं । इससे इनमें क्रियाशीलता, लगन तथा परिश्रम आदि विशेषतायें विकसित होती हैं । अतः स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली सहारिया

बच्चे अपने आर्थिक-सामाजिक परिवेश से प्रभावित होकर विद्यालय समायोजन करते हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके शैक्षिक ज्ञान तथा निष्पत्ति पर परिलक्षित होता है ।

प्रसरण का विश्लेषण (एनालेसिस ऑफ वैरियन्स)

वर्णनात्मक सांख्यिकी का विश्लेषण करने के पश्चात प्रत्येक शोधकर्ता को प्रसरण सांख्यिकी का विश्लेषण करना होता है । अब हमारे समक्ष दो समूहों के मध्यमानों में अंतर का प्रश्न आता है । जब शोधकर्ता दो समूहों की मापों की तुलना करता है, तो उनके मध्यमानों में अंतर आता है । अतः शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि दो समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अंतर है या नहीं । हो सकता है कि दो समूहों के मध्यमानों में जो अंतर है वह समूहों में किसी वास्तविक अंतर का परिणाम न हो, अपितु प्रतिचयन (सेंपल) करने में संयोग (चांस) का परिणाम हो । अतः शोधकर्ता की समस्या यह निर्धारण करने की है कि दो समूहों की मापों में जो अंतर आता है उसमें संयोग की सम्भावना कहाँ तक है । अब यह प्रश्न उठता है कि दो समूहों के मध्यमानों की माप द्वारा जो अंतर आता है वह संयोग का परिणाम है या वास्तविकता है । इसका उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्ता ने टी अनुपात का आंकलन किया । दो समूहों के मध्यमानों के अंतर को मानक त्रुटि से भाग देते हैं ताकि यह ज्ञात हो जाये कि प्राप्त अंतर प्रत्याशित अंतर (स्टैण्डर्ड एरर ऑफ डिफरेंस) से कितना गुना अधिक है । शिक्षा शास्त्रियों ने प्रसरण विश्लेषण के लिए निम्न तथ्य आवश्यक माने हैं -

अ- दोनों प्रतिचयनों का आधार सामान्य वितरण हो ।

ब- दैव निदर्शन के द्वारा प्रतिचयनों का गठन हो ।

स- एक समूह का उप भाग स्वयं में स्वतंत्र हो,ताकि उनकी अन्य तत्वों के साथ तुलना हो सके ।

द- प्रतिचयन के सभी उप तत्वों की विषमता का आंकलन समान रूप से हो ।

शोधकर्ता ने ''टी'' अनुपात को ज्ञात करने के लिए एक समूह के मध्यमान में से द्वितीय समूह के मध्यमान को घटा दिया । जो अंतर आया उसमें स्टैण्डर्ड एरर ऑफ मीन डेवियेसन से भाग दे दिया । इस तरह से जो अंक प्राप्त हुआ वह ''टी'' अनुपात है । अतः शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा तथा सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा के विभिन्न परिवर्तियों के ''टी'' अनुपात का आंकलन किया जो निम्नलिखित तरीके से विभिन्न तालिकाओं में विश्लेषण हेतु प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या-5.13

प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा समूह तथा प्रतिभाशाली सहारिया छात्र - छात्रा समूहों के मध्यमानों में अंतर और उनके ''टी'' अनुपात की व्याख्या हेतु तालिका

समूह	मध्यमान अंतर	स्टे0 एरर ऑफ मीनडेवियेशन	अंतर	''टी''मूल्य	सार्थकता व्याख्या
सामान्य छात्र एवं छात्रा	15.55	1.28	147	12.15	0.05स्तर
जनजाति छात्र एव छात्रा	14.34	1.63	148	8.78	0.05स्तर

तालिका संख्या 5.13 में प्रतिभाशाली सामान्य छात्र/छात्रा तथा प्रतिभाशाली सहारिया जनजाति छात्र / छात्रा के समूहों के मध्यमानों में अंतर प्रसरण का आंकलन दिया गया है । प्रस्तुत समूहों में मध्यमान अंतर 15.57 तथा 14.34 रहा है,जो उच्चतम प्रसरण को बतलाता है फिर भी इसमें सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है ।

शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा समूह तथा जनजाति छात्र-छात्रा प्रतिभाशाली समूह आदि के तथ्यों के मध्यमान और मानक त्रुटि का आंकलन किया । इसके पश्चात दोनों प्रतिभाशाली समूहों के मध्यमान अंतर का विश्लेषण एवं वर्णन किया । शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा समूह तथा जनजाति छात्र-छात्रा समूह में सार्थक अंतर पाया है जिसकी व्याख्या प्रस्तुत

है ।

"शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के अंतर्गत पाया कि सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा आत्म विश्वास, स्वनिर्णय, सुरक्षित भविष्य, तथा स्वतंत्र स्वभाव से ओत प्रोत रहते हैं । प्रतिभा सम्पन्नता एक ऐसी धनात्मक विशिष्टता है जोकि बालक के व्यक्तित्व में निहित अद्भुत् योग्यताओं के कारण उसे सामान्य एवं अन्य प्रकार के बालकों से भिन्न स्थापित करती है तथा उसके शीघ्र सीखने में सहायक होती है ("ल्यूसिटो" 1963) । इसी तरह से ("पायने" 1974) का निष्कर्ष है कि हम प्रतिभा को वंशानुक्रमीय रूप से कुशलता पूर्वक परिवर्तित नहीं कर सकते हैं किन्तु हम परिवेशीय घटनाओं को कुशलता पूर्वक परिवर्तित करने के योग्य हैं जो अधिगम व चिन्तन को सुगम बना सकते हैं ।"

निष्कर्षात्मक तौर पर शोधकर्ता ने प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा समूह तथा सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा समूह के मध्यमानों में अंतर प्रसरण की व्याख्या हेतु परम्परागत विचारधारा यानि प्रतिभा का मूल्यांकन बुद्धिलब्धि के स्तर के सन्दर्भ में किया है । आधुनिक विचार धारा, जिसमें प्रतिभा को बहु आयामी, सतत् व निरंतर, तथा निर्देशन द्वारा संपोषित, तथा विकसित होना, माना जाता है, को प्रस्तुत करता है ।

सामान्य छात्र-छात्रा समूह का वंशानुक्रम विकसित तथा स्थायित्व लिये हुए है । वे पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही स्थान पर रहकर अपना विकास प्रभुत्व तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर बना चुके हैं । उनका जीवन विभिन्न मूल्य तथा आदर्शो पर आधारित है । वे अपने उत्तराधिकारियों को अर्जित की गयी (वंश) विशेषताओं तथा योग्यताओं को हस्तांतरित करते हैं ("रथ, बेनेडिक्ट" 1947) । वंशानुक्रमीय योग्यताओं के हस्तान्तरण से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धांतों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि जिनके पूर्वजों में जो योग्यतायें पायी जाती हैं ,उनका प्रभाव उनके बच्चों पर परिलक्षित होता है । ये प्रभाव एक बच्चे पर चार पीढ़ियों (माता-पिता) तक का पाया गया है । इसके विपरीत सहारिया जनजाति का निवास, स्वभाव, व्यवसाय परिवर्तनशील रहा है ("कुक" 1975) जिससे उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी से

सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर तथा प्रमुख आदि विशेषताओं में परिवर्तन होता रहा है । इस ट्रांजीशनल जनजाति ने अपनी वंशानुक्रमीय विशेषताओं तथा योग्यताओं में समय के अनुसार न तो स्थायित्व कर पाया और न ही परिवर्तन करके विकास ही । परिणामस्वरूप अनिश्चित योग्यताओं तथा विशेषताओं का हस्तांतरण बच्चों में होता है ।

वंशानुक्रमीय योग्यताओं के हस्तान्तरण के पश्चात परिवेश तथा पोषण सम्बन्धी विशेषताओं की दोनों समूहों की व्याख्या करना आवश्यक होता है । सामान्य प्रतिभाशाली समूह की स्थायित्वता एक पीढ़ी से न होकर बहुत पीढ़ियों से एक ही स्थान पर होती है । अतः वे स्वयं को अच्छा नागरिक तथा स्थायी विकास, उचित साधनों का विकास, सरकारी तथा गैर-सरकारी नौकरियों, कृषि तथा अन्य व्यवसायों के द्वारा कर चुके होते हैं जिसका लाभ पीढ़ी दर पीढ़ी इनके उत्तराधिकारी उठाते हैं । वे अपने पूर्वजों से जो भी सीखते हैं तथा अनुभव का लाभ उठाते हैं कि "उन्होंने अपने बच्चों का पालन पोषण कैसे किया" उससे अच्छा संपोषण अपने बच्चों को देकर उनका सही विकास करके प्रतिभा का विकास करते हैं । जबकि सहारिया जनजाति का स्वयं का पोषण ही अनिश्चितता भरा होता है । अतः वे बच्चों का पोषण सम्पन्न वातावरण में करने में असमर्थ होते है । इनके पूर्वजों की निवास तथा व्यवसाय की अस्थिरता, शिक्षा का अभाव तथा अक्खड, व क्रोधी स्वभाव आदि समस्या इनके बच्चों को सुसंपोषण से वंचित रखते है । ये सब रोज़ी रोटी कमाने में ही लगे रहते हैं । अतः बच्चों के मस्तिष्क प्रतिभा के विकास के लिए संसाधनयुक्त परिवेश नहीं दे पाते हैं । परिणामस्वरूप सामान्य समूह तथा जनजाति छात्र-छात्रा समूह में प्रतिभा सम्बन्धी अंतर होना स्वाभाविकता स्थापित करता है । अतः प्रतिभा के लिये निम्नलिखित तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है -

1- मस्तिष्क की संरचना प्रतिभा सम्पन्नता को निश्चित करने में प्रभावशाली भूमिका अदा करती है । ये बच्चों के वंश पर निर्भर करती है ।

2- "मस्तिष्क का विकास जन्म के पश्चात कैसा हुआ है" यह भी बौद्धिक प्रतिभा

सम्पन्नता को निश्चित करने में सकारात्मक भूमिका अदा करता है ।

3- बालक का पोषण किस प्रकार के वातावरण में हुआ है जो उसको बौद्धिक विकास के अवसर देता है ।

4- बच्चे को सीखने के, तर्क करने के, और अनुभव प्राप्त करने के, कितने अवसर प्राप्त हुए है जो बौद्धिक तीव्रता को बढ़ाते हैं ।

5- माता-पिता की शिक्षा, सोच और व्यवहार के तरीके भी बच्चों की प्रतिभा विकास में सहायक होते है ।

6- माता का वात्सल्य, निर्देश प्रणाली, समस्या समाधान भी बच्चों को प्रतिभा सम्पन्न बनाते हैं ।

7- परिवार के मूल्य, आस्था, आदर्श पालन और धार्मिक भाव भी बच्चों की प्रतिभा विकास में सहायक होते हैं ।

तालिका संख्या 5.14

प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा के तथा प्रतिभाशाली जनजाति छात्र-छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्यमानों में अंतर तथा "टी" अनुपात की व्याख्या

समूह	मध्यमान अंतर	स्टे0 एरर ऑफ मीनडेवियेशन	अंतर	"टी"मूल्य	सार्थकता
सामान्य/सहारिया छात्र	11.44	0.63	148	17.9	0.05 स्तर
सामान्य/सहारिया छात्रा	7.01	0.73	148	9.49	0.05 स्तर

तालिका संख्या 5.14 में प्रतिभाशाली सामान्य छात्र तथा सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र और सामान्य छात्रा वर्ग तथा सहारिया जनजाति के छात्रा वर्ग की सामाजिक-आर्थिक स्तर के मूल प्राप्तांकों के मध्यमान अंतर, स्टैण्डर्ड एरर ऑफ मीन डेवियेशन तथा "टी" प्राप्तांक काआंकलन प्रस्तुत किया है । इसमें छात्रों का मध्यमान अंतर 11.44 रहा है और छात्राओं का मध्यमान अंतर 7.01 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र वर्ग में सहारिया जनजाति के

छात्र अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से अधिक प्रभावित होते हैं । इसी तरह से छात्रा वर्ग में सहारिया जनजाति की छात्राएं अपने सामाजिक-आर्थिक स्तर से अधिक प्रभावित रही हैं अपेक्षाकृत सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं के स्तर से । इसके पश्चात शोधकर्ता ने मध्यमानों का अंतर की सार्थकता के परीक्षण के लिए "टी" मूल्य की गणना की । प्रतिभाशाली सामान्य छात्र तथा सहारिया जनजाति छात्र समूह के मध्यमानों का "टी" मूल्य 17.9 रहा है तथा छात्रा वर्ग का "टी" मूल्य 9.49 रहा है । यह दोनों ही "टी" (मूल्य 0.05) विश्वास स्तर पर सार्थक रहे हैं । अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा तथा सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा में सामाजिक-आर्थिक स्तर में अंतर है ।

उपर्युक्त सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामान्य छात्र-छात्रा समाज की बनावट, स्तर, सम्पन्नता, शिक्षा, वंश परम्परा, संस्कृति, रीति रिवाज़, मूल्य तथा आदर्श आदि स्थायी एवं निरंतरता स्वभाव के हैं जो अपने बच्चों को समाजीकरण के द्वारा सामाजिक विशिष्टता तथा श्रेष्ठता के बनाये रखने का प्रशिक्षण देते हैं । इनका निवास स्थायी एवं कई पीढ़ियों से संरक्षित होता है, जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी विकास के अवसर जुटाये जाते हैं । ये लोग एक दूसरे की मदद विकास तथा समृद्धि के लिए करते हैं ताकि इनके गाँव, कस्बे, जाति तथा धर्म का सम्मान निरंतर बना रहे । इसी के साथ आर्थिक स्तर में पैत्रिक सम्पत्ति, व्यवसाय,कृषि, पशुधन तथा जमीन जायदाद आदि आते है । ये सामान्य वर्ग के बच्चों में आत्म विश्वास, अधिगम अवसर, अनुभव तथा सुरक्षित भविष्य की भावनाओं से ओत प्रोत रखते हैं । इसके साथ ही इनके परिवारों के सदस्य नौकरियों के द्वारा भी अपना आर्थिक स्तर सम्माननीय बनाते हैं । आज सेल्फ फायनेंस स्कीम के द्वारा भी एक सामान्य परिवार का बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर या व्यापार प्रबंधन के कोर्स को कर सकता है, जबकि निर्धन बच्चा नहीं । सरकार के द्वारा प्रचलित "सैल्फ फायनेंसिंग योजना" के द्वारा प्रत्येक प्रकार के तकनीकी व्यापार की शिक्षा में प्रवेश लिया जा सकता है जो निर्धन बच्चों के लिए असम्भव है । इनमें प्रवेश लेकर जो जन्म से प्रतिभा सम्पन्न

नहीं होते हैं, अपने मस्तिष्क को नवीन अनुभवों, अधिगम अवसरों और सुपौष्टिक पर्यावरण के द्वारा विशिष्ट श्रेणी में लाकर खड़ा कर लेते हैं । इसके विपरीत सहारिया जनजाति की सामाजिक बनावट पूरी तरह अस्थिरता पर निर्भर करती है । भारतीय संविधान ने इनको शिक्षा तथा विकास के अवसर देकर सामाजिक स्थिरता प्रदान की है । इनको एस0टी0 में रखकर वित्तीय साधन प्रदान किये हैं। इनको मकान बनाने के लिए धन तथा जमीन उपलब्ध कराई है फिर भी ये लोग स्वयं की जड़ों को नया मानते हैं तथा साधनहीन जीवन यापन करते हैं । इनके पास न नौकरी है, न कृषि योग्य भूमि तथा न जंगल । ये लोग हाथ पैरों से मजदूरी, चौकीदारी, साझा कृषि कार्य करके तथा जानवर पालकर रोज़ी रोटी कमाते हैं । फिर भी आज़ स्वतंत्रता के 57 वर्षों में इन्होंने स्वयं को मज़बूत बनाया है तथा बच्चों को शिक्षित करने की कोशिश की है । अतः सहारिया जनजाति के बच्चों पर साधनहीन समाज का तथा सामान्य बच्चों पर साधन सम्पन्न समाज का प्रभाव पड़ा है जो दोनों वर्गों में भिन्नता का मुख्य कारण है ।

तालिका संख्या 5.15

प्रतिभाशाली सामान्य एवं सहारिया छात्र तथा सामान्य एवं सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं के विद्यालय समायोजन के मध्यमानों में अंतर तथा "टी" अनुपात की व्याख्या

समूह	मध्यमान अंतर	स्टे0 एरर ऑफ मीनडेवियेशन	अंतर	"टी"मूल्य	सार्थकता व्याख्या
छात्र, सामान्य/ सहारिया	25.65	1.95	148	13.10	0.05स्तर
छात्रा, सामान्य/ सहारिया	28.93	2.22	148	13.02	0.05स्तर

तालिका संख्या 5.15 में प्रतिभाशाली सामान्य छात्र तथा जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र और सामान्य प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग तथा सहारिया जनजाति की छात्रा वर्ग के विद्यालय समायोजन के मूल प्राप्तांकों के मध्यमान अंतर, स्टे0

एरर ऑफ मीन डेविएशन तथा "टी" मूल्य का आंकलन ज्ञात किया गया है । इसमें विद्यालय समायोजन का अध्ययन पाँच क्षेत्रों "ए", "एस", "जी", "टी", "पी" आदि में किया गया है लेकिन यहाँ पर कुल विद्यालय समायोजन का "विश्लेषण तथा व्याख्या प्रस्तुत है । इसमें छात्रों का मध्यमान अंतर 25.65 रहा है, जबकि छात्राओं का मध्यमान अंतर 28.93 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र वर्ग तथा छात्रा दोनों ही वर्ग (सहारिया) विद्यालय समायोजन में सकारात्मकता नहीं रखते हैं । इसके पश्चात शोधकर्ता ने मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के परीक्षण के लिए "टी" मूल्य की गणना की । प्रतिभाशाली सामान्य छात्र तथा सहारिया जनजाति छात्र समूह के मध्यमानों के समायोजन का "टी" मूल्य 13.10 रहा है तथा दोनों ही समूहों के छात्रा वर्ग का "टी" मूल्य 13.02 रहा है । ये दोनों ही "टी" मूल्य 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक रहे हैं । अतः निष्कर्ष निकलता है कि प्रतिभाशाली सामान्य छात्र-छात्रा समूह तथा सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा समूह के विद्यालय समायोजन में अंतर है ।

विश्लेषण तालिका से स्पष्ट होता है कि विद्यालय समायोजन स्थापित करने में सहारिया जनजाति के छात्र एवं छात्रा दोनों ही समूह सामान्य समूह से काफी पीछे हैं । प्रस्तुत विश्लेषण में शैक्षिक समायोजन, साथी समायोजन, सामान्य व्यवहार समायोजन, शिक्षक समायोजन तथा आत्म संतोष समायोजन आदि क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है । इस प्रकार से पूर्ण विद्यालय समायोजन की व्याख्या आसानी से हो सकती है । विद्वानों के विचार से समायोजन स्थापना पर व्यक्तित्व व्यवहार का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है । बालक का समाजीकरण और उसकी प्रक्रिया नवीन समायोजन में बाधक होती है । इसी प्रकार से बच्चों की मनोवृत्ति तथा स्थायी भाव भी समायोजन को प्रभावित करते हैं (मैक आइवर 1959) ।

सहारिया जनजाति का समाज अपने बच्चों की न तो सही रूप से शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाता है और न व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकताओं की । व्यक्तित्व आवश्यकताओं में प्रेम, सामूहिकता, निष्पत्ति,

वैयक्तिकता तथा सामाजिक मान्यताएं आदि की पूर्ति जब नहीं हो पाती है तो बच्चों में भग्नाशा पैदा हो जाती है । इन भग्नाशाओं के परिणामस्वरूप बच्चों का विद्यालय के अंदर तथा बाहर का व्यवहार प्रभावित होकर असामान्य हो जाता है । अतः सहारिया जनजाति के बच्चे, सामान्य बच्चों से विद्यालय समायोजन में पीछे रह जाते हैं ।

तथ्य संकलन के दौरान शोधकर्ता ने यह भी देखा है कि सहारिया जनजाति के छात्र-छात्रा विद्यालय में अपने साथियों के साथ, शिक्षकों के साथ तथा अन्य कर्मचारियों के साथ खुले दिल तथा आधुनिकता से मेल जोल नहीं रखते हैं । इससे उसकी सामान्य बच्चों से दूरी बढ़ जाती है । इसका कारण उनका पिछड़ापन, नैराश्य भाव तथा आधुनिकता से दूर रहने की भावना भी हो सकती है । अतः ये लोग विद्यालय समायोजन में सामान्य बच्चों की अपेक्षा काफी कमज़ोर प्रतीत हुए हैं ।

सह-सम्बन्धों का विश्लेषण एवं व्याख्या

जब शोधकर्ता को स्वतंत्र परिवर्ती और परतंत्र परिवर्ती के बीच सम्बन्ध जानना होता है तो वह सह-सम्बन्ध की गणना करता है । "गिलफर्ड" 1956 का विचार है कि सह-सम्बन्ध गुणांक वह अकेली संख्या है जो यह बताती है कि दो वस्तुऐं किस सीमा तक एक दूसरे से सह-सम्बन्धित हैं तथा एक के परिवर्तन दूसरे के परिवर्तनों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं ।

"जब व्यक्ति या वस्तुयें औसत से अधिक या औसत से कम एक दिशा में हों और साथ ही साथ वह दूसरी दिशा में भी औसत, औसत से कम या औसत से अधिक हों तो यह प्रवृत्ति सह-सम्बन्ध कहलाती है (विलोमर्स एवं लिंड क्वेस्ट 1950) । अतः शोध हेतु सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग निम्न दशाओं में होता है -

1- जब दो या दो से अधिक गुणों, क्षमताओं तथा विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना होता है तो सह-सम्बन्ध गुणांक की गणना करते हैं ।

2- शैक्षिक मार्ग दर्शन में इसका प्रयोग होता है ।

3- सह-सम्बन्ध का प्रयोग व्यक्ति को उसके व्यवहार के सम्बन्ध में पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है ।

4- परीक्षणों की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए इसकी सहायता ली जाती है ।

5- नये परीक्षणों की वैधता में इसका महत्व है क्योंकि नवनिर्मित परीक्षण के प्राप्तांकों एवं प्रमापीकृत परीक्षण के प्राप्तांकों के बीच सह-सम्बन्ध गुणांक देखा जाता है ।

6- तत्व विश्लेषण करते समय सह-सम्बन्ध मैट्रिक्स बनाना होता है जिसके लिए सह-सम्बन्ध गुणांक की आवश्यकता होती है ।

शोध कार्य में सह-सम्बन्ध की व्याख्या करने के उपरांत शोधकर्ता प्रस्तुत शोध में सहारिया जनजाति के छात्र-छात्राओं की बुद्धि या बौद्धिक प्रतिभा, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन परिवर्तियों का सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक का विश्लेषण तथा व्याख्या प्रस्तुत करता है । ताकि छात्र-छात्रा प्रतिभा का सार्थक सम्बन्ध बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन के साथ प्रकट हो सके ।

तालिका संख्या 5.16

विभिन्न परिवर्तियों के बीच सह-सम्बन्ध प्रगट करती तालिका :

परिवर्ती	समूह	छात्र वर्ग	छात्रा वर्ग
1. बुद्धि	सामान्य बनाम सहारिया	+ 0.56	+ 0.57
2. सामाजिक आर्थिक स्तर	सामान्य बनाम सहारिया	+ 0.18	+ 0.119
3-वि0 समा0	सामान्य बनाम सहारिया	+ 0.31	+ 0.112
4-शै0 उपलब्धि	सामान्य बनाम सहारिया छात्र	+ 0.42	+ 0.35
	सामान्य बनाम सहारिया छात्रा	+ 0.43	+ 0.32

सह-सम्बन्धों की गणना तथा विश्लेषण करने के पश्चात सह-सम्बन्ध की व्याख्या करना आवश्यक हो जाती है । शोधकर्ता ने सह-सम्बन्ध की व्याख्या का आधार ''गिल्फर्ड'' (1958) के वर्गीकरण को मानकर किया है । अतः शोधकर्ता ने अपने (2-4) तक निम्न स्तर (4.1-6) तक सामान्य स्तर तथा (6.1-9) तक उच्च स्तर के सह-सम्बन्ध को माना है । अतः इसी आधार को मानकर बौद्विक प्रतिभा, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है -

बौद्विक प्रतिभा- परिवर्ती तालिका संख्या 5.16 में सामान्य छात्रों की बौद्विक प्रतिभा तथा सहारिया छात्रों-छात्राओं की बौद्विक प्रतिभा के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया है । इसमें छात्र वर्ग का सह-सम्बन्ध + 0 . 56 रहा है तथा छात्रा वर्ग का सह-सम्बन्ध + 0 . 57 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो के बीच सकारात्मक सह-सम्बन्ध है । साथ ही यह सह-सम्बन्ध दोनों वर्गों में औसत स्तर का है जो दोनों वर्गो की बौद्विक प्रतिभा की समानता को प्रकट करता है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रतिभा सम्पन्न छात्र वर्ग तथा छात्रा वर्ग में अपनी योग्यता के प्रति जागरूकता तथा विश्वास है ।

व्याख्या- छात्र वर्ग तथा छात्रा वर्ग में बौद्विक प्रतिभा का सकारात्मक सह - सम्बन्ध रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग में तथा सहारिया वर्ग में छात्र तथा छात्रा में बौद्विक विकास वंश क्रम पर निर्भर रहा है तथा पर्यावरण का प्रभाव भी दोनों पर पड़ा है । ''वेश्लर'' महोदय (1944) ने 16 वर्ष, थार्न डायक ने 20-21 वर्ष तथा ''टरमन'' ने 15 वर्ष तक बुद्वि का विकास, मानव में माना है । ''कॉक्स'' (1926) ने मेधावी व्यक्तियों के अध्ययन में व्यक्ति का इतिहास, व्यक्ति के कार्य तथा विद्यालय व्यवहार आदि को प्रतिभा का निर्धारक माना है । इस आधार पर शोधकर्ता इस निर्णय पर पहुँचता है कि बच्चों की प्रतिभा निर्धारण उनके वंश क्रम, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय तथा बच्चों को दिया गया पोषण और बच्चों को दी गयी शिक्षा से होता है ताकि वे सीखने से प्राप्त अनुभवों के द्वारा अपनी बुद्वि की तीव्रता का विकास कर सकें ।

सहारिया जनजाति तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा में वंश क्रमका प्रभाव भिन्नता रखता है, लेकिन बुद्धि का सम्बन्ध व्यक्ति की सम्पूर्ण क्षमता से होता है, जिससे वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है , तर्कयुक्त चिंतन करता है तथा अपने वातावरण के साथ प्रभावयुक्त समायोजन करता है । इससे स्पष्ट होता है कि सहारिया जनजाति के पूर्वज राजा के दूत तथा राजा के पुत्र रहे हैं जो परिस्थितिवश जंगल में निवास करने लगे और समाज से कट गये । इनमें अक्खड़पन, आत्म बल, शौर्य पूर्ण कार्य करना तथा उपलब्ध साधनों से ही परिवार का पालन पोषण करना पाया जाता है । इस प्रकार से इनमें वंशानुक्रमीय प्रतिभा की कमी नहीं होती है, बल्कि संपोषित और उपयुक्त पर्यावरण नहीं मिलता है , जिससे उनकी प्रतिभा सम्पन्नता में वह प्रखरता नहीं आ पाती है जो सामान्य छात्र-छात्रा में होती है । आज़ शिक्षा साधनों एवं सुविधाओं का लाभ उठाकर ये लोग अपनी प्रतिभा का विकास करने में लगे हैं । परिणामस्वरूप इनको अच्छी नौकरियाँ तथा सामान्य समाज में अच्छा सम्मान भी मिलने लगा है ।

तालिका संख्या 5.1 तथा 5.2 को देखने से और स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों के वर्गो में बौद्धिक प्रतिभा में अंतर कम है लेकिन सहारिया जनजाति के बच्चों का विचलन गुणांक अधिक है । इसका सीधा कारण उनके परिवार का प्रभाव तथा उन साधनों का अभाव है जो बच्चों की प्रतिभा को विकसित तथा पोषित करते हैं । "मैकनीमर" (1942) के अनुसार सम्पन्नता के भेद या तो वंश गति के कारण हैं या वे प्रारम्भिक अवस्था (बचपन) में ही बन जाते हैं । अतः सहारिया जनजाति के बच्चों की बौद्धिक प्रतिभा तथा सामान्य जाति के बच्चों की बौद्धिक प्रतिभा में सकारात्मक सह-सम्बन्ध होना स्वाभाविक है ।

सामाजिक - आर्थिक परिवर्ती - सहारिया जनजाति के छात्र-छात्रा (प्रतिभाशाली) के सामाजिक-आर्थिक स्तर परिवर्ती का सह-सम्बन्ध सामान्य प्रतिभाशाली छात्र - छात्रा के सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ तालिका संख्या 5.16 में प्रदर्शित किया गया है । इसमें छात्र समूह का सह-सम्बन्ध + 0.18 रहा

है और छात्रा समूह का + .119 रहा है । यह सह-सम्बन्ध दोनों समूहों का सकारात्मक तथा निम्न स्तर का है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के सामाजिक-आर्थिक स्तर में समानता कम है । अर्थात प्रतिभा सम्पन्नता के विकास में सामान्य वर्ग साधन सम्पन्न है और सहारिया समूह कमज़ोर है । "मैकनीमर" (1942) का मत है कि उच्च व्यवसायों में संलग्न माता-पिताओं के बच्चों की बुद्धि उच्च होती है, अपेक्षाकृत निम्न व्यवसायरत माता - पिता के बच्चों के । इसी प्रकार से "लेहे" (1935) ने अपने निष्कर्ष में पाया कि साधन सम्पन्न परिवार में पालन पोषण हुए बच्चों की बुद्धि लब्धि में 10 अंक तक की वृद्धि होती है ।

व्याख्या- सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त जटिल, अस्थिर तथा अपूर्व रीति रिवाज़ों से ओत प्रोत होती है । इनके समाज में धर्म तथा मान्यताओं का कड़ाई के साथ पालन किया जाता है । फिर भी शादी सम्बन्धों में ये लोग जाति से बाहर की शादी को कुछ शर्तों के साथ मान लेते हैं । इनके प्रत्येक कार्य एवं समस्या का निर्णय पंचायत करती है । इनके परिवारों में स्त्री जाति पर विशेष अंकुश रहता है,लेकिन घर तथा परिवार की मालकिन भी वही होती है । उसका निर्णय सर्वमान्य होता है । परिणाम स्वरूप जो भी सामाजिक स्तर बन जाता है उसी के अनुसार अपने बच्चों के लिए साधन जुटाते हैं, ताकि उनका विकास हो सके । इसी प्रकार से इनकी आर्थिक दशा, कृषि कार्य, नौकरी, जंगली वस्तुओं को बेचना तथा दूध दही से सामान बनाकर बेचना आदि पर निर्भर करती है । इसके साथ ही इनके पुरूष वर्ग में अपराधों से धन कमाना भी गौरव मानते हैं । इनकी चतुर स्त्रियाँ कच्ची शराब बनाकर बेचती हैं तथा पुलिस का , समाज का सामना बड़ी दिलेरी से करती हैं ।

निष्कर्षात्मक रूप से कहा जा सकता है कि सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न छात्र-छात्राओं को सामाजिक-आर्थिक स्तर पर कोई भी समृद्व सुविधा नहीं मिलती है जबकि सामान्य प्रतिभाशाली बच्चों को अच्छी से अच्छी सुविधायें मिलती हैं । व्यक्तिगत शिक्षण प्रबंध, परिवार से अच्छा पोषण, हॉस्टल

व्यवस्था, कोचिंग उपलब्ध होना तथा अच्छी पुस्तकों एवं निर्देशन की व्यवस्था आदि सभी सुविधाओं का लाभ सामान्य बच्चों को मिलता है, सहारिया बच्चों को नहीं । परिणामस्वरूप दोनों समूहों के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा वर्ग के बीच सामाजिक-आर्थिक स्तर पर निम्न सकारात्मक सह-सम्बन्ध स्थापित हो सका है ।

वि0 समायोजन परिवर्ती – तालिका संख्या 5.16 में विद्यालय समायोजन परिवर्ती का सह -सम्बन्ध गुणांक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इसमें शोधकर्ता ने विद्यालय समायोजन के सभी पाँच उप क्षेत्रों ए0एस0जी0टी0 तथा पी0 का सम्मिलित विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इसमें सामान्य प्रतिभाशाली तथा सहारिया प्रतिभाशाली छात्रों का विद्यालय समायोजन का सह-सम्बन्ध + .31 रहा है तथा छात्रा वर्ग का + .112 रहा है । इसमें दोनों का सह-सम्बन्ध धनात्मक रहा है जो स्पष्ट करता है कि दोनों ही वर्ग समायोजन के प्रति जागरूक हैं । फिर भी छात्र वर्ग का सह-सम्बन्ध अधिक प्रभावशाली रहा है, अपेक्षाकृत छात्रा वर्ग के

व्याख्या- प्रस्तुत विश्लेषण तालिका से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अपने समायोजन में बौद्रिक प्रतिभा, परिस्थिति ज्ञान, लक्ष्य पूर्ति तथा पूर्व अनुभव आदि का प्रयोग करता है । जिसके व्यक्तित्व में उपर्युक्त विशेषताओं का जितना अधिक विकास हो जाता है वह समायोजन के साथ उतनी ही शीघ्रता से सम्बन्ध बना लेता है, क्योंकि समायोजन निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है । जिसके सम्बन्ध में व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है (गेट्स व अदर्स-1946) । इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि सहारिया जनजाति के बच्चे प्रतिभा सम्पन्न तो हैं लेकिन उनको सुसम्पन्न समाज तथा समृद्व वातावरण नहीं मिला है । इससे वे परिस्थिति का सही ज्ञान, लक्ष्य निश्चित करना तथा सम्पन्न पूर्व ज्ञान से समुचित और सकारात्मक लाभ नहीं ले पाते हैं । परिणामस्वरूप ये बच्चे समस्याओं को दबाने अथवा छिपाने का प्रयास करते हैं । यह समस्या बार-बार चिंता उत्पन्न करने के लिए बाद में भी बनी रहती है । (मार्गेन-1961) । अतः सहारिया जनजाति के बच्चे

सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा वातावरणीय प्रभावों के कारण स्वयं का विद्यालय समायोजन अच्छा करने में पिछड़ जाते हैं ।

सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा विद्यालय समायोजन में इसलिये अच्छे रहते हैं कि उन पर परिवार, समाज तथा अन्य वातावरणीय प्रभाव सहयोगी तथा धनात्मक रहते हैं । उनके माता-पिता उनके लक्ष्य निर्धारण तथा पूर्ति में सहायक होते हैं । वे परिस्थिति का सही मूल्यांकन करते हैं तथा पूर्व अनुभवों का संग्रह माता-पिता, परिवार के अन्य सदस्यों, मित्रों तथा अध्यापकों से मिलकर करते हैं । इस प्रकार से उनके सोच में आगे बढ़ने की लालसा तथा कुछ करने की इच्छा सदैव बनी रहती है । साथ ही यदि कोई क्षेत्र उनके लिए उपयुक्त नहीं होता है तो वह अपनी प्रतिभा विकास के लिए अन्य क्षेत्र को खोज़कर उसका प्रदर्शन करते हैं और अपना समायोजन स्थापित कर लेते हैं । अतः ये बच्चे सब तरह से पूर्ण, सुखी, अधिक समायोजित और अधिक प्रभावपूर्ण ढ़ंग से जीवन यापन करने में समर्थ होते हैं (शेफर-1936) । प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित बातें समायोजन हेतु स्पष्ट होती हैं -

1- समायोजित व्यक्ति अपने आपको अच्छी तरह से जानता है और अपनी योग्यता तथा कमज़ोरी को पहचानता है । अतः ऐसा कार्य या लक्ष्य चुनता है जो उसके लिए सम्भव है ।

2- समायोजित व्यक्ति बदली हुई परिस्थिति में स्वयं को बदल लेता है ।

3- वह संवेगों पर पूर्ण नियंत्रण रखता है ताकि उसका व्यवहार असफलता में भी सामान्य बना रहे ।

4- वह सामाजिक सम्पन्नता से अपने को गौरवान्वित महसूस करता है और लाभ उठाता है ।

5- उसकी प्रतिभा प्रखर तथा कर्तव्यनिष्ठ होती है तथा विचलनों से वह दूर रहता है ।

6- वह यथार्थता के मूल्य में विश्वास करता है, न कि काल्पनिक ।

7- वह प्रत्येक वातावरण में स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करता है ।

8- वह आत्म विश्वासी और महत्वाकांक्षी होने के कारण बीते हुए कल की चिंता न करके भविष्य को सम्हालता है ।

तालिका संख्या 5.17

सामान्य एवं सहारिया जनजाति के छात्रों तथा सामान्य एवं सहारिया जनजाति की छात्राओं के बीच विद्यालय समायोजन के उप विभागों के सह-सम्बन गुणांक विश्लेषण तालिका -

सह-सम्बन्ध	संख्या	लिंग	उप विभाग	लिंग	संख्या	सह-सम्बन्ध
. 50	150	पुरूष	ए0	स्त्री	150	. 32
. 61	150	पुरूष	एस0	स्त्री	150	. 23
. 45	150	पुरूष	जी0	स्त्री	150	. 25
. 51	150	पुरूष	टी0	स्त्री	150	. 24
. 48	150	पुरूष	पी0	स्त्री	150	. 29

तालिका संख्या 5.17 में शोधकर्ता ने विद्यालय समायोजन के आंकलित पाँचों उप विभागों का सह-सम्बन्ध गुणांक सामान्य छात्र बनाम सहारिया छात्र तथा सामान्य छात्रा बनाम सहारिया छात्रा का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों का सह-सम्बन्ध गुणांक उप विभाग ए0 (. 50), एस0 (. 61), जी0 (. 45), टी0 (. 51) तथा पी0 (. 48) आदि रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि इनका सबसे प्रभावशाली सह-सम्बन्ध एस0 (. 61) उप विभाग में रहा है

और कम सह – सम्बन्ध उप विभाग जी0 (. 45) में रहा है । सभी समायोजन के सह-सम्बन्ध धनात्मकता लिये हुए हैं । एस0 उप विभाग का सम्बन्ध साथियों के साथ सह-सम्बन्ध स्थापना से है । सहारिया जनजाति के बच्चे अपने साथियों के सामने सामान्य व्यवहार करते हैं और उनसे सम्मान भी प्राप्त करते हैं । लेकिन सामान्य समायोजन (जी0) उप विभाग में वे फिर पिछड़ जाते हैं । इसका मुख्य कारण है कि वे लोग स्वयं को अपने सामाजिक परिवेश से अलग नहीं कर पाते हैं ।

छात्रा वर्ग का सह-सम्बन्ध गुणांक कम प्रभावशाली रहा है । इसमें सबसे अधिक प्रभावशाली समायोजन के उप विभाग ए0 (. 32) में रहा है । इसका तात्पर्य उपलब्धि समायोजन से होता है । कक्षा में विभिन्न विषयों में अंक लाने में ये लोग मेहनत करके अपनी प्रतिभा तथा शैक्षिक लगन को प्रदर्शित करती हैं । सबसे कम उप विभाग एस0 (. 23) रहा है । इससे तात्पर्य है कि इनका समायोजन अपनी सहपाठिनों से नहीं हो पाता हैं । हो सकता है कि सामान्य छात्राओं में उच्चता की भावना अधिक हो और सहारिया छात्राओं में निम्नता की भावना हो। जब दो विरोधी भाव व्यक्तित्व में विकसित हो जाते हैं तो दोनों के मध्य भी कम सम्बन्ध स्थापित हो पाता है ।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि छात्र वर्ग अपने विद्यालय समायोजन में विगत को भूल जाते हैं और वर्तमान में स्वयं को बराबर मानकर व्यवहार करते हैं। जिससे दोनों वर्गों के बीच धनात्मक प्रभावशाली विद्यालय सम्बन्ध प्रकट हो सका है । इसके विपरीत छात्रा वर्ग अपने सभी उप विभागों (समायोजन) में कम प्रभाव स्थापित कर सका है । इसका कारण स्वयं में आत्म विश्वास की कमी, विगत को न भूल सकना तथा साधनों के अभाव का प्रत्यक्ष प्रभाव आदि हो सकते हैं । फिर भी दोनों वर्गों की सकारात्मक सोच ने विद्यालय समायोजन को प्रभावित किया है ।

शोधकर्ता ने सबसे अधिक बल विद्यालय समायोजन परिवर्ती पर दिया है । इसका कारण प्रतिभा सम्पन्न सहारिया छात्र-छात्राओं के विकास को अच्छा

बनाया जा सके । अतः प्रस्तुत शोध में विद्यालय समायोजन के सभी उप विभागों का प्रतिशत भी ज्ञात किया है जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है -

प्रतिशत तालिका 5.18

सामान्य वर्ग	उप विभाग	जनजाति वर्ग
46 %	ए0	44 %
34 %	एस0	32 %
14 %	जी0	10 %
04 %	टी0	08 %
02 %	पी0	06 %
योग 100 %		100 %

प्रस्तुत तालिका 5.18 में सहारिया छात्र-छात्रा तथा सामान्य छात्र-छात्रा वर्ग का विद्यालय समायोजन के संदर्भ में प्रतिशत (उप विभागों का) शोधकर्ता ने ज्ञात किया । इसके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गो का प्रभावशाली समायोजन शैक्षिक उपलब्धि उप क्षेत्र में रहा है और सबसे कम विद्यालय समायोजन व्यक्तिगत संतोष उप विभाग में रहा है । इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय समायोजन दोनों वर्ग चाहते हैं लेकिन आधुनिक परिवेश का अंतर दोनों को प्रभावित कर रहा है । आधुनिकता की दौड़ का लाभ सामान्य छात्र-छात्रा वर्ग उठा रहा है, लेकिन सहारिया जनजाति के छात्र-छात्रा लाभ से वंचित रह जाते हैं । इसमें उनके परिवार, समाज, संस्कृति तथा पोषण का प्रभाव परिलक्षित होता है। परिणामस्वरूप विद्यालय समायोजन में सोच की समानता है ।

शोध परिवर्तियों की व्याख्या

प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य शोध परिवर्तियों का विश्लेषण करने के पश्चात उनकी सामयिक व्याख्या प्रस्तुत करे , ताकि तथ्यों के आंतरिक भाव प्रकट हो सकें और सही निष्कर्ष मिल सकें । अतः प्रस्तुत शोध के परिवर्तियों की व्याख्या प्रस्तुत है -

बुद्धि परिवर्ती-

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का अध्ययन किया गया है जो बुद्धि से सम्बन्ध रखता है । अतः शोधकर्ता ने सहारिया जनजाति के छात्र-छात्रा तथा सामान्य वर्ग के छात्र-छात्रा का चयन बुद्धि परीक्षण के द्वारा किया । बौद्धिक प्रतिभा की विश्लेषण तालिका संख्या 5.1 तथा 5.2 है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही वर्गो में यौन भिन्नता का प्रभाव परिलक्षित होता है । दोनों ही वर्गो में छात्र वर्ग, छात्रा वर्ग से श्रेष्ठ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र वर्ग अपनी ज्ञान की तीव्रता को बाह्य अनुभवों के द्वारा समृद्ध करता है जो छात्रा वर्ग नहीं कर पाता है । छात्राओं पर अधिक नियंत्रण, अधिगम अवसरों में कमी तथा अनुभव में कमी और संकुचित दृष्टिकोण आदि के कारण से वे प्रतिभा प्रदर्शन में पिछड़ जाती हैं । इसी समानता का प्रभाव सहारिया जनजाति के छात्र-छात्रा प्रतिभा में भी परिलक्षित हो रहा है । दोनों का समाज, परिवार, संस्कृति, पोषण, पर्यावरण तथा शिक्षा एक ही प्रकार की होने के बाबजूद भी छात्र वर्ग से छात्रा वर्ग की प्रतिभा सम्बन्धता कमज़ोर, प्रतीत हुई है । अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि बौद्धिक प्रतिभा पर वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है । जिससे बच्चों की बुद्धि में अंतर आता है (बोरिंग-1945)।

सामाजिक-आर्थिक परिवर्ती-

शोधकर्ता ने सामाजिक-आर्थिक तथ्यों का विश्लेषण तालिका 5.3 तथा 5.4 में किया है । इसमें सामान्य छात्र-छात्रा वर्ग में छात्र वर्ग श्रेष्ठ रहा है , यानि परिवार तथा विद्यालय के सभी सामाजिक-आर्थिक साधनों का सदुपयोग छात्र वर्ग अधिक करता है , जबकि छात्रा वर्ग कम मात्रा में तथा निश्चित सीमा में करता है । भारतीय परम्परा अब भी है कि लड़की के स्थान पर लड़कों को अधिक स्वतंत्रता, साधन उपभोगिता तथा अन्य सहूलियतें मिलती हैं । छात्र वर्ग विद्यालय में पुस्तकालय तथा वाचनालय, खेलकूद , रेडक्रास, एन0एस0एस0, N.C.C. तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में कभी भी और कितनी ही देरी तक भाग ले सकता है, लेकिन छात्रा वर्ग एक निश्चित सीमा में भाग ले सकता है । दतिया प्रक्षेत्र में

तो छात्रा वर्ग को इतनी स्वतंत्रता नहीं है क्योंकि वह पिछड़ा इलाका है । इसी प्रकार से सहारिया जनजाति के बच्चों में साधनों का सदुपयोग लड़कों को अधिक मिलता है और लड़कियों को कम । सहारिया समाज अपनी लड़कियों की सुरक्षा तथा विकास के लिए चिन्तित रहता है । अतः वे उनको अधिक स्वतंत्रता देना तथा लड़कों के समान कार्य करना अच्छा नहीं मानते हैं । इस प्रकार से सामाजिक बनावट तथा आर्थिक संसाधनों की कमी से सहारिया बच्चे सामान्य बच्चों से पिछड़ जाते हैं । सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव बच्चों की प्रतिभा सम्पन्नता को प्रभावित करते हैं । अमेरिका के नीग्रो और गोरों के भेद को इसी के अंतर्गत माना गया है (मार्गन-1956) ।

समायोजन परिवर्ती-

समायोजन विश्लेषण तालिका संख्या 5.5 तथा 5.6 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों में यौनगत तथा समाज एवं जातिगत भिन्नता विद्यालय समायोजन में है । समायोजन के अंतर्गत व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध बनाने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करता है । इस आधार से यह स्पष्ट हो जाता है कि छात्र वर्ग स्वयं में परिवर्तन आसानी और स्वतंत्रता से कर लेता है । जबकि छात्रायें अपने व्यवहार में परिवर्तन आसानी से नहीं कर पाती हैं। छात्र वर्ग स्वयं निर्णय ले लेता हैं तथा आत्म विश्वास से भरा होता है, जबकि छात्राएं परिवार से पूछकर निर्णय लेती हैं । यानि उनमें आत्म विश्वास की कमी होती है । छात्र वर्ग और छात्रा वर्ग में शारीरिक बनावट भिन्नता, स्वभाव भिन्नता, सुरक्षात्मक दृष्टिकोण भिन्नता, शालीनता भिन्नता संकोची तथा नि :संकोची वार्तालाप तथा आश्रय भिन्नता आदि के कारण उनमें विद्यालय समायोजन भी भिन्नता लिये रहता है ।

समायोजन के उप विभागों की प्रतिशत तालिका संख्या 5.18 से स्पष्ट होता है कि सहारिया तथा सामान्य छात्र-छात्रा विद्यालय समायोजन में एक ही प्रकार का सोच रखते हैं जो अंतर सामान्य छात्र-छात्रा के बीच समायोजन में स्थापित हुआ है वही सहारिया जनजाति छात्र-छात्रा के बीच रहा है । सामान्य

वर्ग में छात्र लोग विद्यालय समायोजन में प्रभावशाली रहे हैं, छात्राओं की अपेक्षा। इसी प्रकार से जनजाति में छात्र वर्ग प्रभावशाली रहा है, छात्राओं की अपेक्षा । फिर भी दोनों वर्ग विद्यालय समायोजन के उप विभाग (एस0) शैक्षिक उपलब्धि में उच्च स्तर पर रहे हैं जो इनकी बौद्धिक प्रतिभा को मूल्यांकित करता है । इसके साथ ही सबसे कम प्रभाव उप विभाग पी0 (आत्म संतोष) का रहा है यानि दोनों ही वर्ग विद्यालय समायोजन पढ़ाई, अनुशासन, वातावरण, साधन सम्पन्नता आदि से कम संतुष्ट हैं । इनको विद्यालयों में पाठ्यक्रम शिक्षण के साथ साथ पाठ्येत्तर क्रियाओं को भी करवाया जाता है ताकि उनमें आत्म विश्वास, सम्मान का भाव, निःसंकोच सहकारिता तथा समानता आदि विशेषताओं का विकास हो सके । उनको पर्याप्त साधन मिलें ताकि वे अपने अधिगम क्षेत्र को बढ़ाकर अधिक से अधिक अनुभव संकलित करके समायोजन स्थापना के लिए व्यवहार में परिवर्तन कर सकें ।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली बच्चे वंश परम्परा तथा सुसम्पन्न पर्यावरण द्वारा विकसित होते हैं । उनके विकास के लिए साधन एकत्रित करके अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध किया जाये ताकि वे स्वयं का विकास परम्परागत तरीकों से हटकर आधुनिक तरीकों से कर सकें । परम्परागत भाव लड़का-लड़की में अंतर मानना समाप्त होना चाहिए और दोनों के विकास तथा शिक्षा का समान सुप्रबंध करना चाहिए । सरकार की दोहरी नीति समाप्त हो । उसे व्यवहार में अपने निश्चित, उपयोगी और कारगर प्रोग्राम को लागू करना चाहिए, ताकि सहारिया जनजाति के सिर्फ प्रतिभा सम्पन्न बच्चों का ही विकास न हो, बल्कि सभी बच्चों का विकास हो । इसी प्रकार के निष्कर्ष "सिंह" (2002), "सीमा" (2004) तथा के सिंह (2004) आदि ने अपने अध्ययन द्वारा प्राप्त किये । शोधकर्ता ने इसके साथ साथ वार्षिक परीक्षा के अंकों को भी देखा जो यह स्पष्ट करते हैं कि सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों पर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव तथा विद्यालय समायोजन के प्रभाव नकारात्मक रहे हैं । जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि जो होनी चाहिए थी वह नहीं हुई है । इससे निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सही संसाधन तथा विद्यालय समायोजन सामान्य न होने से सहारिया प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं ।

अध्याय – षष्ठम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

(1) अध्ययन के निष्कर्ष

(2) अध्ययन के विस्तृत निष्कर्ष

(3) शिक्षारत व्यक्तियों के लिए सुझाव

(4) शोधार्थियों हेतु सुझाव

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्रमुख उद्देश्य "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का अध्ययन करना है ताकि यह पता चल सके कि उनके शैक्षिक प्राप्तांक सामान्य प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं से कम क्यों रहते हैं " का परीक्षण किया गया है । शोधकर्ता ने इसके अंतर्गत बुद्धि परीक्षण के द्वारा सहारिया छात्र-छात्रा तथा सामान्य छात्र-छात्रा का चयन किया । फिर उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आंकलन किया और अंत में विद्यालय समायोजन के अंतर्गत ए0एस0जी0टी0 तथा पी0 उप विभागों का अध्ययन किया । समस्या का चयन करते समय शोधकर्ता ने शोध क्षेत्र का भ्रमण किया । उनके माता-पिता से मिला तथा विद्यालयों में जाकर स्थिति को जाना । चूँकि शोधकर्ता इसी क्षेत्र में नौकरी करता है । अतः क्षेत्र का पूर्ण सहयोग मिला । निष्कर्षात्मक रूप से उपर्युक्त क्षेत्रों में प्रतिभाशाली बच्चे पाये जाते हैं वे छात्राऐं तथा छात्र दोनों ही हैं, लेकिन विद्यालय परीक्षण अंकों में सहारिया बच्चे शैक्षिक उपलब्धि में सामान्य प्रतिभाशाली बच्चों से कम रहते हैं, जबकि वे बौद्धिक स्तर में समानता रखते हैं । इसका मूल कारण भारतीय संस्कृति का पारिवारिक तथा सामाजिक प्रभाव है । हम कितने ही स्वतंत्र, सभ्य तथा आधुनिक बन जायें, लेकिन हमारी सोच अपनी मूल सभ्यता, सामाजिक मूल्य, आदर्श और आधारों (विरासत) आदि से हट नहीं पाती है । परिणाम स्वरूप सहारिया जाति की विरासत की सोच उनके बच्चों (पीढ़ी) को वहन करनी पड़ती है । इसी विरासत का प्रदर्शन सहारिया छात्र-छात्राओं ने अपनी शैक्षिक उपलब्धि में दर्शाया है ।

प्रस्तुत अध्ययन की प्रथम परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं में यौन के आधार पर कोई अंतर नहीं होता है," का परीक्षण किया गया । इस परिकल्पना की जांच करने के लिए तालिका सं0 5.2, 5.13 का अवलोकन किया तो स्पष्ट हुआ कि दोनों वर्गों में सार्थक भिन्नता है । ये लोग समान वंशानुक्रम के होते हुए भी पारिवारिक वातावरण, पोषण की सोच,

छात्र-छात्राओं में व्यावहारिक मान्यताओं का अंतर आदि दोनों की प्रतिभा को प्रभावित करते हैं । सहारिया समाज में पुरूष वर्ग निरंकुश, अक्खड़ तथा साहसी होता है यानि कठोर बनाया जाता है क्योंकि इन लोगों को अपनी रोज़ी रोटी, बाह्य परिवेश में विभिन्न व्यक्तियों के संसर्ग से कमानी पड़ती है । इनके पास विभिन्न प्रकार के अनुभव, सीखने के नवीन तरीके तथा प्रतिभा निखारने के अवसर होते हैं लेकिन छात्रा वर्ग माता-पिता के नियंत्रण में परिवार की सीमाओं में तथा समाज के नियमों के बंधनों में रहकर अपनी प्रतिभा का सीमित विकास करता है । इस प्रकार से छात्र-छात्रा प्रतिभा में अंतर होना स्वाभाविक हो जाता है । इस प्रकार के निष्कर्ष "सिंह" (2003), "कुमार" (1992) के भी रहे हैं ।

इस संदर्भ में सहारिया छात्र-छात्राओं के मध्यमान का अंतर 3.57 रहा है और विचलन गुणांक छात्र वर्ग 19.7 तथा छात्रा वर्ग 27.4 रहा है । इससे प्रतीत होता है कि सहारिया छात्रा वर्ग में विचलन अधिक पाया जाता है क्योंकि छात्रा वर्ग में वह स्वतंत्रता और आत्म विश्वास विकसित नहीं हो पाता है जो छात्र वर्ग में स्वतः ही विकसित हो जाता है । परिवार के अलावा विद्यालय परिसर की उन सभी सुविधाओं का लाभ छात्रा वर्ग उतना नहीं उठा पाता है जितना कि छात्र वर्ग उठा लेता है । तालिका सं0 5.13 भी इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि प्रतिभा के सम्बन्ध में सामान्य छात्र तथा सहारिया छात्र और सामान्य छात्रा तथा सहारिया छात्रा में भी अंतर होता है । डा0 शर्मा (1971) का मत है कि लड़के-लड़कियों की अपेक्षा उन कामों को अच्छा करते हैं जिनमें स्थानगत सम्बन्ध, यांत्रिक उपकरणों की समझ तथा गणितीय योग्यता के प्रश्न अंतर्ग्रस्त रहते हैं ।

भारतीय समाज का सोच अपनी सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित रहा है । इसमें अनेकता में एकता है , वह कोई भी सम्प्रदाय, समाज या जाति हो, स्वयं को निश्चित नियमों में रखकर ही बच्चों का पालन-पोषण करती है । अंतर सिर्फ इतना आया है कि लड़के अधिक स्वतंत्र, स्वाभिमानी तथा आत्म निर्भर होते हैं जबकि लड़कियाँ स्वयं के माता-पिता पर या पति पर या भाई पर निर्भर रहती हैं । परिणाम - स्वरूप दोनों के प्रतिभा विकास के क्षेत्र में, पर्यावरण में और

साधनों में अंतर हो जाता है । अतः सहारिया समाज के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रा में बौद्धिक प्रतिभा में भी अंतर हो जाता है । इसका समर्थन "भट्ट" (1973), "पाटिल" (1966), "सूरी" (1973)"कुमार" (1992) आदि ने भी अपने छात्र-छात्रा प्रतिभा के अध्ययन से किया है ।

उपर्युक्त विवेचना से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सहारिया जनजाति के छात्र-छात्राओं में बौद्धिक प्रतिभा सम्बन्धी अंतर होता है । यदि इनकी बौद्धिक प्रतिभा के विकास पर प्रभाव डालने वाले कारक आपस में भिन्नता लिये हुए हैं तो दोनों वर्गों की बौद्धिक प्रतिभा में अंतर होना स्वाभाविक होता है । यदि सहारिया छात्र तथा छात्रा वर्ग को समान नियमों, संसाधनों तथा माता-पिता के सोच से समान स्वतंत्रता, विद्यालय तथा अन्य अनुभव ग्राह्यता के लिये मिलें तो इस अंतर को कम किया जा सकता है, लेकिन समाप्त नहीं । अतः प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकृत तथा सिद्ध नहीं हुई है ।

शोधकार्य की द्वितीय परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्रों में कोई अंतर नहीं होता है ।" का परीक्षण किया गया । इस हेतु शोधकर्ता ने तालिका सं0 5.7 तथा तालिका सं0 5.13 का अवलोकन किया और पाया कि सहारिया जनजाति के छात्र वर्ग तथा सामान्य वर्ग के छात्रों की प्रतिभा के मध्यमानों का अंतर 15.55 रहा है और सहारिया छात्रों का विचलन गुणांक भी 19.7 है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों के प्रतिभाशाली छात्रों में अंतर है । इसके साथ ही "टी" अनुपात तालिका में मूल्य 12.15 रहा है जो 0.05 स्तर पर सार्थक भिन्नता प्रकट करता है । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य प्रतिभाशाली छात्र तथा उनके माता-पिता पूर्ण रूप से भौतिकवादी तथा व्यावसायिक होते जा रहे हैं । इनमें शिक्षा क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने की लालसा रहती है। वे अपनी प्रतिभा का क्षेत्र विभिन्न व्यवसाय, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि में से किसी को भी चुन सकते हैं । इस प्रकार से सामान्य प्रतिभाशाली छात्रों के अभिभावक अपने बच्चों को पूर्ण स्वतंत्र तथा कठोर परिश्रम करने को उत्साहित करते हैं । इसके साथ ही

वे उनका विकास विद्यालय तथा अन्य क्षेत्रों में "येन-केन-प्रकारेण" के आधार पर भी करते हैं जबकि सहारिया प्रतिभाशाली छात्रों का विकास सिर्फ अपने वंश क्रम पर ही निर्भर करता हे । वे साधनहीन , अन्तर्मुखी ,निम्नता के भाव से ग्रसित, रोज़ी रोटी के संघर्ष, तथा सामाजिक नियंत्रण का उल्लंघन न करना आदि रूकावटों से ग्रसित रहते हैं । परिणाम् स्वरूप इनका विकास अवरूद्ध हो जाता है । इसका समर्थन "शाही" (1992), "सम्पत" (1984) आदि ने अपने शोधों के द्वारा किया है ।

बौद्दिक प्रतिभा के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंग मस्तिष्क है, और विशेषकर इसका भी वह अंश जिसको कार्टेक्स कहा जाता है । मानव बुद्दि के लिए मस्तिष्क का विकास इतना महत्वपूर्ण है कि उसको भाग्य विधाता कहा गया है । इसके द्वारा जो बुद्दि सम्भव होती है वह मनुष्य को भाग्य का निर्माता बना देती है । "मन, एन0एल0" (1956) ने व्यक्तिगत मानवीय बुद्दि के लिए निर्धारक, पैदा हुए बच्चे का मस्तिष्क, बचपन तथा किशोरावस्था में मस्तिष्क की वृद्दि बतलाये हैं। यह वृद्दि प्रौढ़ावस्था तक चार गुनी हो जाती है तथा जटिल भी । इसके पश्चात व्यक्ति के अवलोकन करने, सीखने और कार्य करने के लिए अवसरों की मात्रा पर भी वुद्दि का विकास निर्भर करता है । इस आधार पर हम देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य प्रतिभाशाली बच्चे अपने पूर्वजों से श्रेष्ठ मस्तिष्क लेकर जन्म लेते हैं। उस मस्तिष्क की वृद्दि पौष्टिक, सकारात्मक सोच तथा साधन सम्पन्न पोषण के द्वारा की जाती है । इसके पश्चात समृद्द वातावरण, सीखने के विशद अवसर तथा अनुभव के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साधन प्रस्तुत किये जाते हैं जिससे बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकें । इसके विपरीत सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों का मस्तिष्क जन्म के समय अच्छा हो सकता है । उस मस्तिष्क की वृद्दि के समुचित प्रबन्ध परिवार के द्वारा उपलब्ध नहीं हो पाते हैं और न उतनी देखभाल का समुचित प्रबन्ध, पोषण की समृद्द व्यवस्था तथा स्वास्थ की सही देखभाल ही हो पाती है । इससे मस्तिष्क की उचित वृद्दि नहीं हो पाती और न इसका कॉर्टेक्स सही रूप तथा दिशा ले पाता

है । इसके पश्चात उसको समृद्ध वातावरण, पर्यावरण परिवार में अवलोकन, सीखने तथा अनुभव संग्रह हेतु नहीं मिल पाता है । परिणाम्स्वरूप वंश प्राप्त बौद्धिक प्रतिभा की प्रखरता उतनी तीव्र नहीं हो पाती है , जितनी सामान्य प्रतिभाशाली छात्रों की हो जाती है । अतः सहारिया प्रतिभाशाली छात्र वर्ग तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्र वर्ग में अंतर होता है । इसका समर्थन "मेहरोत्रा" (1986), "सीमा" (2004), तथा "कुमार" (1992) आदि ने अपने अध्ययन निष्कर्षों से किया है ।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्र वर्ग तथा सामान्य छात्र वर्ग में अंतर होता है । शोधकर्ता ने अपने शिक्षण काल में यह देखा है कि बौद्धिक प्रतिभा की प्रखरता अवसरों की अनुकूलता और प्रतिकूलता पर निर्भर करती है । अतः "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्रों में कोई अंतर नहीं होता है," परिकल्पना स्वीकृत एवं सिद्ध नहीं हुई है ।

प्रस्तुत शोधकार्य की तृतीय परिकल्पना "सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग में कोई अंतर नहीं होता है ", का परीक्षण किया गया । इस हेतु तालिका सं0 5.8 तथा 5.13 से स्पष्ट होता है कि सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं में और सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं में सार्थक अंतर स्थापित हुआ है । इनके विचलन गुणांक में सहारिया छात्राओं का विचलन गुणांक 27.4 रहा है जो विचलन तथा भिन्नता को स्थापित करता है । इसके साथ ही इनके "टी" मूल्य को भी ज्ञात किया गया जो 8.78 रहा है तथा अंतर की सार्थकता को .05 स्तर पर प्रकट करता है । इससे स्पष्ट होता है कि बौद्धिक प्रतिभा तथा प्रखरता के क्षेत्र में सामान्य छात्रा वर्ग तथा जनजाति छात्रा वर्ग में अंतर होता है ।

1990 का दशक संसार में परिवर्तन और परिमार्जन लाने वाला रहा है। इसने जहाँ मानव हितों का ध्यान व्यक्तिगत विकास के लिए रखा है, वहीं पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का विकास यू0एन0ओ0 के माध्यम से बिना

किसी धर्म, जाति और सम्प्रदाय के किया है । आज़ संसार के सभी स्त्री/पुरूषों को स्वतंत्रता, समानता तथा सहकारिता के जनतंत्रीय मूल्यों का विकास करने के अधिक से अधिक अवसर मिले हैं । भारत राष्ट्र ने इसी दशक में शिक्षा में एक्शन प्लान (1992), संशोधित ब्लैक बोर्ड योजना (1992), सर्वशिक्षण अभियान (1992), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1994), पौष्टिक आहार योजना (1995) आदि का श्रीगणेश किया , ताकि देश के सभी बच्चे निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा में सहयोग दे सकें । इसके साथ ही व्यवसायपरक शिक्षा के क्षेत्र में व्यवसायोन्मुख शिक्षा नीति (1998) बनाई गयी । इन सभी योजनाओं में विशेष बल अनुसूचित, दलित तथा जनजातीय महिला शिक्षा तथा सामान्य महिला शिक्षा आदि पर दिया गया । फिर भी कुछ सामाजिक तथा सरकारी कारणों से सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्राओं का सामान्य प्रतिभाशाली छात्राओं जैसा विकास नहीं हो पा रहा है । अतः दोनों वर्गों में सामयिक अंतर स्थापित होता है ।

यदि हम भारतीय पिछड़े वर्ग की महिलाओं के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि वह महिला किसी भी वर्ग, सवर्ण, पिछड़ा, अनुसूचित जनजाति या अल्पसंख्यक आदि की हो उसमें विकासशील तथा अविकासशील समाज, परिवार तथा ग्राम, कस्बा तथा नगर आदि पर अंतर स्थापित होता है । इसका मुख्य कारण परिवार की शिक्षा, संस्कार, मूल्य, आदर्श तथा सामाजिक प्रक्रिया का प्रभाव माना जा सकता है । पर्यावरणविद् इस तथ्य को स्वीकारते हैं कि व्यक्ति जिस वातावरण / क्षेत्र में निवास करता है / व्यवसाय करता है, उसका प्रभाव उसके दैनिक जीवन तथा व्यवहार पर पड़ता है । यही प्रभाव धीरे-धीरे स्थायी होकर उसके व्यक्तित्व की विशेषता बन जाता है । यही व्यक्तित्व विशेषतायें अन्य से अंतर स्थापित करने में प्रमुख भूमिका अदा करती हैं । इसका समर्थन "लेह" (1935), "मैकनेमर" (1942), "बोरिंग" (1945), "कॉक्स" (1926) आदि मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों से किया है । अतः शोधकार्य की परिकल्पना "सहारिया जनजाति की प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्रा वर्ग में कोई अंतर नहीं होता है ", पूर्णरूप से अस्वीकृत होती है ।

प्रस्तुत शोधकार्य की चतुर्थ परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा छात्राओं की बुद्दि और विद्यालय समायोजन में सार्थक सम्बन्ध होता है" का परीक्षण किया गया । प्रस्तुत परिकल्पना में विद्यालय समायोजन को केन्द्र बिन्दु मानकर शोधकर्ता ने सहारिया बच्चों के सम्पूर्ण व्यवहार का मूल्यांकन किया है । तालिका संख्या 5.6 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्र तथा छात्राओं के मध्यमान में अंतर (4.28) विद्यालय समायोजन में रहा है । इनके विचलन गुणांक में अंतर (3.40) रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि सहारिया छात्रा वर्ग विद्यालय समायोजन में पीछे है । फिर भी यह अंतर काफी कम है जो यौन भिन्नता तथा सामाजिक परिस्थिति के कारण हो सकता है । अतः शोधकर्ता इसको अंतर न मानकर के निम्न स्तरीय सम्बन्ध मानता है । इसका समर्थन "कुमार" (1992), "भाटिया" (1984), तथा "मेहरोत्रा" (1986), "वालिया" (1973), "साही" (1992) आदि ने भी अपने अध्ययनों में किया है ।

विद्यालय समायोजन तालिका सं0 5.16 को देखने से स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली सामान्य छात्र/छात्रा का विद्यालय समायोजन तथा सहारिया छात्र-छात्रा का विद्यालय समायोजन के मध्य सह-सम्बन्ध छात्र (. 31) तथा छात्रा (.112) रहा है । यह सह-सम्बन्ध स्पष्ट करता है कि दोनों वर्गो के बीच निम्न स्तर का धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। इसका मुख्य कारण बौद्दिक प्रतिभा की समानता तथा विद्यालय परिसर का शैक्षिक पर्यावरण हो सकता है । जहाँ तक बौद्दिक प्रतिभा का प्रश्न है दोनों वर्ग प्रतिभा सम्पन्न हैं, लेकिन प्रसरण सहारिया बच्चों में अधिक पाया गया है और सामान्य बच्चों में कम । सामान्य बच्चे अपने आत्म विश्वास, साधन सम्पन्नता तथा अधिगम के विभिन्न अनुभवों से विद्यालय समायोजन स्थापित करने में आसानी प्रदान करते हैं । जबकि सहारिया बच्चे सहमे रहते हैं, निम्नता के भाव से ग्रसित होते हैं तथा आत्म विश्वास का अभाव होता है, जिससे उनका विद्यालय समायोजन के साथ सह – सम्बन्ध धनात्मक निम्न स्तरीय रहा है । इसका समर्थन "वीणा" (1982), "भाभा" (2002) तथा "पूरन" (1997) आदि ने अपने शोध पेपर्स से किया है ।

सामान्य तथा सहरिया छात्र-छात्रा में विद्यालय समायोजन के लिए धनात्मक सम्बन्ध को जानने के लिए शोधकर्ता ने विद्यालय समायोजन के उप विभागों के बीच भी सह-सम्बन्ध का आंकलन किया है । तालिका सं0 5.17 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सामान्य छात्र बनाम सहारिया छात्र समायोजन उप विभाग "एस0" (0.61) में श्रेष्ठ रहे हैं और कम प्रभाव उप क्षेत्र "जी" (.45) में रहे हैं । इसके विपरीत छात्रा बनाम छात्रा में सबसे अधिक सह-सम्बन्ध उप विभाग (ए0- .32)में रहा है तथा सबसे कम उप विभाग (एस- .23) में रहा है । फिर भी दोनों ही वर्गों के प्रत्येक उप विभाग में धनात्मक सम्बन्ध रहा है । छात्र वर्ग विद्यालय समायोजन में अधिक प्रभावशाली रहे हैं, अपेक्षाकृत छात्रा वर्ग के। समाज शास्त्रियों का मानना है कि छात्रा वर्ग किसी भी समाज तथा समुदाय का हो उसको समस्याओं का सामना करना ही होता है । उनके पास कितने ही साधन हों फिर भी वे अपने मानक से विचरण रखती ही हैं । इसी को पुरूष प्रशासित समाज या संसार माना जाता है । पुरूष वर्ग की श्रेष्ठता आदिकाल से चली आ रही है और आज भी प्रत्येक क्षेत्र पर सम्पूर्ण विकास के मामले में पुरूष वर्ग का ही आधिपत्य है । स्त्री तथा पुरूष दोनों ही विद्यालय समायोजन से जूझते हैं लेकिन पुरूष वर्ग अपने तरीके से धनात्मक उच्च सम्बन्ध बना लेते हैं जबकि महिला वर्ग धनात्मक निम्न सम्बन्ध स्थापित कर पाता है । अतः हम कह सकते हैं कि सहारिया बच्चों तथा सामान्य बच्चों में विद्यालय समायोजन के प्रति सकारात्मक सोच होती है जो सार्थक धनात्मक सम्बन्ध बनाती है ।

शोधकर्ता ने विद्यालय समायोजन की प्रतिशत तालिका सं0 5.18 का अवलोकन किया और पाया कि सबसे उच्च प्रतिशत दोनों वर्गों में उप विभाग (ए0) में रहा है और निम्न प्रतिशत उप विभाग (पी0) में रहा है । इनका वितरण भी सामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुसार प्रतीत होता है । इस तालिका से भी स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग के बच्चे अपने विद्यालय समायोजन के प्रति जो सकारात्मक सोच रखते हैं वही सकारात्मक सोच जनजाति वर्ग के बच्चे भी रखते हैं । अतः दोनों वर्गों के बीच धनात्मक सह-सम्बन्ध स्थापित हो सका है।

इसी प्रकार के निष्कर्ष "वागची" (1974), "पंडित" (1973) तथा "शाही" (1992) आदि शोधकर्ताओं द्वारा ज्ञात किये गये हैं अतः शोध कार्य की परिकल्पना "सहारिया छात्र-छात्राओं की बुद्धि तथा विद्यालय समायोजन में सार्थक सम्बन्ध होता है," पूर्ण रूप से स्वीकृत एवं सिद्ध होती है ।

शोधकार्य की पंचम परिकल्पना " सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्रों तथा छात्राओं की बुद्धि में सामाजिक-आर्थिक स्तर पर कोई अंतर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया । इस हेतु तालिका संख्या 5.4, 5.10, तथा 5.14 का अवलोकन किया गया और स्पष्ट रूप से पाया कि सहारिया तथा सामान्य बच्चों में यौन भिन्नता सार्थक रूप से स्थापित होती है । इसका मुख्य कारण व्यक्ति का वंश क्रम तथा आंतरिक शक्तियों का विकास तथा उसके पालन पोषण का प्रभाव और जीवन में सीखने के प्राप्त साधन हैं । इन सबका प्रभाव प्रत्येक स्त्री-पुरूष पर समान रूप से नहीं पड़ता है । साथ ही उनकी मूल प्रवृत्तियों की शक्ति तथा क्षमतायें, प्रत्येक को शक्ति तथा उत्साह देकर कार्य करने को बाध्य करती हैं । इसके साथ ही सामाजिक-आर्थिक , सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ भी स्त्री-पुरूष को प्रभावित करती हैं । अतः इनके प्रभाव से भी दोनों वर्गो के छात्र-छात्रा में विकासात्मक तथा व्यवहारिक अंतर देखने को मिलता है ।

21वीं सदी में प्रवेश के साथ-साथ भारतीय समाज में विकासात्मक दृष्टिकोण से नवीन परिवर्तन हुआ । इसके कारण एक वर्ग आधुनिक बना, द्वितीय वर्ग पुरातन के साथ आधुनिक तथा तृतीय वर्ग पुरातन में संशोधन करके आधुनिक बना । प्रतिभाशाली छात्रों तथा छात्राओं में यह होड़ लगी हुई है कि वे एक दूसरे से प्रत्येक क्षेत्र में आगे निकल जायें । परिणाम्स्वरूप आर्थिक-सामाजिक प्रभावों में परिवर्तन अपेक्षित है । जो लोग परिवर्तनों को आत्मसात करके शिक्षा प्राप्त करते हैं वे अपेक्षाकृत अन्य से विकास में आगे बढ़ जाते हैं । इसका समर्थन "कुमार"(1984), "गनानाम्बल" (1982) तथा "शाही" (1992) आदि विद्वानों ने अपने अपने अध्ययनों के निष्कर्षों से किया है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को जानने के लिए शोधकर्ता ने तालिका

सं0 5.14 में "टी" मूल्य का आंकलन किया है । इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव छात्र बनाम छात्र तथा छात्रा बनाम छात्रा दोनों ही समूहों पर पड़ता है । इनमें छात्र समूह का "टी" मूल्य (17.9) रहा है जबकि छात्रा समूह का "टी" मूल्य (9.49) रहा है । ये दोनों ही मूल्य .05 स्तर पर अंतर की सार्थकता प्रगट करते हैं । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र तथा छात्रा, छात्र तथा छात्र तथा छात्रा तथा छात्रा आदि वर्गों में सामाजिक-आर्थिक स्तर का सकारात्मक तथा भिन्नता लिये हुए प्रभाव पड़ता है जो सभी वर्गों तथा समूहों में अंतर प्रकट करता है । मनोवैज्ञानिकों के विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि समान माता-पिता, समान पारिवारिक पोषण तथा वातावरण तथा समान शिक्षा सुविधाओं के मिलने पर भी बच्चों की प्रतिभा सम्पन्नता का प्रस्फुटन अलग-अलग क्षेत्रों में हुआ । इस अंतर का कारण स्त्री-पुरूषों की स्वयं की सोच , लक्ष्य निर्धारण , साधनों की उपयोगिता तथा निर्देशन और अनुभवों का संग्रहित प्रभाव माना जा सकता है, जो उनके व्यवहार की दिशा को निश्चित करते हैं । इतना ही नहीं, वे लक्ष्य प्राप्ति, कार्यशैली, अनुभव संग्रह प्रक्रिया तथा "किस विशेषता को कितना महत्व देना है और किसको नहीं " आदि का चयन करके वे स्वयं का विकास करते हैं "बोरिंग" (1945) ।

अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सहारिया जनजाति पुरातन तथा आधुनिक मूल्यों, आदर्शों, रीति रिवाज़ तथा संस्कारों में संशोधन करके आधुनिकता अपनाते जा रहे हैं । यही प्रभाव उनके बच्चों (छात्र-छात्रा) पर दिखलाई पड़ता है जिससे वे आर्थिक भिन्नता स्थापित करने में सफल रहे हैं । अतः शोध की परिकल्पना "सहारिया जनजाति के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा बौद्विक प्रतिभा में कोई अंतर नहीं होता है," पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है ।

शोधकार्य की षष्ठम् परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के विद्यालय समायोजन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई अंतर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया । इस हेतु तालिका सं0 5.16 का

अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि दोनों परिस्थितियों में धनात्मक सम्बन्ध स्थापित हुआ है । प्रत्येक बच्चा कल्पनाशील स्वभाव का होता है । वह कल्पना को साकार बनाने के लिए सामाजिक और आर्थिक संसाधनों का दुरूपयोग करता है। इस प्रकार से वह उपस्थित परिस्थिति के साथ अपना समायोजन स्थापित करता है । जब वह यथार्थ को देखता और समझता है तो निराश हो जाता है क्योंकि उसको वह सहायता सामान्य साधनों से नहीं मिल पा रही है, जो आवश्यक है । अतः उसका सही समायोजन नहीं हो पाता है । इस तथ्य का समर्थन "कुमार" (1992), "मिथलेश" (1975) तथा "सीमा सिंह" (2004) ने अपने शोध पत्रों के द्वारा किया है ।

तालिका सं0 5.14 तथा 5.15 में सामाजिक-आर्थिक प्रभाव तथा विद्यालय समायोजन की "टी" मूल्य को देखने से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग तथा जनजाति वर्ग में सार्थक भिन्नता है, लेकिन सामाजिक-आर्थिक प्रभाव तथा विद्यालय समायोजन तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों परिवर्तियों में आपस में धनात्मक सम्बन्ध है । सहारिया प्रतिभाशाली छात्र वर्ग का आर्थिक-सामाजिक स्तर बनाम विद्यालय समायोजन के बीच धनात्मक सामान्य स्तरीय सह-सम्बन्ध 0.42 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि साधन सम्पन्नता, शिक्षित परिवार, संस्कारयुक्त समाज तथा मूल्यों और आदर्शों पर चलने वाले समाज अपने बच्चों को समायोजन स्थापित करने का तरीका सिखलाते हैं । इनके बच्चे जब विद्यालय जाते हैं तो कक्षा में, खेल में, सामुदायिक क्रियाओं में, तथा शिक्षकों और अन्य के साथ अच्छे तथा उपयुक्त सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं । इसके साथ ही एक तत्व आत्म निर्भरता, आत्म विश्वास तथा आत्म ज्ञान भी होता है जो अन्यों को प्रभावित करता है । इसके विपरीत सहारिया जनजाति के पास संसाधन पर्याप्त नहीं हैं , वे अपने समाज में धीरे-धीरे आज़ के संस्कार डाल रहे हैं जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यालय जाने वाले बच्चों पर पड़ता है और वे अपने में संकोची स्वभाव, अस्थिर निर्णय तथा प्रत्येक कार्य के साथ समायोजन स्थापित करना ही अपना हित मानते हैं । अतः सहारिया छात्र-छात्रा वर्ग की

आर्थिक-सामाजिक स्थिति का प्रभाव उनके विद्यालय समायोजन पर पड़ता है । ऐसे ही निष्कर्ष "सम्पत" (1984), "पाण्डेय" (1970), तथा "शाही" (1992) आदि ने अपने अपने शोध कार्यों से प्राप्त किये हैं । अतः शोध की परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के विद्यालय समायोजन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर में अंतर नहीं होता है " पूर्ण रूप से स्वीकृत एवं सिद्ध होती है ।

शोधकार्य की सप्तम् परिकल्पना "सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया । इस हेतु तालिका सं0 5.16 के सह-सम्बन्ध गुणांक को आधार मानकर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्र वर्ग का धनात्मक सह-सम्बन्ध +0.43 रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों परिस्थितियों के बीच धनात्मक निम्न स्तरीय सम्बन्ध होता है। "ऐटकिसन एवं फैदर" (1966) का मत है कि अभिप्रेषण एक सामाजिक घटक है। यह जन्मजात न होकर व्यक्ति द्वारा अर्जित या सीखा गया होता है । यह सफलता प्राप्त करने या उपलब्धि के लिए व्यक्ति की अपेक्षाकृत रूप से एक स्थायी प्रवृत्ति है । ये प्रेरक तब तक सुसुप्त रहते हैं जब तक व्यक्ति को अपने परिवेश से यह संकेत न मिल जाये कि लक्ष्य निष्पादन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है । अतः स्पष्ट होता है कि सहारिया समाज के प्रतिभाशाली बच्चों की उपलब्धि कमज़ोर होने के पीछे बौद्धिक प्रतिभा का हाथ कम होता है, परिवार, समाज तथा विद्यालय परिवेश का अधिक । इस तथ्य का समर्थन "देसाई" (1970), "पाठक" (1973), "कृष्णमूर्ति" (1988), "संगीता" (2000) तथा "कुमुद" (2004) आदि ने अपने शोधों तथा पत्रों के निष्कर्षों से किया है ।

शैक्षिक उपलब्धि पर सबसे अधिक प्रभाव शिक्षक भूमिका तथा शिक्षक व्यक्तित्व का होता है । वर्ष 1994 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षण "सृजनशीलता" पर हुई विद्वानों की गोष्ठी ने शिक्षक भिन्नता को स्पष्ट किया है। अध्यापक वर्ग पर कल्पनाशीलता तथा यथार्थवादिता का प्रभाव होता है । जो

अध्यापक कल्पनाशील होते हैं वे नित नये प्रयोग करते हैं तथा इस विशिष्टता को छात्र वर्ग पर प्रकट करते हैं । इसके विपरीत जो शिक्षक यथार्थवादी होते हैं या परम्परावादी होते हैं वे स्वयं को शिक्षण तकनीक के अनुसार चलाते है और उसी से छात्र वर्ग को निर्देशित करते हैं । इस प्रकार से जब शिक्षक द्वारा निर्देशित छात्र-छात्रा अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाते हैं तो वे निराश होते हैं और सारा दोष अपने शिक्षकों को देते हैं । अतः बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में यौन भिन्नता के आधार पर अंतर होता है । इसका समर्थन मनोवैज्ञानिक "गार्ड" (1984), "थार्नडाइक" (1930) तथा "वाटसन" (1930) आदि ने अपने प्रयोगों द्वारा किया है ।

सहारिया बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को जब शोधकर्ता ने विद्यालय रिकॉर्ड में अवलोकन किया तो पाया कि जो अंतर सामान्य प्रतिभा सम्पन्न छात्र-छात्रा तथा गैर-प्रतिभाशाली बच्चों के बीच रहा, उसी प्रकार का अंतर सहारिया प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का गैर -प्रतिभाशाली सहारिया बच्चों के बीच रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रतिभा का प्रभाव तो शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है लेकिन बच्चों के सामाजिक परिवेश तथा आर्थिक उपलब्धता और समायोजन की भिन्नता के कारण बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर आ जाता है । "यंग" (1941) का मत है कि आर्थिक सम्पन्न परिवारों के बच्चे गरीब परिवारों के बच्चों की अपेक्षा भाषा का ज्ञान जल्दी कर लेते हैं और उनकी भाषा का स्तर भी ऊँचा होता है ।

तालिका सं0 5.13, 5.14, 5.15 तथा 5.16 और 5.17 आदि को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि बच्चों की उपलब्धि पर उनकी सांवेगिक, सामाजिक, शैक्षिक स्थिति में समायोजन की प्रवृत्ति का प्रभाव पड़ता है "सीमा" (2004) । दैनिक जीवन में यह देखा गया है कि सहारिया जनजाति के बच्चे भले ही प्रतिभावान हों, विद्यालय परिस्थितियों के साथ समायोजन में कठिनाई का अनुभव करते हैं । इनके निज के पारिवारिक, जातीय एवं सामाजिक परिवेश के कारण उनमें हीन भाव विकसित हो जाता है । इसका प्रमुख कारण सामान्य वर्ग

का विकास, सुख-सुविधा सम्पन्न जीवन को जीना है । आज़ शिक्षा के एक्शन प्लान में अनुसूचित जाति तथा जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के विकास के लिये भारत सरकार ने विभिन्न योजनाओं को चलाया है लेकिन वे इनका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं । जो पहले से उच्च सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक स्थिति पर हैं , उन्हें छोड़कर शेष लोग अभी भी दकियानूसी प्रथाओं, रीति रिवाज़ों, अंधविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों के कारण स्वतत्रंता के 57 वर्षो के बाद भी हर क्षेत्र में दयनीय जीवन जी रहे हैं । इसका समर्थन ''भट्ट'' (1973), ''बागची'' (1974), ''सूरी'' (1973), ''वालिया'' (1973), ''कुमार'' (1984), ''शाही'' (1992), ''सिंह'' (2001) तथा ''संगीता'' (2000) आदि विद्वानों ने अपने शोध पत्रों तथा शोध निष्कर्षो से किया है । अतः ''शैक्षिक उपलब्धि में सामान्य प्रतिभाशाली तथा जनजाति प्रतिभाशाली बच्चों में कोई अंतर नहीं होता है '', पूर्ण रूप से सिद्व तथा स्वीकृत होती है ।

सहारिया जनजाति के छात्र-छात्राओं (प्रतिभाशाली बच्चों)की बौद्गिक प्रतिभा, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यालय समायोजन का विवेचन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों वर्गो के बच्चे व्यक्तित्व, स्वभाव, अभिवृत्ति, समस्या समाधान आदि में भिन्नता रखते हैं । दोनों का लक्ष्य समान है लेकिन सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का उन पर प्रभाव पड़ता है । अतः शैक्षिक उपलब्धि की कमी समस्या नहीं होती है बल्कि समस्या वे छात्र-छात्रा (सहारिया) होते हैं जो समस्याओं से प्रभावित होते हैं । इस प्रकार शोधकर्ता निम्नलिखित निष्कर्षो पर पहुँचता है :-

1- सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं वर्गो में बौद्गिक प्रतिभा का विकास एवं निर्माण समानता लिये हुए होता है लेकिन उसका प्रकाशन किन्हीं क्षेत्रों में भिन्नता लिये हुये है ।

2- बुद्गि परिवर्ती का सम्बन्ध समायोजन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर परिवर्ती के साथ धनात्मक रहा है । चाहे वे सहारिया जनजाति के हों या सामान्य जाति के ।

3- सहारिया जनजाति के प्रतिभाशाली बच्चों का सम्बन्ध समायोजन तथा सामाजिक - आर्थिक स्तर पर धनात्मक रहा है लेकिन दोनों में मात्रात्मक अंतर ही स्थापित हुआ है ।

4- शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभाशाली बच्चों की सबसे प्रमुख समस्या विद्यालय समायोजन की है, जिससे प्रतिभा को सही दिशा तथा पोषण मिलता है ताकि ये लोग अपना योगदान राष्ट्र को दे सकें ।

5- सहारिया जनजाति की छात्राओं का विकास समायोजन स्तर पर अच्छा रहा है, अपेक्षाकृत छात्र वर्ग के ।

6- छात्र तथा छात्राओं की प्रतिभा का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर समानता स्थापित करता है । इसमें गुणात्मक समानता पाई जाती है तथा मात्रात्मक रूप में अंतर भी ।

7- एन0सी0ई0आर0टी0 (2000) ने माध्यमिक शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास माना है । इसको प्राप्त करने के लिए सरकार को, सामाजिक संस्थाओं को तथा शिक्षक वर्ग को, व्यक्तित्व को केन्द्र मानकर सहारिया प्रतिभाशाली बच्चों के विकास के लिये क्रियाशील होना पड़ेगा ।

8- सहारिया प्रतिभाशाली बच्चों का विकास बाह्य सहभागी क्रियाओं में भी किया जाये ताकि ये लोग बहु-उद्देशीय शिक्षा का लाभ ठीक से उठा सकें ।

9- जनजातियों के माता-पिता को सलाह दें कि वे अपने बच्चों की देखभाल, पालन पोषण, अच्छे परिवेश में करें ताकि उनमें आत्म विश्वास और आत्म निर्भरता का सकारात्मक विकास हो सके ।

विस्तृत निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य की परिकल्पना की स्वीकृति तथा अस्वीकृति का वर्णन करने के पश्चात अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षो को प्रस्तुत करना शोधकर्ता का मुख्य कर्तव्य होता है, ताकि शोध निष्कर्षो को अधिक उपादेय तथा प्रभावी माना जा सके । अतः शोधकार्य के कुछ तथ्यात्मक निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं :-

I- प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजाति सहारिया के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की शिक्षा , समायोजन तथा सामाजिक -आर्थिक स्तर को आधार माना गया है । ये बच्चे अन्य जनजातियों के बच्चों से अपने स्वभाव तथा प्रकृति में भिन्नता रखते हैं "पांचाल" (1988) । इनके विकास तथा आधुनिक समरसता के लिए प्रतिभा सम्पन्न बच्चों का विकास सही शिक्षा तथा मार्गदर्शन के द्वारा ही सम्भव हो सकता है । इसीलिए शिक्षा आज़ मानव विकास की प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है । इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान और प्रशिक्षण से व्यक्ति का सर्वागींण विकास होता है (महात्मा गाँधी-1937)। यह बात अलग है कि शिक्षा की महती आवश्यकता को जानते हुए भी इनमें शिक्षा का प्रसार उच्च स्तर पर नहीं है। इसके पीछे सहारियाजनजाति का दोष नहीं है बल्कि अनेक अन्य कारण भी प्रतीत होते हैं । अतः इनके बच्चों की सामान्य शिक्षा के लिए हमें तथा प्रशासन को निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए -

(अ) "महात्मा गाँधी" की बेसिक शिक्षा का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिए, ताकि ज्ञानार्जन के साथ-साथ आत्म निर्भरता का विकास हो सके ।

(ब) शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहिए, ताकि सहारिया जनजाति के सभी बच्चों की प्रतिभा का समान विकास हो सके और वे अपनी प्रतिभा का उपयुक्त पर्यावरण पाकर जीवन को विभिन्न क्षेत्रों में विकसित कर सकें ।

(स) प्रतिभा खोज़ प्रतियोगिता को और अधिक सरल, मनोवैज्ञानिक तथा

वैज्ञानिक बनाया जाये, क्योंकि बौद्धिक तीव्रता का विकास समृद्ध पर्यावरण के द्वारा ही सम्भव हो पाता है । अतः इनके बच्चों को पहले समृद्ध पर्यावरण में शिक्षा दी जाये फिर प्रतिभा खोज़ को लागू करना उपयुक्त रहेगा ।

(द) इनको मिलने वाली छात्रवृत्ति एवं सुविधाओं का उचित बँटवारा होना चाहिए ताकि इनमें आत्म निर्भरता का विकास हो सके । साथ ही ये ज्ञानार्जन को भी प्रमुखता से ले सकें ।

(य) आज़ सरकार द्वारा नौकरियों में आरक्षण समृद्ध परिवारीय पर्यावरण का विकास करने के लिये किया गया है, इसी तरह से शिक्षा के समूचे पर्यावरण को समृद्ध बनाने के लिये आवासीय शिक्षा की व्यवस्था की जाये तथा उपयुक्त निर्देशक एवं संरक्षक भी बनाये जायें जो इनकी योग्यता को पहचान कर उचित विकास कर सकें ।

(र) इनके प्रतिभा पलायन को रोकने के लिए निर्देशकों तथा मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति हो । ये लोग विभिन्न अपराधों तथा क्रिया कौशलों में प्रवीणता के द्वारा स्वयं के उच्च बौद्धिक स्तर को प्रकट करते हैं । अतः सिद्ध होता है कि बौद्धिक स्तर में ये किसी से कम नहीं होते हैं ।

(ल) विद्यालय पाठ्यक्रम में आधुनिक विषयों के साथ-साथ इनकी संस्कृति, लोक कथायें, नृत्य और संगीत आदि का भी समावेश किया जाये ताकि इनके प्रतिभा सम्पन्न बच्चे सांस्कृतिक तथा कला सम्बन्धी क्षेत्रों में भी स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध कर सकें ।

(व) "शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन" को समाप्त करने के लिए शिक्षा के प्रति रूचि, व्यवसायपरकता तथा वैयक्तिक मार्गदर्शन की व्यवस्था की जाये ।

(श) जनजाति के बच्चों एवं उनके समाज को मानवीय दृष्टिकोण से देखें,

न कि उनको हेय दृष्टि से देखें । शिक्षक, ग्रामसेवक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सरकारी कार्यकर्ताओं को उनके साथ सहानुभूति का प्रदर्शन करना चाहिये । हम उनका भारतीय भाव, मानवीय भाव तथा समाजी भाव से सम्मान करें और शोषण का विरोध करें ।

(ष) सरकार को ऐसे कार्यक्रमों का विकास करना चाहिए जो उनकी रूचि व्यवसाय और योग्यता का आधार बनें । शिक्षक उनकी प्रतिभा का मूल्यांकन आसानी से कर सकता है क्योंकि वह उनके और आधुनिक समाज के बीच एक कड़ी का कार्य करता है ।

(स) इनके बच्चों में से "हीनभाव" को दूर करने के लिए विशेष प्रकार के नर्सरी तथा आंगनवाड़ी विद्यालय प्रारम्भ किये जायें ताकि पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षा से ही इनमें समानता, भाई-चारा, आत्म सम्मान, राष्ट्र भाव और व्यावहारिकता आदि का विकास प्रारम्भ हो सके ।

II- संसार में भौतिक विकास का प्रभाव सहारिया जनजाति के बच्चों पर भी पड़ा है । अतः आज़ के सहारिया बच्चों ने भी स्वयं को भौतिकता की दौड़ में सम्मिलित कर लिया है । ये आज़ वास्तविक शिक्षा को त्याग कर धनोपार्जन के विभिन्न तरीकों में संलग्न रहने लगे हैं । अतः इनके लिए धनिक बनना शिक्षा का लक्ष्य है, न कि स्वयं को जानना । इस तरह से इनके प्रतिभाशाली बच्चे भी उसी तरफ अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रयोग करते हैं । उनमें सामाजिक-आर्थिक अस्थिरता, विघटन एवं समाजों के साथ समायोजन का अभाव पाया जाता है ।

III- "राष्ट्रीय शिक्षा नीति" 1986 को ही कार्य योजना 1992 का नाम दिया गया है । इसमें सार्वभौमिक शिक्षा, समग्र साक्षरता, रोज़गार शिक्षा आदि पर कार्यक्रम बनाये गये । फिर भी जनजातीय शिक्षा में वह परिवर्तन नहीं आ पाया जिसकी अपेक्षा सरकार को थी । इसका मुख्य कारण उनमें जागरूकता तथा प्रेरणा का अभाव हो सकता है । अतः शिक्षा का लक्ष्य "स्व" विकास के स्थान पर सहारिया समाज का विकास होना चाहिये । प्रस्तुत अध्ययन में सहारिया

जाति के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के विकास को आधार माना गया है । ये लोग अपना विकास करके समाज, जाति तथा राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकेंगे । आज़ राष्ट्रीय हाकी टीम में झारखण्ड प्रदेश से हॉकी खेलने वाली लड़कियों की संख्या 16 में से 7 है । ये प्रतिभा सम्पन्न हैं, इनको खोज़ा गया तथा पर्यावरण दिया गया । अतः इनके विकास की नई योजनायें बनाई जायें ताकि ये लोग अपनी क्षमता तथा योग्यता का विकास करके वर्तमान परिस्थितियों के साथ समायोजन भी कर सकें । अतः शोधकर्ता इनके व्यक्तित्व विकास के लिए निम्न निष्कर्षों पर पहुँचता है -

1- जनजाति के बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए नागरिक गुणों का ज्ञान, नागरिक चेतना और राष्ट्र प्रेम का भाव विकसित किया जाये ।

2- बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास हेतु पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाये । इसमें स्वल्पाहार तथा कैलोरीज़ वाले भोजन का प्रबंध, खेलकूद और श्रव्य दृश्य सामग्री के द्वारा नया ज्ञान सिखाया जाये ।

3- बच्चों को नैतिकता का पाठ पढाने के लिए समानता, भाई-चारा, सहयोग और सहकारिता की शिक्षा का प्रबंध किया जाये ताकि भारतीय समाज से जाति, धर्म, सम्प्रदाय का भेदभाव मिट सके ।

4- यौन भिन्नता को समाप्त करके स्त्री-पुरूष की समानता और राष्ट्र विकास के लिए दोनों के विकास की समान नीति लागू की जाये ।

5- बच्चों के व्यक्तित्व का ऐसा विकास हो ताकि वे जो सोचते हैं, वैसा ही व्यवहार में पालन करें ताकि आज़ की बनावटी जिन्दगी से अलग रहकर स्वयं का विकास कर सकें ।

IV- शोधकर्ता ने प्रतिभा सम्पन्न बच्चों की कम शैक्षिक उपलब्धि को अध्ययन का आधार बनाया है । कम शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक -आर्थिक स्तर तथा समायोजन का भी प्रत्यक्ष प्रभाव होता है । साथ ही कुछ अन्य तत्व भी

प्रभावित कर सकते हैं । अतः हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :-

1- पुरूष तथा महिला दोनों ही वर्गो में प्रतिभा पाई जाती है । किसी का भी एकाधिकार नहीं होता है ।

2- कुछ कार्यो में पुरूष वर्ग प्रतिभा सम्पन्नता प्रदर्शित करते हैं और कुछ कार्यो में महिला वर्ग । लेकिन कुछ क्षेत्र समानता लिये हुए भी होते हैं ।

3- सहारिया जनजाति के बच्चों (लड़का/लड़की) में कम शैक्षिक उपलब्धि का विकास सार्थक सम्बन्ध स्थापित करता है ।

4- वंशानुक्रम और पर्यावरण शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं ।

5- प्रतिभाशाली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सिर्फ सामाजिक-आर्थिक स्तर से ही प्रभावित नहीं होती है बल्कि शैक्षिक अभिरूचि, अभिप्रेरणा, सहायक सामग्री तथा शिक्षा के उद्देश्य आदि से भी प्रभावित होती है ।

V- शोधकर्ता का मुख्य केन्द्र सहारिया जनजाति के प्रतिभा सम्पन्न बच्चों के लिए विकास के आयाम खोज़ना है, ताकि वे आधुनिक समाज के समतुल्य स्थान पा सकें और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपादेयता प्रकट कर सकें । इस हेतु भारत सरकार, समाज और शिक्षाप्रशासन को मिलकर कार्य करना होगा । अतः शोधकर्ता निम्न निष्कर्षो पर पहुँचता है :-

1- जनजातियों के लिये स्थायी निवास की व्यवस्था सरकार की तरफ से होनी चाहिये । जिससे वे अपना स्थायी सम्मान तथा जीवन में स्थायित्वता ला सकें ।

2- इनके व्यवसायों का विकास करने के लिए बहु-उददेश्यीय योजनाओं को बनाया जाय । इनके प्रशिक्षण की व्यवस्था निःशुल्क तथा भत्तों

के साथ होनी चाहिए। इनके बुजुर्ग स्त्री/पुरूषों के लिए सीनियर सिटीजन घरों को बनाया जाये ताकि वे सुख का अनुभव करते हुए भावी पीढ़ी में आत्म सम्मान तथा परिश्रम के प्रति लगाव का विकास कर सकें।

3- इनके समाज में फैली भ्रांतियों, आडम्बर (धार्मिक, सामाजिक तथा व्यवसाय) आदि को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तथा आंगनवाड़ी कार्यक्रमों द्वारा दूर किया जाये ताकि वे कार्य एवं व्यवहार की वैज्ञानिकता को जीवन में लागू कर सकें।

4- इनमें आर्थिक निर्भरता लाने के लिए अतिरिक्त समय का सदुपयोग वाले व्यवसायों को लागू किया जाये। दतिया सम्भाग में बीड़ी बनाना, क्राफ्ट, सिलाई, चटाई, मिट्टी तथा लकड़ी का कार्य तथा दूध दही आदि की सम्भावनायें अधिक हैं, जिनका विकास ग्राम विकास अधिकारियों को करना चाहिये।

5- इनके जीवन को ऊँचा उठाने के लिए मूल न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी चाहिए। मकान, कपड़ा, व्यवसाय, पानी, सड़क, सफाई, स्वास्थ्य के नियम, माताओं तथा बच्चों को पौष्टिक आहार तथा आर्थिक शैक्षिक मार्गदर्शन की नितांत आवश्यकता है।

6- सरकार द्वारा निराश्रित, परित्यक्ता, निर्धन तथा असामाजिक कार्यों में लिप्त महिलाओं तथा बच्चों के लिए नैतिक, शैक्षिक, व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिये ताकि वे सही रूप से जीवनयापन कर सकें।

शिक्षारत व्यक्तियों के लिए सुझाव

प्रत्येक शोध अध्ययन, एकत्रित तथ्य संकलन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर कुछ सुझाव शिक्षा सेवकों के लिए प्रस्तुत करता है। ये सुझाव शिक्षा

के विस्तृत क्षेत्र में फैले विभिन्न व्यक्तियों के लिये उपयोगी हो सकते हैं । अतः शोधकर्ता कुछ निष्कर्षों को प्रस्तुत करता है :-

1- सहारिया जनजाति का स्तर बहुत ही निम्न एवं हेय माना जाता है । इसको सरकार तथा शिक्षा प्रशासकों के द्वारा सम्मानजनक बनाया जाये, ताकि ये लोग भारतीयता के साथ घुल मिलकर विश्वास तथा सम्मान को विकसित कर सकें ।

2- "विद्यालय समाज का लघु रूप है (जॉन डी0बी0)" को आधार मानकर सामाजिक-आर्थिक स्तर, पर्यावरण तथा रहन-सहन के स्तर में पर्याप्त सुधार लाया जाये, ताकि ये लोग प्रत्येक क्षेत्र में अपना अच्छा समायोजन स्थापित करके शिक्षा तथा नौकरियों में उच्चता प्राप्त कर सकें ।

3- प्रौढ़ शिक्षा, समाज शिक्षा तथा सतत् शिक्षा के द्वारा इनके बच्चों में नागरिक गुणों का विकास किया जाये , जिससे ये लोग अपने सम्मान एवं गौरव का विकास करते हुए सुख से रहें ।

4- वर्तमान की संचार व्यवस्था तथा भौतिकवादी दौड़ का प्रभाव इस जनजाति पर भी पड़ा है । ये लोग भी अधिक से अधिक धन कमाने के लिये साम, दाम, दण्ड, भेद से इस क्षेत्र में कूद पड़े हैं । परिणामतः बच्चों के अंदर अपराधवृत्ति का विकास हो रहा है । इसको रोकने के लिए सरकार, सामाजिक संगठन तथा अन्य संस्थायें इनको आधुनिक सुविधायें प्रदान करे ताकि ये लोग स्वयं को संतुलित बनाकर राष्ट्र विकास में सहयोग दें ।

5- जनजातीय पर्यावरण तथा रहन-सहन में परिवर्तन लाया जाये ताकि वे प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता का प्रदर्शन करें । इनको परिवार नियोजन, सारभौम शिक्षा, व्यवसायों में प्रशिक्षण, स्वास्थ्य के नियमों आदि का सही ज्ञान देकर आधुनिक परिवेश में बदला जा सकता है ।

6- बौद्धिक प्रतिभा को जन्मजात माना गया है । इसका विकास 18 वर्ष तक होता है लेकिन इसमें तीव्रता लाने के लिए शिक्षा, ज्ञान और क्रिया की निरंतर आवश्यकता पड़ती है । मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया है कि समृद्ध पर्यावरण देने से बच्चों की बौद्धिक तीव्रता तथा कुशलता में वृद्धि की जा सकती है और विशेष प्रशिक्षण के द्वारा उनसे अच्छी उपलब्धि की आशा भी की जा सकती है । अतः सहारिया जनजाति के बच्चों की बौद्धिक प्रतिभा को विभिन्न क्षेत्रों में विकसित तथा प्रशिक्षित किया जाना चाहिये ।

7- सामाजिक - आर्थिक स्तर का प्रभाव बच्चों के शैक्षिक विकास तथा उपलब्धि पर सबसे अधिक पड़ता है "शाही" (1992) । उनके निष्कर्षों में पाया गया है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक प्रतिशत में रही है । आज़ हमारी सरकार जनजातियों के सामाजिक उन्नयन के लिए आर्थिक सहायता और विभिन्न क्षेत्रों में आरक्षण की व्यवस्था कर रही है, लेकिन ये कार्यक्रम सही प्रकार से उन तक नहीं पहुँचते हैं और न सही उनका प्रयोग ही होता है । अतः जनजातियों के पर्यावरण में जो सुधारात्मक उन्नतिहोनी चाहिये, वह नहीं हो पाती है । अतः उनमें शिक्षा के प्रति चैतन्यता, उत्साह, प्रेरणा और जागृति आदि का विकास पर्यावरण उन्नयन के द्वारा ही सम्भव हो सकता है । मनोवैज्ञानिकों ने प्रतिभा विकास और सामाजिक-आर्थिक स्तर को आपस में सम्बन्धित माना है । "आल्पोर्ट" महोदय ने माना है कि बच्चों की प्रतिभा के विकास में पर्यावरण महत्वपूर्ण कारक है , जो सामाजिक-आर्थिक समृद्धि की देन होता है । अतः प्रशासन को चाहिये कि सहारिया जनजाति के बच्चों में प्रतिष्ठा व सम्मान और आत्म संकेत की भावना का विकास करें ताकि वे अपने भविष्य को प्रतिभा के द्वारा सही दिशा दे सकें । अतः प्रतिभा विकास के लिये समृद्ध पर्यावरण बनाने और उसको स्थापित करने के लिये

हमें प्रत्यनशील रहना चाहिए ।

8- शोधकर्ता शिक्षा क्षेत्र से ही जुड़ा है । अतः उसकी अवमानना नहीं करना चाहिए, लेकिन नई पीढ़ी को ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करना उसका कर्तव्य हो जाता है । वर्तमान शिक्षा व्यवस्था स्वार्थी हो गयी है । इसका कारण छात्र-छात्रा, छात्र-अध्यापक, छात्र-प्रशासन तथा प्रशासन -अध्यापक के बीच में समायोजन का अभाव प्रतीत होता है । प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन का अध्ययन, छात्र उपलब्धि, संतोष, छात्र सम्बन्ध, विद्यालय पर्यावरण, शिक्षक भूमिका तथा व्यक्तित्व विकास आदि पाँच क्षेत्रों में किया गया है । ये पाँचों क्षेत्र बालक की प्रतिभा के उन्नयन को दिशा देते हैं और प्रभावित भी करते हैं । अतः शैक्षिक पर्यावरण ऐसा बनाया जाये जहाँ इन बच्चों का अच्छा, सकारात्मक और मधुर सह-सम्बन्ध सभी क्षेत्रों में हो सके । समायोजन के द्वारा व्यक्ति स्वयं की प्रतिभा को प्रदर्शित करता है, न कि दूसरे को प्रभावित करता है । अतः शिक्षा का क्षेत्र बच्चों में इस प्रकार की विशेषता विकसित करता है जिससे वे सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ स्वयं में परिवर्तन करते रहते हैं और प्रत्येक परिस्थितियों में सफलता उनके कदम चूमती है । इस प्रकार से शोधकर्ता ने सहारिया बच्चों के विकास के लिए शैक्षिक अभिवृत्ति छात्र सम्बन्ध, और शिक्षण कला आदि में समायोजन स्थापित करना उचित माना है ।

शोधार्थियों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्न चिन्हों को जन्म दिया है, जिनके लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है । इससे प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र में पूर्ण विकास होता है और आगे शोध को बढ़ाने का क्षेत्र स्पष्ट होता है । अतः भविष्य के शोधकर्ता निम्न तथ्यों को ध्यान में रखकर अपने अध्ययन को दिशा दे सकते हैं :-

1- सहारिया जनजाति स्वयं में परिपूर्ण है । इसकी तुलनात्मक व्याख्या अन्य जनजातियों के साथ की जा सकती है ।

2- प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र में वृद्धि करके सम्पूर्ण भारत में फैले सहारिया जनजाति के बच्चों का अध्ययन किया जा सकता है । जिसमें लिंग, आयु, क्षेत्र, स्तर, भौगोलिक विशेषताओं आदि को परिवर्ती के रूप में लेकर अध्ययन का विस्तार किया जा सकता है ।

3- प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिभाशाली बच्चों और अन्य जनजातियों के प्रतिभाशाली बच्चों की तुलना करके बौद्धिक क्षमता के नवीन अवसरों को खोज़ा जा सकता है ।

4- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्यापक की उपादेयता पर भी अध्ययन किया जा सकता है । विशेष रूप से जनजाति बच्चों के लिए " कैसा अध्यापक हो " , "उसको कैसा प्रशिक्षण दिया जाय " और वह "कैसे शिक्षण करे" जिससे जनजातीय बच्चों की प्रतिभा पलायन को रोका जा सके ताकि उनको शैक्षिक प्रगति तथा विकास की तत्परता प्रदान की जा सके ।

5- जनजातीय शिक्षा की प्रगति में संसाधनों की प्रमुख भूमिका रहती है । अतः वित्त को परिवर्ती के रूप में लेकर संसाधन प्रशासन पर शोध कार्य किया जा सकता है ।

6- जनजातीय क्षमता का सदुपयोग खेलकूद में भी किया जा सकता है । आज़ तीरंदाज़ी, हॉकी, एथलेटिक्स में इनके बच्चे अच्छी कुशलता का परिचय दे रहे हैं ।

7- जनजातियों को अपराध के साथ जोड़ा जा रहा है । शोध हेतु किशोरापराध तथा अपराध अभिवृत्ति के रूप में अध्ययन किया जा सकता है , ताकि इनका समायोजन तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर सही

बन सके ।

8- जनजाति के विकास के लिए सरकार की भूमिका का संसाधनों के रूप में अध्ययन किया जा सकता है ,ताकि इनके विकास में शैक्षिक अपव्यय तथा अवरोधन को समाप्त किया जा सके ।

14. Crombach, L.J., Coefficient of Alfa and the International Structure of Tests, Psychometrika, Vol.16, 1951.

15. cronbach, L.J.: Essential of Psychological Testing, New York, Harper and Row, 1984.

16. Danielson, C.L.: special classes for superior children in a Far Western City, Natel Prin. 1940.

17. Dehaan, R.F. and Havinghurst: Educating Gifted Children, The University of Chicago, 1962.

18. D'Lima, C.D, Differential Study of High and Low Achievement Syndromes of a Slected Group of creatively Gifted and Intellectually Gifted Children in the City of Bombay, Doctoral Dissertaion, Bombay University, 1979.

19. Deshmukh, M.N., Nurturing Talent, proceedings of the National seminar on Identification and Development of the Gifted Children at NIPCCD, New Delhi 1984.

20. Education of the Gifted and Talented, Report to Congress by the V.S. Commissioner of Educationn 1972.

21. Ebel, R.I.; Measuring Educational achievement, New Delhi-1`6, Prentice Hall of India, 1965.

22. Ebel, R.L,; The Relation of Item Discrimination to Test Reliability, Journal of Educational Measurement 1967.

23. Frederic, T.; Anatomy of Genius, A Guide to Understanding and Intelligent judging of Painting, New York, Dodd Mead and Co., 1948.

24. Feldhusen, J.F.; A conception of Giftedness,in R.J. Sterneberg and J.E. Davidson(Eds), Conception of Gifteness, New York Combridge University Press, 1986.

25. Freeman, F.S.; Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi 1962.

26. Gowan, J.C.; The use of Developmental Stage Theory in Helping Gifted Children Become Creative, Issues in Gifted Education, Los Angles, CA, N/S LTI on.Gifted and Talented 1979.

27. Goddard, H.H.; School Training of Gifted children, World BK, 1928.

28. Gallagher, J.J.; Teaching the Gifted children, Boston, Allyn and Bacon, 1975.

29. Gnanambal, T.S.; Identification of Gifted Children. Doctoral Dissertation, Madras University, 1982.

30. Guilford, J.P.; The nature of human Intelligence., New York, 1967, INC Addison-wesley Publishing company, 1975.

31. Gullickson, H.: Theory of Mental Tests, New York, John Wiley, 1950.

32. Guilford, J.P.; Psychometric Methods, New Delhi, Tata Mcgraw Hill, Publishing Co. Ltd. 1978.

33. Garrett, H.E; Statistics in Psychology and Education, Bombay, Vakils, feffer and Simons Ltd. 1986.

34. Guilfor, J.P.; Fundamental statistics in Psychology and Education McGraw-Hill International company 1978.

35. Hollingworth, L.S.; Children Above 180 IQ, stanford-Binet, World Book, 1942.

36. Hildreth, G.H.; Introduction to the Gifted, 1966.

37. Hollingworth, L.S.; Gifted Children. Their Nature and Nurture, Mcmillan, 1926.

38. Harper, A.E. Jr. and Misra, V.S., Research on Examinations in India, New Delhi, National Council of Educational Research and Training 1976.

39. Harper, A.E. Jr. and harper, E.S. Preparing objectives of Examinations, A Handbook for teachers, Students and examiners, New Delhi, Prentice hall of india, Pvt.Ltd. 1990.

40. harper, A.E. Jr.' Down with the Validity Coefficient, Journal of vocational and Educational Guidance, 1965.

41. Heck, A.O; Education of exceptional Children, Mcgraw hill Book Co. 1953.

42. Jalota, S.and Pandey, K.; Group Mental Ability Test (in Hindi) 4/51, Banaras, Lab. expt1. Psychol. B.H.U.

43. Joshi, M.C;Test of General Mental Abnility, Varanasi, Rupa psychological Centre, 1981.

44. Joshi, M.C; Manual of Directions and Revised Norms for Test of General Mental Ability (Intelligence) in Hindi, Varanasi, Rupa Psychological Centre 1981.

45. Khan, A.H.; Educating the Gifted ,New Delhi, Arya book Depot 1967.

46. Kushlmann, F.;A Revision of the Binet Simon Systems for Measuring the Intelligence of Children, Journal of PsychoAsthenics, Monograph Supplement, 1,1912.

47. Kumar, G.; Personality Characteristics, Syllabus Bound, Syllabus Free Orientation, Creativity and Level of Success of Intellectually Gifted Students, Unpublished.

48. Kumar,. G.; Cognitives Style, Risk Taking and Personality Characteristics of Creatively Gifted Students, unpublished, Hindu college, Moradabad, 1984.

49. Keeton, Anne; proces For Serial Recall Related to Socio Economic Status and Intelligence of Children in grade One Dissertation Abstracts International 1980.

50. Kerlinger, F.N; Foudnations of Behavioural Research, Delhi, Published by S.S. Chhabra for Surjeet Publications, 1978.

51. Linderman, R.H.; Educatgional Measurement, Bombay, D.P. Tataporevaluations Sons and Co.Priviated Ltd. 1971.

52. Lucito, L.S.; Gifted children in exceptional Children, L.M. Dunn, New York, Holt Rinehart and Winston, 1964.

53. Lamson, E.E; A study of young Gifted Children in Senior High School, Teachers College Contributions to Education. No. 424, New York, Bureau of Publiations, Teachers College Columbia University, 1930.

54. Marland, S.P; Education of the Gifted and Talented, Report to the congress of the United States by the U.S. Commissioner of Education and Background papers submitted to the U.S. Office of Education, Washington D.C. U.s. Government Printing Office, 1972.

55. Methews Morgan, J.L; relationship of Temperament and IQ to school Adjustment, Dissertation Abstracts International , A. Volume 45, Number 2, August 1984.

56. Mayer, J.B., Relationships of Fluid Intelligence and Academic Achievement with Socio-economic Status, Dissertation Abstract International, Vol.35, Number 8, feb. 1975.

57. Misra , V.S; A Critical Study of Eassay Type Examination, Unpublished Doctoral Dissertation, Gauhati University, 1970.

58. Micheals, W.J. and Karnes, M.R.; Measuring Educational Achievement, New York, McGraw-Hill Company, 1950

59. Newland, T.E; Essential Research Direction on the Gifted, J. .Excep.Child, 21, 1955.

60. Norris, Dorothy, E.; Programme for Gifted children in clevelands , N.E.A. Addreses and Proceeding, 1940.

61. Newland, T.E.' The Gifted in Sicio-educational Perspective; Englewood- Cliffs, NJ Prentice hall, 1979.

62. Osburn, W.J. and Rohan, B.J; Enriching the Curriculum for Gifted Children, Macmillan, 1931.

63. Passow, A.H., Goldenberg, M.L, Tannenbaum, A.J, French, W.; Planning for Talented Youth. Considerations for Public Schools New York, Teachers College Press 1955.

64. Portland Public School, The Gifted Child in Portland, Oregon, Portland Public School 1959.

65. Paqtel, P.I.; To Study Thirty Primary Pupils whose IQ is more than 120, Methodology of Educational Research Baroda Univesity, 1956.

66. Ralph, W.T; Meeting the Challenge of the Gifted, Elementary School Journal LVIII, November 1957 (As qutoted in Khan A.H.) New Delhi, Arya Book depot, 1967).

67. Renzulli, J.S; Waht Makes Giftedness ? Re-examining a Definition, PhiDelta Kappan, 60, 1978.

68. Sumption, M.R. and Evelyn, M.L,' Education of the Gifted , New York, Ronald Press Company, 1960 (as qutoed in Hildreth) Introduction to the Gifted McGraw-Hill, 1966.

69. Suri, S.P., A Study of differential Personality traints in Intellectually Superior, Average and Below Average Students, 1973 (as cited in 2nd Educational Survey of India).

70. Sampt, U.B., A Study of Characteristics and Problem of the Intellectually Gifted Children, Ph.D. Edu. Bombay U. 1984.

71. Savicky A; Teh relationship between self-concept and Achievement, Grade Placement, Absences, Sex, Socio-economic Status and Position Among Nominated Gifted Students Dissertation Abstracts International, Vo. 41, Number 3, 1980

72. Terman, L.M: and Others, Mental and Physical traints of a Thousand Gifted Children Cenetic Studies of genius, Vol.I Standford University Press, 1925.,

73. Tannenbaum, A.J.; Gifted Children, Psychological and Education Perspectives, New York, Macmillan, 1983.

74. Terman, L.M. and Merrill, M.A.; Measuring Intelligence, Boston, Houghton Mifflin, 1937.

75. Terman, L.M, The Measurement of Intelligence , Boston, Houghton Mifflin, 1916.

76. Taylor, C.W. How Many Types of Giftedness can your Programme Tolerate, Journal of Creative Behaviour, 1978.

77. Torrance, E.P. Guiding Creative Talent, New Delhi, Prentice Hall, 1969.

78. Thorndike, E.L : The Measurement of Intelligence, New York Bureau of Publiations, Tacher's College,Columbia University, 1927.

79. Wilhem, L.E., The Problem of Genus, New York, Macmillan Co. 1932.

80. Webster;s New World Distionary of the American Langauge (College ed.) New York, 1962.

81. Witty, P.A.; Education of the Gifted Chicago University, of Chicago Press 1958.

82. Wechsler, D. Wechsler Intelkigence scale for Childre, Manual, New York, The Psychological Corproation, 1949.

83. Wechsler, D,; The Measurement of adult Intelligence Baltimore, The williams and Wilkings Company, 1944.

84. Wolf, D.; America; Resources of specialised Talent, New York, Haper. 1954.

86. Walia, d.' The Gifted Adolescent and Their Concepts, Doctoral Dissertation, Punjab. U.

APPENDIX A.

८ ९०

"सामूहिक बुद्धि - परीक्षण" कक्षा ६ से ८ तक के लिये

—: द्वारा :—
बलवन्त शाही

निर्देशक :—
प्रो० विद्या सागर मिश्र
अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय,
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

जब तक कहा न जाय इस प्रश्न-पुस्तिका को न खोलिये।

इस प्रश्न - पुस्तिका में आपको किसी भी स्थान पर कुछ लिखना नहीं है, और न तो किसी भी स्थान पर चिन्ह लगाना है। सभी उत्तरों को उत्तर-पत्र पर ही लिखना है।

निर्देश—

यह एक साधारण मानसिक योग्यता परीक्षा है। समय की गणना तब से की जायेगी जब आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने को कहा जायेगा। परीक्षा के आरम्भ होने से पहले ही, इसमें दिये सभी प्रकार के प्रश्नों को और उनके उत्तर लिखने के नियमों को समझ लीजिए। उदाहरण के प्रश्न इस पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर दिये गये हैं, उन्हें आप ध्यान से पढ़िये। प्रत्येक प्रश्न के कुछ सम्भव उत्तर अ, ब, स और द लिखे हुए हैं। इन दिए हुए उत्तरों में से आपको सबसे सही एक उत्तर को चुनना है, और इसके बाद उस उत्तर के क्रम को उत्तर - पत्र पर उस प्रश्न के क्रम के खाने में लिखना है। इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न का उत्तर "अक्षर" में ही होगा; अर्थात् शब्दों में कुछ भी नहीं लिखना है।

प्रत्येक प्रश्न का एक ही शुद्ध उत्तर है और प्रत्येक शुद्ध उत्तर एक अंक का है। समय अधिक नहीं है तथा सभी प्रश्नों का उत्तर बहुत कम विद्यार्थी दे पाते हैं। अतः आपको अत्यधिक शीघ्रता से कार्य करना चाहिए तथा अधिक से अधिक प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। यदि आपको कोई प्रश्न अधिक कठिन मालूम पड़े तो उसे सोचने में अधिक समय नष्ट न कीजिए। उसे छोड़ कर अगले प्रश्नों के उत्तर दीजिए। यदि अन्त में समय बचे तो छूटे हुए प्रश्नों को कीजिए और अपने उत्तरों को दोहरा लीजिए।

ध्यान रखिए कि इस प्रश्न-पुस्तिका में आपको कुछ भी लिखना नहीं है और न इस पर किसी प्रकार का चिन्ह ही लगाना है। यदि आपको कोई बात समझ में न आई हो तो हाथ उठाकर पूछ लीजिये। परीक्षा प्रारंभ होने के बाद आपके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जायेगा।

१– अध्यापक : ब्लैक बोर्ड :: छात्र : ...... ?
अ- पुस्तक ब- कलम स- उत्तर पुस्तिका द- पेंसिल

२– गरीब का अर्थ है—
अ- दुःखी ब- ऋणी स- कमजोर द- निर्धन

३– निद्रा का उल्टा है—
अ- अचेतन ब- नींद सुषुप्त द- जागरण

४– शिक्षक दिवस किस तिथि को मनाया जाता है ?
अ- १५ अगस्त ब- ५ सितम्बर स- २ अक्टूबर
द- १४ नवम्बर

५– "गृह-युद्ध" का अभिप्राय है—
अ- वह युद्ध जो दो देशों के मध्य लड़ा जाता है।
ब- वह युद्ध जो दो से अधिक देशों के मध्य होता है।
स- वह युद्ध जिसमें एक ही सम्प्रदाय के लोग आपस में संघर्ष करने लगते हैं।
द- वह युद्ध जिसमें एक ही देश के नागरिक आपस में संघर्ष करने लगते हैं।

६– "सिर मुड़ाते ओले पड़ना" का अभिप्राय है—
अ- सिर मुड़ाते ही उस पर ओले गिरना।
ब- ओलों से सिर की रक्षा करना।
स- सिर में चोट लगना।
द- कार्य प्रारम्भ होते ही उसमें विघ्न पड़ना।

७– यदि राकेश अपने सिर के बल सीधा खड़ा होता है और उसका चेहरा उत्तर की ओर है तो उसका दहिना हाथ किस दिशा में होगा ?
अ- उत्तर ब- दक्षिण स- पूर्व द- पश्चिम

८– ६, ६, १२, १५, १८, ... की शृंखला में अगली संख्या होगी—
अ- २२ ब- २४ स- २१ द- २७

९– विद्यालय में निम्न में से किसका होना सबसे आवश्यक है—
अ- अध्यापक ब- विद्यार्थी स- कुर्सी द- चाक

१०– कथन: —
(१) सभी लड़के सुन्दर हैं।
(२) सभी सुन्दर अच्छे लगते हैं।
निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?
निष्कर्ष:—
अ- सभी लड़के अच्छे लगते हैं।
ब- कुछ लड़के अच्छे लगते हैं।
स- कुछ अच्छे लड़के हैं।
द- सभी सुन्दर अच्छे नहीं हैं।

११- एक थैले में ८ लाल, ७ हरी और ५ नीली गेंदें हैं। कम से कम कितनी गेंदें थैले में से निकाली जाये कि बिना दुबारा थैले में डाले प्रत्येक रंग की एक गेंद अवश्य मिल जाय।
अ- ११, ब- १३ स- १४ द- १६

१२– निम्न में से कौन एक शब्द अन्य तीन शब्दों से भिन्न है ?
अ- लीची ब- गेंदा स- चमेली द- कमल

१३– प्लेटिनम का चाँदी से अधिक मूल्य है, क्योंकि—
अ- यह अधिक सफ़ेद है।
ब- यह दुर्लभ है।
स- यह अधिक भारी है।
द- यह अधिक कठोर है।

१४– कथन:—
एक वृद्ध व्यक्ति ने शिकायत की वह अब पूर्व की भाँति पार्क का एक चक्कर नहीं लगा सकता है। वह मात्र पार्क के चारों ओर की आधी दूरी ही तक जाकर पुनः वापिस आ सकता है।
निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?
निष्कर्ष:—
अ- दोनों प्रकार से दूरी समान है।
ब- वृद्ध व्यक्ति आलसी हो गया था।
स- वृद्ध व्यक्ति दृढ़ विचारों के नहीं होते हैं।
द- पार्क में टहलने की अपेक्षा ग्रामीण अंचलों में टहलना अच्छा है।

१५– मछली : जल :: ऊँट : ...... ?
अ- मैदान ब- रेगिस्तान स- पहाड़ द- वन

१६- नदी का अर्थ है—

अ- सरोवर ब- सागर स- सरिता द- झील

१७- निम्न में से कोई चार किसी दृष्टि से समान हैं और इसलिए उनका एक समूह है। उनमें से वह कौन सा है जो उस समूह से भिन्न है ?

अ- नगर ब- घर स- कस्बा द- महानगर

१८- "योगी" का उल्टा है—

अ- वियोगी ब- नियोगी स- भोगी द- लालची

१९- "आस्तिक" का अभिप्राय होता है—

अ- ईश्वर में विश्वास करने वाला।

ब- ईश्वर में विश्वास न करने वाला।

स- मूर्ति-पूजा में विश्वास न करने वाला।

द- निर्गुण ब्रह्म में विश्वास करने वाला।

२०- "पेनाल्टी स्ट्रोक" का प्रयोग किस खेल में किया जाता है ?

अ- कबड्डी में ब- वालीबाल में

स- फुटबाल में द- हाकी में

२१- (क) १ और ३ मिलकर ४ हुए अर्थात् =२×२

(ख) १ और ३ तथा ५ मिलकर ९ हुए अर्थात् =३×३

(ग) १ और ३ तथा ५ और ७ मिलकर १६ हुए अर्थात्—

अ- ८×२ ब- १०+६ स- ४×४ द- २×२×४

२२- दो पुस्तकों की कीमत रु० १०.०० है तो रु० ४०.०० में कितनी पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं ?

अ- ८ ब- ५ स- १२ द- १०

२३- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- शब्दकोष ब- पत्रिका स- पुस्तक द- पुस्तकालय

२४- निम्न में से कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- चना ब- मटर स- मूंग द- मक्का

२५- जनवरी : मार्च :: रविवार : ..... ?

अ-सोमवार ब-मंगलवार स-बुधवार द-शनिवार

२६- "कनक" का अर्थ है—

अ- सोना ब- चाँदी स- लोहा द- ताँबा

२७- "उदार" का विलोम है ?

अ- उपकार ब- परमार्थ स- संकीर्ण द- कृपण

२८- निम्न में से कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- कमीज ब- पायजामा स- फ्राक द- कपड़ा

२९- एक पुस्तक में १०० पृष्ठ हैं। पुस्तक का ९०वाँ पृष्ठ अन्त से गिनने पर कौन सा पृष्ठ होगा ?

अ- १०वाँ ब- १२वाँ स- ११वाँ द- ९वाँ

३०- P और Q एक-दूसरे के भाई हैं। R तथा S एक दूसरे की बहिने हैं। यदि P का पुत्र, S का भाई हो तो Q का R से क्या सम्बन्ध है ?

अ- पिता ब- भाई स- चाचा द- दादा

३१- एक घड़ी में ११ बजकर ३० मिनट का समय है। यदि सुइयों का स्थान इस प्रकार बदल दिया जाय कि जहाँ पहले बड़ी सुई थी, वहाँ अब छोटी सुई है और जहाँ पहले छोटी सुई थी, वहाँ अब बड़ी सुई है, तो बताओ अब घड़ी में क्या बजा है ?

अ- ८ बजकर ३० मिनट ब- ६ बजकर ५५ मिनट

स- ७.०० बजे द- ७ बजकर ३० मिनट

३२- आम से भरे हुए ५ पेटी का भार ५० कि० ग्राम है। प्रत्येक खाली पेटी का भार १.५ कि० ग्राम है तो कुल आम का भार क्या होगा ?

अ- ४३ कि० ग्राम ब- ४२.५ कि० ग्राम

स- ४४.६ कि० ग्राम द- ४५ कि० ग्राम

३३- चार सहेलियाँ एक वर्गाकार मेज़ के चारों ओर बैठी हैं। मीना, पद्मा के दाहिने ओर है, और बीना, कृष्णा के बाँयी ओर। बताओ निम्न में से कौन सी सहेलियाँ आमने - सामने बैठी हैं ?

अ- बीना और कृष्णा ब- कृष्णा और पद्मा

स- मीना और पद्मा द- बीना और पद्मा

३४- "खेत रहना" का अभिप्राय है—

अ- युद्ध - भूमि जवानों से खाली होना।

ब- खेत में कार्य करके विश्राम करना।

स- वीरगति को प्राप्त करना।

द- खेती की रक्षा करना।

३५- अच्छा : बुरा :: छत: .... ?

अ- दीवार ब- खम्भा स- फर्श द- खिड़की

३६- "नभचर" का अर्थ है—

अ- पृथ्वी पर चलने वाला प्राणी

ब- आकाश में चलने वाला प्राणी

स- जल में चलने वाला प्राणी

द- जल और स्थल पर चलने वाला प्राणी

३७- कथनः—

सीमा पर तैनात एक जवान अपने पिता के पास लिख रहा है कि यह पत्र मैं अपने एक हाथ में रिवाल्वर और दूसरे हाथ में बन्दूक लिये हुए लिख रहा हूँ। निम्न निष्कर्षों में कौन निष्कर्ष सही है ?

निष्कर्षः—

अ- रिवाल्वर हाथ से छूटकर गिर गयी हो।

ब- वह बन्दूक से पत्र नहीं लिख सकता।

स- सम्भवतः उसका पिता अशिक्षित था।

द- दोनों हाथ खाली न होने के कारण वह पत्र नहीं लिख सकता।

३८- "गाय" में हमेशा पाया जाता है—

अ- सींग ब- पूँछ स- दूध द- बाल

३९- कथनः

१- समस्त पुस्तकें, किताबें हैं।

२- कुछ किताबें, ग्रन्थ हैं। निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?

निष्कर्षः—

अ- सभी पुस्तकें, ग्रन्थ हैं। ब- कुछ पुस्तकें ग्रन्थ हैं।

स- सभी किताबें पुस्तक हैं। द- कुछ ग्रन्थ पुस्तकें हैं।

४०- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- मग ब- प्लेट स- गिलास द- बर्तन

४१- निर्णायक : खेल :: न्यायाधीश : .... ?

अ- न्यायालय ब- वकील स- गवाह द- मुकदमा

४२- निम्न में से कौन एक शब्द भिन्न है ?

अ- कंगन ब- चूड़ी स- अँगूठी द- पायल

४३- चिड़िया : हवाई जहाज :: मछली : .... ?

अ- तैरना ब- पानी स- जलयान द- नाविक

४४- "पंकज" का अर्थ है—

अ- शैवाल ब- जलकुम्भी स- सिंघाड़ा द- कमल

४५- "सुपुत्र" का उल्टा होता है—

अ- पुत्री ब- पुत्र स- अपुत्र द- कुपुत्र

४६- प्रारम्भ : अन्त :: सिर : ...... ?

अ- हाथ ब- कान स- नाक द- पैर

४७- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- यात्री ब- चालक स- कप्तान द- नाविक

४८- "गजानन" का अर्थ है—

अ- विष्णु ब- गणेश स- महेश द- इन्द्र

४९- "राग" का उल्टा है—

अ- अनुराग ब- विराग स- बिछोह द- वैराग्य

५०- कुछ कोयलें आकाश में इस प्रकार उड़ रहीं हैं कि एक कोयल के आगे दो कोयल, एक कोयल के पीछे दो कोयल, दो कोयलों के मध्य में एक कोयल है। कोयलों की संख्या कम से कम होगी ?

अ- ६ ब- ५ स- ८ द- १०

५१- २, ७, १४, २३, ३४ .... के क्रम में अगली संख्या होगी ?

अ- ४५ ब- ४७ स- ३६ द- ५०

५२- "कच्ची गोलियाँ खेलना" का अभिप्राय है—

अ- अनुभवहीन होना। ब- कम काम करना।

स- मिट्टी की गोलियाँ खेलना। द- गंदी आदत सीखना।

५३- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- शालीन ब- नम्र स- धार्मिक द- नागरिक

५४- कथनः—

प्रयाग रेलवे स्टेशन पर एक रेल दुर्घटना हुयी, समाचार-पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि यह एक सामान्य दुर्घटना थी, क्योंकि उसमें मात्र १५० लोगों की मृत्यु हुयी थी। निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?

निष्कर्षः—

अ- समाचार पत्रों का समाचार गलत था।

ब- यह भीषण दुर्घटना थी।

स- पत्रकारों को सही स्थिति की जानकारी नहीं दी गयी थी।

द- पुलिस ने तुरन्त कुछ शवों को छिपा दिया था।

५५- "सर्वव्यापी" का अर्थ है—

अ- जो पृथ्वी पर पाया जाता हो।

ब- जो समुद्र में पाया जाता है।

स- जो पहाड़ों पर पाया जाता है।

द- जो सभी स्थानों पर पाया जाता है।

५६- आदमी : हाथ :: हाथी : ... ... ?

अ- पैर ब- पूँछ स- सूँड़ द- दाँत

५७- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों में भिन्न है ?

अ- लखनऊ ब- भारत स- कानपुर द- पटना

५८- "अश्व" का अर्थ है —

अ- हाथी ब- ऊँट स- घोड़ा द- शेर

५९- "माननीय" का विलोम है—

अ आदरणीय ब- मान्नीय स- अपमान द- अवमानना

६०- किसी कूट भाषा में "Sau Pey Te" का अर्थ है "डॉक्टर विनोद कुमार"। Ting Pu Sau का अर्थ "सतीश है डॉक्टर"। Ping Pong Ting का अर्थ है "राम और सतीश"। इस कूट भाषा में "है" का अर्थ क्या है ?

अ- Sau ब- Pey स- Pu द- Ting

कथनः—

राम, श्याम, पंकज, नीरज और सुरेश एक ही मकान में रहते हैं। राम की आयु, श्याम की आयु की दुगुनी है किन्तु सुरेश से वह दुगुना छोटा है। पंकज की आयु, राम की आयु की आधी है किन्तु नीरज से दुगुनी है। निम्न प्रश्न उपर्युक्त कथन पर आधारित है।

६१- सबसे कम आयु किसकी है ?

अ- राम ब- श्याम स- पंकज द- नीरज

६२- कौन व्यक्ति सबसे अधिक उम्र का जोड़ा बनाते हैं ?

अ- श्याम और नीरज ब- राम और सुरेश

स- पंकज और नीरज द- श्याम और पंकज

६३- कौन से व्यक्ति समान आयु का जोड़ा बनाते हैं ?

अ- पंकज और सुरेश ब- राम और नीरज

स- श्याम और पंकज द- राम और पंकज

६४- यदि $\frac{FE}{CD} = \frac{६५}{३४}$

तो $\frac{BC}{ED} = \ldots\ldots\ldots ?$

अ- $\frac{४५}{२३}$ ब- $\frac{२३}{५४}$ स- $\frac{३४}{५६}$ द- $\frac{४३}{४६}$

६५- "आकाश - पाताल एक करना" का अभिप्राय है—

अ- जल एवं नभ सीमा का अतिक्रमण करना।

ब- आकाश-मार्ग और जल-मार्ग से यात्रा करना।

स- कठिन प्रयत्न करना।

द- कल्पना करना।

६६- कथनः—

एक निर्धन पिता ने अपने अति मेधावी छात्र के प्रवेश के लिए एक अनाथालय विद्यालय में आवेदन पत्र दिया। प्रधानाचार्य ने उसके आवेदन पत्र को निरस्त कर दिया। निर्धन पिता ने इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों से की। निम्न निष्कर्षों में सही निष्कर्ष कौन है ?

निष्कर्षः—

अ- प्रधानाचार्य की कार्यवाही अनुचित थी।

ब- प्रधानाचार्य की कार्यवाही उचित थी।

स- निर्धन पिता की शिकायत उच्च अधिकारियों से अनुचित थी।

द- निर्धन पिता की शिकायत उचित थी।

६७- पौधा : पेड़ :: कन्या : ... ?

अ- स्त्री ब- पत्नी स- माता द- सहेली

६८- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- बाली ब- नथुनी स- झुमका द- छड़ा

६९- "मन्दाकिनी" का अर्थ है—

अ- गोदावरी ब- महानदी स- यमुना द- भागीरथी

७०- किसी कूट भाषा में ५२६ का अर्थ है—"आसमान नीला है"। २४ का अर्थ है—"नीला रंग"। ४३६ का अर्थ है—"रंग विनोद है"। बताइये उस भाषा में निम्न में से कौन से अंक का अर्थ विनोद होगा ?

अ- २ ब- ३ स- ४ द- ५

७१- पण्डित का विलोम है—

अ- शुद्र ब- वैश्य स- मूर्ख द- क्षत्रिय

७२- एक बस दुर्घटना में कुछ व्यक्तियों के हाथ टूट गये। अस्पताल में पचीस हाथों पर पट्टियाँ बाँधी गयीं। यदि घायलों में से अधिकांश के दोनों हाथों में चोटे लगी हों तो बताइये कि इस दुर्घटना में कितने लोगों के हाथ टूट गये थे।

अ- २० ब- १५ स- १३ द- १६

७३- ३, ६, १०, २०, २४, ४८, ५२ ... की शृंखला में क्रमानुसार कौन सी अगली संख्या होगी ?

अ- १०४ ब- १०० स- ९६ द- १०२

७४- "गुलाब" के पौधे में हमेशा नहीं पाया जाता है ?

अ- मूल ब- शाखा स- फूल द- कांटा

७५- कथन:—

१- मनीष एक खिलाड़ी है।

२- सभी खिलाड़ी लम्बे होते हैं। निम्न निष्कर्षों में से सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?

निष्कर्ष:—

अ- सभी लम्बे खिलाड़ी होते हैं।

ब- मनीष लम्बा नहीं है।

स- लम्बे लोग खिलाड़ी नहीं होते हैं।

द- मनीष लम्बा है।

७६- निम्न में से कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- ऊँचा ब- नीचा स- छोटा द- भारी

कथन:—

पाँच व्यक्ति एक गोले में इस प्रकार बैठे हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति, कमजोर और गोरे व्यक्ति के मध्य में बैठा है। गोरे व्यक्ति के बाँयी ओर लम्बा व्यक्ति, तथा मोटा व्यक्ति कमजोर व्यक्ति की दाँयी ओर बैठा है।

निम्न प्रश्न उपर्युक्त कथन पर है।

७७- लम्बा व्यक्ति किस-किस के बीच में बैठा है ?

अ- कमजोर और गोरे के बीच।

ब- कमजोर और मोटे के बीच।

स- बुद्धिमान और मोटे के बीच।

द- गोरे और मोटे के बीच।

७८- कमजोर व्यक्ति के बाँयी ओर के व्यक्ति की क्या विशेषता है ?

अ- गोरा ब- बुद्धिमान स- मोटा द- लम्बा

७९- निम्न में से कौन सा व्यक्ति कमजोर और लम्बे व्यक्तियों के बीच में बैठा है ?

अ- लम्बा व्यक्ति ब- गोरा व्यक्ति

स- मोटा व्यक्ति द- लम्बा व्यक्ति बुद्धिमान

८०- मोटा व्यक्ति किस व्यक्ति के बाँयी ओर बैठा है ?

अ- गोरे व्यक्ति के। ब- बुद्धिमान व्यक्ति के।

स- कमजोर व्यक्ति के। द- लम्बे व्यक्ति के।

८१- यदि गोरा व्यक्ति तथा मोटा व्यक्ति परस्पर अपने स्थान बदल लें और इसी प्रकार लम्बा और कमजोर व्यक्ति परस्पर स्थान बदल लें तो कमजोर व्यक्ति के बाँयी ओर कौन होगा ?

अ- मोटा व्यक्ति ब- बुद्धिमान व्यक्ति

स- गोरा व्यक्ति द- लम्बा व्यक्ति

८२- एक मकान का दरवाजा उत्तर की ओर है। उसमें घुसते ही बाँयें हाथ एक कमरा है। कमरे में घुसते ही दायें हाथ एक खिड़की है। उस खिड़की की ओर मुख करके खड़े होने पर मेरा मुख किस दिशा में होगा ?

अ- उत्तर ब- दक्षिण स- पूर्व द- पश्चिम

८३- "रन आउट" का प्रयोग किस खेल में किया जाता है ?

अ- पोलो में ब- कैरमबोर्ड में

स- क्रिकेट में द- बास्केटबाल में

८४- कथनः—

गोरखपुर और आजमगढ़ के बीच की दूरी ९० किमी० है। दोनों नगरों के बीच दोनों ओर से एक ही समय ६ बजे प्रातः से प्रति घण्टा एक-एक बस रवाना होती है जो अपनी यात्रा दो घण्टे में समाप्त कर लेती है। निम्न प्रश्न उपर्युक्त कथन पर आधारित है—

गोरखपुर से ८ बजे चलने वाली बस, आजमगढ़ से ९ बजे चलने वाली बस से कितने बजे मिलेगी ?

अ- ९ बजकर १५ मिनट पर

ब- ९ बजकर ३० मिनट पर

स- ९ बजकर २० मिनट पर

द- ९ बजकर ४० मिनट पर

८५- कथनः —

इस वर्ष पूर्वी उत्तर प्रदेश में भीषण बाढ़ आयी थी। खरीफ की ७५ प्रतिशत फसल नष्ट हो गयी। सरकार का कथन है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में खरीफ की फसल के उत्पादन में ५० प्रतिशत की वृद्धि हुयी है।

निम्न निष्कर्षों में से सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?

निष्कर्षः—

अ- बाढ़ नहीं आयी थी   ब- सामान्य बाढ़ थी

स- पैदावार कम हुयी थी   द- सरकार का कथन असत्य था।

८६- मनुष्य : मुख :: पक्षी:............?

अ- नाक   ब- पर   स- पंख   चोंच

८७- निम्न अंग्रेजी के अक्षर-समूहों में कौन एक अक्षर-समूह असमान है—

अ- DDE   ब- QRR   स-HHI   द- LLM

८८- "वसुन्धरा" का अर्थ है—

अ- आकाश   ब- पृथ्वी   स- पाताल   द- स्वर्ग

८९- बालक का उल्टा है—

अ- लड़की   ब- कन्या   स- पुत्री   द- दुहिता

९०- पत्र : टेलीग्राम :: रेलगाड़ी : ......?

अ- कार   ब- बस   स- ट्रक   द- वायुयान

९१- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है

अ- जीह्वा   ब- नाक   स- जबड़ा   द- दाँत

९२- रजनीश का अर्थ है—

अ- ध्रुवतारा   ब- पुच्छलतारा   स- शुक्र   द- चन्द्रमा

९३- नीरस का उल्टा है—

अ- शुष्क   ब- मधुर   स- सरस   द- सारस

कथनः—

पाँच स्वीकृत बैंकों A, B, C, D और E की शाखाएँ उ० प्र० के प्रमुख नगरों में निम्न प्रकार हैं—

(क) A, B और C लखनऊ और कानपुर में हैं।

(ख) A, B और E लखनऊ और गोरखपुर में हैं।

(ग) B, C और D इलाहाबाद और कानपुर में हैं।

(घ) A, E और D गोरखपुर और वाराणसी में हैं

(ङ) C, E और D इलाहाबाद और वाराणसी में हैं

निम्न प्रश्न उपर्युक्त कथनों पर आधारित हैं।

९४- किस बैंक की शाखा लखनऊ में है परन्तु इलाहाबाद में नहीं।

अ- E   ब- A   स- B   द- C

९५- वाराणसी में किस बैंक की शाखा नहीं है ?

अ- D   ब- E   स- C   द- B

९६- लखनऊ में किस बैंक की शाखा नहीं है ?

अ- D   ब- E   स- C   द- B

९७- किस बैंक की शाखा इलाहाबाद तथा लखनऊ में है परन्तु कानपुर में नहीं है ?

अ- A   ब- D   स- C   द- E

९८- वह बैंक जिसकी शाखा सभी जगह है परन्तु गोरखपुर में नहीं है ?

अ- A   ब- B   स- C   द- D

९९- बैंक B की शाखा किस नगर में नहीं है ?

अ-लखनऊ   ब-कानपुर   स-गोरखपुर   द-वाराणसी

१००- वह संख्या बताओ जिसमें ४ से भाग देने के बाद, उसमें २० जोड़ने पर ३४ की संख्या प्राप्त होती है—

अ- ६०   ब- ४०   स- ~~५६~~   द- ४५

५६

१०१- "घर फूंक तमाशा देखना"—का अभिप्राय है—
अ- पड़ोसी के घर को जला कर तमाशा देखना।
ब- तमाशा देखने के लिए अपना घर फूंकना।
स- अपने हानि का परवाह न करना।
द- धन सम्पत्ति बर्बाद करके मनोरंजन करना।

१०२- खेल में निम्न में से किसका होना अति आवश्यक है ?
अ- निर्णायक ब- सीटी स- खिलाड़ी द- दर्शक

१०३- कथनः—
(१) कुछ व्यक्ति समझदार होते हैं।
(२) कुछ व्यक्ति अमीर होते हैं।
निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है ?
निष्कर्षः—
अ- सभी व्यक्ति समझदार नहीं हैं किन्तु अमीर हैं।
ब- कुछ समझदार व्यक्ति अमीर हैं।
स- कुछ व्यक्ति न तो समझदार हैं और न अमीर हैं।
द- सभी या तो समझदार हैं या अमीर हैं।

१०४- सन्तान : माता :: पृथ्वी : ...... ?
अ- बहिन ब- कन्या स- सूर्य द- चन्द्रमा

१०५- निम्न शब्दों के जोड़े में कौन एक असमान शब्दों का जोड़ा है ?
अ- अम्बर - आकाश ब- गौरी - पार्वती
स- गृह - निकेतन द- आय - आयु

१०६- "वार" का अर्थ है—
अ- रात्रि ब- दिन स- माह द- सप्ताह

१०७- जीवन का उल्टा है—
अ- मरण ब- जीव स- मोक्ष द- आमरण

१०८- भारत के संविधान निर्माताओं में सबसे प्रमुख कौन है ?
अ- जवाहर लाल नेहरू ब- गोविन्द वल्लभ पंत
स- भीमराव अम्बेडकर द- डा० सम्पूर्णानन्द

१०९- एक व्यक्ति के पास तीन झोले हैं। पहले झोले में अलग - अलग रंग के आठ रुमाल, दूसरे झोले में अलग - अलग सात रंग के सात रुमाल हैं और तीसरे झोले में अलग - अलग छः रंग के ६ रुमाल हैं। तीन रंग ऐसे हैं जो केवल पहले और दूसरे झोले में एक समान हैं। दो रंग ऐसे हैं जो पहले और तीसरे झोले में एक समान हैं। बताओ तीनों झोलों में कुल मिलाकर कितने प्रकार के रंग की रुमालें हैं ?
अ- १० ब- १८ स- १६ द- २१

११०- १४ २५ ३६ ४७ ५६ ६९ की श्रृंखला में कौन सी संख्या त्रुटिपूर्ण है ?
अ- ६ ब- ८ स- ५ द- ३

१११- कथनः—
(१) कुछ कलमें, बालपेन हैं।
(२) कुछ कलमें, इंकपेन हैं।
निम्न निष्कर्षों में कौन निष्कर्ष सबसे सही है ?
निष्कर्षः—
अ- सभी कलमें जो इंकपेन नहीं है, बालपेन हैं।
ब- कुछ बालपेन, इंकपेन हैं।
स- कुछ कलमें ऐसी भी हैं जो न तो बालपेन हैं और न इंकपेन हैं।
द- सभी कलमें या तो बालपेन हैं अथवा इंकपेन हैं।

११२- न्यायालय : अपराध :: रसोईघर : ...... ?
अ- स्टोव ब- लकड़ी स- रसोइया द- भोजन

११३- जल : महासागर :: वायु : ...... ?
अ- पृथ्वी ब- चन्द्रमा स- समुद्र द- वायुमण्डल

११४- निम्न में कौन एक शब्द भिन्न है ?
अ- लड़का ब- लड़की स- पुरुष द- सिपाही

११५- "कानन" का अर्थ है—
अ- मैदान ब- बाग स- वन द- रेगिस्तान

११६- स्वदेश का उल्टा है—
अ- परराष्ट्र ब- अन्तर्राज्य स- स्वराष्ट्र द- अन्तर्राष्ट्र

११७- कथनः—

रामू के घर वालों का विचार है कि वह व्यक्तिगत छात्र के रूप में इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सकता। संस्थागत छात्र के रूप में उत्तीर्ण करने का प्रश्न ही नहीं उठता है किन्तु रामू का इण्टर की परीक्षा में बैठना निश्चित है।

निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है?

निष्कर्षः—

अ- रामू व्यक्तिगत छात्र के रूप में परीक्षा में बैठेगा और वह उत्तीर्ण होगा।

ब- रामू संस्थागत छात्र के रूप में बैठेगा और अनुत्तीर्ण होगा।

स- रामू व्यक्तिगत अथवा संस्थागत छात्र के रूप में परीक्षा में सम्मिलित नहीं होगा।

द- रामू के बारे में उसके परिवार वालों का विचार गलत था।

११८- उमा अपने मकान से ६ किमी० पश्चिम गया। फिर वह वहाँ से ४ किमी० सीधे उत्तर की ओर गया। पुनः वह वहाँ से सीधे ५ किमी० पूर्व की ओर गया। फिर वह वहाँ से ४ किमी० दक्षिण की ओर गया। ज्ञात करो कि उमा अपने घर से कितनी दूरी पर और किस दिशा में था?

अ- ४ किमी० पूर्व ब- २ किमी० उत्तर - पूर्व

स- ३ किमी० उत्तर पश्चिम द- १ किमी पश्चिम

११९- ०, १, ३, ६, १०, १६, २१, २८, की श्रृंखला में कौन सी एक संख्या त्रुटिपूर्ण है—

अ- ६ ब- १० स- १६ द- २८

१२०- $\frac{१}{५}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{६}{११}$, $\frac{१०}{१९}$, $\frac{१५}{३५}$, ... के क्रम में अगली संख्या कौन होगी?

अ- $\frac{३३}{४०}$ ब- $\frac{२५}{६०}$ स- $\frac{२१}{६७}$ द- $\frac{२८}{६५}$

१२१- २, ५, ६, १६, ३७, ... के क्रम में अगली संख्या क्या होगी?

अ- ८५ ब- ८० स- ७५ द- ५६

१२२- कथन—

१- सुकरात मर गये। २- महात्मागाँधी मर गये।

३- जवाहरलाल नेहरू मर गये। ४- ये सभी मनुष्य थे।

निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है?

निष्कर्ष—

अ- सभी मनुष्य मरणशील हैं।

ब- कुछ मनुष्य मरणशील नहीं हैं।

स- कुछ मनुष्य मरणशील हैं।

द- कुछ मनुष्य मरणशील हैं और कुछ नहीं

१२३- कथन—

१- सभी पक्षी में चोंच होता है।

२- मेरी कलम, जिससे मैं लिखता हूँ, एक पक्षी है।

३- श्यामा की तलवार भी एक पक्षी है।

निम्न निष्कर्षों में सबसे सही निष्कर्ष कौन है।

निष्कर्ष—

अ- मेरी कलम में चोंच है किन्तु श्यामा की तलवार में नहीं।

ब- श्यामा की तलवार में चोंच है, मेरी कलम में नहीं।

स- न तो श्यामा की तलवार में चोंच है और न मेरी कलम में।

द- मेरी कलम और श्यामा की तलवार दोनों में ही चोंच हैं।

१२४ परिवार में सदैव होता है—

अ- बच्चे ब- पुरुष स- स्त्रियाँ द- सदस्य

१२५- एक आलमारी में २० पुस्तकें एक दूसरे के ऊपर रखी हुयी हैं। ऊपर से रखी हुयी ५ वीं पुस्तक नीचे से गिनने में कौन होगी?

अ- १५वीं ब- १७वीं स- १६वीं द- १४वीं

१२६-
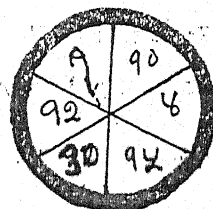
इस गोले के रिक्त खानों में कौन सी संख्या होगी?

अ- ४५ ब- ३०

स- २० द- १८

१२७- $४५ \times ३.५ \times ० \times \frac{५}{९} = ?$ का मान होगा ?

अ- $\frac{१५}{७}$ ब- $\frac{१५}{९}$ स- $\frac{५}{८}$ द- ०

१२८- $\frac{\sqrt{१९६}}{\sqrt{२५} + \sqrt{८१}} = ?$ का मान होगा ?

अ- ३ ब- २ स- १ द- ४

१२९- $\frac{२५.०२५}{.०२५}$ का मान हो ?

अ- १.०१ ब- १०.१ स- १००१.०० द- १०१.००

१३०-
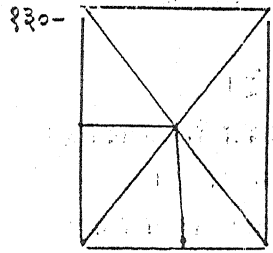
इस आकृति में त्रिभुजों की संख्या होगी ?

अ- ६ ब- ८ स- १२ द- १६

निर्देश:—निम्न प्रश्न अक्षर/आकृति श्रेणियों पर आधारित है। प्रत्येक प्रश्न में कुछ अक्षर/आकृति छूट गये हैं तथा उनके स्थान पर (—) लिखा है। ये छूटे अक्षर/आकृति उचित क्रम में दिए हुए चार विकल्पों में से एक है।

१३१- a b — c — ca — ac — c

अ- b a a b ब- a a b c

स- a b b b द- a b a b

१३२- a — d — c — ac — dc — acd

अ- d d c a c ब- c a d d c

स- a d d d c द- c d c d c

१३३- O—△—□ □—O △—□—□ ▭

विकल्प:—

अ- △ □ ▭ △ □ ब- △ △ □ O ▭

स- △ △ □ □ O O द- △ □ □ ▭

१३४- —▭ △ □ O—△ □ O ▭—□ O ▭ △—

विकल्प:—

अ- □ △ O ▭ ब- O ▭ △ □

स- △ □ □ △ द- □ △ ▭ O

१३५- ab—ba—ab—b—b—bab

विकल्प:—

अ- aaaba ब- baaaa स- abaaa द- aaabb

१३६- R : ० :: Γ : ··· ?

अ- ०१ ब- ०४ स- ०० द- ०६

१३७- L : ३ :: Y : ··· ?

अ- २ ब- ४ स- ५ द- ६

१३८- निम्न में कौन एक शब्द अन्य शब्दों से भिन्न है ?

अ- मित्र ब- भाई स- चचेरा भाई द- चाचा

१३९- १२१, ६४, ११, ८, ··· ? के क्रम में अगली संख्या कौन होगी ?

अ- ४६ ब- ३६ स- ७ द- ५

१४०- ३, ७, १५, ३१, ··· ? के क्रम में अगली संख्या कौन सी होगी ?

अ- ६५ ब- ६३ स- ५० द- ४७

१४१- ५, १०, १८, २६, १७ की शृंखला में कौन संख्या त्रुटिपूर्ण है ?

अ- १० ब- १८ स- २६ द- १७

१४२- कथन:—

(क) प्रातः जल्दी उठने वाले रात को देर से नहीं सोते हैं।

(ख) जो व्यक्ति रात को देर से सोते हैं वे प्रातः जल्दी नहीं उठते हैं।

निष्कर्ष:—

अ- जो व्यक्ति रात को देर से सोते हैं वे प्रातः जल्दी उठते हैं।

ब- जो व्यक्ति रात को जल्दी सोते हैं, वे प्रातः देर से उठते हैं।

स- रात को जो जल्दी सोते हैं वे प्रातः जल्दी जागते हैं। और देर से सोने वाले प्रातः देर से जागते हैं।

द- प्रातः जल्दी उठने का रात को जल्दी या देर से सोने से कोई सम्बन्ध नहीं है।

कथनः—

कक्षा १० के विभिन्न वर्गों के राम, श्याम, उपेन्द्र, रवीन्द्र और महेश छात्र हैं। राम—विज्ञान, कला और गणित पढ़ता है। श्याम और उपेन्द्र—विज्ञान, गणित और जीव विज्ञान पढ़ते हैं। रवीन्द्र—कला, भूगोल और इतिहास पढ़ता है। महेश—गणित, भूगोल और इतिहास पढ़ता है।

निम्न प्रश्न उपर्युक्त कथन पर आधारित हैं।

१४३- कौन छात्र है जो कला तो पढ़ता है किन्तु गणित नहीं?
अ- राम ब- रवीन्द्र स- उपेन्द्र द- महेश

१४४- कौन छात्र है जो गणित तो पढ़ता है किन्तु विज्ञान नहीं?
अ- महेश ब- रवीन्द्र स- उपेन्द्र द- राम

१४५- कौन छात्र है जो विज्ञान और गणित तो पढ़ता है किन्तु जीव विज्ञान नहीं?
अ- श्याम ब- राम स- [illegible] द- महेश

१४६- कौन छात्र है जो गणित और इतिहास तो पढ़ता है किन्तु कला नहीं?
अ- महेश ब- रवीन्द्र स- उपेन्द्र द- राम

१४७- कौन छात्र है जो भूगोल और कला तो पढ़ता है किन्तु गणित नहीं?
अ- महेश ब- रवीन्द्र स- राम द- श्याम

१४८- कथनः—
(क) पेड़-पौधे, मानव-जाति को साँस के लिए पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन उत्पन्न करते हैं।
(ख) आक्सीजन, मानव-जाति के लिए परमावश्यक है।

निष्कर्षः—
अ- आक्सीजन केवल पेड़-पौधों से उत्पन्न होती है।
ब- पेड़-पौधे मानव-जाति के लिए परम आवश्यक है।
स- पेड़-पौधे केवल आक्सीजन उत्पन्न करते हैं।
द- मानव-जाति के लिए केवल आक्सीजन आवश्यक है।

१४९- कथनः—
(क) आम मीठा होता है।
(ख) सन्तरा मीठा होता है।
(ग) अंगुर मीठा होता है।
(घ) ये सभी फल हैं।

निष्कर्षः—
अ- कुछ फल मीठे होते हैं।
ब- कुछ फल मीठे नहीं होते हैं।
स- कुछ फल मीठे होते हैं और कुछ नहीं।
द- सभी फल मीठे होते हैं।

१५०- वह कौन सी संख्या है जिसका वर्ग करने पर १५० से ६ कम संख्या प्राप्त होती है?
अ- ११ ब- १२ स- १४ द- १५

१५१- ८, १२, १०, १६, १२, ... ? के क्रम में अगली संख्या क्या होगी?
अ- २६ ब- २० स- १८ द- १६

Scoring Key

APPENDIX [illegible]

शाब्दिक

प्र०	उ०	प्र०	उ०	प्र०	उ०	प्र०	उ०	प्र०	उ०	प्र०	उ०
1	स	31	ब	61	द	91	ब	121	स	151	ब
2	द	32	ब	62	ब	92	द	122	अ		
3	द	33	द	63	स	93	स	123	द		
4	ब	34	स	64	ब	94	ब	124	द		
5	द	35	स	65	स	95	द	125	स		
6	द	36	ब	66	ब	96	अ	126	अ		
7	स	37	द	67	अ	97	द	127	द		
8	स	38	द	68	द	98	स	128	स		
9	ब	39	ब	69	द	99	द	129	स		
10	अ	40	द	70	ब	100	स	130	स		
11	द	41	द	71	स	101	स	131	स		
12	अ	42	द	72	स	102	स	132	द		
13	ब	43	स	73	अ	103	ब	133	अ		
14	स	44	द	74	स	104	स	134	ब		
15	ब	45	द	75	द	105	द	135	स		
16	स	46	द	76	द	106	ब	136	ब		
17	ब	47	अ	77	द	107	अ	137	स		
18	स	48	ब	78	ब	108	स	138	अ		
19	अ	49	ब	79	स	109	स	139	द		
20	द	50	ब	80	द	110	ब	140	ब		
21	स	51	ब	81	स	111	ब	141	ब		
22	अ	52	अ	82	द	112	द	142	स		
23	द	53	द	83	स	113	द	143	ब		
24	द	54	ब	84	ब	114	द	144	अ		
25	ब	55	द	85	द	115	स	145	ब		
26	अ	56	स	86	द	116	अ	146	अ		
27	द	57	ब	87	ब	117	द	147	ब		
28	द	58	स	88	ब	118	द	148	ब		
29	स	59	ब	89	अ	119	स	149	द		
30	स	60	स	90	द	120	स	150	ब		
योग		योग		योग		योग		योग			

कुल योग (शाब्दिक)

सामूहिक बुद्धि - परीक्षण का उत्तर - पत्र

नाम .... कक्षा ...... स्कूल का |

जन्म तिथि ... दिनांक

शाब्दिक का उदाहरण

प्रश्न	उत्तर
1	द
2	
3	ब
4	द
5	स
6	द
7	
8	
9	
10	स
11	
12	अ

अशाब्दिक का उदाहरण

प्रश्न	उत्तर
1	स
2	द
3	द

शाब्दिक

प्र.	उ.	प्र.	उ.	प्र.	उ.	प्र.	उ.	प्र.	उ.	प्र.	उ.
1		31		61		91		121		151	
2		32		62		92		122			
3		33		63		93		123			
4		34		64		94		124			
5		35		65		95		125			
6		36		66		96		126			
7		37		67		97		127			
8		38		68		98		128			
9		39		69		99		129			
10		40		70		100		130			
11		41		71		101		131			
12		42		72		102		132			
13		43		73		103		133			
14		44		74		104		134			
15		45		75		105		135			
16		46		76		106		136			
17		47		77		107		137			
18		48		78		108		138			
19		49		79		109		139			
20		50		80		110		140			
21		51		81		111		141			
22		52		82		112		142			
23		53		83		113		143			
24		54		84		114		144			
25		55		85		115		145			
26		56		86		116		146			
27		57		87		117		147			
28		58		88		118		148			
29		59		89		119		149			

GYANENDRA P. SHRIVASTAVA

T. M. No. 458715

Consumable Booklet
of

S E S S
(Urban)

कृपया निम्न सूचनाएँ दीजिए—

नाम .... आयु .... यौन ....

कक्षा .... विभाग .... अनुक्रमांक ....

स्कूल/कॉलेज ....

घर का पता .... दिनांक ....

निर्देश

इस प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिए गए हैं जिनमें से केवल एक उत्तर को चुनकर आप उसके सामने वाले चौकोर घेरे (□) में गुणा का चिन्ह (×) लगा दें। यदि पिता न हों तो अपने अभिभावक या संरक्षक (guardian) के सम्बन्ध में सूचना दें।

Estd. 1971

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230, KACHERI GHAT, AGRA - 282 004

1. आपके पिता ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की है ? (उत्तीर्ण परीक्षा के आधार पर उत्तर दें)
   - [a] शोध (रिसर्च) डिग्री (Ph. D., D. Phil., D. Litt. आदि) ☐
   - [b] मैडिकल, इंजीनियरिंग आदि की टैक्नीकल डिग्री या स्नातकोत्तरीय डिग्री (M. A., M. Sc., M. Com. आदि) ☐
   - [c] स्नातकीय शिक्षा (B. A., B. Sc., B. Com. आदि) ☐
   - [d] इण्टरमीडिएट शिक्षा (I. A., I. Sc., I. Com. आदि) ☐
   - [e] हाई स्कूल (Metric, Higher Secondary, Pre-University आदि) ☐
   - [f] मिडिल स्कूल ☐
   - [g] प्राइमरी या अल्पशिक्षित ☐
   - [h] अशिक्षित या अनपढ़ ☐

2. आपके पिता का व्यवसाय या पेशा क्या है ?
   - [a] उच्च प्रशासनिक (गजेटेड) अधिकारी, लेक्चरर, रीडर, प्रोफेसर, प्रिंसीपल, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, समाचार-पत्र के सम्पादक, ऑडीटर, बैंक मैनेजर, विशिष्टता प्राप्त कलाकार, औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर, किसी फैक्टरी या फर्म के मालिक, अवैतनिक उच्च पदाधिकारी, वैतनिक राजनैतिक नेता (M. L. A., M. L. C., आदि) ☐
   - [b] मध्यवर्गीय प्रशासनिक (नौन-गजेटेड) अधिकारी, मध्य श्रेणी के वकील या डाक्टर, हाइ स्कूल या इंटरमीडिएट कालेज के अध्यापक, रिसर्च असिस्टेण्ट, प्रयोगशाला प्रदर्शक, कैमिस्ट, जूनियर इंजीनियर, कमीशन एजेण्ट्स, कलाकार, थोक विक्रेता या बड़े दुकानदार। ☐
   - [c] क्लर्क, टाइपिस्ट, एकाउण्टेण्ट, लेबोरेटरी असिस्टेण्ट, लेबोरेटरी टेक्नीशियन, प्राइमरी या मिडिल स्कूल के शिक्षक, स्टेशन मास्टर, गार्ड, टिकट-कलेक्टर, टी० टी०, संवाददाता, दुकान-सहायक (सैल्स-मैन) या छोटे दुकानदार, टेलीफोन या टेलीग्राफ ऑपरेटर, प्रूफ-रीडर, किसी फैक्टरी या खान के सुपरवाइजर, ड्राफ्टमैन या अन्य सरकारी तृतीय श्रेणी की नौकरी ☐
   - [d] मोटर-ड्राइवर, इंजन-ड्राइवर, पेण्टर, कम्पोजीटर, मैकेनिक, निपुण बढ़ई या राजमिस्त्री तथा अन्य कौशल के कार्य ☐
   - [e] कार्यालय का सेवक (चपरासी) पिउन या अन्य चतुर्थ श्रेणी की नौकरी, फैक्टरी का मजदूर, खोमचा वाले या चलता-फिरता दुकानदार, खलासी, कृषि-कार्य या अन्य मामूली कौशल के कार्य ☐
   - [f] पहरेदार, दरवान, घरेलू-नौकर, कुली आदि ☐
   - [g] बेरोजगार–दूसरों पर आश्रित ☐

3. आपके पिता की आय (कुल आमदनी प्रति माह कितनी है ? (अन्य स्रोतों से प्राप्त आय को भी सम्मिलित करें)

[a] 1700 रु० से अधिक ☐
[b] 1000 रु० से 1700 रु० ☐
[c] 500 रु० से 999 रु० ☐
[d] 200 रु० से 499 रु० ☐
[e] 100 रु० से 199 रु० ☐
[f] 100 रु० से कम ☐

4. क्या आपके घर में अखबार (समाचार-पत्र) लिया जाता है ?

[a] प्रतिदिन ☐
[b] कभी-कभी ☐
[c] कभी नहीं ☐

5. क्या आपके घर में पत्रिकाएँ (मैगजीन्स) ली जाती हैं ? यदि प्रति सप्ताह और प्रति माह दोनों लागू हों तो प्रति सप्ताह का ही उल्लेख करें।

[a] प्रति सप्ताह ☐
[b] प्रति माह ☐
[c] कभी-कभी ☐
[d] कभी नहीं ☐

6. क्या आपको भोजन, जलपान के अतिरिक्त प्रति माह कुछ जेब खर्च के लिये मिलते हैं ?

[a] हाँ ☐
[b] नहीं ☐

7. क्या आपके पिता किसी क्लब (जहाँ संध्या में मनोरंजन का आयोजन होता है) के सदस्य हैं ?

[a] हाँ ☐
[b] नहीं ☐

8. क्या आपके पिता किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या धार्मिक संस्था के कार्य-क्रम में भाग लेते हैं ? यदि किसी संस्था के सदस्य हों और किसी संस्था के पदाधिकारी (प्रेसीडेण्ट, सेक्रेटरी आदि) हों तो पदाधिकारी का ही उल्लेख करें।

[a] नहीं ☐
[b] किसी एक संस्था के सदस्य ☐
[c] एक से अधिक संस्था के सदस्य ☐
[d] किसी एक संस्था के पदाधिकारी ☐
[e] एक से अधिक संस्था के पदाधिकारी ☐

Total Score ☐ **SESS Class** ☐

मुद्रक :- अर्चना प्रिण्टर्स, 403, सुभाषपुरम, बोदला, आगरा-7 ✆ 76360

निर्मल कुमार भागिया

विद्यालय अभियोजना अनुसूची

THE SCHOOL-ADJUSTMENT INVENTORY

नाम.. स्त्री/पुरुष

वय.................................. कक्षा.......................... विद्यालय..

स्थान....................................... जिला............................... आज की तारीख......................

१. ऊपर दिए हुए खाली स्थानों में उपयुक्त सूचनाएं लिख दो ।

२. आगे पृष्ठों पर तुम्हारे विद्यालय सम्बन्धी प्रश्नों की एक सूची दी जा रही है। इसके द्वारा यह पता लगाया जा रहा है कि तुम्हारा विद्यालय कहां तक तुम्हें सुखी और सफल बनाने की चेष्टा कर रहा है। इन प्रश्नों के उत्तर सच्चाई और निडरता पूर्वक देने से तुम विद्यालय की कुछ बातों को सुधारने में बड़ी सहायता कर सकते हो। इससे विद्यार्थी समुदाय को एवं तुम्हें भी निजी रूप से लाभ प्राप्त होगा ।

३. यह किसी भी प्रकार का परीक्षण नहीं है, इसलिये इसमें पूछे गये प्रश्नों के कोई सही अथवा गलत उत्तर नहीं हैं। हर एक प्रश्न के आगे तीन उत्तर दिये हुये हैं ।—"हां", "ना" और "?" । यदि तुम किसी प्रश्न का उत्तर 'हां' में देना चाहते हो तो 'हां' के चारों ओर एक गोला खींच दो। यदि उत्तर नहीं में देना चाहते हो तो "ना" के चारों ओर एक गोला खींच दो। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हां या ना में देने का प्रयत्न करो। कहीं पर किसी शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता हो तो पूछ सकते हो। यदि फिर भी तुम 'हां' या 'ना' में किसी भी तरह उत्तर न दे सको तो "?" के चारो ओर गोला खींच दो । गोले का चिन्ह बनाने के लिये काली पेन्सिल या स्याही का प्रयोग करो।

४. तुम्हारे नाम और उत्तर बिल्कुल गुप्त रखे जायेंगे। इसलिये सच्चे उत्तर देने में किसी प्रकार का डर अथवा संकोच न करो ।

५. समय कुछ निश्चित नहीं है। यथा सम्भव शीघ्रता से उत्तर दो । किसी प्रश्न को पढ़ने के बाद, सबसे पहले जो उत्तर ठीक लगे उसी पर गोल निशान लगादो । हर एक प्रश्न का उत्तर अवश्य दो ।

६. इस बात को याद रखो कि हर एक प्रश्न के बारे में तुम्हें अपना विचार ही व्यक्त करना है। किसी से प्रश्न पूछने अथवा किसी के प्रश्न देखने की आवश्यकता नहीं है ।

CATEGORIES	A	S	G	T	P	Total	Remarks
SCORES	1,5,10,14						

Published by :

MANASAYAN

32, Netaji Subhash Marg
DELHI-6

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
१.	क्या अपनी स्कूल की पढ़ाई को तुम रुचिकर पाते हो ?	हां	ना	?
२.	क्या तुम्हारी कक्षा के अधिकांश विद्यार्थी तुम्हारे प्रति स्नेह और सहानुभूति रखते हैं ? ...	हां	ना	?
३.	क्या इस विद्यालय के सब अध्यापक तुम्हें अच्छे व सुव्यवस्थित ढंग से पढ़ाते हैं ?	हां	ना	?
४.	क्या तुम्हें इस बात का दुःख है कि स्कूल में तुम किसी क्षेत्र में आगे नहीं आ पाते ? ...	हां	ना	?
५.	क्या तुम स्कूल में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों को पसंद करते हो ?	हां	ना	?
६.	क्या तुम्हारे सहपाठी विद्यालय में तुम से हर बात में सहयोग करते हैं ?	हां	ना	?
७.	क्या स्कूल में होने वाले सभी कार्यक्रमों को तुम बहुत रुचिकर पाते हो ?	हां	ना	?
८.	क्या तुम्हें अपने अध्यापक रोचक और विनोदी जान पड़ते हैं ?	हां	ना	?
९.	क्या स्कूल में प्रायः तुम उदास और खिन्न रहते हो ?	हां	ना	?
१०.	क्या तुम्हारे विचारानुसार इतने सारे विषय पढ़ाकर तुम्हारा बोझ बढ़ा दिया गया है ?	हां	ना	?
११.	क्या तुम्हारे विचार से तुम्हारी कक्षा का मॉनीटर बदला जाना चाहिए ?	हां	ना	?
१२.	क्या तुम अपनी पसंद के अच्छे कार्यक्रम जैसे पिकनिक (पर्यटन), फिल्म-शो आदि की व्यवस्था स्कूल में न पाने से असन्तुष्ट रहते हो ?	हां	ना	?
१३.	क्या तुम्हें अपने किसी अध्यापक के तौर-तरीके (बोल-चाल आदि) अप्रिय मालूम पड़ते हैं ? ...	हां	ना	?
१४.	क्या तुम्हें स्कूल में प्रायः थकन महसूस होती है ?	हां	ना	?
१५.	क्या तुम किसी-किसी पीरियड में विषय की नीरसता के कारण बेचैन या व्याकुल हो जाते हो ? ...	हां	ना	?
१६.	क्या तुम्हारे सहपाठी तुम्हें कोई गलत बात सिखाकर बिगाड़ने की कोशिश करते हैं ? ...	हां	ना	?
१७.	क्या तुम्हें स्कूल के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने व आगे बढ़ने के यथेष्ट अवसर दिये जाते हैं ? ...	हां	ना	?
१८.	क्या तुम्हें अपने सब अध्यापक दयालु स्वभाव के लगते हैं ?	हां	ना	?
१९.	क्या स्कूल में किसी न किसी कारण से तुम परेशान या चिंतित रहते हो ?	हां	ना	?
२०.	क्या स्कूल से मिले हुए गृह-कार्य करने में तुम्हारा मन लगता है ?	हां	ना	?
२१.	क्या अन्य विद्यार्थी तुम्हारे अध्ययन या अन्य कार्य में किसी तरह की बाधा पहुंचाते हैं ? ...	हां	ना	?
२२.	क्या किसी वजह से तुम स्कूल के कार्यक्रमों में भाग कम लेते हो ?	हां	ना	?
२३.	क्या तुम्हारे कोई अध्यापक कुछ अन्य छात्र या छात्राओं के साथ पक्षपात करते हैं ?	हां	ना	?
२४.	क्या तुम स्कूल में छोटी-छोटी बात पर ही तुरन्त घबरा जाते हो ?	हां	ना	?
२५.	क्या तुम प्रायः कक्षा में पीछे की सीटों पर बैठना पसन्द करते हो ?	हां	ना	?

Scores : A .... S............ G............ T............ P............

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
२६.	क्या तुम्हारे सहपाठी किसी बेकार सी बात पर तुम्हारा मजाक उड़ाते हैं ?	हां	ना	?
२७.	क्या इस विद्यालय द्वारा तुम्हारे स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखा जाता है ? जैसे समुचित हवा, रोशनी, सफाई, प्राथमिक चिकित्सा एवं डाक्टरी जांच की व्यवस्था ? ...	हां	ना	?
२८.	क्या तुम्हारे विचार से तुम्हारे सभी अध्यापकों का चरित्र (चाल-चलन) अच्छा है ?	हां	ना	?
२९.	क्या इस स्कूल में कुछ बातों की वजह से तुम्हारा दिल टूट सा गया है ?	हां	ना	?
३०.	क्या तुम्हें कक्षा में पढ़ाई करने के बजाय स्कूल का अन्य बाहरी काम जैसे स्कूल की सफाई, सजावट, बाजार का काम आदि अधिक अच्छा लगता है ?	हां	ना	?
३१.	क्या तुम अपने अधिकतर सहपाठियों को मित्रता के अयोग्य समझते हो ?	हां	ना	?
३२.	क्या कक्षा में तुम्हारे लिये अच्छी तरह बैठने, लिखने व पढ़ने आदि की समुचित व्यवस्था है। ...	हां	ना	?
३३.	क्या कोई अध्यापक तुम से शीघ्र क्रुद्ध होकर चिढ़ जाते हैं ?	हां	ना	?
३४.	क्या तुम पाठशाला सम्बन्धी जो भी समस्याएँ तुम्हारे सामने आती है, उन्हें शीघ्र सुलझा लेते हो ? ...	हां	ना	?
३५.	क्या तुम कक्षा में चल रही पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई अनुभव करते हो ? ...	हां	ना	?
३६.	क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हारे सहपाठी प्रायः स्वार्थी हैं ?	हां	ना	?
३७.	क्या स्कूल द्वारा तुम्हारी वस्तुओं की सुरक्षा के लिये हर-तरह का प्रयत्न किया जाता है ? ...	हां	ना	?
३८.	क्या तुम्हारे अध्यापक तुमसे अधिक कुछ चापलूस विद्यार्थियों पर मेहरबान रहते हैं ? ...	हां	ना	?
३९.	क्या तुम्हें इस स्कूल से निराशा ही निराशा पल्ले पड़ती है ?	हां	ना	?
४०.	कक्षा में पढ़ते समय क्या तुम्हारा मन सो जाने को चाहता है ?	हां	ना	?
४१.	क्या अन्य छात्र-छात्रायें तुमसे खुल कर मिलते और बातचीत करते हैं ?	हां	ना	?
४२.	क्या तुम्हें इस स्कूल में तुम्हारी इच्छानुसार मनोरंजन की सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हैं ? ...	हां	ना	?
४३.	क्या तुम्हारे विचारानुसार इस स्कूल के अध्यापक तुम्हारे प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने में ईमानदार हैं ?	हां	ना	?
४४.	क्या तुम्हें कक्षा में सब कुछ अच्छी तरह सुनाई पड़ता है ?	हां	ना	?
४५.	क्या तुम जब कक्षा में पढ़ाई चल रही हो उस समय अन्य कई बातों पर सोच विचार करते रहते हो ?	हां	ना	?
४६.	क्या विद्यालय में इतने सारे लोगों के होते हुए भी तुम एक अजीब तरह का अकेलापन अनुभव करते हो ?	हां	ना	?
४७.	क्या तुम्हारे स्कूल में तुम्हारी पसंद के खेल खेलने की अच्छी व्यवस्था है ?	हां	ना	?
४८.	क्या तुम्हारे सब अध्यापक तुम्हें चाहते हैं ?	हां	ना	?
४९.	क्या किसी कारण से स्कूल में पढ़ना चालू रखना तुम्हारे लिये कठिन हो गया है ?	हां	ना	?
५०.	क्या तुम्हारे विचार से जो कुछ तुम्हें स्कूल में अभी पढ़ाया जा रहा है वह तुम्हारे लिये उपयोगी है ? ...	हां	ना	?

Scores : A .... S .... G .... T .... P ....

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
५१.	क्या अन्य विद्यार्थी किसी किसी बात के लिए तुम्हारी प्रशंसा करते हैं ?	हां	ना	?
५२.	क्या तुम्हें अपने स्कूल के पुस्तकालय से पढ़ने के लिये अच्छी व मन पसंद पुस्तकें सुगमता से मिल जाती हैं ?	हां	ना	?
५३.	क्या इस विद्यालय के कुछ अध्यापक तुम्हारी बातों व समस्याओं में रुची लेते हैं ?	हां	ना	?
५४.	क्या विद्यालय में आये दिन कुछ बातें हुआ करती हैं जिस पर तुम मन ही मन क्रुद्ध हो उठते हो ? ...	हां	ना	?
५५.	क्या तुमने विद्यालय के छात्रों में कुछ हद तक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है ?	हां	ना	?
५६.	क्या तुम अपनी आवश्यकताओं (लघुशंका, पानी, नाश्ता आदि) की पूर्ति संतोषपूर्ण ढंग से करने के लिये स्कूल में अच्छी व्यवस्था पाते हो ?	हां	ना	?
५७.	क्या तुम्हें अपने अध्यापकों से काम करने के लिये उत्साह और प्रेरणा प्राप्त होती रहती है ? ...	हां	ना	?
५८.	क्या तुम विद्यालय में प्रायः सोच विचार किया करते हो कि भविष्य में तुम्हारे लिये पता नहीं क्या होगा ?	हां	ना	?
५९.	क्या अध्ययन कार्य तुम्हें बहुत कठिन जान पड़ता है ?	हां	ना	?
६०.	क्या तुम्हारे अन्दर कोई विशेष बुराई न होते हुए भी अन्य विद्यार्थी तुम्हें बुरा समझते हैं ? ...	हां	ना	?
६१.	क्या स्कूल में वसूल किये जाने वाले हर तरह के शुल्क तुम्हें उचित प्रतीत होते हैं ? ...	हां	ना	?
६२.	क्या तुम्हें अपने कुछ अध्यापकों से खुलकर अपनी परेशानियों अथवा अन्य विषयों पर बातचीत करने का मौका मिलता है ?	हां	ना	?
६३.	क्या तुम स्कूल में अक्सर अनजाने ही अपने नाखून मुंह से काटते हो ?	हां	ना	?
६४.	क्या विद्यालय में तुम्हें पढ़ाये जाने वाले विषयों को तुम आसानी से समझ लेते हो ? ...	हां	ना	?
६५.	क्या तुम्हारे कई सहपाठी तुमसे रूखा व्यवहार करते हैं ?	हां	ना	?
६६.	क्या तुम्हारे मतानुसार तुम्हारी कक्षा की समय-सारिणी (टाइम टेबल) त्रुटिपूर्ण है ? ...	हां	ना	?
६७.	क्या तुम्हारे अध्यापक अध्ययन कार्य में तुम्हारी व्यक्तिगत रूप से सहायता करने को तत्पर रहते हैं ?	हां	ना	?
६८.	क्या तुम कक्षा में खड़े होकर बोलने और प्रश्न पूछने या प्रश्नों के उत्तर जानते हुए भी बताने में स्वयं को असमर्थ पाते हो ?	हां	ना	?
६९.	क्या कक्षा में तुम पढ़ाई के बराबर नोटस लेते रहते हो ?	हां	ना	?
७०.	क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे कई सहपाठी तुम से घृणा करते हैं ?	हां	ना	?
७१.	क्या स्कूल सम्बन्धी हर प्रकार की जानकारी तुम्हें सुचारू रूप से प्राप्त होती रहती है ? ...	हां	ना	?
७२.	क्या तुम्हारे अध्यापक तुमसे और तुम्हारी योग्यताओं से भली प्रकार परिचित हैं ? ...	हां	ना	?
७३.	क्या तुम्हें स्वयं पर भरोसा है कि विद्यालय में तुम हर बात में उन्नति कर रहे हो ? ...	हां	ना	?

Scores : A .... S.................... G.................... T.................... P....................

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
७४.	क्या तुम्हारी विभिन्न विषयों की नोट बुक सदैव पूरी तैयार रहती है ?	हां	ना	?
७५.	क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारी पीठ पीछे कुछ विद्यार्थी तुम्हारी बुराई करते हैं ? ...	हां	ना	?
७६.	क्या तुम्हारे विचार से इस स्कूल का अनुशासन कुछ ढीला है ?	हां	ना	?
७७.	क्या कुछ गलतफ़हमियों के कारण कोई अध्यापक तुम्हें बुरा समझते हैं ?	हां	ना	?
७८.	क्या तुम्हारे विचारानुसार तुम भी स्कूल के भाग्यशाली विद्यार्थियों में से एक हो ?	हां	ना	?
७९.	क्या तुम नित्य नियम पूर्वक कुछ समय अध्ययन कर पाते हो ?	हां	ना	?
८०.	क्या तुम समझते हो कि कुछ विद्यार्थी तुमसे दुश्मनी रखते हैं या तुम्हें हानि पहुंचाने की फिराक में हैं ?	हां	ना	?
८१.	क्या तुम्हें इस बात का अनुभव होता है कि इस स्कूल में कुछ अव्यवस्थायें चल रही हैं ? ...	हां	ना	?
८२.	क्या इस विद्यालय के अध्यापक तुम्हारी बातों का पूरा विश्वास करते हैं ?	हां	ना	?
८३.	क्या स्कूल में अन्य विद्यार्थियों को अपने से अधिक खुश देखकर तुम्हें उनसे ईर्ष्या होने लगती है ? ...	हां	ना	?
८४.	क्या तुम समझते हो कि तुम पढ़ाई में काफी कमजोर हो ?	हां	ना	?
८५.	क्या तुम विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों से मिलने जुलने और सम्बन्ध बढ़ाने के लिये उत्सुक रहते हो ?	हां	ना	?
८६.	क्या इस स्कूल में तुम्हारा मार्ग दर्शन ठीक तरह से किया जाता है ?	हां	ना	?
८७.	क्या कोई अध्यापक तुमसे असंतुष्ट और रुष्ट रहा करते हैं ?	हां	ना	?
८८.	क्या शारीरिक दुर्बलता या खराब स्वास्थ्य होने की वजह से तुम स्कूल की कुछ बातों में पीछे रह जाते हो ?	हां	ना	?
८९.	क्या परीक्षा में प्राय: तुम्हें कम अंक प्राप्त हुआ करते हैं ?	हां	ना	?
९०.	क्या अन्य विद्यार्थियों से बातचीत करने में तुम शर्माते हो या संकोच अनुभव करते हो ? ...	हां	ना	?
९१.	क्या तुम्ह ऐसा लगता है कि तुम्हारे लिए इस स्कूल में कुछ अनुचित प्रतिबन्ध हैं ?	हां	ना	?
९२.	क्या तुम्हारे विचार से कुछ अध्यापक तुम्हारे प्रति अपेक्षाकृत कम ध्यान देते हैं ?	हां	ना	?
९३.	क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम एक गरीब विद्यार्थी होने के कारण स्कूल की कुछ बातों में पीछे रह जाते हो ?	हां	ना	?
९४.	क्या कक्षा में पूछे गये प्रश्नों के अधिकतर उत्तर तुम्हें आते हैं ?	हां	ना	?
९५.	क्या बाहर की अपेक्षा स्कूल में तुम्हारे अधिक मित्र हैं ?	हां	ना	?
९६.	क्या तुम इस विद्यालय के वातावरण में विद्यार्थी जीवन का आनन्द पूर्णतया प्राप्त कर रहे हो ? ...	हां	ना	?
९७.	क्या तुम्हारे मतानुसार विद्यालय के कोई अध्यापक तुम्हें कुछ न कुछ हानि पहुंचाने की कोशिश करते हैं ?	हां	ना	?

Scores : A .... S .... G .... T .... P ....

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
९८.	क्या स्कूल में अच्छे कपड़े पहनने की असमर्थता के कारण तुम्हारा मन व्याकुल होता है ? ...	हां	ना	?
९९.	क्या जिस कक्षा में तुम पढ़ रहे हो, स्वयं को उसके योग्य समझते हो ?	हां	ना	?
१००.	क्या इस विद्यालय के कुछ विद्यार्थी तुम्हारे बहुत अच्छे घनिष्ठ मित्र हैं ?	हां	ना	?
१०१.	क्या तुम्हारे विचार से इस विद्यालय की बहुत कुछ बातों में परिवर्तन आवश्यक है ? ...	हां	ना	?
१०२.	क्या तुम्हारे अध्यापक तुम से विद्यालय की हर बात में न्याय पूर्ण व्यवहार करते हैं ? ...	हां	ना	?
१०३.	क्या तुम्हारा अध्ययन इस स्कूल में संतोष जनक ढंग से चल रहा है ?	हां	ना	?
१०४.	क्या तुम अपनी समस्याओं के बारे में अपने किसी सहपाठी-मित्र से सलाह लेते हो ?	हां	ना	?
१०५.	क्या इस विद्यालय में हुए अपने अनुभव के आधार पर तुम कह सकते हो कि विद्यार्थी जीवन एक कष्टमय जीवन है ?	हां	ना	?
१०६.	क्या तुम्हारे अध्यापक तुमसे स्नेह और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं ?	हां	ना	?
१०७.	क्या किसी कमी की वजह से तुम स्वयं को दूसरे विद्यार्थियों की अपेक्षा तुच्छ और हीन समझते हो ?	हां	ना	?
१०८.	क्या तुम समझते हो कि अध्ययन के मामले में सब अध्यापक अपने-अपने विषयों में तुमसे संतुष्ट हैं ?	हां	ना	?
१०९.	क्या आवश्यकता पड़ने पर अध्ययन में तुम अपने किसी सहपाठी से सहायता लेते हो ? ...	हां	ना	?
११०.	क्या यह विद्यालय तुम्हें एक नीरस (बिना मन का) स्थान प्रतीत होता है ?	हां	ना	?
१११.	क्या इस विद्यालय के कुछ अध्यापक प्रायः तुम्हारी अनुचित आलोचना करते हैं ?	हां	ना	?
११२.	क्या तुम स्कूल का काम न करने पर या देर से आने पर या और किसी बात पर बहाना बना देते हो ?	हां	ना	?
११३.	क्या तुम्हें यह विश्वास है कि तुम स्कूल की पढ़ाई में दिन प्रति दिन प्रगति कर रहे हो ? ...	हां	ना	?
११४.	क्या अध्ययन के अलावा और किसी प्रकार की सहायता तुम बिना किसी हिचक अपने सहपाठी मित्रों से मांग सकते हो ।	हां	ना	?
११५.	क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि तुम्हारे स्कूल में कुछ स्नेहमय वातावरण और सच्चे प्रेम की कमी है ?...	हां	ना	?
११६.	क्या विद्यालय में अध्यापक कभी-कभी तुम्हारी प्रशंसा करते हैं ?	हां	ना	?
११७.	क्या किसी सहपाठी द्वारा अध्ययन में सहायता मांगने पर तुम उसे सहर्ष देते हो ? ...	हां	ना	?
११८.	क्या तुम स्वयं को इस स्कूल का अंग समझते हो ?	हां	ना	?
११९.	क्या किसी अध्यापक द्वारा तुम किसी बात पर परेशान किये जाते हो ?	हां	ना	?
१२०.	क्या तमाशा देखने के लिये या किसी और वजह से तुम कक्षा में किसी की कुछ चीजें (किताबें, पैन, नोट बुक आदि) छिपा देते हो ?	हां	ना	?
१२१.	कक्षा में अध्यापकजी के पढ़ाते समय क्या तुम कई बार यह सोचकर खीज उठते हो कि जो कुछ वह पढ़ा रहा है वह तुम्हारी समझ के बाहर है ?	हां	ना	?

Scores : A.......................... S.......................... G.......................... T .... P ....

प्रश्न सं०	प्रश्न	उत्तर		
१२२.	क्या तुम अपने सहपाठियों की अध्ययन के अलावा और किसी प्रकार की सहायता करने के इच्छुक हो ?	हां	ना	?
१२३.	क्या इस स्कूल में तुम्हारी योग्यताओं का विकास करने के लिये सभी प्रयत्न किये जाते हैं ? ...	हां	ना	?
१२४.	क्या कोई अध्यापक तुम्हारी हद से ज्यादा त्रुटियां निकालते हैं ?	हां	ना	?
१२५.	क्या तुम पुस्तकालय की या किसी से मांगी हुई पुस्तकें, अखबार, नोट बुक आदि के पन्ने फाड़कर अपना फायदा करते हो ?	हां	ना	?
१२६.	क्या तुम परीक्षाओं से घृणा करते हो ?	हां	ना	?
१२७.	क्या अपने स्कूल के विद्यार्थियों के साथ मिलकर तुम कोई भी खेल खेला करते हो ? ...	हां	ना	?
१२८.	क्या कई कारणों से तुम्हारी यह धारणा बन गई है कि अन्य स्कूल तुम्हारे स्कूल से कहीं अधिक अच्छे ढंग से चलाये जा रहे हैं ?	हां	ना	?
१२९.	क्या कुछ अध्यापक तुमसे बहुत अधिक सख्ती से पेश आते हैं ?	हां	ना	?
१३०.	क्या तुम स्कूल के नियमों का पालन नहीं कर पाते ?	हां	ना	?
१३१.	क्या तुम्हें इस बात की आशंका है कि तुम आगामी परीक्षा में सफल नहीं हो सकोगे ? ...	हां	ना	?
१३२.	क्या तुम विद्यालय के कार्यक्रमों में अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलजुल कर सक्रिय भाग लिया करते हो ?	हां	ना	?
१३३.	क्या तुम्हारे दिल में किसी कारण से इस विद्यालय को छोड़ने की इच्छा उत्पन्न होती है ? ...	हां	ना	?
१३४.	क्या कुछ अध्यापक तुम्हें डांटते और फटकारते रहते हैं ?	हां	ना	?
१३५.	क्या स्कूल में कई बार किसी की परवाह किये बिना तुम ऐसी कुछ मनमानी कर लेते हो जिससे स्कूल वाले चिढ़ जाते हैं ?	हां	ना	?
१३६.	क्या कक्षा में पढ़ाई चलते समय तुम कभी अपना कुछ और काम (कहानी की पुस्तक पढ़ना आदि) करते हो ?	हां	ना	?
१३७.	क्या तुम अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ मिलकर कभी-कभी अध्ययन करते हो ? ...	हां	ना	?
१३८.	क्या तुम्हें कुछ अध्यापक प्राय: किसी न किसी प्रकार की सज़ा देते रहते हैं ?	हां	ना	?
१३९.	क्या तुम प्राय: स्कूल में लड़झगड़ कर अपना गुस्सा निकाल लेते हो ?	हां	ना	?
१४०.	क्या अध्यापकजी के पढ़ाते समय अपने सहपाठी मित्रों से तुम्हारी धीरे-धीरे बातचीत चलती रहती है ?	हां	ना	?
१४१.	क्या तुम स्कूल में विद्यार्थियों से विभिन्न जानकारी का आदान-प्रदान करते हो ?	हां	ना	?
१४२.	क्या किसी अध्यापक द्वारा तुम्हें दी हुई सजा प्राय: कठोर हुआ करती है ?	हां	ना	?
१४३.	क्या तुम कभी-कभी स्कूल में अध्यापकों से भी सामना करने का साहस करते हो ?	हां	ना	?
१४४.	क्या तुम प्राय: पीरियड चलते समय पानी पीने या लघुशंका के लिए छुट्टी लेकर चले जाते हो ? ...	हां	ना	?
१४५.	क्या कुछ अध्यापक किसी तरीके से तुम्हारा कभी अपमान या निरादर करते हैं ? ...	हां	ना	?
१४६.	क्या तुम स्कूल में कुछ कारणों में निश्चित समय से कुछ देर से पहुंचते हो ?	हां	ना	?

Scores : A .... S .... G .... T .... P ....

प्रश्न सं०	प्रश्न		उत्तर	
१४७.	क्या कोई विषय अच्छा न लगने की वजह से उस पीरियड में प्रायः तुम अनुपस्थित रहते हो ? ...	हां	ना	?
१४८.	क्या तुम्हें अपने स्कूल के विद्यार्थियों की संगति में बहुत मजा आता है ?	हां	ना	?
१४९.	क्या तुम्हें किसी अध्यापक की उपस्थिति में घबराहट अथवा असुविधा होती है ?	हां	ना	?
१५०.	क्या कुछ कारणों से तुम विद्यालय से काफी अनुपस्थित रहते हो ?	हां	ना	?
१५१.	क्या परीक्षा के पर्चे कठिन होने की वजह से तुम कभी-कभी नकल कर लेते हो ?	हां	ना	?
१५२.	क्या तुम्हारे सहपाठी तुम से जो छेड़खानी या मजाक करते हैं वह तुम्हें भद्दी लगती है ? ...	हां	ना	?
१५३.	क्या तुम अपनी अध्ययन सम्बन्धी कठिनाईयों को पूछने के लिए किसी भी अध्यापक के पास बिना किसी झिझक के चले जाते हो ?	हां	ना	?
१५४.	क्या तुम अक्सर कभी-कभी छुट्टी से पहले ही स्कूल से चले जाते हो ?	हां	ना	?
१५५.	क्या किसी कारण से कक्षा में तुम बेमतलब के प्रश्न पूछकर या उटपटांग उत्तर देकर अध्यापक को परेशानी में डाल देते हो ?	हां	ना	?
१५६.	क्या तुम प्रायः अन्य विद्यार्थियों की सही शिकायतें करते हो ?	हां	ना	?
१५७.	क्या कक्षा में पढ़ाई में मन न लगने के कारण तुम कभी २ कोई विचित्र हरकत करते हो ? (जैसे कुर्सियों को हिलाना, किसी किस्म की आवाजें करना आदि)	हां	ना	?
१५८.	क्या तुम स्कूल में अन्य कुछ विद्यार्थियों को चिढ़ाकर मजा लेते हो ?	हां	ना	?
१५९.	क्या किसी अध्यापक द्वारा दिये गये आदेशों की तुम अवहेलना करते हो ?	हां	ना	?
१६०.	क्या केवल मजबूरी के कारण तुम किसी अध्यापक द्वारा दी हुई आज्ञा का पालन करते हो ? ...	हां	ना	?
१६१.	क्या तुम्हारे विचार से इस विद्यालय के सब अध्यापक पूर्ण सम्मान एवं आदर के योग्य हैं ? ...	हां	ना	?
१६२.	क्या स्कूल में तुम्हारा मन बहुत ही अस्थिर रहता है और प्रायः हवाई किले बनाता रहता है ? ...	हां	ना	?
१६३.	क्या तुम किसी अध्यापक की पीठ पीछे हंसी उड़ाते हो ?	हां	ना	?
१६४.	क्या तुम स्कूल में कोई जिम्मेवारी का काम लेने में बहुत ही हिचकिचाते हो ?	हां	ना	?
१६५.	क्या तुम इस विद्यालय के किसी अध्यापक से किसी वजह से नफरत करते हो ?	हां	ना	?

Scores : A .... S .... G .... T .... P ....

Scores of Gifted Students
(Buaddhik Pratibha Parikshan Ank)
GENERAL STUDENTS

Sl.No.	Male	Female	SlNo.	Male	Female
1	49	47	39	60	65
2	49	47	40	61	65
3	48	48	41	60	65
4	55	50	42	60	50
5	53	55	43	60	50
6	53	60	44	61	50
7	56	47	45	65	50
8	56	47	46	65	50
9	56	50	47	65	66
10	58	60	48	64	66
11	57	50	49	60	66
12	59	60	50	60	66
13	60	60	51	60	67
14	60	61	52	64	67
15	61	61	53	64	62
16	62	61	54	64	62
17	63	66	55	59	62
18	64	65	56	59	62
19	65	66	57	59	55
20	65	68	58	65	55
21	66	64	59	68	55
22	66	64	60	68	55
23	66	64	61	68	56
24	67	64	62	68	56
25	69	70	63	67	56
26	69	70	64	67	56
27	69	65	65	67	50
28	68	65	66	66	52
29	70	65	67	65	48
30	70	60	68	69	48
31	55	50	69	61	45
32	50	51	70	60	45
33	53	46	71	70	65
34	55	45	72	70	65
35	60	49	73	72	65
36	70	60	74	72	66
37	70	60	75	72	67
38	70	60			

Scores of Gifted Students
(Buaddhik Pratibha Parikshan Ank)
SCHEDULE TRIBE STUDENTS

SI.No.	Male	Female	SINo.	Male	Female
1	24	19	39	55	45
2	18	20	40	55	45
3	19	19	41	55	45
4	24	20	42	56	45
5	27	18	43	48	42
6	35	24	44	48	42
7	38	20	45	48	42
8	42	20	46	48	50
9	42	20	47	50	50
10	44	40	48	50	50
11	44	50	49	50	50
12	43	55	50	50	50
13	45	55	51	50	55
14	47	60	52	45	55
15	48	30	53	45	55
16	48	47	54	49	55
17	48	45	55	49	52
18	49	45	56	49	52
19	49	45	57	52	52
20	49	60	58	52	52
21	50	47	59	52	47
22	50	47	60	52	47
23	50	55	61	53	47
24	50	50	62	53	47
25	30	52	63	53	42
26	27	52	64	53	42
27	27	50	65	48	48
28	51	50	66	48	48
29	52	50	67	49	50
30	52	28	68	60	50
31	53	27	69	58	51
32	42	26	70	59	51
33	42	26	71	61	60
34	43	25	72	61	60
35	43	25	73	55	45
36	50	40	74	55	55
37	50	40	75	60	60
38	50	40			

Scores of Socio-Economic Students
(Samajik-Aarthik Parikshan Ank)
GENERAL STUDENTS

Sl.No.	Male	Female	SlNo.	Male	Female
1	40	33	39	36	40
2	35	30	40	35	35
3	33	30	41	30	35
4	32	30	42	30	32
5	33	30	43	31	28
6	34	32	44	31	28
7	35	32	45	31	28
8	35	32	46	32	28
9	35	32	47	32	28
10	33	32	48	32	30
11	30	33	49	20	30
12	30	33	50	19	30
13	30	34	51	30	30
14	30	32	52	19	30
15	30	31	53	18	20
16	32	31	54	19	20
17	32	31	55	19	20
18	32	31	56	19	20
19	32	31	57	30	25
20	33	31	58	32	25
21	33	34	59	34	18
22	33	35	60	32	19
23	34	35	61	34	18
24	33	35	62	30	18
25	35	35	63	32	18
26	32	35	64	32	30
27	30	35	65	32	30
28	32	32	66	32	30
29	32	32	67	30	30
30	32	32	68	30	30
31	32	33	69	30	30
32	33	30	70	30	28
33	31	31	71	40	30
34	31	29	72	35	35
35	30	28	73	30	35
36	35	30	74	32	37
37	35	30	75	33	30
38	86	30			

Scores of Socio-Economic Students
(Samajik-Aarthik Parikshan Ank)
SCHEDULE TRIBE STUDENTS

SNo.	Male	Female	SNo.	Male	Female
1	25	24	39	20	30
2	20	24	40	20	20
3	20	24	41	15	20
4	20	24	42	15	20
5	20	25	43	15	20
6	16	25	44	15	20
7	24	20	45	15	20
8	22	30	46	18	20
9	22	33	47	18	19
10	22	32	48	18	18
11	22	32	49	18	18
12	23	32	50	19	18
13	23	25	51	20	18
14	23	25	52	19	19
15	24	25	53	19	19
16	19	26	54	19	20
17	19	26	55	19	20
18	19	26	56	19	20
19	19	26	57	19	20
20	19	27	58	15	20
21	19	27	59	16	18
22	20	27	60	16	18
23	30	28	61	16	20
24	30	29	62	16	20
25	24	29	63	16	20
26	24	29	64	16	20
27	24	30	65	16	24
28	24	24	66	17	20
29	22	24	67	19	18
30	22	24	68	17	18
31	22	24	69	18	18
32	23	23	70	19	17
33	23	20	71	15	16
34	23	25	72	16	20
35	22	22	73	20	18
36	20	25	74	17	19
37	20	25	75	22	20
38	20	25			

Scores of Adjustment Students
(Samayojan Parikshan Ank)
GENERAL STUDENTS

SNo.	Male	Female	SNo.	Male	Female
1	100	120	39	130	125
2	100	120	40	125	125
3	90	115	41	122	130
4	90	115	42	121	125
5	85	115	43	115	120
6	90	117	44	115	120
7	95	117	45	115	120
8	95	120	46	115	120
9	95	130	47	120	120
10	95	130	48	120	120
11	120	125	49	120	120
12	120	110	50	120	120
13	130	110	51	120	120
14	130	110	52	120	115
15	125	110	53	120	125
16	110	115	54	110	125
17	110	115	55	115	125
18	110	90	56	110	125
19	110	90	57	90	120
20	130	90	58	90	120
21	135	95	59	90	90
22	130	95	60	110	100
23	130	112	61	110	100
24	130	112	62	100	100
25	130	112	63	100	100
26	125	112	64	100	90
27	127	111	65	100	90
28	127	111	66	115	90
29	127	110	67	115	115
30	90	80	68	115	115
31	95	80	69	115	115
32	100	85	70	110	100
33	100	85	71	120	130
34	110	90	72	120	130
35	110	80	73	120	125
36	120	125	74	125	125
37	120	125	75	130	125
38	120	125			

Scores of Adjustment Students
(Samayojan Parikshan Ank)
SCHEDULE TRIBE STUDENTS

SNo.	Male	Female	SNo.	Male	Female
1	80	70	39	70	90
2	80	110	40	70	90
3	75	110	41	70	90
4	75	110	42	70	95
5	80	90	43	70	85
6	80	80	44	75	85
7	70	85	45	80	85
8	72	80	46	80	85
9	72	80	47	80	85
10	100	80	48	90	85
11	100	80	49	90	70
12	100	85	50	95	70
13	100	85	51	95	70
14	95	85	52	90	65
15	95	83	53	85	65
16	90	95	54	85	65
17	85	90	55	85	65
18	85	90	56	85	62
19	90	90	57	85	61
20	90	90	58	90	60
21	90	82	59	90	60
22	92	82	60	90	80
23	100	81	61	90	80
24	100	100	62	80	80
25	90	100	63	80	60
26	90	100	64	80	61
27	90	100	65	80	60
28	110	75	66	80	70
29	105	75	67	80	70
30	105	75	68	80	70
31	105	75	69	70	80
32	97	90	70	75	90
33	97	92	71	100	90
34	90	80	72	100	90
35	90	80	73	105	110
36	80	95	74	105	110
37	80	95	75	110	95
38	80	90			